काली-रहस्यम्
अशोक कुमार गौड

आचार्य पंडित कन्हैया लाल शखावत
आयुर्वेदाचार्य साहित्यायुर्वेद रत्न, एम० ए०
K.L

क91620

॥ श्रीः ॥

चौखम्बा सुरभारती ग्रन्थमाला

294

काली-रहस्यम्

(काली उपासना की सम्पूर्ण विधियों का समावेश)

'अशोकेन्दु' हिन्दी टीका 'श्रुति' टिप्पणी से अलन्कृत

प्रेणता

वैदिक पं. अशोक कुमार गौड

अध्यक्ष—भारतीय कर्मकाण्ड मण्डल, वाराणसी

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन

वाराणसी

प्रकाशक

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन

(भारतीय संस्कृति एवं साहित्य के प्रकाशक तथा वितरक)

के. 37/117 गोपालमन्दिर लेन

पो. बा. नं. 1129, वाराणसी 221001

दूरभाष 333431 * 335263

प्रथम संस्करण 1999 ई.

मूल्य : 60.00

अन्य प्राप्तिस्थान

चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान

38 यू.ए. बंगलो रोड, जवाहर नगर

पो. बा. नं. 2113

दिल्ली 110007

दूरभाष : 3956391

*

चौखम्बा विद्याभवन

चौक (बनारस स्टेट बैंक भवन के पीछे)

पो. बा. नं. 1069, वाराणसी 221001

दूरभाष : 320404

अक्षर-संयोजक

शुभम् कम्प्यूटर्स

वाराणसी

मुद्रक

ए. के. लिथोग्राफर

दिल्ली

समर्पण

अखिल भारतीय ब्राह्मण महासभा के अध्यक्ष

हरियाणा सरकार के पूर्व विशेष कार्य अधिकारी

पर्यावरण विभाग के पूर्व सहायक निजी सचिव

पूर्व राजनैतिक प्रेस सलाहकार हरियाणा सरकार

वर्तमान उपाध्यक्ष न्यूकेम लिमिटेड कम्पनी

ग्राम बेरी जिला रोहतक (हरियाणा)

निवासी

पं० मांगेराम शर्मा जातुकर्ण

को

'काली-रहस्यम्' सादर समर्पित

—पं० अशोक कुमार गौड
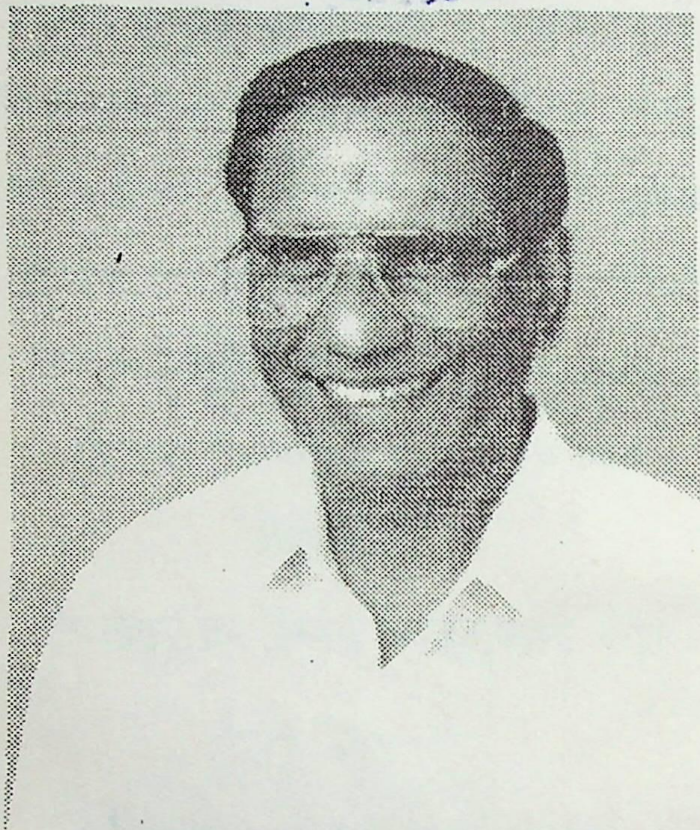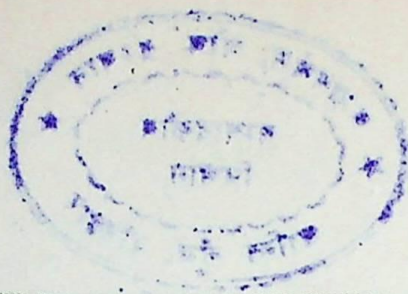
श्री पं० मांगेराम शर्मा
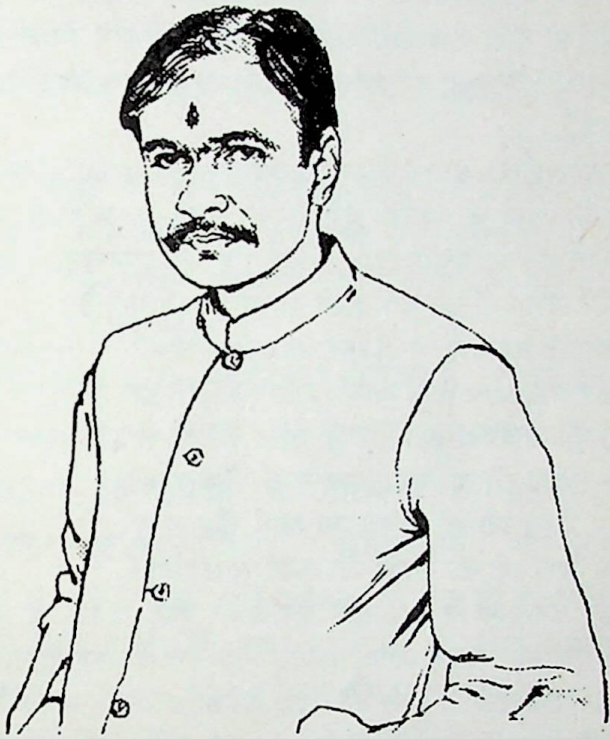
महामहोपाध्याय-स्व० पं० विद्याधर गौड शास्त्री पौत्रेण
याज्ञिक मूर्द्धन्य स्व० पं० दौलतराम गौड वेदाचार्य पुत्रेण
वैदिक पं० अशोक कुमार गौड

प्रस्तावना

हिन्दू धर्म तथा हमारे शास्त्रों के अनुसार 'शक्ति' ईश्वरत्व का सर्वोच्च स्वरूप हैं। शक्ति उपासना का पूर्ण विधान आज भी हमारे तन्त्र ग्रंथों व कर्मकाण्ड के ग्रन्थों में प्राप्त होता है। शक्ति उपासना के विधि–विधानों का निर्माण तो प्राचीन काल से ही हो चुका था। क्योंकि सतयुग, त्रेता, द्वापर में समय–समय पर शक्ति के विभिन्न रूपों की पूजा एवं अर्चना की गई इसका प्रमाण आज भी हमारे धर्मग्रन्थों में सुरक्षित है।

'शक्लृशक्तौ' धातुसे 'क्तिन्' प्रत्यय करने पर 'शक्ति' शब्द निष्पन्न होता है।

शक्ति शब्द की व्याख्या देवीभागवत में इस प्रकार से की गई है 'श' शब्द मंगलवाचक होने से ऐश्वर्यवाचक है और 'क्ति' शब्द पराक्रम के अर्थ में है, इससे ऐश्वर्य और पराक्रमों को देने वाली ही शक्ति कहलाती है।

क्योंकि महाशक्ति ने ही सृष्टि का कार्य तीन भागों में विभाजित किया सृजन, पालन और संहार इन तीनों कार्यों के लिए उन्होंने तीन भिन्न एवं प्रमुख देवताओं की रचना की वो देवता ब्रह्मा, विष्णु, महेश के नाम से इस संसार में विख्यात हुए।

१. ब्रह्मा जी को सृजन का कार्य सौपा गया।

२. विष्णु जी को पालन का कार्य सौपा गया।

३. शिव जी को संहार का कार्य सौपा गया।

इन देवताओं ने इस सृष्टि को अपने बुद्धि विवेक से विकसित किया। शक्तिपूजा एक रूप में नहीं अपितु अनेका–नेक रूप में आज भी भारतवर्ष की पवित्र भूमि में आस्तिकजनों के द्वारा की जाती है। शक्ति समय–समय के अनुसार सभी युगों में पूजित हुई है, क्योंकि शक्ति की उपासना के बिना कोई भी कार्य सम्भव नहीं है। कभी हम शक्ति को काली, दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती, वाराही इत्यादि के रूप में पूजित करते है, किन्तु शक्ति एक ही है, इसके रूप भिन्न–भिन्न है। जैसे कभी यह काली, कभी यह दुर्गा, कभी यह लक्ष्मी, कभी यह सरस्वती, कभी यह वाराही, कभी साक्षात् चण्डी का रूप ग्रहण करती हैं।

काल अर्थात् शिवजी की पत्नी काली के विभिन्न रूप हैं। तन्त्र शास्त्र काली को ही आद्या शक्ति महामाया के नाम से पूजित करते हैं, क्योंकि काली ही संसार

की प्रसूति तथा जीव–जगत की मुक्ति–भुक्ति प्रदायिनी है, यह तर्क सर्व सम्मत से मान्य है। मारकन्डे–पुराण के अनुसार देवी नित्य अर्थात् उत्पत्ति विनाश होने पर भी देवताओं के कार्य सिद्धि के लिए समय–समय पर इस पृथ्वी में अवर्तीण होती है। इस विषय में दुर्गा सप्तशी का निम्न प्रमाण प्रस्तुत है–

देवानां कार्यसिद्धयर्थमाविर्भवति सा यदा।
उत्पन्नेति तदा लोके सा नित्याप्यभिधीयते।।

(दुर्गासप्तशती १/६६)

काली की मूर्ति की विशेषता यह है कि यह मूर्ति शक्ति तत्व की पूर्ण अभिव्यक्ति है। क्योंकि इसमें सृष्टि और संहार का अथाह और अगाद रहस्य छिपा हुआ है।

क्योंकि तन्त्र शास्त्रों में जगत जगज्जननी त्रिगुणात्मा महाशक्ति के दश भेद उपासकों के लिए वर्णित किये है–

कालिका च महाविद्या षोडशी भुवनेश्वरी।
भैरवी छिन्नमस्ता च विद्या धूमावती तथा।।
बगला सिद्धविद्या च मातङ्गी कमलात्मिका।
एताः दशमहाविद्याः सर्वतन्त्रेषु गोपित्ताः।।

उपरोक्त श्लोक में सर्वप्रथम कालिका का नाम ही आता हैं। अतः भगवती महाशक्ति के इसी स्वरूप की शाक्त–सम्प्रदाय में अधिक उपासना होती है। मार्कण्डेय पुराण में भगवती महाकाली की उत्पत्ति श्री चण्डिका की क्रुद्धावस्था में वक्रभूभङ्गिमा होने पर ललाट के मध्य भाग से लिखी है। क्योंकि सम्पूर्ण सृष्टि शिव और शक्ति का लीला–विलाश मात्र है।

काल अर्थात् शिवजी की पत्नी को शास्त्रकारों ने काली की संज्ञा से अलन्कृत करके ही उचित किया है। क्योंकि वे आदि मध्य एवं अन्त से रहित संसार की स्वामिनी एवं महामाया है। यद्यपि वे नाम रूप एवं आकार से रहित है, फिर भी साधकों की श्रद्धा के अनुसार शास्त्रकारों ने उनके गुणों की अनन्त महिमा का वर्णन किया है। यह आद्या शक्ति एवं शाक्त मतावलंबियों की इष्ट देवी के रूप में

वर्णित है। यह कभी सृष्टि का नाश कभी स्थिति एवं कभी प्रलय करती हैं। इस अखण्ड शक्ति के आसित ही शिव सृष्टि का संहार करने में समर्थ हो पाते हैं, अन्यथा वो शव हो जाते हैं।

क्योंकि–महामाया ने शिवजी से कहा हे हर! तुम इस महाकाली मनोहरा गौरी को ग्रहण करो और कैलाश बनावाकर यथेच्छ विहार करो। जब भगवान् शंकर स्वयं काली के उपासक है तो मनुष्यों के विषय में क्या कहना है। काली की पूजा हमारे धर्म ग्रन्थों में तीन प्रकार से वर्णित की गई है–

वे इस प्रकार हैं–सात्विक पूजा, राजस पूजा तथा तामस पूजा उपरोक्त तीनों प्रकार की पूजा को किस प्रकार से किया जाये इसका पूर्ण विधान आज भी हमारे आचार्यों एवं विद्वानों के द्वारा लिखित ग्रन्थों में प्राप्त होता है। किन्तु शास्त्रकारों ने सात्विक पूजा को सर्वोत्तम कहा है।

पुराण तथा तंत्रशास्त्र के ग्रन्थों में दक्षिण, भद्र गुह्य प्रभृति भेद से कालीकी आठ प्रकार की मूर्ति का उल्लेख मिलता है क्योंकि आकाशादि भेद से शिवजी की भी अष्ट मूर्तियाँ ही है। आठ प्रकार की काली की मूर्तियों में दक्षिणा काली की पूजा हमारे इस देश में अनादिकाल से पूजित होती आ रही है, क्योंकि दशमहाविद्या में कालिका का नाम ही सबसे पहले आता है। तन्त्रशास्त्रकाली को ही 'आद्याशक्ति महामाया' के नाम से सम्बोधित करते हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि काली ही विश्व की प्रसूति तथा जीव–जगत् की भुक्ति–मुक्ति–प्रदायिनी है। इस विषय में मार्कण्डेयपुराण में वर्णित है कि–देवी नित्य अर्थात् उत्पत्तिविनाशरहित होने पर भी देवताओं की कार्यसिद्धि के लिए रूपविशेष धारण करके धराधाममें अवतीर्ण होती है।

काली काले रंगकी क्यों बनी? चन्द्र–सूर्य जिसके चक्षुस्वरूप है तथा जिसकी दीप्ति से जगत उज्ज्वल है। उसका स्वरूप प्रलयकालीन महामेघ के समान मसीवर्ण क्यों है? इसका उत्तर यही है कि शुम्भनामक दैत्य के वध के समय महाशक्ति के शरीर कोष से एक शिवा विनिर्गत हुई थी एवं इसी कारण देवी काली कृष्णवर्ण होकर कालिका के नाम से जगत में विख्यात हुई।

इस प्रकार की काली देवी जिनके आदि और अन्त को जानने में देवगण भी सक्षम न हों सके तो फिर मनुष्य की क्या साम्यर्थ्य है? उन्हीं काल की पत्नी काली से सम्बन्धित एवं उनकी समस्त वैदिक क्रियाओं से परिपूर्ण यह पुस्तक *'काली - रहस्यम्'* आप सभी के समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूँ। इस पुस्तक में काली से सम्बन्धित उन सभी विषयों का समावेश है। जिसकी आवश्यकता चिरकाल से बनी हुई थी। इस पुस्तक को लिखवाने का श्रेय चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन के *श्री नवनीतदास जी* को ही है।

'काली - रहस्यम्' नामक इस पुस्तक को सर्वजनोपयोगी बनाने के उद्देश्य से इसमें मैंने काली से सम्बन्धित सभी कर्मकाण्ड के विषयों का समावेश किया है। फिर भी मुझे यह जो मानवरूपी शरीर प्राप्त हुआ है। यदि उसके कारण इसमें किसी भी प्रकार की त्रुटि हो जाये, तो मुझे अवश्यमेव सूचित करने की कृपा करें।

इस पुस्तक को और भी बृहद् रूप से आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करना चाहता था, किन्तु समयाभाव व कागज की बढ़ती हुई मूल्य वृद्धि के कारण इस पुस्तक में कुछ विषयों को संक्षेप में तथा कुछ विषयों का समावेश न कर सका। द्वितीय संस्करण में मैं उन सभी विषयों का समावेश बृहद रूप से करने की चेष्टा करूँगा।

भवदीय

पं० अशोक कुमार गौड

भारतीय कर्मकाण्ड मण्डल
म. म. पा. पं. विद्याधर गौड लेन
डी. ७/१४ सकरकंद गली, वाराणसी
दूरभाष : ३२७१६०

विषय सूची

काली-रहस्यम्

अशोकेन्दु हिन्दी टीका व श्रुति टिप्पणी से अलन्कृत

मंगलाचरणम्

खड्गेषुचापपरिधान् दधतीं त्रिशूलं
चक्रं गदां नरशिरः स्वकरैर्भुशुण्डीम्।
सर्वाङ्गभूषणवृतां धृतचारुनेत्रां
कालीं प्रसन्नवदनां सततं नमामि।। १।।
या कालिका निखिलदेवमहर्षिपूज्या
भक्त्या सदा परमया हृदि तां निधाय।
कालीरहस्यमधुनाऽहमशोकगौडो-
ऽशोकेन्दु भूषणविभूषित मातनोमि।। २।।

—अशोक कुमार गौड

काली-यन्त्रम्
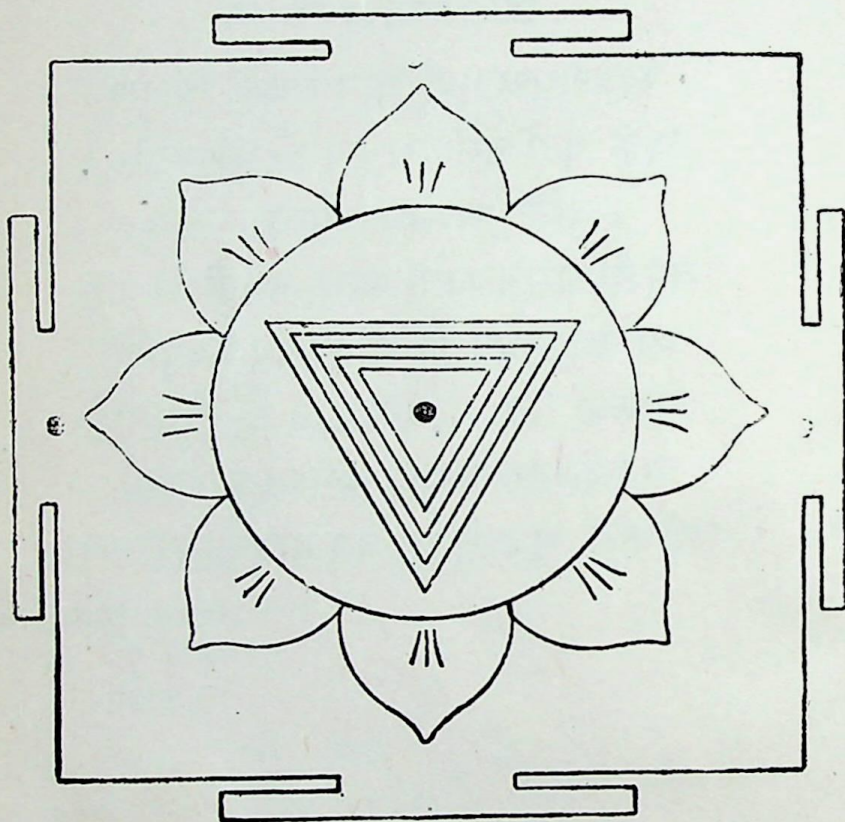
काली-प्रतिष्ठा-पद्धतिः

कर्ता प्रायश्चित्त[1] इत्यादि कर्मों के समापन के पश्चात् शुभमुहूर्त में तथा शुभदिन में स्नानादि कार्यों से निवृत्त होकर आचमन एवं प्राणायाम करने के पश्चात् शुभासन पर धर्मपत्नी सहित पूर्वाभिमुख या उत्तराभिमुख बैठकर अपने ऊपर और समस्त प्रतिष्ठा सामग्री के पवित्रीकरण हेतु इस श्लोक का उच्चारण करके जल छिड़कें–

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।

यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु। ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु। ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु।

कर्ता के दाहिने हाथ में अक्षत एवं पुष्प देकर आचार्य सहित सभी ब्राह्मण नीचे दिये गये मंत्रों और उसके आगे के पौणिक श्लोकों से स्वस्तिवाचन करें–

१. हरिः ॐ आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु व्विश्वतो ऽदब्धासोऽअपरीतास ऽउद्भिदः। देवा नो यथा सदमिद्वृधे ऽअसन्नप्प्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे॥

२. देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवानाॅं रातिरभि नो निवर्त्तताम्। देवानाॅं सख्यमुपसेदिमा व्वयं देवा नऽआयुः प्प्रतिरन्तु जीवसे॥

३. तान्पूर्व्वया निविदा हूमहे व्वयं भगंमित्रमदितिन्द-क्षमस्त्रिधम्। अर्यमणं व्वरुणॅं सोममश्विना सरस्वती नः सुभगामयस्करत्॥

१–धर्मकार्यं महत्कर्तुं यदीच्छेद्दशाभर्दिनैः। प्रायश्चित्तं यथावित्तं प्राक् कार्यं तेन शुद्धये॥
षडब्दं चतुरब्दं वा त्र्यब्दं द्व्यब्द तथैव वा। गो–हिरण्यादिदानं वा कृत्वा कर्म समारभेत्॥
(परशुरामकारिका)

४. तन्नो व्वातो मयोभुव्वातु भेषजन्तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः। तद् ग्रावाणः सोमसुतो मयोभुवस्तदश्विना-शृणुतं धिष्ण्या युवम्॥

५. तमीशानं जगतस्तस्थुषस्प्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे व्वयम्। पूषा नो यथा व्वेदसा मसद् वृधे रक्षितापायुरदब्धः स्वस्तये॥

६. स्वस्ति न ऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा व्विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्ताक्ष्यर्यो ऽअरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्प्पतिर्द्दधातु॥

७. पृषदश्श्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभं यावानो व्विदथेषु जग्मयः। अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो व्विश्वे नो देवा ऽअवसागमन्निह॥

८. भद्रङ्कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्य्यजत्राः। स्थिरै- रङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तनू-भिर्व्यशेमहि देवहितं य्यदायुः॥

९. शतमिन्नु शरदो ऽअन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम्। पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मद्ध्यारीरिषतायुर्गन्तोः॥

१०. अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्म्माता स पिता स पुत्रः। व्विश्वे देवा ऽअदितिः पञ्च जना ऽअदितिर्ज्जातमदितिर्ज्जनित्वम्॥

११. द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः पृथ्वी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। व्वनस्पतयः शान्तिर्व्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व्वꣳ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि॥

१२. यतो यतः समीहसे ततो नो ऽअभयं कुरु। शन्नः कुरु प्प्रजाब्भ्यो ऽभयं नः पशुब्भ्यः॥ ॐ शान्तिः सुशान्तिः सर्वारिष्टशान्तिर्भवतु॥

उपरोक्त कर्म के पश्चात् कर्ता के हाथ में दिए गये पुष्प एवं अक्षत को भूमि पर अथवा पूर्वनिर्मित गणेश एवं गौरी के ऊपर आचार्य समर्पित करवा दें, पुनः कर्ता के दायें हाथ में पुष्पाक्षत् देकर निम्न नाममन्त्रों का क्रम पूर्वक उच्चारण करते हुए कर्ता से ही पुष्प एवं अक्षत का प्रक्षेप करवाये या नाम मंत्र के अंत में प्रक्षेप करवायें–

ॐ लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः। ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः। ॐ वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः। ॐ शचीपुरन्दराभ्यां नमः। ॐ मातृपितृचरण कमलेभ्यो नमः। ॐ इष्टदेवताभ्यो नमः। ॐ ग्रामदेवताभ्यो नमः। ॐ कुल देवताभ्यो नमः। ॐ स्थानदेवताभ्यो नमः। ॐ एतत्कर्मप्रधानदेवताभ्यो नमः। ॐ गुरुचरणकमलेभ्यो नमः। ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। ॐ सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः। ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीसिद्धिबुद्धि-सहिताय ॐ महागणाधिपतयेनमः।

पश्चात् इन पौराणिक श्लोकों का आचार्य सहित सभी ब्राह्मण उच्चारण करे–

ॐ सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः॥ १ ॥
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि॥ २ ॥
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते॥ ३ ॥
शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥ ४ ॥

अभीप्सितार्थसिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः।
सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः॥ ५ ॥
वक्रतुण्ड! महाकाय! कोटिसूर्य समप्रभ!।
अविघ्नं कुरु मे देव! सर्वकार्येषु सर्वदा॥ ६ ॥
सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके!।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि! नमोऽस्तु ते॥ ७ ॥
सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममङ्गलम्।
येषां हृदिस्थो भगवान् मङ्गलायतनं हरिः॥ ८ ॥
तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव।
विद्याबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेऽङ्घ्रियुगं स्मरामि॥ ९ ॥
लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः।
येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः॥ १० ॥
यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम॥ ११ ॥
अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्॥ १२ ॥
स्मृते सकलकल्याणभाजनं यत्र जायते।
पुरुषं तमजं नित्यं व्रजामि शरणं हरिम्॥ १३ ॥
सर्वेष्वारम्भकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः।
देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशानजनार्दनाः॥ १४ ॥

विश्वेशं माधवं ढुण्ढिं दण्डपाणिं च भैरवम्।
वन्दे काशीं गुहां गङ्गां भवानीं मणिकर्णिकाम्॥ १५ ॥

संकल्प[1]

कर्ता के दायें हाथ में आचार्य जल, अक्षत, पुष्प, सुपारी तथा यथा शक्ति द्रव्य रखवाकर यह संकल्प करावें–

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्त्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयप्रहरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे आर्यावर्तैकदेशे (अविमुक्तवाराणसी क्षेत्रे महाश्मशाने आनन्दवने गौरीमुखे त्रिकण्टकविराजिते भागीरथ्याः पश्चिमेतीरे (इति काश्यामेव-विशेषः) विक्रमशके बौद्धावतारे अमुकनाम्नि संवत्सरे, अमुकायेन अमुकऋतौ, महामाङ्गल्यप्रदमासोत्तमे मासे, अमुकमासे, अमुकपक्षे, अमुकतिथौ, अमुकवासरे, अमुकनक्षत्रे, अमुकराशिस्थिते चन्द्रे अमुकराशिस्थिते सूर्ये अमुकराशिस्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथायथा-स्थानस्थितेषु सत्सु एवं ग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुक शर्माऽहं (वर्माः, गुप्तः, दासः) अस्यां कालीदेव्या मूर्त्तौ देवता सान्निध्यार्थं दीर्घायुर्लक्ष्मीसर्वकाम-समृध्यक्षय्य-सुखप्राप्तिकामं

१–सङ्कल्पमूलः कामो वै यज्ञाः सङ्कल्पसम्भवाः। व्रतानि यमधर्माश्च सर्वे सङ्कल्पजाः स्मृताः॥ (मनुस्मृति २।३)

अभीप्सितार्थसिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः।
सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः॥ ५ ॥
वक्रतुण्ड! महाकाय! कोटिसूर्य समप्रभ!।
अविघ्नं कुरु मे देव! सर्वकार्येषु सर्वदा॥ ६ ॥
सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके!।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि! नमोऽस्तु ते॥ ७ ॥
सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममङ्गलम्।
येषां हृदिस्थो भगवान् मङ्गलायतनं हरिः॥ ८ ॥
तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव।
विद्याबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेऽङ्घ्रियुगं स्मरामि ॥ ९ ॥
लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः।
येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः॥ १० ॥
यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम॥ ११ ॥
अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्॥ १२ ॥
स्मृते सकलकल्याणभाजनं यत्र जायते।
पुरुषं तमजं नित्यं व्रजामि शरणं हरिम्॥ १३ ॥
सर्वेष्वारम्भकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः।
देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशानजनार्दनाः॥ १४ ॥

विश्वेशं माधवं ढुण्ढिं दण्डपाणिं च भैरवम्।
वन्दे काशीं गुहां गङ्गां भवानीं मणिकर्णिकाम्॥ १५ ॥

संकल्प[1]

कर्ता के दायें हाथ में आचार्य जल, अक्षत, पुष्प, सुपारी तथा यथा शक्ति द्रव्य रखवाकर यह संकल्प करावें–

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्त्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयप्रार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे आर्यावर्तैकदेशे (अविमुक्तवाराणसी क्षेत्रे महाश्मशाने आनन्दवने गौरीमुखे त्रिकण्टकविराजिते भागीरथ्याः पश्चिमेतीरे (इति काश्यामेव-विशेषः) विक्रमशके बौद्धावतारे अमुकनाम्नि संवत्सरे, अमुकायेन अमुकऋतौ, महामाङ्गल्यप्रदमासोत्तमे मासे, अमुकमासे, अमुकपक्षे, अमुकतिथौ, अमुकवासरे, अमुकनक्षत्रे, अमुकराशिस्थिते चन्द्रे अमुकराशिस्थिते सूर्ये अमुकराशिस्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथायथा-स्थानस्थितेषु सत्सु एवं ग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुक शर्माऽहं (वर्माः, गुप्तः, दासः) अस्यां कालीदेव्या मूर्त्तौ देवता सान्निध्यार्थं दीर्घायुर्लक्ष्मीसर्वकाम-समृध्यक्षय्य-सुखप्राप्तिकामं

१-सङ्कल्पमूलः कामो वै यज्ञाः सङ्कल्पसम्भवाः। व्रतानि यमधर्मांश्च सर्वे सङ्कल्पजाः स्मृताः॥
(मनुस्मृति २।३)

प्राप्त्यर्थं श्रीकालीदेवतायाः चरप्रतिष्ठाकर्म करिष्ये। तदङ्गत्वेन स्वस्तिपुण्याहवाचनं, मातृकापूजनं, वसोर्धारापूजनम्, आयुष्यमंत्रजपं, नान्दीश्राद्धम्, आचार्यादिब्राह्मणानां वरणं च करिष्ये। तत्रादौ निर्विघ्नता सिद्ध्यर्थं गणेशाम्बिकापूजनं करिष्ये।

संकल्प के पूर्ण हो जाने के पश्चात् कर्ता जल को पृथ्वी पर छोड़ दे उसके पश्चात् आचार्य निम्न क्रम से आगे की क्रिया कर्ता से करावें–

गणेशाम्बिका पूजनम्

कर्ता के हाथ में अक्षत दे कर पूर्व निर्मित गणेश और अम्बिका का षोडशोपचार से पूजनारम्भ निम्न प्रकार से करवाये और सर्व ्रथम गणेश और अम्बिका का आवाहन निम्न श्लोक और वैदिक न्त्र द्वारा आचार्य करवाये–

गणेश–अम्बिका आवाहनम्

आवाहयामि गणनाथमुमासुतं तं
सिन्दूरशोणवपुषं गजवक्त्रशोभम्।
दुर्गां च तस्य जननीं हरिपृष्ठसंस्थां
भक्त्याऽह्वयामि सुतहार्दगलत्कुचाढ्याम्॥

ॐ गणानां त्वा गणपतिर्ठ० हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिर्ठ० हवामहे निधीनां त्वां निधिपतिर्ठ० हवामहे व्वसो मम। आहमजानि गर्ब्भधमा त्वमजासि गर्ब्भधम्॥

ॐ अम्बे ऽअम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्च्चन। ससस्त्यश्वक सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्॥

प्रतिष्ठापनम्–

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥

ॐ मनो जूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्पतिर्य्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं य्यज्ञठं० समिमं दधातु। व्विश्वेदेवास ऽइह मादयन्तामो ३ँ प्रतिष्ठ॥

अक्षतम्–

अलङ्कार समायुक्तं मुक्ता-मणि विभूषितम्।
दिव्य सिंहासनं चारू प्रीत्यर्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ पुरुष ऽएवेदठं० सर्व्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्। उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति॥

पाद्यम्–

गौरी सुत! नमस्तेऽस्तु शङ्कर प्रियकारक!।
भक्त्या पाद्यं मया दत्तं गृहाण प्रणतप्रिय!॥

ॐ एतावानस्य महिमातो ज्ज्यायाँश्च्च पूरुषः। पादोऽस्य व्विश्श्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतन्दिवि॥

अर्घ्यम्–

व्रतं उद्दिश्य विघ्नेशं गन्ध-पुष्पादि संयुतम्।
गृहाणार्घ्यं मयादत्तं सर्वसिद्धि प्रदायकम्॥

ॐ त्रिपादूर्ध्वऽउदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः। ततो व्विष्ष्वङ् व्यक्क्रामत्साशनानशने ऽअभि॥

आचमनम्--

सर्वतीर्थ समायुक्तं सुगन्धि निर्मलं जलम्।
आचम्यतां मया दत्तं गृहाण विघ्नेश्वर!॥

ॐ ततो व्विराडजायत व्विराजो ऽअधि पूरुषः। स जातो ऽअत्यरिच्च्यत पश्च्चाद्भूमिमथो पुरः॥

स्नानम्–

मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्।
तदिदं कल्पितं देव! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्ज्यम्। पशूँस्ताँश्च्चक्क्रे व्वायव्व्यानारण्ण्या ग्ग्राम्म्याश्च्च ये॥

आचार्य निम्न श्लोक एवं मन्त्र का उच्चारण करके गणेशाम्बिका को पञ्चामृत से अलग–अलग स्नान करवायें–

दुग्ध स्नानम्–

पयः पवित्रमतुलं यतः सुरभि–सम्भवा।
सुस्निग्धं मधुरं देव! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ पयः पृथिव्व्यां पय ऽओषधीषु पयो दिव्व्यन्तरिक्षे पयो धाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्॥

दधि स्नानम्–

पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्।
दध्यानीतं मया देव! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ दधिक्क्राव्ण्णो ऽअकारिषं जिष्णोरश्श्वस्य व्वाजिनः। सुरभि नो मुखा करत्प्रण ऽआयूꣳषि तारिषत्॥

घृत स्नानम्–

पयः सारं सुखं हृद्यं सर्वदेव प्रियं घृतम्।
स्नानार्थं ते प्रयच्छामि गृहाण परमेश्वर!॥

ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतम्म्वस्य धाम। अनुष्ष्वधमावह मादयस्व स्वाहाकृतं व्वृषभ वक्षि हव्व्यम्॥

मधुस्नानम्–

तरुपुष्प समुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु।
तेजः पुष्टिकरं दिब्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ मधुव्वाता ऽऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्न्नः सन्त्वोषधीः॥ १॥

मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवर्ठ० रजः। मधुद्यौरस्तु नः पिता॥ २॥

मधुमान्नो व्वनस्पतिर्म्मधुमाँ२ ऽअस्तु सूर्य्यः। माध्वीर्ग्गावो भवन्तु नः॥ ३॥

शर्करा स्नानम्–

ऐक्षवं सर्वभूतानां बल्लभं पार्वतीसुत!।
कषायं शुद्धमधुरं तेन स्नानं कुरुप्रभो!॥

अथवा

इक्षुसारसमुद्भुतां शर्करां पुष्टि कारिकाम्।
मालापहारिकां दिव्यां स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ अपार्ठ० रसमुद्व्रयसर्ठ० सूर्य्ये सन्तर्ठ० समाहितम्। अपार्ठ० रसस्य यो रसस्तम्वो गृह्णाम्युत्तममुपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्रायत्वा जुष्टतमम्॥

शुद्धोदक स्नानम्–

मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्।
तदिदं कल्पितं देव! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ शुद्धवालः सर्व्वशुद्धवालो मणिवालस्त ऽआश्विनाः श्येतः श्येताक्षो ऽरुणस्ते रुद्द्राय पशुपतये कर्ण्णा यामा ऽअवलिप्ता रौद्द्रा नभो रूपाः पार्ज्जन्याः॥

वस्त्रार्पणम्–

सर्वभूषाधिके सौम्ये लोकलज्जा निवारिणे।
मयोपपादिते तुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ युवा सुवासाः परिवीत आगात्सऽउश्रेयान्भवति जायमानः। तन्धीरासः कवयऽउन्नयन्ति स्वाद्ध्यो मनसा देवयन्तः॥

उपवस्त्रम्–

शीतवातोष्ण-संत्राणं लज्जायाः रक्षणं परम्।
देहालङ्करणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

ॐ सुजातोज्योतिषा सह शर्म्म व्वरूथमासदत्सवः। व्वासो ऽअग्ने व्विश्वरूपर्ठ० संव्व्ययस्वव्विभावसो॥

यज्ञोपवीतम्–

दत्तं मया सुमनसा वचसा करेण यद् ब्रह्मवर्च समयं परमं पवित्रम्।
यद्धर्म कर्म निलयं परमायुरेतद् यज्ञोपवीतमुररीकुरु हे गणेश!॥

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्रयं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।
उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर॥

गन्धम्–

गन्ध कर्पूर-संयुक्तं कुङ्कुमेन सुवासितम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ! प्रीत्यर्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ त्वां गन्धर्व्वा ऽअखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः।त्वामोषधे सोमो राजा व्विद्द्वान्यक्ष्मादमुच्यत॥

रक्तचन्दनम्–

रक्तचन्दन संमिश्रं पारिजात समुद्भवम्।
मयादत्तं गृहाणाशु चन्दनं गन्ध-संयुतम्॥

ॐ अठं० शुनाते अठं० शुः पृच्यतां परुषापरुः। गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो ऽअच्युतः॥

अक्षतम्–

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुंकुमाक्ताः सुशोभिताः।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर!॥

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रिया ऽअधूषत। अस्तोषत स्व-भानवो व्विप्प्रानविष्ठया मती योजान्न्विन्द्र ते हरी॥

पुष्पमाला–

पुष्पैर्नानाविधैः दिव्यैः कुमुदैरथ चम्पकैः।
पूजार्थं नीयते तुभ्यं पुष्पाणि प्रतिगृह्यताम्॥ १॥
माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो!।
मयाऽऽहृतानि पुष्पाणि गृहाण विघ्नेश्वर!॥ २॥

ॐ ओषधीः प्रतिमोदद्ध्वं पुष्प्पवतीः प्रसूवरीः। अश्वा ऽइव सजित्वरीर्व्वीरुधः पारयिष्णवः॥

दूर्वाम्–

दूर्वाङ्कुरान् सुहरितानमृतान् मङ्गलप्रदान्।
आनीतांस्त्व पूजार्थं गृहाण ग्रहनायक॥

ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ति परुषः परुषस्परि। एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्रेणशतेन च॥

सिन्दूरम्–

सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।
शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ सिन्धोरिवप्प्राद्ध्वने शुघनासोव्वात प्प्रमियः पतयन्ति यह्वा। घृतस्य धारा ऽअरुषो न व्वाजी काष्ठाभिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः॥

अबीर–गुलाल–

अबीरं च गुलालं च चोवा चन्दनमेव च।
अबीरेणार्चितो देव! अतः शान्ति प्रयच्छ मे॥

ॐ अहिरिवभोगैः पर्य्येति बाहुं ज्यायाहेतिम्परि बाधमानः। हस्तग्घ्नो व्विश्श्वा व्वयुनानि व्विद्द्वान्पुमान्पुमाठं॰स प्परिपातु व्विश्वतः॥

धूपम्–

वनस्पति रसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ धूरसि धूर्व्व धूर्व्वन्तं धूर्व्व तं य्योऽस्म्मान् धूर्व्वति तं धूर्व्वयं व्वयं धूर्व्वामः। देवानामसि व्वह्नितमठं॰ सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम्॥

दीपम्–

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।
दीपं गृहाण देवेश! त्रैलोक्यतिमिरापहम्॥

भक्तया दीपं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने।
त्राहि मां निरयाद् घोराद् दीपज्योतिर्नमोऽस्तुते॥

ॐ अग्निर्ज्ज्योतिर्ज्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्य्यो ज्योतिर्ज्ज्योतिः सूर्य्यः स्वाहा। अग्निर्व्वर्च्चो ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा सूर्य्योव्वर्च्चो ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा। ज्योतिः सूर्य्यः सूर्य्यो ज्योतिः स्वाहा॥

नैवेद्यम्–

अनेकस्वादु संयुक्तं नानाफल समन्वितम्।
मोदकं पायसं चैव गृहाण विघ्नेश्वर!॥ १॥
नैवेद्यं गृह्यतां देव भक्तिं मे ह्यचलां कुरु।
ईप्सितं मे वरं देहि परत्र च परां गतिम्॥ २॥
शर्कराखण्डखाद्यानि दधि-क्षीर-घृतानि च।
आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्॥ ३॥

ॐ नाभ्या ऽआसीदन्तरिक्षꣳ शीर्ष्णो द्यौः समवर्त्तत। पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथालोकाँ२ ऽअकल्पयन्॥

आचमनीय जलम्–

गणाधिप! नमस्तुभ्यं गौरीसुत गजानन!।
गृहाण आचमनीयं त्वं सर्वसिद्धि प्रदायकम्॥

ऋतुफलम्–

इदं फलं मया देव! स्थापितं पुरतस्तव।
तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि॥

ॐ या फलिनीर्या ऽअफला ऽअपुष्पा याश्च पुष्पिणीः। बृहस्पतिप्रसूतास्तानो मुञ्चन्त्वꣳ हसः॥

तामबूलम्–

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्।
एलादिचूर्ण संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

दक्षिणा:–

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

ॐ हिरण्ण्यगब्र्भः समवर्त्तताग्ग्रे भूतस्य जातः पतिरेक ऽआसीत्। स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मैं देवाय हविषा व्विधेम॥

विशेषार्घ्यम्–

रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष! रक्ष त्रैलोक्य रक्षक!।
भक्तानां भयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात्॥
द्वैमातुर कृपासिन्धो! षाण्मातुराग्रज प्रभो!।
वरदस्त्वं वरं देहि वाञ्छितं वाञ्छितार्थद!॥
अनेन सफलार्घेण फलदोऽस्तु सदा नम।

आरती–

चन्द्रादित्यौ च धरणी विद्युदग्निस्तथैव च।
त्वमेव सर्व ज्योतींषि आर्तिक्यं प्रतिगृह्यताम्॥ १॥
कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम्।
आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव॥ २॥

ॐ इदर्ठ० हविः प्रजननं मे ऽअस्तु दशवीरर्ठ० सर्व्वगणर्ठ० म्वस्तये। आत्मसनि प्प्रजासनि पशुसनि लोकसन्नयभयसनि।

अग्निः प्रजां बहुलां मे करोत्वन्नं पयो रेतो ऽअस्म्मासु धत्त। आ रात्त्रि पार्थिथवर्ठ० रजः पितुरप्प्रायि धामभिः। दिवः सदार्ठ०सि बृहती व्वितिष्ठुस ऽआत्त्वेषं वर्त्तते तमः॥

पुष्पांजलिम्–

नाना सुगन्धि पुष्पाणि यथा कालोद्भवानि च।
पुष्पाञ्जलिर्मया दत्तो गृहाण परमेश्वर!॥

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्प्रथमान्यासन्। ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साद्ध्याः सन्ति देवाः॥

ॐ गणानां त्वा गणपतिर्ठ० हवामहे प्प्रियाणां त्वा प्प्रियपतिर्ठ० हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिर्ठ० हवामहे व्वसो मम। आहमजानि गर्ब्भधमात्वमजासि गर्ब्भधम्॥

ॐ अम्बे ऽअम्बिके ऽअम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्श्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्॥

ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे। स मे कामान् कामकामाय मह्यं कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु। कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः। ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समुद्रपर्यन्ताया ऽएकराडिति तदप्प्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्या-ऽवसन् गृहे। आवीक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति।

ॐ व्विश्श्वतश्श्चक्षुरुत व्विश्श्वतोमुखो व्विश्श्वतोबाहुरुत व्विश्श्वतस्प्पात्। सं बाहुब्भ्यां धमति सम्पतत्त्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देव ऽएकः॥

प्रदक्षिणाम्–

यानि कानि च पापानि ज्ञाता ज्ञात कृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिणां पदे पदे॥
पदे पदे या परिपूजकेभ्यः सद्योऽश्वमेधादिफलं ददाति।
तां सर्वपापक्षयहेतुभूतां प्रदक्षिणां ते परितः करोमि॥

ॐ ये तीर्त्थानि प्प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः। तेषाठं॰ सहस्त्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि॥

प्रार्थनाः

ॐ विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय
लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय।
नागाननाय श्रुतियज्ञ विभूषिताय
गौरीसुताय गणनाथ! नमो नमस्ते॥ १॥

भक्तार्तिनाशनपराय गणेश्वराय
सर्वेश्वराय शुभदाय सुरेश्वराय।
विद्याधराय विकटाय च वामनाय
भक्तप्रसन्न वरदाय नमो नमस्ते॥ २॥

नमस्ते ब्रह्मरूपाय विष्णुरूपाय ते नमः।
नमस्ते रुद्ररूपाय करिरूपाय ते नमः॥ ३॥

विश्वरूपस्वरूपाय नमस्ते ब्रह्मचारिणे।
भक्तप्रियाय देवाय नमस्तुभ्यं विनायक!॥ ४॥

लम्बोदर नमस्तुभ्यं सततं मोदकप्रिय!
निर्विघ्नं कुरु मे देव! सर्वकार्येषु सर्वदा॥ ५॥

त्वां विघ्नशत्रुदलनेति च सुन्दरेति
भक्तप्रियेति शकलेति फलप्रदेति।
विद्याप्रदेत्यघहरेति च ये स्तुवन्ति
तेभ्यो गणेश वरदो भव नित्यमेव॥ ६॥

अनया पूजया श्री सिद्धि–बुद्धि सहित गणेशाम्बिके प्रीयेतां न मम।

कलश–स्थापनम्

आचार्य कुंकुमादि से पवित्र भूमि पर अष्टदल पद्म (कमल) का निर्माण कर कर्ता को भूमि स्पर्श निम्न श्लोक तथा वैदिक मंत्र के द्वारा करवायें–

ॐ पृथ्वि! त्वा धृता लोका देवि! त्वं विष्णुना धृता।
कलशाधारभूतं हि पवित्रं कुरू चासनम्॥

ॐ मही द्यौः पृथिवी च न ऽइमं य्यज्ञं मिमिक्षताम्। पिपृतान्नो भरीमभिः॥

आचार्य कर्ता से भूमि पर निम्न श्लोक तथा द्वारा सप्त धान्य छुड़वायें–

यवोऽसि धान्यराजस्त्वं सर्वोत्पत्तिकरः शुभः।
प्राणिनां जीवनोवायः कलशाधः क्षिपाम्यहम्॥

आचार्य धान्य पुञ्ज पर निम्न श्लोक द्वारा कर्ता से कलश स्थापन करवायें–

कलाकला हि देवानां दानवानां कलाकला।
सङ्गृह्य निर्मितो यस्मात् कलशस्तेन उच्यते!॥

आचार्य कलश में शुद्ध जल को कर्ता से निम्न श्लोक और मन्त्र का उच्चारण करते हुए भरवायें–

आपस्त्व मसि देवेश! ज्योतिषांपतिरव्यय!।
भूतानां जीवनोपायः कलशे पूरयाम्यहम्॥

ॐ व्वरुणस्योत्तम्भनमसि व्वरुणस्य स्कम्भसर्ज्जनी स्थो व्वरुणस्य ऽऋतसदन्यसि व्वरुणस्य ऽऋतसदनमसि व्वरुणस्य ऽऋतसदनमासीद॥

आचार्य निम्न श्लोक और मन्त्र का उच्चारण करते हुए कर्ता से कलश में गन्ध छुड़वायें–

गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टाङ्करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥ १॥
श्री खण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपनं सुगन्धाय कलशे संक्षिपाम्यहम्॥ २॥

ॐ त्वां गन्धर्व्वाऽअखनँस्त्वामिन्नद्रस्त्वां बृहस्प्पतिः। त्वामोषधे सोमो राजा व्विद्वान्यक्ष्मादमुच्यत॥

आचार्य कलश में सर्वौषधि निम्न श्लोक द्वारा कर्ता से छुड़वायें–

सर्वौषधयः सुगन्धाढ्या दिव्यवृष्टि समुद्भवा।
कलशाप्यायन मङ्गलाय क्षिपाम्यहम्॥

आचार्य कलश में दूर्वा निम्न श्लोक द्वारा कर्ता से छुड़वायें–

दूर्वे! ह्यमृत सम्पन्ने शतमूले शताङ्कुरे।
शतं मे हर पापानि शतमायुः विवर्धिनी॥

आचार्य कलश में पञ्चपल्लव निम्न श्लोक द्वारा कर्ता से छुड़वायें–

यज्ञीयवृक्ष सम्भूतान् पल्लवान् सरसाञ्छुमान्।
अलङ्काराय पञ्चैतान् कलशे संक्षिपाम्यहम्॥

आचार्य कलश में पञ्चरत्न निम्न श्लोक द्वारा कर्ता से छुड़वायें–

रत्नगर्भामवादूर्मी रत्नगर्भाढ्य भूधरा।
कलशोरत्नगर्भः स्यात् तस्माद्रत्नापहंक्षिपेत्॥

आचार्य निम्न श्लोक द्वारा कलश में पुष्प कर्ता से छुड़वायें–

इदं फलं मया सम्यक् प्रक्षिपेत् कलशे यतः।
तेनायं कलशः सम्यक् फलवानस्तु सर्वदा॥

आचार्य कलश में द्रव्यादि कर्ता से निम्न श्लोक द्वारा छुड़वायें–

हिरण्यगर्भ गर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्तपुण्यफलदं कलशे संक्षिपाम्यहम्॥

आचार्य कलश पर वस्त्र अथवा रक्तसूत्र निम्न श्लोक द्वारा कर्ता से चढ़वायें–

शरण्ये सर्वलोकानां लज्जाया रक्षणं परम्।
सुवेशधारि वस्त्रं हि कलशे वेष्टयाम्यहम्॥

आचार्य कलश पर पूर्णपात्र निम्न श्लोक द्वारा कर्ता से स्थापित करवायें–

धानपूर्ण इदं पात्रं स्थपितं कलशे यतः।
तेनायं कलशः पूर्णः पूर्णाः सन्तु मनोरथाः!॥

आचार्य पूर्णपात्र स्थापित करवाने के पश्चात् कर्ता से 'वरुण' का आवाहन निम्न श्लोक द्वारा करवायें–

मकरस्थ पाशहस्तमर्णवांपतिमीश्वरम्।
आवाह्ये प्रतीचीशं वरुणं यादस्त्रांपतिम्॥

अस्मिन् कलशे वरुणं साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकं आवाहयामि स्थापयामि भो वरुण! इहागच्छ इह तिष्ठ सुप्रतिष्ठितो भव।

आचार्य तीर्थों का आवाहन निम्न श्लोकों द्वारा कर्ता से करवाये और पञ्चोपचार अथवा षोडशोपचार से पूजन करवायें–

सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः।
आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः॥ १॥
कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले तस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥ २॥
कुक्षौ तु सागराः सप्त सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः॥ ३॥
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः।
अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा।
आयान्तु मम कार्यार्थं पापानां क्षयकारकाः॥ ४॥

आचार्य वरुण देव की प्रार्थना निम्न श्लोकों द्वारा कर्ता से करवायें–

देव-दानव-संवादे मथ्यमाने महोदधौ।
उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम्॥ १ ॥

त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः॥ २ ॥
शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः।
आदित्या वसवो रुद्राविश्वेदेवाः सपैतृकाः॥ ३ ॥
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः।
त्वत्प्रसादादिमं यज्ञं कर्तुमीहे जलोद्भव!।
सान्निध्यं कुरु मे देव! प्रसन्नो भव सर्वदा॥ ४॥

नमो नमस्ते स्फटिकप्रभाय
सुश्वेतहाराय सुमङ्गलाय।
सुपाशहस्ताय झषासनाय
जलाधिनाथाय नमो नमस्ते॥ ५ ॥

ॐ वरुणाय नमः, अनया पूजया वरुणाद्यावाहित देवताः प्रीयन्ताम्।

स्वस्तिपुण्याहवाचनम्

कर्ता पूजनीय ब्राह्मणों के हाथ में जल देते हुए कहें–

शिवा आपः सन्तु।

ब्राह्मण प्रत्युत्तर में कहें–सन्तु शिवा आपः।

कर्ता कहें–सौमनस्यमस्तु।

ब्राह्मण कहें–अस्तु सौमनस्यम्।

कर्ता कहें–अक्षताः पान्तु, गन्धाः पान्तु।

ब्राह्मण कहें–आयुष्यमस्तु।

कर्ता कहें–पुष्पाणि पान्तु।

ब्राह्मण कहें–श्रीरस्तु।

कर्ता कहें–ताम्बूलानि पान्तु।

ब्राह्मण कहें–ऐश्वर्यमस्तु।

कर्ता कहें–दक्षिणाः पान्तु।

ब्राह्मण कहें–आरोग्यमस्तु।

कर्ता ब्राह्मण से कहें–

पुष्टिस्तुष्टिः श्रीर्यशो विद्या विनयो बहुपुत्रं बहुधनं चास्तु। यं कृत्वा सर्ववेदक्रिया रम्भाः शोभना प्रवर्तन्ते तमह मोकारमादिं यं कृत्वा ऋग्यजुः सामाथर्वणाशीर्वचनं बहुऋषिमतं भवद्भिरनुज्ञातः पुण्यं-पुण्याहं वाचयिष्ये।

ब्राह्मण कहें–वाच्यताम्।

कर्ता पुनः कहें–व्रतनियम-तपः-स्वाध्याय क्रतुदमदा न विशिष्टानां सर्वेषां ब्राह्मणानां मनः समाधीयताम्।

ब्राह्मण कहें–समाहित मनसः स्मः।

कर्ता कहें–प्रसीदन्तु भवन्तः।

ब्राह्मण कहें–प्रसन्नाः स्मः।

तदनन्तर कर्ता को आचार्य घुटने मुड़वाकर बैठाये और कमलवत् हस्ताञ्जलि करवा कर जलपूर्ण कलश धारण करवाये और कर्ता के सम्मुख दो मृत्तिकापात्र अथवा ताम्रपात्र भूमि पर स्थापित करवाये (दाहिने और बायें) प्रथम दाहिने पात्र में थोड़ा-थोड़ा जल गिरवाते हुए निम्न वाक्यों का उच्चारण करें–

ॐ शान्तिरस्तु, ॐ पुष्टिरस्तु, ॐ वृद्धिरस्तु, ॐ ऋद्धिरस्तु, ॐ अविघ्नमस्तु, ॐ आयुष्यमस्तु, ॐ आरोग्यमस्तु,

ॐ शिवमस्तु, ॐ शिवं कर्मास्तु, ॐ कर्म समृद्धिरस्तु, ॐ पुत्र समृद्धिरस्तु, ॐ वेद समृद्धिरस्तु, ॐ शास्त्र समृद्धिरस्तु, ॐ धनधान्य समृद्धिरस्तु, ॐ इष्ट सम्पदस्तु, ॐ अरिष्टनिरसनमस्तु, ॐ यच्छ्रेयस्तदस्तु।

पश्चात् आचार्य द्वितीय बायें पात्र में कर्ता से निम्न वाक्योच्चारण द्वारा जल गिरवायें–

यत्पापमकल्याणं तद्दूरे प्रतिहतमस्तु।

उपरान्त आचार्य प्रथम दाहिने पात्र में कर्ता से निम्न वाक्योच्चारण द्वारा जल गिरवायें–

उत्तरोत्तरे कर्मण्यविघ्नमस्तु। उत्तरोत्तरमहरहरभिवृद्धिरस्तु। उत्तरोत्तराः क्रियाः शुभाः शोभनाः सम्पद्यन्ताम्। तिथिकरण-मुहूर्त-नक्षत्र-ग्रह-लग्नाधि-देवताः प्रीयन्ताम्। तिथिकरणे-सुमुहूर्ते-सुनक्षत्रे सुग्रहे-सुदैवते प्रीयन्ताम्। अग्निपुरोगा विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम्। इन्द्रपुरोगाः मरुद्गणाः प्रीयन्ताम्। माहेश्वरीपुरोगा मातरः प्रीयन्ताम्। वशिष्ठपुरोगा ऋषिगणाः प्रीयन्ताम्। अरुन्धती पुरोगाः एकपत्न्यः प्रीयन्ताम्। ब्रह्मपुरोगाः सर्वे वेदाः प्रीयन्ताम्। विष्णुपुरोगाः सर्वे देवाः प्रीयन्ताम्। ऋषयश्छन्दां स्याचार्या वेदा देवा यज्ञाश्च प्रीयन्ताम्। ब्रह्म च ब्राह्मणाश्च प्रीयन्ताम्। अम्बिका-सरस्वत्यौ प्रीयेताम्। श्रद्धामेधे प्रीयेताम्। दुर्गापाञ्चाल्यौ प्रीयेताम्। भगवती कात्यायनी प्रीयताम्। माहेश्वरी प्रीयताम्। भगवती ऋद्धिकरी प्रीयताम्।। भगवती वृद्धिकरी प्रीयताम्। भगवती पुष्टिकरी प्रीयताम्। भगवती तुष्टिकरी प्रीयताम्। भगवन्तौ

विघ्नविनायकौ प्रीयताम्। सर्वाः कुलदेवताः प्रीयन्ताम्। सर्वाः ग्रामदेवताः प्रीयन्ताम्। सर्वाः इष्टदेवताः प्रीयन्ताम्।

पश्चात् आचार्य प्रथम दाहिने पात्र में कर्ता से निम्न वाक्योच्चारण द्वारा जल गिरवायें–

हताश्च ब्रह्मद्विषः। हताश्च परिपन्थिनः। हताश्च विघ्नकर्तारः। शत्रवः पराभवं यान्तु। शाम्यन्तु घोराणि। शाम्यन्तु पापानि। शाम्यन्त्वीतयः।

तत्पश्चात् आचार्य प्रथम दाहिने पात्र में कर्ता से निम्न वाक्योच्चारण द्वारा जल गिरवाये–

शुभानि वर्द्धन्ताम्। शिवा आपः सन्तु। शिवा ऋतवः सन्तु। शिवा अग्नयः सन्तु। शिवा आहुतयः सन्तु। शिवा वनस्पतयः सन्तु। शिवा अतिथयः सन्तु। अहोरात्रे शिवे स्याताम्।

निकामे निकामे नः पर्जन्यो व्वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां। योगक्षेमो नः कल्पताम्।

शुक्राङ्गावारक बुध - बृहस्पति - शनैश्चर - राहु - केतु सोमादित्य-रूपाः सर्वे ग्रहाः प्रीयन्ताम्।

भगवान् नारायणः प्रीयन्ताम्। भगवान् पर्जन्यः प्रीयन्ताम्। भगवान् स्वामी महासेनः प्रीयन्ताम्।

पुरोनुवाक्या यत्पुण्यं तदस्तु। याज्यया यत्पुण्यं तदस्तु। वषट् कारेण यत्पुण्यं तदस्तु। प्रातः सूर्योदये यत्पुण्यं तदस्तु।

तत्पश्चात् आचार्य जलपूर्ण कलश (घट) को कर्ता से पृथ्वी पर रखवा दें और प्रथम दाहिने पात्र के जल से कर्ता तथा उसके परिवार के लोगों का अभिषेचन करें और द्वितीय बायें पात्र के जल को वहाँ से कहीं अन्यत्र ले जाकर गिरवा दें या कहीं रखवा दें।

कर्ता निम्न वाक्यों को ब्राह्मणों से कहें-

ॐ ब्राह्मं पुण्यमहर्यच्च सृष्ट्युत्पादनकारकम्।
वेदवृक्षोद्भवं पुण्यं तत्पुण्याहं ब्रुवन्तु नः॥

भो ब्राह्मणाः! मम सकुटुम्बस्य-सपरिवारस्य गृहे पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण तीन बार निम्न वाक्य कर्ता से कहें-

ॐ पुण्याहम्, ॐ पुण्याहम्, ॐ पुण्याहम्।

ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसाधियः। पुनन्तु विश्वाभूतानि जातवेदः पुनीहि मा॥

पश्चात् कर्ता निम्न वाक्य ब्राह्मणों से कहें-

ॐ पृथिव्यमुद्धृतायां यान्तु यत्कल्याणं पुराकृतम्।
ऋषिभिः सिद्धगन्धर्वैतत्कल्याणं ब्रुवन्तु नः॥

भो ब्राह्मणाः! मम सुकुम्बस्य-सपरिवारस्य गृहे पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण तीन बार निम्न वाक्य कर्ता से कहें-

ॐ कल्याणम्, ॐ कल्याणम्, ॐ कल्याणम्।

स्वयं आचार्य निम्न श्लोक व वाक्य का उच्चारण करते हुए कर्ता से कहवायें-

सागरस्य च या लक्ष्मीर्महाक्ष्म्यादिभिः कृता।
सम्पूर्णा सुप्रभावा च तामृद्धिं ब्रुवन्तु नः॥

भो ब्राह्मणाः! मम सकुटुम्बस्य-सपरिवारस्य कालीप्रतिष्ठाकर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु।

तत्पश्चात् ब्राह्मण प्रत्युत्तर में तीन बार निम्न वाक्य कहें–

ॐ कर्म ऋद्धयताम्, ॐ कर्म ऋद्धयताम्, ॐ कर्म ऋद्धयताम्।

तत्पश्चात् आचार्य निम्न श्लोक और वाक्य कर्ता से कहवायें–

स्वस्तिस्तु याविनाशाख्या पुण्य कल्याण वृद्धिदा।
विनायकप्रिया नित्यं तां च स्वस्तिं ब्रुवन्तु नः॥

भो ब्राह्मणाः! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य कालीप्रतिष्ठा-कर्मणः स्वस्तिं भवन्तो ब्रुवन्तु।

तत्पश्चात् ब्राह्मण प्रत्युत्तर में तीन बार निम्न वाक्य कहें–

ॐ स्वस्ति, ॐ स्वस्ति, ॐ स्वस्ति।

तत्पश्चात् आचार्य निम्न वाक्य और श्लोक कर्ता से कहवायें–

समुद्रमथनाज्जाता जगदानन्दकारिका।
हरिप्रिया च माङ्गल्या तां श्रियं च ब्रुवन्तु नः॥

भो ब्राह्मणाः! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य कालीप्रतिष्ठाकर्मणः श्रीरस्त्विति भवन्तो ब्रुवन्तु।

तत्पश्चात् ब्राह्मण प्रत्युत्तर में तीन बार निम्न वाक्य कहें–

ॐ अस्तु श्रीः, ॐ अस्तु श्रीः, ॐ अस्तु श्रीः।

कर्ता को आचार्य तिलक कर आशीर्वाद इन वेदमन्त्र और श्लोक द्वारा प्रदान करें–

ॐ स्वस्तिनऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्तिनस्ताक्ष्योऽअरिष्ट नेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु॥

श्रीर्वर्चस्व मायुष्यमारोग्यमाविधात् पवमानं महीयते।
धनं धान्यं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः॥

कर्ता से आचार्य निम्न संकल्प करवा के कर्ता की शक्ति के अनुसार ही ब्राह्मणों को दक्षिणा प्रदान करवायें-

ॐ अद्य पुण्याहवाचन साङ्गता सिद्ध्यर्थं पुण्याह वाचकेभ्यो नानानाम गोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्य इमां यथाशक्ति हिरण्य मूल्य द्रव्य दक्षिणां सम्प्रददे।

षोडशमातृका-पूजनम्

आचार्य लकड़ी के पीढ़े पर अथवा चौकी पर लाल वस्त्र बिछाकर सोलह कोष्ठों का निर्माण करे और प्रत्येक कोष्ठ में गोधूम या अक्षत पुञ्ज रख उनके ऊपर एक-एक सुपारी रखे और कर्ता से निम्न श्लोक का उच्चारण करवाये और अक्षत छुड़वायें-

ॐ गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया।
देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः॥
हृष्टिः पुष्टिस्तथा तुष्टिः आत्मनः कुलदेवताः।
गणेशेनाधिका ह्येता वृद्धौ पूज्याश्च षोडश॥

ॐ भूर्भुवः स्वः मातृकाभ्यो नमः, इहागच्छत इहतिष्ठत। ॐ गौर्यादि षोडशमातृकाभ्यो नमः॥

उपरोक्त गौर्यादिषोडशमातृकाओं का पूजन आचार्य पञ्चोपचार अथवा षोडशोपचार से कर्ता से करवाये और पूजन के पश्चात् कर्ता से निम्न प्रार्थना करवाकर अक्षत् छुड़वायें-

ॐ जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गौर्यादि षोडश मातृकाभ्यो नमः-अनया पूजया गौर्यादि षोडशमातरः प्रीयन्ताम्।

वसोर्धारा-पूजनम्

आचार्य लकड़ी के पीढ़े पर कर्ता से श्वेतवस्त्र बिछवा कर उसे रक्तसूत्र या कच्चे सूत से बँधवा दे और घृतयुक्त सिन्दूर से सात बिन्दियाँ अङ्कित करवा दें (बिन्दियाँ क्रमानुसार रहेंगी, ऊपर से नीचे तक) तथा कर्ता के हाथों में अक्षत् पुष्पादि देकर निम्न श्लोक द्वारा षोडशोपचार अथवा पञ्चपचार से पूजन करवायें–

श्रीश्च लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा पुष्टिः श्रद्धा सरस्वती।
माङ्गल्येषु प्रपूज्यन्ते सप्तैता घृतमातरः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सप्तघृत मातृकाभ्यो नमः, इहागच्छत इहतिष्ठत। ॐ सप्तघृतमातृकाभ्यो नमः।

तत्पश्चात् आचार्य निम्न श्लोकों द्वारा कर्ता से हाथ जुड़वाकर प्रार्थना करवाये और अक्षत् छुड़वायें–

या श्री स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः
पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः।
श्रद्धा सतां कुलजन प्रभवस्य लज्जा
तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम्॥ १॥

नमः सर्वहितार्थायै जगदाधार हेतेवे।
साष्टाङ्गोऽयं प्रणामस्तु प्रयत्नेन मया कृतः॥ २॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सप्तघृतमातृकाभ्यो नमः। अनया पूजया सप्तघृत मातरः प्रीयन्ताम्।

आयुष्यमन्त्र-जपः

कर्ता की आयु वृद्धि के निमित्त निम्न श्लोक और वेदमन्त्रों का पाठ आचार्य सहित सभी ब्राह्मण एकाग्रचित होकर करें–

ॐ यदायुष्यं चिरं देवाः सप्तकल्पान्तजीविषु।
ददुस्तेनायुषा युक्ता जीवेम शरदः शतम्॥ १ ॥
दीर्घा नागा नगा नद्योऽनन्ताः सप्तार्णवा दिशः।
अनन्तेनायुषा तेन जीवेम शरदः शतम्॥ २ ॥
सत्यानि पञ्चभूतानि विनाशरहितानि च।
अविनाश्यायुषा तद्वज्जीवेम शरदः शतम्॥ ३ ॥

ॐ आयुष्यं व्वर्च्चस्यर्ठ० रायस्पोषमौद्भिदम्। इदर्ठ० हिरण्यं व्वर्च्चस्व ज्जैत्रायाविशता दुमाम्॥ १ ॥

ॐ न तद्द्रक्षार्ठ०सि न पिशाचास्तरन्ति देवानामोजः प्प्रथमजर्ठ० ह्येतत्। यो बिभर्त्ति दाक्षायणः हिरण्यर्ठ० स देवेषु कृणुते दार्घमायु स मनुष्य्येषु कृणुते दीर्घमायुः॥ २॥

ॐ यदाबध्नन् दाक्षायणा हिरण्यर्ठ० शतानीकाय सुमनस्यमानाः। तन्नम ऽआबध्नामि शतशारदायायुष्मान् जरदष्ट्टिर्य्यथासम्॥ ३॥

नान्दी-श्राद्धम्

आचार्य पूर्व की तरफ विश्वेदेव के आसन स्थान पर कुशा उत्तराग्र रखे तथा तीन आसन दक्षिण पूर्वाग्र क्रमानुसार रखें। आसनों की दूरी अधिक न हो, केवल आसन एक दूसरे से आपस में सटे न रहें।

पश्चात् कर्ता से उन स्थापित आसनों पर आचार्य विश्वेदेव सहित उसके पितरों की पूजा निम्न प्रकार सव्य से ही आरम्भ करवायें, सर्वप्रथम आचार्य कर्ता के मस्तक तथा श्राद्धसामग्री पर पवित्रीकरण हेतु निम्न श्लोक द्वारा जल छिड़कवायें–

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु।

तत्पश्चात् आचार्य यव, कुश, जल द्वारा कर्ता से निम्न सङ्कल्प करवायें–

ॐ अद्यामुकगोत्राणां मातृ-पितामही-प्रपितामहीनां अमुकाऽमुकीदेवीनां नान्दीमुखानां तथा अमुकाऽमुक गोत्राणां पितृ-पितामह-प्रपितामहानां-अमुकामुक- गोत्राणां मातामह-प्रमातामह-वृद्ध-प्रमातामहीनां अमुकामुकशर्मणां सप्तनीकानां नान्दीमुखानां अमुकगोत्रस्याऽमुकप्रवरस्याऽमुकशर्मणः नान्दी-मुखश्राद्धकर्मणि सांकल्पिकेन श्राद्धमहं करिष्ये।

सङ्कल्प के पश्चात् आचार्य पादप्रक्षालनार्थ हेतु निम्न क्रमानुसार कर्ता से जल प्रदान करवायें–

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः। ॐ मातृ-पितामहिप्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादवनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः। ॐ पितृ-पितामह-प्रपितामहाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः। ॐ मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्व इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः।

पाद प्रक्षालन के पश्चात् कर्ता के पितरों के निमित्त आसन आचार्य निम्न क्रमानुसार प्रदान करवायें–

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इमे आसने वो नमः। मातृपितामहीप्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः ॐ भूर्भुवः स्व इमे आसने वो नमः। ॐ पितृ–पितामह–प्रपितामहाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इमे आसने वो नमः। ॐ मातामह–प्रमातामह–वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इमे आसने वो नमः।

कर्ता से पितरों के निमित्त जल, वस्त्र, यज्ञोपवीत, रोली, अक्षत्, पुष्प, धूप, नैवेद्य, ऋतुफल, ताम्बूल, लवङ्ग, इलायची, सुपारी तथा सुगन्धित इत्र आदि निम्न क्रमानुसार आचार्य प्रदान करवायें–

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः। ॐ मातृ–पितामही–प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः। ॐ पितृ–पितामहा–प्रपितामहाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।

ॐ मातामह–प्रमातामह–वृद्धाप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।

कर्ता से विश्वेदेव सहित पितरों के निमित्त भोजन निष्क्रय की दक्षिणा निम्न आचार्य क्रमानुसार प्रदान करवायें–

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं युग्म ब्राह्मणभोजन पर्याप्त आमान्न निष्क्रयभूतं द्रव्यं अमृत रूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः। ॐ मातृ–पितामही–

प्रपितामह्यः नान्दी मुख्यः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं युग्म ब्राह्मणभोजन पर्याप्त आमान्न निष्क्रयभूतं द्रव्यं अमृत रूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः। ॐ पितृ–पितामह–प्रपितामहाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं युग्म ब्राह्मणभोजन पर्याप्त आमान्न निष्क्रयभूतं द्रव्यं अमृत रूपेण सम्पद्यतां वृद्धिः। ॐ मातामह–प्रमातामह–वृद्ध प्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं आमान्न निष्क्रयभूतं द्रव्यं अमृत रूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।

कर्ता से निम्न क्रमानुसार दुग्ध सहित यवादि आचार्य प्रदान करवायें–

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम्।

ॐ मातृ–पितामही–प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः प्रीयन्ताम्।

ॐ पितृ–पितामहा–प्रपितामहाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम्।

ॐ प्रतामह–प्रमातामह–वृद्ध–प्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम्।

कर्ता से क्रमशः जल, पुष्प, अक्षतादि निम्न क्रमानुसार आचार्य प्रदान करवायें–

ॐ शिवा आपः सन्तु, ॐ सौमनस्यमस्तु, ॐ अक्षतं चाऽरिष्टं चाऽस्तु।

कर्ता से सभी पितरों के निमित्त दाहिने हाथ के अँगूठे की तरफ से निम्न वाक्य द्वारा आचार्य जलधारा अर्पण करवायें–

ॐ अघोराः पितरः सन्तु।

कर्ता से हाथ जुड़वाकर उसके पितरों की निम्न क्रमानुसार आचार्य वन्दना करवाये-

ॐ गोत्रन्नो वर्द्धतां दातारो नीऽभिवर्द्धन्तां वेदाः सन्ततिरेव च। श्रद्धा च नो मा व्यगमद् बहु देयं च नोऽस्तु।

अन्नं च नो बहु भवेत् अतिथींश्च लभेमहि। याचितारश्च नः सन्तु मा च याचिष्म कञ्चनः।

एताः सत्या आशिषः सन्तु।

पूजन स्थल पर उपस्थित आचार्य सहित सभी ब्राह्मण कर्ता को निम्न वाक्य द्वारा आशीर्वाद प्रदान करें-

सन्त्वेताः सत्या आशिषः।

कर्ता से विश्वेदेव सहित पितरों के निमित्त आँवला, मुनक्का, यव तथा आदी मूलादि अलग-अलग निम्न क्रमानुसार आचार्य वितरण करवाये-

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्यफलप्रतिष्ठासिद्धचर्थं द्राक्षा आमलक यव मूल निष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुं अहं उत्सृजे। ॐ मातृ-पितामही-प्रपितामह्यः नान्दी मुख्यः ॐ भूर्भुवः स्वः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फल प्रतिष्ठा सिद्ध्यर्थं द्राक्षा आमलक यव मूल निष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुं अहं उत्सृजे। ॐ मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फल प्रतिष्ठा सिद्ध्यर्थं द्राक्षा आमलक यव मूल निष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुं अहं उत्सृजे।

इस वैदिक मन्त्र का उच्चारण करें-

ॐ उपास्मै गायता नरः पवमानायेन्दवे। अभि देवाँ२॥ इयक्षते। ॐ इडामग्ने पुरुदर्ठ० सर्ठ० सनिङ्गोः शश्वत्तमर्ठ० हवमानाय साध। स्यान्नः सूनुस्तनयो व्विजावाग्ने सा ते सुमतिर्भूत्त्वस्मे॥

आचार्य तथा ब्राह्मणों से नान्दी श्राद्ध की सम्पन्नता हेतु कर्ता निम्न वाक्य का उच्चारण करते हुए पूछें–

अनेन किं नान्दी श्राद्धं सम्पन्नम्?

तत्पश्चात् आचार्य तथा अन्य उपस्थित ब्राह्मण कर्ता से आनन्द पूर्वक निम्न वाक्य कहें–**निश्चितं सुसम्पन्नम्।**

तत्पश्चात् कर्ता से विश्वेदेवा सहित पितरों का विसर्जन निम्न वेदमन्त्रों द्वारा आचार्य करवायें–

ॐ व्वाजेवाजेऽवत व्वाजिनो नो धनेषु व्विप्प्रा ऽअमृता ऽऋतज्ञाः। अस्य मद्ध्वः पिबत मादयद्ध्वं तृप्प्ता यात पथिभिर्द्देवयानैः॥ १॥

ॐ आ मा व्वाजस्य प्प्रसवो जगम्म्यादेमे द्यावापृथिवी व्विश्वरूपे। आ मा गन्तां पितरा मातरा चा मा सोमो ऽअमृतत्वेन गम्म्यात्॥ २॥

ॐ विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम्।

उपरोक्त विसर्जन कर्म के उपरान्त कर्ता निम्न वाक्य आचार्य एवं ब्राह्मणों से कहे–

अद्य मया आचरिते साङ्कल्पिक नान्दी श्राद्धे न्यूनातिरिक्तो यो विधिः स उपविष्ट ब्राह्मणानां वचनात् परिपूर्णोऽस्तु।

कर्ता द्वारा कहे गये वाक्यों का प्रत्युत्तर आचार्य और ब्राह्मण निम्न वाक्य द्वारा दें–**अस्तु परिपूर्णः।**

आचार्यादि ब्राह्मणानां वरणम्

कर्ता उत्तराभिमुख अथवा पूर्वाभिमुख शुद्ध आसन पर बैठ कर गन्ध–अक्षत् और पुष्पादि से [1]आचार्य का पूजन करें तथा निम्न सङ्कल्प द्वारा सर्वप्रथम[2] आचार्य का वरण[3] करें–

ॐ अद्य अमुक गोत्रोत्पन्नः अमुक प्रवरान्वितः अमुकनाम शर्माऽहं अमुक गोत्रोत्पन्नं अमुक प्रवरान्वितं शुक्लयजुर्वेदान्तर्गत-वाजसनेयमाध्यन्दिनीयशाखाध्यायिनं अमुकशर्माणं ब्राह्मणं अस्मिन् कालीप्रतिष्ठा कर्मणि एभिः वरण द्रव्यैः आचार्यत्वेन त्वां अहं वृणे।

कर्ता अपने हाथों को जोड़कर इस श्लोक द्वारा आचार्य की प्रार्थना करें–

आचार्यस्तु यथा स्वर्गे शक्रादीनां वृहस्पतिः।
तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन्नाचार्यो भव सुव्रत!॥

आचार्य वरण के उपरान्त ब्रह्मा का वरण कर्ता निम्न प्रकार से करें–

ब्रह्मावरण संकल्पः–

---

१. सर्वावयवसम्पूर्णो वेदमन्त्रविशारदः। पुराणवेत्ता तत्त्वज्ञो लोभ–मोहविवर्जितः॥
कृष्णसारमये देशे उत्पन्नश्च शुभाकृतिः। शौचाचारपरो नित्यं पाषण्डकुलनिःस्पृहः॥
समः शत्रौ च मित्रे च ब्रह्मोपेन्द्रहरप्रियः। ऊहापोहार्थतत्त्वज्ञो वास्तुशास्त्रस्य पारगः॥
आचार्यश्च भवेन्नित्यं सर्वदोषविवर्जितः। (मत्स्यपुराण २६५।५–५)

२. आचार्यं प्रथमं वृत्वा ब्रह्माणं वृणुयात्ततः। गणेशं ऋत्विजार्दीश्च पूजयेत्तु विधानतः॥
(रुद्रयामल)

३. वरणं नाम करिष्यमाणकर्मस्वरूपश्रावणपूर्वकं स्वयमप्रवृत्तानामाचार्यादिकर्मसु कर्तृत्वेनाभ्यर्थनम्।

ॐ अद्य अस्मिन् कालीप्रतिष्ठाकर्मणि एभिः वरण द्रव्यैः अमुकगोत्रं अमुक शर्माणं ब्राह्मणं त्वां अहं ब्रह्मत्वेन वृणे।

पश्चात् ब्रह्मा का वरण ग्रहण करने वाले ब्राह्मण को निम्न वाक्य कहना चाहिये–**वृतोऽस्मि।**

तत्पश्चात् कर्ता ब्रह्मा को हाथ जोड़कर निम्न श्लोक द्वारा प्रार्थना करें–

यथा चतुर्मुखो ब्रह्मा सर्वलोकपितामहः।
तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन् ब्रह्मा भव द्विजोत्तम!॥

कर्ता ऋत्विक् वरण इस संकल्प के द्वारा करे और गन्धाक्षत्–पुष्पादि ब्राह्मणों के हाथों में प्रदान कर दे–

ॐ अद्य अस्मिन् कालीप्रतिष्ठाकर्मणि एभिः वरण द्रव्यैः अमुक गोत्रं अमुक शर्माणं ब्राह्मणं ऋत्विक्त्वेन त्वां अहं वृणे।

उपरान्त ऋत्विक् वरण ग्रहणकर्ता ब्राह्मण इस वाक्य को कहें–**वृतोऽस्मि।**

भगवन् सर्वधर्मज्ञ! सर्वधर्मपरायण!।
वितते मम यज्ञेऽस्मिन् ऋत्विक् त्वं मे मखे भव॥ १ ॥

ॐ व्व्रतेन दीक्षामाप्पनोति दीक्षयाप्प्नोति दक्षिणाम्। दक्षिणा श्श्रद्धामाप्नोति श्श्रद्धया सत्त्यमाप्प्यते॥

ऋत्विक वरण के पश्चात् अन्य ब्राह्मणों का वरण पद के अनुसार करें। कर्ता ब्राह्मणों को दोनों हाथ जोड़कर प्रार्थना के मुद्रा में खड़ा हो जाये उस समय आचार्य एवं सभी वरण किये हुए ब्राह्मण निम्न श्लोकों का उच्चारण करें–

प्रार्थनाः–

अक्रोधना शौचपराः सततं ब्रह्मचारिणः।
ग्रहध्यानरताः नित्यं प्रसन्नमनसः सदा॥ १॥

अदुष्टभाषणाः सन्तु मा सन्तु परिनिन्दकाः।
ममाऽपि नियमा ह्येते भवन्तु भवतामपि॥ २॥
ऋत्विजश्च यथा पूर्वं शक्रादीनां मखेऽभवन्।
यूयं तथा मे भवत ऋत्विजो द्विजसत्तमाः॥ ३॥
अस्मिन् कर्मणि ये विप्राः वृता गुरुमुखादयः।
सावधानाः प्रकुर्वन्तु स्वं स्वं कर्म यथोदितम्॥ ४॥
अस्य यागस्य निष्पत्तौ भवन्तोऽभ्यर्थिता मया।
सुप्रसन्नैः प्रकर्तव्यं कर्मेदं विधिपूर्वकम्॥ ५॥
यथाविहितं कर्म कुरु (एकतन्त्रपक्षे–कुरुत)।
विप्रः यथाज्ञानं करवाणि (करवामः)॥ ६॥

आचार्य कालीदेवी की चरप्रतिष्ठा कर्म को कर्ता से प्रारम्भ करावें।

पक्ष में कुण्डमण्डप का निर्माण कर अथवा छायामण्डप बनाकर इन मंत्रों का उच्चारण करते हुए आचार्य उदुम्बर के पत्ते और दूर्वा के जलों से प्रोक्षण करें–

ॐ आपो हि ष्ट्ठा मयोभुवस्ता न ऽऊर्ज्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे॥

ॐ शं न इन्द्राग्नि भवता मवोभिः शं न इन्द्रा वरुणा रातहव्याः। शमिन्द्रासोमा सुविताय शं योः शं न इन्द्रा पूषणा वाजशातौ।

इन श्लोकों का उच्चारण करते हुए आचार्य प्रादेशान्त कर्म को कर्ता से करावें–

यदत्र संस्थितं भूतं स्थानमाश्रित्य सर्वदा।
स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु॥

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिता:।
ये भूता विघ्नकर्त्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचा: सर्वतोदिशम्।
सर्वेषामविरोधेन प्रतिष्ठाकर्म समारभे।।

प्रादेशान्त कर्म की समाप्ति के अनन्तर आचार्य निम्न क्रमानुसार विधिविधान से पञ्च गव्य बनावें, उसमें सर्वप्रथम आचार्य गायत्री मन्त्र पढ़कर गोमूत्र [1]'गन्धद्वारां' इस मन्त्र से गोबर, आप्यायस्व[2] इस मन्त्र से दूध, दधि क्राब्णो[3] इस मन्त्र से दधि [4]'घृतंमिमिक्षे' इस मंत्र से घृत, 'आपोहिष्ठा:'[5] इस मन्त्र से कुशोदक एक पात्र में लेकर 'प्रणव' का उच्चारण करते हुए यज्ञियकाष्ठ से मिलावे। तथा प्रणव मन्त्र द्वारा ही उसे अभिमन्त्रित भी करें।

तत्पश्चात् आचार्य इस मन्त्र का उच्चारण करते हुए पञ्चगव्य को दिशाओं में भूमि में और अन्तरिक्ष में कर्ता से छिड़कवायें–

ॐ आपो हि ष्ट्ठा मयो भुवस्ता न ऽऊर्ज्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे।।

---

१. गन्ध द्वारा दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। इश्वरीं सर्वभूतानां तामि हो पह्वये श्रियम्॥ [ऋ० परि० ११ म० ६]

२. आप्यायस्व समेतु ते विश्वत: सोम वृष्णसियम्। भवा वाजस्य संगथे। [ऋ० १।६। १।१६]

३. दधि क्राब्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिन:। सुरभि नो मुखा करत् प्रण आयू अतारिषत॥ [ऋ० ४।३६।६]

४. घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिधृते श्रितो घृत वस्य धाम।

अनुष्वधमावह मादयस्व स्वाहा कृतं वृषभ वक्षि हव्यम्। [शुक्लयजुर्वेद]

५. आपो हि ष्ठा मयोभुवस्तान ऽऊर्जे दधातन महे रणाय चक्षसे। [ऋ० १०।६।१]

कर्ता मूर्त्ति का निर्माण करने वाले शिल्पकार का आदर-सत्कार अर्थात् उसे द्रव्यादि से प्रसन्न करके उससे मूर्ति ले आवे।

पश्चात् इन दो मन्त्रों का उच्चारण करके आचार्य जलाधिवासकर्म को करावें–

ॐ अव ते हेलो वरुण नमोभि रव यज्ञेभिरीमहे हविर्भिः। क्षयन्न स्मभ्यमासुर प्रचेता राजन्नेनांसि शिश्रथः कृतानि॥

ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमं श्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवनागसो अदितये स्याम॥

कर्ता के दाहिने हाथ में जल-अक्षत देकर आचार्य निम्न सङ्कल्प उससे करावें–

देशकालौ सङ्कीर्त्य–कालीदेवी प्रीत्यर्थं अहं श्रीकालीचर प्रतिष्ठा कर्म करिष्ये।

सङ्कल्प के पश्चात् आचार्य यह प्रार्थना कर्ता से करवाये–

स्वागतं देवदेवशि विश्वरूप नमोस्तु ते।
श्रद्धे वत्वदधिष्ठाने शुद्धिकर्म सहस्व भो॥

भूतशुद्धिआदि करने के उपरान्त निम्नलिखित मातृकान्यास, पुरुषसूक्तन्यास इस प्रकार से करें–

मातृकान्यासः

१. ॐ अं नमः — तालुके
२. ॐ आं नमः — मुखे
३. ॐ इं नमः — दक्षिण नेत्रे
४. ॐ ईं नमः — वाम नेत्रे
५. ॐ उं नमः — दक्षिण श्रोत्रे

६.	ॐ ऊं नमः	वाम श्रोत्रे
७.	ॐ ॠं नमः	दक्षिण गंडे
८.	ॐ ॠं नमः	वाम गंडे
९.	ॐ लृं नमः	दक्षिण चिबुके
१०.	ॐ लृं नमः	वाम चिबुके
११.	ॐ एं नमः	उर्ध्व दशनेषु
१२.	ॐ ऐं नमः	अधोदशनेषु
१३.	ॐ ओं नमः	उर्ध्वोष्ठे
१४.	ॐ औं नमः	अध रोष्ठे
१५.	ॐ अं नमः	ललाटे
१६.	ॐ अः नमः	जिह्वायां
१७.	ॐ यं नमः	त्वचिरंचक्षुषोः
१८.	ॐ लं नमः	नासिकाय
१९.	ॐ वं नमः	दशनेषु
२०.	ॐ शं नमः	श्रोतयोः
२१.	ॐ षं नमः	उदरे
२२.	ॐ सं नमः	कटिदेशै
२३.	ॐ हं नमः	हृदये
२४.	ॐ क्षं नमः	नाभ्याम्
२५.	ॐ कं नमः	लिंङ्गे
२६.	ॐ पं फं बं भं मं नमः	दक्षिणबाहौ
२७.	ॐ तं थं दं धं नं नमः	वामबाहौ

२८. ॐ टं ठं डं ढं णं नमः दक्षिणजंघायाम्
२९. ॐ चं छं जं झं ञं नमः वामजंघायाम्
३०. ॐ कं खं गं घं ङं नमः सर्वाङ्गुलीय

॥ इति मातृकान्यासः॥

पुरुषसूक्तन्यासः

हरिः ॐसहस्त्रशीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात्।
स भूमिर्ठ० सर्वतस्पृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥ वामकरे॥
पुरुष ऽएवेदर्ठ० सर्व्वं य्यद्भूतं य्यच्च भाव्यम्।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति ॥ दक्षिणकरे ॥
एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः।
पादो ऽस्य व्विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ॥ वामपादे॥
त्रिपादूर्द्ध्व ऽउदैत्पुरुषः पादो ऽस्येहाभवत्पुनः।
ततो व्विष्वङ् व्यक्क्रामत्साशनानशने ऽअभि ॥ दक्षिणपादे॥
ततो व्विराड्जायत व्विराजो ऽअधि पूरूषः।
स जातो ऽअत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः ॥ वामजानौ॥
तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम्।
पशूँस्ताँश्च्चक्क्रे व्वायव्यानारण्ण्या ग्ग्राम्म्याश्च ये ॥ दक्षिणजानौ ॥
तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऽऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दार्ठ०सि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत ॥ वामकट्याम् ॥
तस्मादश्वाऽ अजायन्त ये के चोभदयातः।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जा ता ऽअजावयः॥ दक्षिण कट्याम्॥

तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन्पुरुषं जातमग्रतः।
तेन देवाऽ अयजन्त साध्याऽ ऋषयश्च ये ॥ नाभौ॥
यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्।
मुखं किमस्यासीत्किं बाहू किमरू पादा ऽउच्च्येते ॥ हृदये ॥
ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहूराजन्यः कृतः।
उरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यार्ठ०शूद्रो अजायत ॥ वामबाहौ ॥
चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्य्यो ऽअजायत।
श्रोत्त्राद्वायुश्च्च प्राणश्च्च मुखादग्निरजायत् ॥ दक्षिणबाहौ ॥।
नाभ्भ्या ऽआसीदन्तरिक्षर्ठ० शीष्ण्र्णो द्यौः समवर्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्त्रात्तथा लोकाँ ऽअकल्पयन् ॥ कण्ठे ॥
यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।
वसन्तोऽस्यासीदाज्य ग्रीष्मऽ इध्मः शरद्धविः ॥ मुखे ॥
सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः।
देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबघ्नन्पुरुषं पशुम् ॥ अक्ष्णोः ॥।
यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्व्वे साद्ध्याः सन्ति देवाः ॥ अस्त्राय फट्॥
ब्ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहूराजन्यः कृतः।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यार्ठ० शूद्रो अजायत ॥ हृदयायनमः ॥
चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्य्यो ऽअजायत।
श्श्रोत्त्राद्वायुश्च्च प्प्राणश्च्च मुखादग्निरजायत् ॥ शिर से स्वाहा ॥
नाब्भ्या ऽआसीदन्तरिक्षर्ठ० शीष्ण्र्णो द्यौः समवर्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्त्रात्तथा लोकाँ ऽअकल्पयन्॥ कवचाय हुम ॥

यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।
वसन्तोऽस्यासीदाज्य ग्रीष्मऽ इध्मः शरद्धविः ॥ नेत्र त्रयाय वौषट् ॥
सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः।
देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबघ्नन्पुरुष पशुम्॥ शिखायै वषट् ॥
यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्व्वे साद्धयाः सन्ति देवाः ॥ अस्त्रायफट् ॥

॥ इति पुरुषसूक्तन्यासः॥

इस प्रकार से कर्ता के द्वारा ही उसके शरीर पर उपरोक्त न्यासों को करवाने के उपरान्त काली देवी की मूर्ति में निम्न न्यासों को आचार्य करावें–

निवृत्यादि न्यासः

ॐ ह्रीं अं निवृत्यै नमः शिरसि न्यासामि।
ॐ ह्रीं आँ प्रतिष्ठायै नमः मुखे न्यासामि।
ॐ ह्रीं इं विद्यायै नमः दक्षिणनेत्रे न्यासामि।
ॐ ह्रीं ई शान्त्य नमः वामनेत्रे न्यासामि।
ॐ ह्रीं उं धुन्धिकायै नमः दक्षिणश्रोते न्यासामि।
ॐ ह्रीं ऊं दिपिकायै नमः वामश्रोते न्यासामि।
ॐ ह्रीं ऋं रेचिकायै नमः दक्षनासापुटे न्यासामि।
ॐ ह्रीं ऋं मोचिकायै नमः वामनासापुटे न्यासामि।
ॐ ह्रीं लृं सूक्ष्मायै नमः वामकपोले न्यासामि।
ॐ ह्रीं एं सूक्ष्मामृतायै नमः उर्ध्वदंतेषु न्यासामि।
ॐ ह्रीं ऐं ज्ञानामृतायै नमः अधोदंतेषु न्यासामि।

ॐ ह्रीं ओं सावित्र्यै नमः उर्ध्वोष्ठे न्यासामि।
ॐ ह्रीं औं व्यापिन्यै नमः अधरोष्ठे न्यासामि।
ॐ ह्रीं अं सुरूपायै नमः जिह्वायां न्यासामि।
ॐ ह्रीं अः अनंतायै नमः कण्ठे न्यासामि।
ॐ ह्रीं कं सृष्ठयै नमः दक्षबाहुमुले न्यासामि।
ॐ ह्रीं खं ऋध्यै नमः दक्षकर्पूरे न्यासामि।
ॐ ह्रीं गं स्मृत्यै नमः दक्ष मणिबन्धे न्यासामि।
ॐ ह्रीं घं मेघायै नमः दक्षकरांगुलिमूलेषु न्यासामि।
ॐ ह्रीं ङं घन्त्यै नमः दशाङ्गुल्यग्रेषु न्यासामि।
ॐ ह्रीं चं लक्ष्म्यै नमः वामबाहुमुले न्यासामि।
ॐ ह्रीं छं द्युत्यै नमः वाम कूपरे न्यासामि।
ॐ ह्रीं जं स्थिरायै नमः वाममणिवन्धे न्यासामि।
ॐ ह्रीं झं स्थित्ये नमः वामांगुलिमुले न्यासामि।
ॐ ह्रीं ञं सिध्यै नमः वामांगुल्यग्रेषु न्यासामि।
ॐ ह्रीं टं जरायै नमः दक्षपादमूले न्यासामि।
ॐ ह्रीं ठं पालिन्यै नमः दक्षजानुनि न्यासामि।
ॐ ह्रीं डं शान्त्यै नमः दक्षगुल्फे न्यासामि।
ॐ ह्रीं ढं ऐश्वर्यै नमः दक्षपादाङ्गुलीषु न्यासामि।
ॐ ह्रीं णं रत्यै नमः वामपादमूले न्यासामि।
ॐ ह्रीं तं कामिन्यै नमः वामपादमूले न्यासामि।
ॐ ह्रीं थं रदायै नमः वामजानुनि न्यासामि।
ॐ ह्रीं दं ह्लादिन्यै नमः वामगुल्फे न्यासामि, वामपादाङ्गुल्यग्रेषु न्यासामि।

ॐ ह्रीं धं प्रित्यै नमः वामपादाङ्गलिमूले न्यासामि।

ॐ ह्रीं नं दीर्घायै नमः वामांगुल्यग्रेषु न्यासामि।

ॐ ह्रीं पं तीक्ष्णायै नमः दक्षिणकुक्षौ न्यासामि।

ॐ ह्रीं फं सुप्त्यै नमः वामकुक्षौ न्यासामि।

ॐ ह्रीं बं अभयायै नमः पृष्ठे न्यासामि।

ॐ ह्रीं भं निद्रायै नमः नाभौ न्यासामि।

ॐ ह्रीं मं मात्रे नमः उदरे न्यासामि।

ॐ ह्रीं यं शुद्धायै नमः हृदि न्यासामि।

ॐ ह्रीं रं क्रोधिन्यै नमः कंठे न्यासामि।

ॐ ह्रीं लं कृपायै नमः ककुदि न्यासामि।

ॐ ह्रीं वं उत्कायै नमः स्कन्धयो न्यासामि।

ॐ ह्रीं शं मृत्यवे नमः दक्षिणकरे न्यासामि।

ॐ ह्रीं षं पीताय नमः वामकरे न्यासामि।

ॐ ह्रीं सं श्वेतायै नमः दक्षपादे न्यासामि।

ॐ ह्रीं हं अरुणायै नमः वामपादे न्यासामि।

ॐ ह्रीं त्रं असितायै नमः मूर्धापादान्तं न्यासामि।

ॐ ह्रीं क्षं सर्वसिद्धिगौर्यै नमः पादादिमूर्धान्तं न्यासामि।

वशिन्यादिन्यासः

ॐ अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं एं ऐं ओं औं अं अः क्लृं वासिनीवाग्देवतायै नमः ब्रह्मरन्ध्र न्यासामि ॥ १ ॥

ॐ कं खं गं घं ङं क्लीं ह्रीं कामेश्वरीवाग्देवतायै नमः ललाटे न्यासामि॥ २ ॥

ॐ चं छं जं झं ञं क्लीं मोदिनीवाग्देवतायै नमः भ्रूमध्ये न्यासामि॥ ३॥

ॐ टं ठं डं ढं णं ब्ल्यू विमलावाग्देवतायै नमः कण्ठे न्यासामि ॥ ४ ॥

ॐ तं थं दं धं नं क्लीं अरुणावाग्देवतायै नमः हृदि न्यासामि ॥ ५ ॥

ॐ पं फं बं भं मं हस्लब्ल्यूं जयनीवाग्देवतायै नमः नाभौ न्यासामि॥ ६ ॥

ॐ यं रं लं वं हस्पब्यूं सर्वेश्वरीवाग्देवतायै नमः आधारे न्यासामि ॥ ७॥

ॐ शं षं हं क्षं क्ष्मीं कौलिनीवाग्देवतायै नमः सर्वाङ्गे न्यासामि ॥ ८ ॥

ततः–'**खड्गाय से पादादि शिर पर्यन्त**' तक के सभी न्यासों को देवी की मूर्ति पर करें।

इसके पश्चात् काली देवी के मूल मन्त्र का न्यास आचार्य अथवा मन्त्र शास्त्री से जानकर ही कर्ता करे।

उपरान्त क्राँ इत्यादि दीर्घबीज से करांङ्गुली न्यास करने के पश्चात् कर्ता षडंग न्यास कर देवी का ध्यान करें। इसके पश्चात् आचार्य इस मंत्र का उच्चारण करके मूर्ति को बारह बार मिट्टी से शुद्ध करें–

ॐ स्योना पृथिवि नो भवान्नृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म्म सप्प्रथाः॥

पुनः मूर्ति के उत्तर भाग में स्थण्डिल का निर्माण कर उसके चारों कोनों पर चार कलश क्रम से स्थापित कर प्रथम कलश में सप्तमृतिका, द्वितीय कलश में क्षीरवृक्षत्वक, तृतीय कलश में यवशाली, चतुर्थ कलश में गन्ध पुष्प डालकर इस मंत्र से अलंकृत करें।

ॐ आपो हि ष्ट्ठा मयोभुवस्ता न ऽऊर्ज्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे॥

पश्चात् इस मंत्र का उच्चारण करते हुए आचार्य प्रथम कलश के जल से मूर्ति का अभिषेक कर्ता से करावें-

ॐ योवः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः उशतीरीव मातरः॥

पुनः इस मंत्र का उच्चारण करते हुए आचार्य द्वितीय कलश के जल से मूर्ति का अभिषेक कर्ता से करावें-

तस्माऽ अरङ्गमामवोयस्य क्षयाय जिन्वथ, आपो जनयथा च नः।

पश्चात् आचार्य पुनः इस मन्त्र का उच्चारण करते हुए कर्ता से तृतीय कलश के जल से मूर्ति का अभिषेक करावें-

शं नो देवीरभिष्टय ऽआपो भवन्तु पीतये। शं य्योरभिस्त्रवन्तु नः।

उपर्युक्त मन्त्र का उच्चारण करते हुए आचार्य चतुर्थ कलश के जल से मूर्ति का अभिषेक कर्ता से करावें।

अभिषेक के पश्चात् कर्ता घृत से काली देवी की मूर्ति का लेपन कर उस पर उबटन। (उद्वर्तन) लगावें।

उद्वर्तन द्रव्य यह है–

१–चंदन २–कर्पूर ३–इलायची ४–काचौर ५– उशीर ६–शतपत्र ७–भद्रमुस्ता।

इनको चूर्ण कर दुग्ध में मिलाकर निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए दस बार अभिमंत्रीत करें–

मन्त्रः–यां सां चंद्र चूड़ नीलकंठजटाजूटवृत्तसुशीता–मोदवाहना–रुतांगप्रत्यंगावय वधातुभ्यं एतन् मूर्तें निष्काश्यदाहताप शमयशमयसुशीतल त्वं कुरु–कुरु देहि–देहि यां सां स्वाहा॥

इस मंत्र का आचार्य उच्चारण करते हुए कर्ता से मूर्ति में उद्वर्तन लगवाएँ–

ॐ या ऽओषधीः पूर्व्वा जाता देवेब्भ्यस्त्रियुगं पुरा। मनै नु बब्भ्रूणामहर्ठ० शतं धामानि सप्त च॥

उपर्युक्त कर्म के समापन के पश्चात् आचार्य इस अनुवाक्य का उच्चारण कर्ता से करवाते हुए मूर्ति पर जलधारा गिरवाये–

पवमानः सुवर्जनः

आचार्य सर्वतोभद्रमण्डल के देवताओं की पूजा कर्ता से करवाएँ, पूजन के पश्चात्–नवीन वस्त्र से वेष्ठित करवाकर आचार्य पायस बलि भी कर्ता से प्रदान करवाएँ।

पायस बलि प्रदान करवाने के पश्चात् जलपूर्ण वस्त्रवेष्ठित तथा आम्रपल्लव विभूषित आठकलशों को आचार्य सहित प्रतिष्ठा स्थल पर उपस्थित सभी ब्राह्मण इन मन्त्रों का उच्चारण करते हुए कर्ता से ही आठों दिशाओं क्रम से स्थापित करवायें–

विशेष–कालीप्रतिष्ठा में 'अग्न्युत्तारण कर्म' कृता–कृत है।

१. हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्। सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

२. य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः। यस्य छायामृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

३. यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव। य ईशै अस्य द्विपदश्चतुष्पद कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

४. यस्येमे हिमवन्तो महित्वा यस्य समुद्रं रसया सहाहुः। यस्येमाः प्रदिशो यस्य बाहु कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

५. येन द्यौरुग्रा पृथिवी च हडहा येन स्वः स्तभितं येन नाकः। यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

६. यं क्रन्दसी अवसा तस्तमाने अभ्यैक्षेतां मनसा रेजमाने। यत्राधि सूर उदितो विभाति कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

७. आपो ह यद्वृहतीविंश्वमायन् गर्भ दधाना जनयन्तीरग्निम्। ततो देवानां समवर्ततासुरे कः कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

८. यश्चिदापो महिना पर्यपश्यद् दक्षं दधाना जनयन्तीर्यज्ञम्। यो देवेष्वधि देव एक आसीत् कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

आचार्य आठों दिशाओं में आठों कलशों को स्थापित करवाने के पश्चात् आठ दीपकों को प्रज्वलित कर समीप में रखे, पश्चात् किसी तेजस पात्र में घृत और सहद मिलाकर स्वर्ण (सोने) की शलाका से मूर्ति के दक्षिण नेत्र का उनमिलन आचार्य इस मन्त्र की उच्चारण करते हुए कर्ता के द्वारा करवायें–

ॐ चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणाग्ने॥

इस कर्म की समाप्ति के पश्चात् आचार्य निम्न मन्त्र का उच्चारण करें–

ॐ यजिष्ठं त्वा ववृमहे देवं देवत्रा होमारममर्त्यम्। अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम्॥

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे ऽश्विनोर्ब्राहुब्भ्यां पूष्णो हस्ताब्भ्याम्। सरस्वत्यै व्वाचो यन्तुर्यन्त्रिये दधामि बृहस्पतेष्ट्वा साम्म्राज्येनाभिषिञ्चाम्यसौ॥

तत्पश्चात् कर्ता शलाका को जल से स्वच्छ करे और मधु लेकर मूर्ति के वामनेत्र का उनमिलन करते समय आचार्य निम्न वैदिक मन्त्र का उच्चारण करें–

ॐ तच्चक्षु र्देवहितं पुरस्ताच्छुक्र मुच्चरत् पश्येम शरदः शतम् जीवेम शरदः शतर्ठ० श्रुणृयाम शरदः शतं प्रब्रवाम् शरदः शत मदीनः श्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्॥

इन तीनों मन्त्रों का उच्चारण आचार्य सहित सभी ब्राह्मण करें उस समय वहाँ ब्राह्मण एवं आचार्य के अतिरिक्त कोई भी सदस्य न हों–

१. ॐ सुपर्णा वाचमक्रतोप द्यव्या खरे कृष्णा इषिरा अनर्तिषुः। न्य ङ्गि यन्तुपरस्य निष्कृतं पुरु रेतो दधि रे सूर्यश्रितः।

२. ॐ उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम्। देवं देवत्रा सूर्य मगन्म ज्योति रुत्तमम्।

३. ॐ चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणाग्ने॥

इसके पश्चात् काली देवीको अन्नराशि प्रदान करे तथा दर्पण दिखावें। इसके साथ ही साथ मन्त्र घोष एवं वाद्य घोष करें तथा

इस मन्त्र का उच्चारण करके आचार्य तथा प्रतिष्ठा स्थल पर उपस्थित अन्य ब्राह्मण देवी को स्नान करावें–

ॐ शुद्धवालः सर्व्वशुद्धवालो मणिवालस्त ऽआश्विनाः श्येतः श्येताक्षोऽरुणास्ते रुद्द्राय पशुपतये कर्ण्णा यामा ऽअवलिप्ता रौद्द्रा नभोरूपाः पार्ज्जन्न्याः॥

पुनः इन मन्त्रों का उच्चारण करते हुए देवी को स्नान करावें–

ॐ समुद्रज्येष्ठाः सलिलस्य मध्यात् पुनाना यन्त्यनिविश मानाः। इन्द्रो या वज्री वृषभो रराद ता आपो देवीरिह मामवन्तु॥

ॐ या आपो दिव्या उतवा स्त्रवन्ति खनित्रिमा उतवा याः स्वयंजाः। समुद्रार्थां याः शुचयः पावकास्ता आपो देवीरिह मामवन्तु॥

ॐ या सां राजा वरुणो याति मध्ये सत्यानृते अवयश्यञ्जनानाम्। मधुश्चुतः शुचयो याः पावकास्ता आपो देवीरिह मामवन्तु॥

ॐ या सुराजा वरुणो यासु सोमो विश्वेदेवा यासर्ज मदन्ति। वेश्वानरो यास्वग्निः प्रविष्टन्ता आपो देवीरिह मामवन्तु॥

देवी के स्नान के पश्चात् इस मन्त्र का उच्चारण करते हुए आचार्य वस्त्रयुग्म आच्छादित करें–

ॐ अभि वस्त्रा सुवसनान्यषर्ं ऽभि धेनूः सुदुघाः पूयमानः। अभि चन्द्रा भर्तवे नो हिरण्या ऽभ्यश्वान् रथिनो देव सोम॥

आचार्य निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए कर्ता से मूर्ति के दाहिने हाथ में श्वेत ऊनी धागा बधवाएँ–

ॐ कनिक्रदज्जनुषं प्रब्रुवाण इयर्ति वाचमरितेव नावम्।
सुमङ्गलश्च शकुने भवासि मा त्वा का चिदमिभा विश्वाविदत्॥

काली की मूर्ति के दाहिने हाथ में श्वेत ऊनी धागा बधवाने के उपरान्त आचार्य व सभी ब्राह्मण पुरुषसूक्त के इन सोलह मन्त्रों का उच्चारण कर काली देवी की स्तुति कर्ता से करावें–

पुरुषसूक्तम्

हरिः ॐ सहस्त्रशीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात्।
स भूमिर्ठ० सर्वतः स्पृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥
पुरुष ऽएवेदर्ठ० सर्व्वं य्यद्भूतं यच्च भाव्यम्।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति॥
एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः।
पादोऽस्य व्विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि॥
त्रिपादूर्ध्व ऽउदैत्पुरुषः पादो ऽस्येहाभवत्पुनः।
ततो व्विष्वङ्व्यक्क्रामत्साशनानशने ऽअभि॥
ततो व्विराडजायत व्विराजो ऽअधि पुरुषः।
स जातो ऽअत्यरिच्यत पश्चाद् भूमिमथो पुरः॥
तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम्।
पशूँस्ताँश्चक्क्रेवायव्यानारण्णया ग्राम्म्याश्च ये॥
तस्माद्याज्ञात्सर्वहुत ऽऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दार्ठ० सि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्म्मा दजायत॥
तस्मादश्वा ऽअजायन्त ये के चोभयादतः।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता ऽअजावयः॥

तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन्पुरुषं जातमग्रतः।
तेन देवा ऽअयजन्त साद्ध्या ऽऋषयश्च ये॥
यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्।
मुखं किमस्यासीत्किं बाहू किमूरू पादा ऽउच्च्येते॥
ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहूराजन्यः कृतः।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यार्ठ० शूद्रो ऽअजायत।
चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्य्यो ऽअजायत।
श्रोत्राद्वायुश्च प्प्राणश्च मुखादग्निरजायत॥
नाब्भ्या ऽआसीदन्तरिक्षर्ठ० शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ ऽअकल्पयन्॥
यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।
वसन्तो ऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म ऽइध्मः शरद्धविः॥
सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः।
देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन्पुरुषं पशुम्॥
यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साद्ध्याः सन्ति देवाः॥

॥ इति पुरुषसूक्तस्तुतिः ॥

आचार्य भूतशुद्धि के लिए इन दो मंत्रों का उच्चारण करें–

१. ॐ विश्वकर्मन हविषा वावृधानः स्वयं यजस्य पृथिवीमुतद्याम्। मुह्यन्त्वन्ये अभितो जनास इहास्माकं मघवा सूरिरस्तु॥

२. ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक ऽआसीत्। स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

'इयममाप्रजाम्' भूतशुद्धि के लिए इस मंत्र का उच्चारण करें, उसके पचात् आचार्य इन मन्त्रों का उच्चारण स्वयं करते हुए कर्ता से भी करवायें।

कर्ता के हाथ को काली देवी के मस्तक पर रखवाकर इन मन्त्रों का उच्चारण आचार्य स्वयं तीन बार करें।

यतो बुध्यहं कारचितं पथिव्यप्ते काश शब्द स्पर्श रुपर सगंध–श्रोत्रत्वक् चक्षुजिह्वा घ्राणवाक् पाणिवाद पायूस्थ जीव प्रणाई हागव्य सुंखुं चिरं तिष्ठंतु स्वाहा।

ओं आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सः सो हं इति॥

प्राणप्रतिष्ठाविधिः

तदनन्तर काली देवी के शिर या हृदय को स्पर्श कर प्राण प्रतिष्ठा करें। सर्वप्रथम निम्न विनियोग को काली प्राण प्रतिष्ठा हेतु करें–

अस्य प्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्म–विष्णु–रुद्रा ऋषयः, ऋग्यजुः सामानि छन्दांसि। क्रियामयवपुःप्राणाख्या देवता। ॐ बीजम्। ह्रीं शक्तिः। क्रौं कीलकम् प्राणप्रतिष्ठायां विनियोगः।

उपरान्त ऋष्यादियों का निम्न क्रम से शिर–मुख–हृदय–नाभि गुह्यस्थान और पैरों में न्यास करें–

ॐ ब्रह्मविष्णुमहेश्वरेभ्यो ऋषिभ्यो नमः–शिर

ॐ ऋग्यजुः–सामछन्देभ्यो नमः–मुखे

ॐ चैतन्यरूपायै प्राणशक्त्यै देवतायै नमः–हृदि

ॐ आं बीजाय नमः–गुह्यस्थान

ॐ शक्त्यै नमः नमः–पादयो

ॐ कं खं गं घं ङं अं पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशात्मने ॐ हृदयाय नम–हृदय

ॐ चं छं जं झं ञं इं शब्दस्पर्शरूपरसगन्धात्मने ईं शिरसे स्वाहा–शिर।

ॐ टं ठं डं ढ़ णं उं श्रोत्रत्वक्चक्षुजिह्वाघ्राणात्मने ॐ शिखायै वषट् - शिखा।

ॐ तं थं दं धं नं एं वाक्पाणिपादपायूपस्थात्सने ऐं कवचाय हुम्–कवच।

ॐ पं फं बं भं मं ॐ वचनादानविहरणोत्सर्गानन्दात्मने ॐ नेत्रत्रयाय वौषट्–नेत्र।

ॐ अं यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं मनोबुद्ध्यहङ्कार चित्तात्मने अः अस्त्राय फट्-अस्त्र।

इस प्रकार से काली देवी की मूर्ति में न्यास करके, उपर्युक्त कर्म के पश्चात् देवी का स्पर्श कर जप करें–

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सः देवस्य प्राणाः इह प्राणाः।

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सः देवस्य जीव इह स्थितः।।

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सः देवस्य सर्वेन्द्रियाणि।

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सं: देवस्य वाङ्मनश्चक्षुः।

श्रोत्रजिह्वाघ्राणप्राण इहागत्यस्वस्तये सुख चिरंतिष्ठतु स्वाहा।

इसके पश्चात् आचार्य इस सूक्त का जप करके अर्चित हृदय में अंगुठे को देखकर जप करें–

ॐ ध्रुवा द्यौ र्ध्रुवा पृथिवी ध्रुवासः पर्वतो इमे। ध्रुवविश्वमिदं जगद् ध्रुवो राजा विशामयम्॥

ध्रुवं ते राजा वरुणो ध्रुवं देवो बृहस्पतिः। ध्रुवं त इन्द्रश्चाग्निश्च राष्ट्रं धारयतां ध्रुवम्॥

ध्रुवं ध्रुवेण हविषा ऽभि सोमं मृशामसि। अथो त इन्द्रः केवलीर्विशो बलिहृतस्करत्॥

इस श्लोक का उच्चारण करें–

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्यमर्चायै स्वाहेति यजुरीरयेत्॥

उपर्युक्त कर्म के पश्चात् यो प्रणव (ॐ) से रोककर देवी का सजीव ध्यान करे।

निम्न मन्त्र से देवी के शिर में हाथ रखकर देवी का ध्यान करें–

ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतो मुखो विश्वतो बाहुरुत विश्वतस्पात्। सम्बाहुभ्यान्धमति संपतत्रैर्द्यावा भूमी जनयन देवऽएकः॥

प्राण–प्रतिष्ठा के पश्चात् आचार्य पुरुषसूक्त के मन्त्रों का उच्चारण करते हुए काली देवी का उपस्थान करावें, उसके पश्चात् आचार्य कर्ता से इस प्रार्थना करवाये–

स्वागतं देव-देवेशि मद्भाग्यादिहागता।
धर्मार्थं काममोक्षार्थं स्थिरा भव शुभासने॥

पश्चात् आचार्य इस प्रतिष्ठा सूक्त करते हुए कर्ता से कालीदेवी के पैर से सिर तक स्पर्श करावें–

हरिः ॐ मनो जूतिर्ज्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्य्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्ठं य्यज्ञठं० समिमं दधातु विश्वेदेवास ऽइह मादयन्तामो ३ँ प्रतिष्ठ॥

प्रतिष्ठा सूक्त के उपरान्त आचार्य एवं सभी ब्राह्मण इन पाँच मन्त्रों का तीन बार उच्चारण करें–

१. इहवैधि माप च्योष्ठाः पर्वत इवाविचाचलिः। इन्द्र इवेह ध्रुवस्तिष्ठे ह राष्ट्र मु धारय ॥

२. इममिन्द्रो अदीधरद् ध्रुवं ध्रुवेण हविषा। तस्मै सोमो अधि ब्रवत् तस्मा उ ब्रह्मणस्पतिः॥

३. ध्रुवा द्यौ ध्रुवा पृथिवी ध्रुवासः पर्वतो इमे। ध्रुवविश्वमिदं जगद् ध्रुवो राजा विशामयम्।

४. ध्रुवं ते राजा वरुणो ध्रुवं देवो बृहस्पतिः। ध्रुवं त इन्द्रशचाग्निश्च राष्ट्रं धारयतां ध्रुवम्॥

५. ध्रुवं ध्रुवेण हविषा ऽभि सोमं मृशामसि। अथो त इन्द्रः केवलीर्विशो बलिहृतस्करत्॥

उपर्युक्त कर्म की समाप्ति के पश्चात् आचार्य निम्न पौराणिक श्लोकों एवं वैदिक मन्त्रों का उच्चारण करते हुए, क्रम से देवी को पाद्य–आचमन करावे तथा पञ्चामृत से स्नान करावें–

पाद्यम्–

सुवर्णपात्रेऽतितमां पवित्रे भागीरथीवारिमयोपनीतम्।
सुरासुरैरर्चितपादयुग्मे गृहाण पाद्यं विनिवेदितं ते॥

ॐ एतावान्स्य महिमातो ज्यायाँश्च पुरुषः। पादोऽस्य विश्वाभूतानि त्रिपादस्या मृतन्दिवी॥

आचमनम्–

समस्तदुःखौघविनाशदक्षे! सुगन्धितं फुल्लप्रशस्त पुष्पैः।
अये! गृहाणाचमनं सुवन्द्ये! निवेदनं भक्तियुतः करोमि॥

ॐ ततो व्विराडजायत व्विराजो ऽअधि पूरुषः। स जातो ऽअत्यरिच्च्यत पश्श्चाद् भूमिमथो पुरः॥

पञ्चामृत स्नानम्–

दुग्धेन दध्ना मधुना घृतेन संसाधितं शर्करया सुभक्त्या।
आलोकतृप्ति कृतलोक! देवि! पञ्चामृतं स्वीकुरु लोकपूज्ये!॥

ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्त्रोतसः। सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित्।

'इमा आपः शिवतमः', इस मन्त्र का उच्चारण करके आचार्य काली देवी का अभिषेक कर्ता से करावें।

आचार्य सहित सभी ब्राह्मण निम्न सूक्तों का क्रम से उच्चारण करते हुए कालीदेवी को स्नान करावें–

पुरुषसूक्तम्

हरिः ॐ सहस्त्रशीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात्।
स भूमिर्ठ० सर्वतः स्पृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥
पुरुष ऽएवेदर्ठ० सर्व्वं य्यद्भूतं यच्च भाव्व्यम्।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति॥
एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः।
पादोऽस्य व्विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि॥
त्रिपादूर्ध्व ऽउदैत्पुरुषः पादो ऽस्येहाभवत्पुनः।
ततो व्विष्वङ्व्यक्क्रामत्साशनानशने ऽअभि॥

ततो व्विराडजायत व्विराजो ऽअधि पुरुषः।
स जातो ऽअत्यरिच्यत पश्चाद् भूमिमथो पुरः॥
तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम्।
पशूँस्ताँश्चक्क्रेवायव्यानारण्ण्या ग्राम्म्याश्च ये॥
तस्माद्याज्ञात्सर्वहुत ऽऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दाꣳसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्म्मा दजायत॥
तस्मादश्वा ऽअजायन्त ये के चोभयादतः।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता ऽअजावयः॥
तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन्पुरुषं जातमग्रतः।
तेन देवा ऽअयजन्त साद्ध्या ऽऋषयश्च ये॥
यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्।
मुखं किमस्यासीत्किं बाहू किमूरू पादा ऽउच्च्येते॥
ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहूराजन्यः कृतः।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्याꣳशूद्रो ऽअजायत॥
चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्य्यो ऽअजायत।
श्रोत्राद्वायुश्च प्प्राणश्च मुखादग्निरजायत॥
नाब्भ्या ऽआसीदन्तरिक्षꣳशीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ ऽअकल्पयन्॥
यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।
वसन्तो ऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म ऽइध्मः शरद्धविः॥
सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः।
देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबघ्नन्पुरुषं पशुम्॥

यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साद्ध्याः सन्ति देवाः॥

श्रीसूक्तम्

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्त्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो मऽआवह॥ १॥
तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्॥ २॥
अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रबोधिनीम्।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्॥ ३॥
कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां, ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां, तामिहोपह्वये श्रियम्॥ ४॥
चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्।
तां पद्मिनीं शरणं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणोमि॥ ५॥
आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरा याश्च बाह्याऽअलक्ष्मीः॥ ६॥
उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह।
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे॥ ७॥
क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात्॥ ८॥
गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥ ९॥

मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः॥ १०॥
कर्दमेन प्रजा भूता मयि संभव कर्दम।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्॥ ११॥
आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले॥ १२॥
आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिंगलां पद्ममालिनीम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो मऽआवह॥ १३॥
आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो मऽआवह॥ १४॥
तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम॥ १५॥
यः शुचिः प्रयतोभूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्।
सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत्॥ १६॥

पावमानसूक्तम्

ॐ पुनन्तु मा पितरः सोम्यासः पुनन्तु मा पितामहाः पुनन्तु प्रपितामहाः पवित्रेण शतायुषा॥ पुनन्तु मा पितामहाः पुनन्तु प्रपितामहाः पवित्रेण शतायुषा व्विश्वमायुर्व्यश्नवै ॥ १ ॥

ॐ अग्नऽआयुर्ठ०षि पवस ऽआसुवोर्ज्जमिषं च नः॥ आरे बाधस्व दुच्छुनाम्॥ २॥

पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः॥ पुनन्तु व्विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा॥ ३॥

ॐ पवित्रेण पुनीहि मा शुक्क्रेण देव दीद्यत्॥ अग्ग्ने क्क्रत्वा क्क्रतुँर॥ ऽरनु ॥ ४॥

ॐ यत्ते पवित्त्रमर्च्चिष्यग्ने व्विततमन्तरा॥ ब्रह्म तेन पुनातु मा ॥ ५॥

ॐ पवमानः सो ऽअद्य नः पवित्रेण व्विचर्षणिः॥ यः पोता स पुनातु मा ॥ ६॥

ॐ उभाब्भ्यां देव सवितः पवित्रेण सवेन च॥ मां पुनीहि व्विश्वतः ॥ ७॥

ॐ व्वैश्वदेवी पुनती देव्व्यागाद्यस्यामिमा बह्वचस्तन्वो व्वीतपृष्ठाः॥ तया मदन्तः सधमादेषु व्वयर्ठ० स्याम पतयो रयीणाम्॥ ८॥

रक्षोघ्नसूक्तम्

ॐ कृणुष्व पाजः प्प्रसितिं न पृथ्वीं याहि राजे वामवाँर ॥ इभेन। तृष्वीमनु प्रसितिं द्द्रूणानोऽस्तासि व्विद्ध्य रक्षसस्तपिष्ठैः॥ १॥

ॐ तव ब्भ्रमासऽआशयापतन्त्यनुस्पृशधृषता शोशुचानः॥ तपूर्ठ० ष्यग्ग्रे जुह्वा पतङ्गानसन्दितो व्विसृज विष्व-गुल्क्काः ॥ २॥

ॐ प्रति स्पशो व्विसृज तूर्णितमो भवा पायुर्व्विशो ऽअस्या ऽअदब्धः। यो नो दूरेऽअघशर्ठ०सो यो ऽअन्त्यग्ग्ने माकिष्ट्टे व्यथिरादधर्षीत् ॥ ३॥

ॐ उदग्ने तिष्ठ प्प्रत्यातनुष्व न्न्यमित्राँर॥ ऽओषतात्तिग्ग्महेते॥ यो नो ऽअरातिर्ठ० समिधान चक्क्रे नीचा तं धक्ष्यतसं न शुष्क्कम्॥ ४॥

ॐ ऊद्ध्वों भव प्प्रतिविध्याध्यस्मदाविष्कृणुष्व दैव्या-न्न्यग्ने॥ अव स्थिरा तनुहि यातुजूनां जामिमजामिं प्प्रमृणीहि शत्रून्॥ अग्नेष्ट्वा तेजसा सादयामि॥ ५॥

सौम्यसूक्तम्

ॐ सोमो धेनुर्ठ० सोमोऽअर्व्वन्तमाशुर्ठ० सोमोव्वीरङ्क-र्म्मणयन्ददाति॥ सादन्यं व्विदुत्थ्यर्ठ०सभेयम्पितृश्श्र-वणं य्योददाशदस्म्मै॥ १॥

ॐ त्वमिमाऽऔषधीः सोमविश्वास्त्वमपोऽअजनयस्त्वङ्गार्ठ०॥ त्वमाततन्थोर्व्वन्तरिक्षन्त्वं ज्योतिषाव्वितमो ववर्त्थ॥ २॥

ॐ देवेननोमनसा देवसोमरायो भागः सहसावन्नभियुद्ध्य॥ मात्त्वातनदीशिषेव्वीर्य्यस्योभयेब्भ्यःप्प्रचिकित्त्सागविष्ठौ॥ ३॥

ॐ अष्टौ व्व्यख्यत्त्ककुभः पृथिव्व्यास्त्रीधन्न्व्यो जनासप्तसिंधून्॥ हिरण्याक्षःसविता देवऽआगाद्दधद्रत्त्नादाशुषे व्वार्य्याणि॥ ४॥

ॐ हिरण्यपाणिः सविताव्विचर्षणिरुभे द्यावापृथिवी-ऽअन्तरीयते॥ अपामीवाम्बाधते व्वेतिसूर्य्यमभिकृष्णेन रजसाद्यामृणोति॥ ५॥

ॐ हिरण्यहस्तोऽअसुरः सुनीथः सुमृढीकः स्ववायात्त्वर्व्वाङ्। अपसे धन्नसोयातुधानानस्थाद्देवः प्प्रतिदोषङ्गृणानः॥ ६॥

रात्रिसूक्तम्

ॐ रात्रीव्यख्ययदायुतीपुरुत्रादेव्य क्षाभिः। विश्वा-अधिश्रियोधित॥ १॥

ॐ ओर्वप्राअमर्त्यानिवतोदेव्यु द्वतः। ज्योतिषाबाध-तेतमः॥ २ ॥

ॐ निरुस्वसारमस्कृतोषसंदेव्यायती।अपेदुहासतेतमः॥ ३॥

ॐ सानोअद्ययस्यावयं नितेयामन्नविक्ष्महि। वृक्षेनवसतिं वयं॥ ४॥

ॐ निग्रामासोअविक्षतनिपद्वन्तोनिपक्षिणः। निश्येना-सश्चिदर्थिनः॥ ५॥

ॐ य़ावयावृक्यं वृकं यवयस्तनेमूर्म्ये।अथानः सुतराभव॥ ६॥

ॐ उपमापेपिशत्तमः कृष्णव्यक्तमस्थित। उपऋृणे-वयातय॥ ७॥

ॐ उपतेगाइवाकरंवृणीष्वदुहितार्दिवः। रात्रिस्तो मंन-जिग्युषे॥ ८॥

रौद्रसूक्तम्

ॐ इमारुद्रायतवसेकर्पीर्द्देनक्षयद्वी रायप्रभरामहेमतीः। यथाशमसद्विपदेचतुष्पदेविश्वंपुष्टग्रामेऽअस्मिन्ननातुरम्॥ १॥

ॐ मृलानोरुद्रोतनोमयस्कृधिक्षयद्वीरायनमसाविधेमते।यच्छं चयोश्चमनुरायजेपितातदश्यामतवरुद्रप्रणीतिषु॥ २ ॥

ॐ अश्यामतेसुमतिं देवयज्ज्ययाक्षयद्वीरस्यतवरुद्रमीढः। सुम्नायं निद्विशोऽअस्माक माचरारिष्टवीराजुहवामतेहविः॥ ३ ॥

ॐ त्वेषं वयं रुद्रं यज्ञसाधवं कुंकविमवसेनिह्वयामहे। आरेअस्मद्दैव्यं हेलोअस्यसुमतिद्वयमस्यावृणी महे॥ ४ ॥

ॐ दिवोवराहमरुषंकपार्दिनत्वेषंरूपंनमसानिह्वयामहे। हस्तेबिभ्रद्भेषजावार्याणिशर्मवर्मच्छर्दिरस्मभ्यंयंसत्॥ ५ ॥

ॐ इदं पित्रेमरुता मुच्यते वचः स्वादोः स्वादीयोरुद्रायवर्धनम्। रास्वाचनोऽमृतमर्त भोजनं त्मनेतोकायतनयायमृल॥ ६॥

ॐ मानोमहान्तमुतमानोऽर्भकंमा नऽउक्षन्तमुतमानऽउक्षितम्। मानोवधीः पितरंमोतमातरंमानः प्रियास्तन्वोरुद्ररीरिषः॥ ७॥

ॐ मानस्तोकेतनयेमानआयोमानो गोषुमानो अश्वेषुरीरिषः। वीरान्मानोरुद्रभाभितोवधीर्हविष्मं तः सदमित्त्वाहवामहे॥ ८॥

ॐ उपतेस्तोमान्पशुपाइवाकरंरास्वापितर्मरुतांसुम्नमस्मे। भद्राहिते सुमतिर्मृलयत्तमाथा वयमवइत्तेवृणीमहे॥ ९॥

ॐ आरेतेगोघ्नमुतपूरुषघ्नंक्षयद्वीरायसुम्नमस्मेतेऽअस्तु॥ मृलाचनोअधिचब्रूहिदेवाधाचनः शर्मयच्छद्विबर्हाः॥ १०॥

ॐ अवोचामनमोऽअस्माअवस्यवः शृणोतुनोहवं रुद्रो मरुत्वान्। तन्नोमित्रोवरुणोमामहंतामदितिः सिन्धुः पृथिवी-उतद्यौः॥ ११॥

इसके पश्चात् आचार्य निम्न पौराणिक श्लोकों से काली देवी की विधिवत पूजा कर्ता से करावें–

ध्यानम्–

श्मशानमध्ये कुणपाधिरूढां दिगम्बरां नीलरुचित्रिनेत्राम्।
चतुर्भुजां भीषणाहासयुक्तां कालीं स्वकीये हृदि चिन्तयामि॥

आवाहनम्–

आधारभूते जगतोऽखिलस्य समस्तदेवासुर पूजनीये।
आवाहनं ते प्रकरोमि मातः! दयायुता मे भव सम्मुखीना॥

आसनम्–

प्रतप्तृकार्तस्वरनिर्मितं यत् प्रोढोल्लसद्रत्नगणैः सुरम्यम्।
दैत्यौघनाशाय प्रचण्डरूपे! सनाथ्यतामासनमेत्य देवि!॥

पाद्यम्–

सुवर्णपात्रेऽतितमां पवित्रे भागीरथीवारिमयोपनीतम्।
सुरासुरैरर्चितपादयुग्मे गृहाणपाद्यं विनिवेदितं ते॥

अर्घ्यम्–

दयार्दचिते मम हस्तमध्ये स्थितं पवित्रं धनसारयुक्तम्।
प्रफुल्लमल्लीकुसुमैः सुगन्धि गृहाण कल्याणि! मदीयमर्घ्यम्॥

आचमनम्–

समस्तदुःखौघविनाशदक्षे! सुगन्धितं फुल्लप्रशस्तपुष्पैः।
अये! गृहाणाचमनं सुवन्द्ये! निवेदनं भक्तियुतः करोमि॥

पञ्चामृतम्–

दुग्धेन दध्या मधुना घृतेन संसाधितं शर्करया सुभक्त्या।
आलोकतृप्ती कृतलोक! देवि! पञ्चामृतं स्वीकुरु लोकपूज्ये!॥

मधुपर्कम्–

कर्पूरसम्पर्कसुगन्धरम्यं सुवर्णपात्रे निहितं सुभक्तया।
मयोपनीतं मधुपर्कमेतं श्रमापनोदाय गृहाणा मातः॥

स्नानम्–

कर्पूर–काश्मीरजपिश्रितेन जलेन शुद्धेन सुशीतलेन।
स्वर्गापवर्गस्य फलप्रदाढ्ये स्नानं कुरू त्वं जगदेकधन्ये!॥

वस्त्रम्–

सुरञ्जितं कुङ्कुमरञ्जनेन सुवासितं द्राक् पटवासचूर्णैः।
कौशेयकं कल्मषनाशदक्षे ! गृहाण वस्त्रं विनिवेदितं ते॥

गन्धम्–

लोकेशलोकेशयमध्यवर्ति सुरासुरस्वान्तविनोदकारि।
सुगन्धद्रव्यं विनिर्विदितं ते गृहाणा कल्याणिनि बालकस्य॥

उपवस्त्रम्–

तिग्मांशुरश्मिप्रकरोपमानां सुकोमलां देवगणैः सुपूज्ये।
कल्याणि पूतामुपवस्त्रमेतदुरीकुरु त्वं विनिवेदितं ते॥

कुङ्कुमम्–

प्रत्यूषमार्तण्डमयूखतुल्यं सुगन्धयुक्तं मृगनाभिचूर्णैः।
माणिक्यापात्रस्थितमञ्जुकान्तिं त्रयीमये! देवि! गृहाण कुङ्कुमम्॥

पुष्पम्–

प्रफुल्लरक्तोत्पलमल्लिकुन्दशेफालिकामालतिकेतकीभिः।
भक्तया प्रसूनस्य कदम्बकैस्त्वामभ्यर्चये स्वीकुरु दृष्टिपातैः॥

धूपम्–

गोशीर्षकस्तूरीं सिताभ्रचूर्णैः विमिश्रितं मानससौख्यदं च।
अयेऽम्बिके सत्वरजस्तमोमयि! गृहाण धूपं विनिवेदितं मे॥

दीपम्–

मातः! स्फुरद्विर्तियुतं घृतेनपूर्ण तमस्तोमविनाशनं च।
भत्यार्पितं काञ्चनदीपमेनमङ्गी कुरु त्वं करुणार्द्रचित्ते॥

नैवेद्यम्–

सम्यक् तया स्थापित मादरेणा नानारसास्वादयुतं षुपक्वम्।
कल्याणि! पापक्षयकारिणी त्वं नैवेद्यमङ्गीकुरु देवपूज्ये!॥

अन्नं चतुर्विधं स्वादु-रसैः षड्भिः समन्वितम्।
नैवेद्यं गृह्यतां देवि! भक्तिं मे ह्यचलां कुरु॥

ताम्बूलम्–

एलालवङ्गक्रमुकादिपूर्णां सुगन्धितां वन्दनवारिणा च।
ताम्बूलवल्ली–दलवीटिकां मे गृहाण मातर्विनिवेदितां मे॥

दक्षिणाम्–

राक्षसौघजयचण्डचरित्रे! कि ददामि निखिलं तव वस्तु।
भक्तिभावयुतदत्तसुवर्णदक्षिणां सफलयस्व तथापि॥

नीराजनाम्–

सुवर्णपात्रस्थित चन्द्रखण्डैर्नीराजनां भक्तियुतः करोमि।
कारुण्यपूर्ण! जगदेकवन्द्ये! विधेहि दृष्ट्यां सफलां सुपूज्ये!॥

प्रदक्षिणा–

अयेऽम्बिके पापविनाशदक्षां नानाविधां पुण्यफलप्रदां च।
कृपाकटाक्षैः सफलां कुरुष्व प्रदक्षिणां ते वितनोम देवि!॥

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिण पदे पदे॥

पुष्पाञ्जलिः–

पत्रयीमये कल्मषपुञ्जहन्त्रि! प्रचण्डरूपे सुरसार्थपूज्ये!।
बद्धाञ्जलिस्तावकापादयुग्मे पुष्पाञ्जलिं देवि! समर्पयामि॥

स्तवनम्–

मनो मृगो धावति सर्वदा मुधा विचित्रसंसारमरीचिकां प्रति।
अयेऽधुना किं स्वदया सरोवरं प्रकाश्य तस्मान्न निवर्तयिष्यसि॥

॥ कालीपूजा समाप्तः॥

आचार्य इस मन्त्र का उच्चारण कर कर्ता से अग्नि का पूजन करावे–

ॐ अग्ने नय सुपथा राये ऽअस्मान् विश्वानि देव व्वयुनानि व्विद्वान्। युयोध्यस्म्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम ऽउक्तिं व्विधेम।।

पश्चात् किसी बड़े पात्र से तिलों को ग्रहण कर दाहिने हाथ से घी भर कर स्रुव को ले दाहिने पैर की जांघ को मोड़ कर ब्रह्मा से स्पर्श कर इस मन्त्र से स्विष्टकृत संज्ञक आहुति कर्ता से प्रदान करावें तथा स्रुवे में बचे घृत का त्याग आचार्य प्रोक्षणी पात्र में कर्ता से ही करावें–

ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा। इदमग्नये स्विष्टकृते न मम।।

पश्चात्–अग्निदेव के दक्षिण अग्नि के पीछे पश्चिम देश में पूर्वाभिमुख बैठकर स्रुव के द्वारा कुण्ड से भस्म लेकर निम्न नाम मंत्रों से कर्ता क्रमानुसार ललाट्–गले–दाहिने बाहु और हृदय में भस्म लगावें–

ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः–ललाट् में लगावें।

ॐ कश्यपश्य त्र्यायुषम्–गले में लगावें।

ॐ यद्देवेषुत्र्यायुषम्–दाहिने बाहु में लगावें।

ॐ तन्नो ऽअस्तु त्र्यायुषम्–हृदय में लगावें।

इसके पश्चात् आचार्य होम कर्म का समापन करावें। तथा कर्ता से इस श्लोक का उच्चारण करवा के विसर्जन करावें–

गच्छ गच्छ सुर श्रेष्ठ! स्वस्थाने परमेश्वर।
यत्र ब्रह्मादयो देवास्तत्र गच्छ हुताशन!।।

विसर्जन के पश्चात् कर्ता संकल्प पूर्वक आचार्य को गौदान देवें। कर्ता आचार्य व ब्राह्मणों को दक्षिणा देने से पूर्व निम्न संकल्प करें–

कृतस्य कालीचर प्रतिष्ठा कर्मणः साङ्गतासिद्धयर्थं तत्सम्पूर्ण फलप्राप्त्यर्थं च आचार्यादिभ्यो महर्त्विग्भ्यः अनेभ्यो हवनजाप कर्तृभ्य ब्राह्मणेभ्यो दक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृज्ये।

दक्षिणा के पश्चात् ब्राह्मण भोजन करवाने से पूर्व पुनः निम्न संकल्प कर्ता करें–

कृतस्यकालीचर प्रतिष्ठाकर्म समृद्धये यथाशक्ति–ब्राह्मणान् भोजयिष्यामि।

संकल्प के पश्चात् ब्राह्मणों को प्रेम–आदर–सत्कार से भोजन करावें। ब्राह्मण भोजन के पश्चात् कर्ता दीन, अनाथ जनों को निम्न संकल्प करके भूयसी दक्षिणा एवं अन्नादिक भी प्रदान करें।

कृतेऽस्मिन् कालीचरप्रतिष्ठाकर्मणिन्यूनातिरिक्तदोष-परिहारार्थं दीनानाथेभ्यश्च यथाशक्ति भूयसीं दक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृज्ये॥

कर्ता अपनी धर्मपत्नी, पुत्र–पौत्रादि व अपने सम्बन्धियों तथा अपने इष्टमित्रों के साथ कालीदेवी के प्रसाद को ग्रहण करें।

॥ काली–प्रतिष्ठा पद्धति समाप्तः॥

काली-पूजा-पद्धति:

नित्य कर्मो को पूर्ण करके कर्ता शुभ आसन प्राङ्मुख बैठे तथा उसके दक्षिण[1] भाग में उसकी धर्मपत्नी[2] भी बैठे इसके पश्चात् इन तीन नामों का उच्चारण करके कर्ता तीन बार आचमन करें-

ॐ केशवाय नमः। ॐ नारायणाय नमः। ॐ माधवाय नमः

इसके पश्चात् कर्ता निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए पवित्रधारण करके तीन बार प्राणायाम करें-

ॐ पवित्रे स्त्थो व्वैष्णव्यौ सवितुर्व्वः प्प्रसव ऽउत्पुनाम्म्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्य्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्॥

इसके पश्चात् कर्ता अपने दाहिने हाथ में कुशा लेकर कालीपूजनसामग्री एवं अपने शरीर की शुद्धि के लिए इस श्लोक का उच्चारण करते हुए ताम्रपात्र में रखे हुए जल को कुशा से अपने ऊपर एवं पूजन सामग्री के ऊपर छिड़के-

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥
ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु,

---

१. (क) सर्वेषु धर्मकार्येषु पत्नी दक्षिणतः शुभा। अभिषेके विप्रपादप्रक्षालने चैव वामतः॥ 'संस्कार-संग्रहे, संस्कार कौस्तुभ'

(ख) श्राद्धे यज्ञे विवाहे च पत्नी दक्षिणतः शुभा। 'अत्रि स्मृति-१३६' संहिता

२. क-पत्नी धर्मार्थकामानां कारणं प्रवरं स्मृतम्। अपत्नीको नरो भूप कर्मयोग्यो न जायते।
ब्राह्मणः क्षत्रियो वापि वैश्यः शूद्रोऽपि वा नरः॥

ख-एकचक्रो रथो यद्वदेकपक्षो यथा खगः। अभार्योऽपि नरस्तद्वदयोग्यः सर्वकर्मसु॥
(भविष्यपुराण)

इसके पश्चात् कर्ता आसन शुद्धि के लिए निम्न विनियोग को पढ़े।

विनियोगः–

पृथ्वीतिमन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसनपवित्रकरणे विनियोगः।

पश्चात् निम्न श्लोक का ही उच्चारण करें।

ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि! त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि! पवित्रं कुरु चासनम्॥

संकल्प–

कर्ता के दाएं हाथ में जल, अक्षत्, सुपारी, पुष्प एवं कुछ द्रव्य रखकर आचार्य यह संकल्प करावें–

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीये परार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूदीपे भरतखण्डे भारतवर्षे आर्यावर्तैकदेशे (अविमुक्तवाराणसीक्षेत्रे आनन्दवने महाश्मशाने गौरीमुखे त्रिकण्टकविराजिते भागीरथ्याः पश्चिमे तीरे) विक्रमदेशे बौद्धावतारे अमुकनामसंवत्सरे श्रीसूर्ये अमुकायने अमुकऋतौ महामाङ्गल्यप्रदमासोत्तमे मासे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकक्षेत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुकराशिस्थिते श्रीसूर्ये अमुकराशिस्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथा-यथा राशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवं ग्रह-गुण-गण-विशेषण-विशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रोत्पन्नो अमुकशर्माऽहं [वर्माऽहं-

गुप्तोऽहं, दासोऽहं] सर्वापच्छांति पूर्वकं दीर्घायु र्विपुल पुत्र-पौत्राद्यनवछिन्न-संततिवृद्धि स्थिरलक्ष्मी कीर्तिलाभ-शत्रु पराजय सर्वपाप निरसन सकला वाप्ति सकलसुख-धर्मार्थ-काम-मोक्ष प्राप्ति द्वारा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं वा काली प्रीत्यर्थं कालीपूजा कर्म करिष्ये।

तदंङ्गत्वेन स्वस्ति पुण्याहवाचनं-मातृकापूजनं-नान्दी श्राद्धं-आयुष्यमंत्रजपं आचार्यादिब्राह्मणानां वरणं करिष्ये।

तत्राऽऽदौ निर्विघ्नता सिद्ध्यर्थं गणेशाऽम्बिकयो पूजनं करिष्ये।

उपरोक्त संकल्प की समाप्ति के पश्चात् निम्न श्लोक का उच्चारण कर आचार्य सभी दिशाओं में पीली सरसों फेकें-

यदत्र संस्थितं भूतं स्थानमाश्रित्य सर्वदा।
स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु॥

पश्चात् पंचगव्य और शुद्ध जल को कुशा के द्वारा समस्त पूजन सामग्रीयों के प्रोक्षण हेतु छिड़के।

पश्चात् निम्न मंत्र का उच्चारण कर रक्षाकर्म करें:-

ॐ देवा आयान्तु यातुधाना अपयान्तु विष्णो देवयजनं रक्षस्व।

प्रधानवेदी के समीप आकर कर्ता से सर्वतोभद्रमण्डल के देवताओं का स्थापन आचार्य इस क्रम से करावें-

कर्ता के दाएँ हाथ में जल अक्षतादि एवं यथाशक्ति द्रव्य देकर निम्न संकल्प आचार्य करावें-

कालीपूजाकर्मणि महावेद्यां सर्वतोभद्रमण्डले देवी भद्रमण्डले वा ब्रह्मादि देवतानां स्थापनं पूजनं च करिष्ये।

संकल्प के जलादिको कर्ता भूमि पर छोड़ दे, पश्चात् आचार्य काष्ठ की चौकी अथवा पीढ़े पर वस्त्रादि बिछाकर चारों ओर से मौली के द्वारा बंधनकर उस पर सर्वतोभद्रमंडल का निर्माण कर चावल की ढेरी पर ताम्र कलश की स्थापना कर्ता से करावे, पश्चात् उस सिंहासन अथवा किसी शुद्ध पात्र में कालीदेवी की प्रतिमा स्थापित करें।

नीचे लिखे मंत्रों से अथवा नाममंत्रों का उच्चारण कर सर्वतोभद्र मंडल के देवताओं का स्थापन एवं पूजन निम्न क्रम से करें–

१. ॐ ब्रह्मयज्ञानं प्रथमं पुरसाद्विसीमतः सुरुचोव्वे–नऽआवः। स बुघ्न्याऽउपमाऽअस्यव्विष्ठाः सतश्चयोनिम–सतश्चव्विवः॥ ब्रह्मणे नमः॥

२. व्वयर्ठ० सोम व्रतेतवमनस्तनू षु बिब्भ्रतः॥ प्रजावन्तः सचेमहि॥ सोमाय नमः॥

३. तमीशानञ्जगतस्तस्थुषस्प्पतिन्धियञ्जिन्न्वमवसे–हूमहे व्व्यम्। पूषानोयथाव्वेदसामसद् वृधेरक्षितापायुरदब्धः स्वस्तये॥ ईशानाय नमः॥

४. त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रर्ठ० हवे हवे सुह्वर्ठ० शूरमिन्द्रम्। ह्वयामिशक्क्रम्पुरुहूतामिन्द्रर्ठ० स्वस्ति नो मघवा धात्त्विन्द्रः॥ इन्द्राय नमः॥

५. त्वन्नोऽअग्ने तवदेवपायुभिर्म्मघोनोरक्षतन्न्वश्श्वन्द्य। त्राता तोकस्यतनयेगवामस्यनिमेषर्ठ० रक्षमाणस्तवव्व्रते॥ अग्नये नमः॥

६. यमायत्त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्म्मायस्वाहाघर्म्मः पित्त्रे॥ यमाय नमः॥

७. असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्न्विहि तस्क्करस्य। अन्यमस्म्मदिच्छसातऽइत्या नमो देविनिऋ-तेतुब्भ्यमस्तु॥ निर्ऋतये नमः॥

८. तत्त्वायामि ब्रह्मणा व्वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्ब्भिः। अहेडमानोव्वरुणेह बोद्ध्युरुशर्ठ० समानऽआयुः प्रमोषीः॥ वरुणाय नमः॥

९. आनोनियुद्भि शतिनी भिरध्वर्ठ० सहस्त्रिणी भिरुपयाहि यज्ञम्। व्वायोऽअस्मिन्तसवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ वायवे नमः॥

१०. सुगावो देवाः सदनाऽअर्कर्मय ऽआजग्मेवर्ठ० सवनञ्जुषाणाः। भरमाणाव्वहमाना हवीर्ठ० ष्यस्मे धत्तव्वसवो व्वसुनि स्वाहा॥ अष्टवसुभ्यो नमः॥

११. रुद्राः सर्ठ० सृज्य पृथिवीम्बृहज्ज्योतिः समीधिरे। तेपांभानुरजस्त्रऽइच्छुक्रो देवेषुरोचते॥ एकादशरूद्रेभ्यः॥

१२. यज्ञोदेवानां प्रत्येतिसुम्नमादित्यासोभवता मृडयन्तः। आवोऽर्व्वाचीसुमतिर्व्ववृत्त्यादर्ठ० होश्चिद्याव्वरिवोवित्तरा-सदादित्येब्भ्यस्त्वा॥ द्वादशादित्येभ्यः॥

१३. अश्विनातेजसाचक्षुः प्प्राणेन सरस्वती व्वीर्य्यम्। व्वाचेन्द्रो बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियम्॥ अश्विभ्यां नमः॥

१४. व्विश्वेदेवासऽआगत शृणुतामऽइमर्ठ० हवम्। एदम्बर्हिन्निषीदत। उपयाम गृहीतोऽसिव्विश्श्वेब्भ्यस्त्वा देवेब्भ्यऽएषते योनिर्व्विश्वेब्भ्यस्त्वा देवेब्भ्यः॥ सपैतृक-विश्वेभ्योदेवेभ्यो नमः॥

१५. अभित्यन्देवर्ठ० सवितारमोण्योः कविक्रतुमर्च्चामि सत्त्यसवर्ठ० रत्क्नधामभि प्प्रियंमतिंकविम्॥ ऊद्ध्वाय-स्याऽमतिर्भाऽअदिद्युतत्सवीमनिहिरण्य पाणिरमिमीत सुक्रतुः कृपास्वः। प्रजाब्भ्यसत्वा प्प्रजास्त्वानुप्प्राण-न्तुप्प्रजास्त्व मनुप्प्राणिहि॥ सप्तयक्षेभ्यः नमः॥

१६. नमोऽस्तु सर्प्पेब्भ्यो यो ये केचपृथिवीमनु॥ येऽअन्तरिक्षेयेदिवितेब्भ्यर्ठ० सर्प्पेभ्योनमः॥ भूतनागेभ्यः नमः॥

१७. ऋताषाड्ऋत धामाग्निर्गन्धर्व्व स्तस्यौषधयो-प्सरसोमुदोनाम। स नऽइदंब्रह्मक्षत्रंपातुतस्मैस्वाहा व्वाट्-ताब्भ्यः नमः॥

१८. यदक्रन्दः प्प्रथमञ्जायमानऽउद्यन्त्समुद्रादुत वापुरीषात्॥ श्येनस्य पक्षाहरिण स्यबाहूऽउपस्त्युत्यम्महि जातन्तेऽअर्व्वन्॥ गन्धर्वाप्सरोभ्यः नमः॥

१९. आशुः शिशानो व्वृषभोनभीमोघनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम्। सङ्क्रन्दनोनिमिषऽ एकवीरः शतर्ठ० सेनाऽअजयत्त्साकमिन्द्रः॥ स्कन्दाय नमः॥

२०. यत्तेगात्रादग्निापच्यमानादभिशूल्यन्निहत तस्या-वधावति। मातद्भूम्यामाश्रिणन्मातृणेषु देवेब्भ्यस्तदश-द्भ्योरातमस्तु॥ नन्दीश्वराय नमः॥

२१. ॐ काषिरसि समुद्दस्य त्त्वाक्षित्त्या ऽउन्नयामि। समापो ऽअद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः॥ शूलाय नमः॥

२२. ॐ शुक्रज्ज्योतिश्श्च चित्रज्ज्योतिश्श्च सत्यज्ज्योतिश्श्च ज्ज्योतिष्माँश्श्च। शुक्रश्श्च ऽऋतपाश्श्चत्यर्ठ० हाः॥ महाकालाय नमः॥

२३. ॐ अम्बे ऽअम्बिके ऽअम्बालिके न मा नयति कश्श्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्द्रिकां काम्पीलवासिनीम्॥ दक्षादिसप्तगणेभ्यः नमः॥

२४. इदं व्विष्णुर्व्विचक्रमेत्रेधानिदधेपदम्॥ समूढम–स्यपार्ठ० सुरेस्वाहा॥ दुर्गायै नमः॥

२५. पितृब्भ्यः स्वधायिब्भ्यः स्वधानमः पितामहेब्भ्यः स्वधायिब्भ्यः स्वधानमः प्प्रपितामहेब्भ्यः स्वधायिब्भ्यः स्वधानमः अक्षन्पितरोमीमदन्तपितरोऽतीतपन्त पितरः पितरः शुन्धद्वम्॥ विष्णवै नमः॥

२६. ॐ परंमृत्योऽअनुपरेहिपन्थां यस्तेऽ अन्न्यऽइतरो देवयानात्। चक्षुष्मते शृण्वते ते ब्ब्रवीमि मा नः प्प्रजार्ठ० रीरिषोमोतव्वीरान्॥ स्वधायै नमः॥

२७. गणानात्वा गणपतिर्ठ० हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपतिर्ठ० हवामहे निधीनान्त्वा निधिपतिर्ठ० हवामहे व्वसो मम आहमजानि गर्भधमात्त्वमजासि गर्ब्भ धम्॥ मृत्युरोगेभ्य नमः॥

२८. अप्स्वग्ने सधिष्टवसौषधीरनुरुध्यसे। गर्ब्भे संजायसे पुनः॥ गणपतये नमः॥

२९. मरुतो यस्य हि क्षये पाथा दिवोव्विमहसः। ससुगोपातमोजनः॥ अद्भ्यो नमः॥

३०. स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनि। यच्छान:। शर्म्मसप्प्रथा:॥ मरुद्भ्यो: नम:॥

३१. पंचनद्य: सरस्वती मपियन्ति सस्त्रोतस: सरस्वती तु पंचधा सो देशे भवत्सरित्॥ पृथिव्यै नम:॥

३२. समुद्रोऽसि नभस्वानार्द्रऽदानु: शम्भूर्म्मयो भूरभिमाव्वहि स्वाहा। मारुतोऽसिम रुतांगण: शम्भूर्म्मयोभूरभिमाव्वाहिस्वाहा वस्यूरसिदुवस्वांछम्भूर्म्मयो भूरभिमाव्वाहिस्वाहा॥ गंगादिनदीभ्य: नम:॥

३३. परित्वागिर्व्वणोगिर ऽइमाभवन्तु व्विश्वत:॥ व्वृद्धायुमनुवृद्धयोजुष्टाभवन्तु जुष्टय:॥ सप्तसागरेभ्य: नम:॥

३४. गणानात्वा गणपतिर्ठ० हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपतिर्ठ० हवामहे निधीनान्त्वा निधिपतिर्ठ० हवामहे व्वसो मम आहमजानि गर्ब्भमात्त्वमजासि गर्ब्भ धम्॥ मेरवे नम:॥

३५. त्रिर्ठ० शद्धामविराजति वाक्यपतङ्गाय पतड़ाय धीयते। प्रतिवस्तोरहद्युभि:॥ गदायै नम:॥

३६. महाँ२॥इन्द्रोवज्रहस्त: षोडशीशर्म्मयच्छतु। हन्तुपाप्मानं योस्मान्द्वेष्टि। उपयामगृहीतोऽसिमहेन्द्रायत्वैषते-योनिर्महेन्द्रायत्वा॥ त्रिशूलाय नम:॥

३७. व्वसुचमेव्वसतिश्चमेकर्मचमेशक्तिश्च मेऽर्थश्चम-एमश्चइत्याचमे गतिश्चमेयज्ञे न कल्पन्ताम्॥ वजाय नम:॥

३८. इडऽएह्यदितऽएहि काम्म्याऽएत। मयि व: काम धरणं भूयात्। शक्तये नम:॥

३९. खड्गोव्वैश्वदेवः श्वाकृष्णः कर्णोगदर्दभस्तेर-क्षुस्तरक्षसामिन्द्रायसूकरः सिर्ठ० होमारुतः कृकलासः पिप्पकाशकुनिस्तेशरव्यायैविश्वेषांदेवानांपृषतः ।। दण्डाय नमः ।।

४०. उदुत्तमंवरुणपांशमस्मदवाधमं व्विमध्यमर्ठ० श्रथाय ।। अथा व्वयमादित्य व्व्रतेतवानागसोऽअदितये स्याम ।। खड्गाय नमः ।।

४१. अर्ठ० शुश्चमेरश्मिश्चमेऽदाभ्यश्चमेऽधिपतिश्चम-ऽउपार्ठ० शुश्चममेऽन्तर्यामश्चऽऐन्द्र वायवश्चमेमैत्रावरुणश्चमऽ आश्विनश्चमे प्रति प्रस्थानश्चमे शुक्रश्चममन्थीचमेयज्ञन कल्पन्ताम् ।। पाशाय नमः ।।

४२. आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरंपुरः पितरं च प्रयन्त्स्वः ।। अङ्कुशाय नमः ।।

४३. अयन्दक्षिणाः व्विश्वकीर्मातस्यमनो व्वैश्वकर्मणग्रीष्मो-मानसस्त्रि ष्टुब्ग्रैष्मो त्रिष्टभाः स्वारर्ठ० स्वारादन्तर्यामोन्तर्या-मात्पंचदशः पञ्चदशाद्बृहद् भरद्वाजऽ ऋषिः प्रजापतिगृही-तया त्वया। गौतमाय नमः ।।

४४. ॐ इदमुत्तरात्स्वस्तस्य श्श्रोत्त्रर्ठ० सौवर्ठ० शरच्छौ-त्र्यनष्टुप शारद्यनुष्टुभ ऽऐडमैडान्मन्थी मन्थिन ऽएकविर्ठ० शऽएकविर्ठ० शाद्वैराजं व्विश्श्वामित्र ऽऋषिर्ठ० प्प्रजापतिगृहीतया त्वया श्श्रोत्रं गृह्णामि प्प्रजाभ्यर्ठ०। भरद्वाजाय नमः ।।

४५. ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेर्ठ० कश्यपस्य त्र्यायुषम्। यद्देवेषु त्र्यायुषं तन्नो ऽअस्तुत्र्यायुषम्। विश्वामित्राय नमः ।।

४६. अयंपश्चाद्विश्वव्यचास्तस्य चक्षुर्व्वैश्वव्य च संवर्षाश्चाक्षुष्यो जगतोव्वार्षी जगत्याऽऽऋक्समम्रृक्स माच्छुक्रः शुक्रात्सप्तदशः सप्तदशाद्वैकरुपंजमग्नि ऋषिः प्रजा पतिगृहीतया त्वयाचक्षु र्गह्णामि प्रजाब्भ्यः ॥ कश्यपाय नमः ॥

४७. अयं पुरोभुवस्तस्य प्राणो भौवायनोवसन्तः प्राणायनो-गायत्री व्वासन्तीगायत्र्यै गायत्रङ्गायत्रादुपाठ० शुरुपाठ० शोस्त्रिवृत्त्रिवृतोरथन्तरंव्वसिठऽऋषिः प्रजापतिगृही तयात्वया प्राणङ्गृह्णामि प्रजाब्भ्यः ॥ जमदग्नये नमः ॥

४८. अत्रपितरोमादयद्ध्वंयथा भागमावृषायद्ध्वम्। अमीमदन्तपितरोयथा भागमावृषायिषत ॥ वसिष्ठाय नमः ॥

४९. तं पत्नीभिरनुगच्छेमदेवाः पुत्रैर्ब्भ्रातृभिरुत वाहिरण्यैः ॥ नाकंगृब्भ्णानाः सुकृतस्यलोके तृतीयेपृष्ठे ऽअधिरोचनेदिवः ॥ अत्रये नमः ॥

५०. ॐ अदित्यैरास्नासीन्द्राण्याऽऽउष्णीषः। पूषासिघ-र्माय दीष्व ॥ अरुन्धत्यै नमः ॥

५१. अम्बेऽअम्बिकेऽअम्बालिके न मा नयति कश्च्चन। ससस्त्यश्श्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्। ऐन्द्र्यै नमः ॥

५२. ॐ इन्द्रायाहि धियेषितो व्विप्रजूतःसुतावतः। उपब्ब्रह्माणि व्वाग्घतः ॥ कौमार्य्यै नमः ॥

५३. ॐ इन्द्रस्यक्क्रोडोऽअदित्यै पाजस्य द्दिशां जत्रवोऽदित्त्यै भसज्जीमूतान्हृ- दयौपशेनान्तरिक्ष पुरीतता नभऽउदर्य्येण चक्क्रवाकौ मतस्न्नाब्भ्यां दिवं व्वृक्काब्भ्यां गिरीन्प्ला-शिभिरुपलान्प्लीह्ना व्वल्मीकान्क्लोमभिग्ग्लौभिर्गुल्मा-

न्हिराभि स्त्रवन्ती-ह्रदान्कुक्षिब्भ्या-समुद्रमुदरेण व्वैश्वानरं भस्म्मना।। ब्राह्मच नमः।।

५४. अम्बेऽअम्बिके अम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्। वाराह्यै नमः।।

५५. आप्प्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम व्वृषणयम्। भवा व्वाजस्य संगथे।। चामुण्डायै नमः।।

५६. यातेरुद्रशिवातनूरघोरापापकाशिनी।। तयानस्त-न्वाशन्तमयागिरिशन्ताभिचाकशीहि।। वैष्णव्यै नमः।।

५७. समक्ख्ये देव्याधिया सन्दक्षिणयोरुचक्षसा। मामऽआयुः प्रमीषीम्मोंऽअहन्तवव्वीरं व्विदेय तव देवि सन्दृशि।। माहेश्वर्यै नमः।।

प्रधानवेदी के समीप सर्वतोभद्रमण्डल की स्थापना करके उसके ऊपर आचार्य अपनी बुद्धि विवेक व शास्त्र सम्मत क्रियाओं से कालीयंत्र का निर्माण करे। इसके पश्चात् ब्रह्मादिमण्डल के देवताओं का आवाहन और स्थापन करवाके उसके ऊपर प्रधान कलश स्थापित करवाके वरुणदेव का पूजन इस प्रकार कर्ता से करावें–

वरुण-पूजनम्

ध्यानम्–

आश्रित्य यं भवति धन्यतरा प्रतीची,
रत्नाकरत्वमुपयाति पयःसमूहः।
पाशश्च यस्य भवपाशविनाशकारी,
तं पाशधारिणमहं हृदि चिन्तयामि।।

आवाहनम्–

यद् दृष्टिकोणरहिता वसुधा सदैव,
वन्ध्येव भाति विफलीकृतबीजशक्तिः।
तं वारिवारिणमहं वरुणं सदैव,
धाराधरं सुखकरं प्रियमाह्वयामि॥

आसनम्–

अयि विभो शरणागतवत्सल यदपि हीनमिदं भवतां कृते।
तदपि भक्तजनं खलु वीक्ष्य मां समुचितं प्रियमासनमास्यताम्॥

पाद्यम्–

अहो मदीय खलु पुण्यसञ्चितं श्रीमद्भिरद्यावधि रक्षतोऽस्मि यत्।
अकिञ्चनोऽहं भवतां कृते यदि तथापि पाद्यार्घ्यमिदं प्रगृह्यताम्॥

अर्घ्यम्–

विमलचम्पकपुष्पसमन्वितं त्रिविधतापविनाशननायकम्।
प्रियकर प्रियमर्घ्यमिदं विभो परिगृहाण जलाधिप पाशभृत्॥

आचमनीयम्–

कस्तूरिकासुरभिचन्दनवासवासि स्वेलालवङ्गलवलीपरिपूरितं च।
मध्याह्नसूर्यप्रतिविम्बमिवप्रकामं दत्तं गृहाण वरमाचमनं मयेदम्।

पञ्चामृतम्–

सौवर्णपात्रघृतप्रीतिविवर्धकेन पञ्चामृतेन मधुना पयसा घृतेन।
मिश्रीकृतेन सितया च शुभया च दध्ना देवो दधातु हृदये करुणामयेऽस्मिन्॥

शुद्धोदक–स्नानम्–

कङ्कोलपत्रहरिचन्दनवासितेन काश्मीरजेन घनसारसमन्वितेन।
एलालवङ्गललवलीविमलोदकेन स्नानं कुरुष्व भगवन् सुनिवेदितेन॥

वस्त्रम्–

ब्रह्माण्डमेतद्दययाऽप्यखण्डं संपन्नमेभिवसनैस्तनोषि।
तस्मै प्रदेयः किमु वस्त्रखण्डस्तथापि भावो मम रक्षणीयः॥

यज्ञोपवीतम्–

आलिङ्ग्यते यस्य शताग्रभागं पूता विमुक्ता वपुषोऽधमास्ते।
यज्ञोपवीतं किमु तस्य पूर्त्यै दीयेत भक्तेषु समर्थनाय॥

उत्तरीय–वस्त्रम्–

श्रद्धातुरो यत्र मनस्तु सूत्रं भक्तिं च वेमानमवाततान।
हृत्कौलिकः सुविमलोत्तरीयं तनोमि तत्ते तनुकल्पव[illegible]याम्॥

गन्धम्–

अमन्दगन्धं विकिरन्ति यत्र वृन्दारकाः पृच्छति तत्र को माम्।
मयाऽपि हे नाथ हृदोपनीतं द्रव्यं सुगन्धं विमलं गृहाण॥

अक्षतम्–

पुष्पाक्षतानक्षतपुष्पराशिरादाय तुभ्यं समुपस्थितोऽस्मि।
एतर्हि लज्जानतमस्तकोऽस्मि द्रुतं गृहीत्वा कुरु मां कृतार्थम्॥

पुष्पम्–

आसेचनं पेलवपादयुग्मं कृते कठोरः कुसुमोपहारः।
धाष्ट्र्योद्भवं मे पराधमेनं क्षमस्व दीनस्य हि त्यदीमबन्धो॥

नानापरिमल–द्रव्यम्–

निखिलभुवनमध्ये विस्तृता यस्य कीर्तिः,
सुरनरमुनिवन्द्यो वन्दनीयप्रभावः।
स खलु वरुणदेवो भक्तिपूर्वं प्रदत्तं,
भुविभयहारी अङ्गरागं दधातु॥

धूपम्–

कर्पूरकुङ्कुमसुगन्धि-सुगन्धितं हि कस्तूरिचन्दनरसैः परिवर्धितं तम्।
विज्ञैर्बुधैश्च विबुधैः समुपासितं त्वं धूपं गृहाण सुरभिं परिपावनं च॥

दीपम्–

तमोनाशकं दीप्तिदीप्तं प्रदीपं प्रभाभासुरं भासयन्तं गृहान्तः।
स्फुरज्ज्योतिषं वर्तियुक्तं सुदीपं जगद्देवदेव-त्वमङ्गीकुरुष्व॥

नैवेद्यम्–

सौवर्णपात्रे समलङ्कृतेऽस्मिन् यथायथं तद्विनिवेशितं च।
सुस्वादुशीतं मधुरं नवं च नैवेद्यमङ्गीकुरु देव-देव॥

ताम्बूलम्–

एलालवङ्गलवलीक्रमुकादियुक्तं सुस्वादुगन्धिसुरभिं सुमनोहरं च।
भूपः प्रयाणसमये प्रियमादृ तत्ताम्बूलरागमुररी कुरु देव-देव॥

दक्षिणा:–

भूसुरैः सुरसमैरखिलैर्या वन्दितामृतभुजैः समुपास्या।
तां गृहाण निजभक्तनिवेद्यां दक्षिणां सुमनसापि च मुद्राम्॥

नीराजनम्–

कस्तूरिकुङ्कुमसुगन्धिसुगन्धितेन एलालवङ्गघनसारसमन्वितेन।
सौवर्णपात्रघृतगोमयवर्धकेन नीराजनामपि करोमि तवातिथेयीम्॥

प्रदक्षिणाम्–

समागतानां भवपाशनाशिनां भवादृशानां त्रयतापहारिणाम्।
विधीयते या विदुषां गृहे सदा प्रदक्षिणां दक्षिण ते करोमिनु॥

पुष्पाञ्जलिम्-

हे पाश! भृद्वरुण नाथजलेश देव,
दीने दयां मयि विधेहि सदा सुदेव।
नातः परं किमषि याचयितव्यमस्ति,
पुष्पाञ्जलिं ननु गृहाण सदा मदीयम्॥

"अनया पूजया वरुणाद्यावाहितदेवताः प्रीयन्तां न मम"

काली-पीठपूजा

आचार्य नीचे दिये गए क्रम से ही काली की पीठपूजा कर्ता से करावें-

कर्णिका में-**आधार शक्तये नमः। प्रकृत्यै नमः। कूर्माय नमः। शेषाय नमः। पृथिव्यै नमः। सुधांबुधये नमः। मणिद्वीपाय नमः। चिन्तामणि गृहाय नमः। श्मशानाय नमः। पारिजाताय नमः।**

कर्णिका के मूल भाग में-**रत्नवेदिकायै नमः।**

कर्णिका के ऊपर भाग में-**मणि पीठाय नमः।**

चारों दिशाओं में-**मुनिभ्यो नमः। देवेभ्यो नमः। शिवाभ्यो नमः। शिवमुण्डेभ्यो नमः। धर्माय नमः। ज्ञानाय नमः। वैराग्याय नमः। ऐश्वर्याय नमः। अधर्माय नमः। अज्ञानाय नमः। अवैराग्याय नमः अनैश्वयार्य नमः। ह्रीं ज्ञानात्मने नम॥**

केशरेषु में पूर्वादि क्रम-**इच्छायै नमः। ज्ञानायै नमः। क्रियायै नमः। कामिन्यै नमः। कामदायिन्यै नमः। रत्यै नमः। रति प्रियायै नमः। नन्दायै नमः**

मध्यभाग में-**मनोन्मन्यै नमः।**

ऊपर के भाग में–**ह्सौः सदाशिव महाप्रेत पद्मासनाय नमः।**

पीठ के उत्तरभाग में– **गुरुभ्यो नमः। परम गुरुभ्यो नमः। परापर गुरुभ्यो नमः। परमेष्टि गुरुभ्यो नमः।**

आचार्य उपरोक्त क्रम से काली की पीठपूजा करवाने के उपरान्त कर्ता से कालीदेवी का ध्यान करवायें एवं उन्हें दोनों हाथों से पुष्पाञ्जलि समर्पित करावें। उपरान्त आचार्य कालीदेवी के मूल मंत्र का तथा निम्न श्लोक का उच्चारण कर्ता से करवाते हुए काली का आवाहन करावें–

"ॐ देवेशि भक्ति सुलभे परिवार समन्विते।
यावत्त्वां पूजयिष्यामि तावत्त्वांसुस्थिरा भव॥"

उपरोक्त श्लोक के उच्चारण के पश्चात् पुनः काली के मूल मंत्र का उच्चारण करके ही निम्न वाक्य को कर्ता स्वंय कहें–

"भो काली देवी! इहावह इहावह इह तिष्ठ इह तिष्ठ इह सन्निरुद्धस्व इह सन्निहिता भव॥"

स्थापित प्रधान कलश के ऊपर स्वर्ण, रजत आदि का छत्र-चामर आदि से युक्त सिंहासन और चाँदी या सोने की थाली रख कालीयंत्र का इस प्रकार से निर्माण करें–

कालीयंत्रनिर्माणविधिः

सर्वतोभद्रमण्डल में देवताओं का आवाहन और पूजन करके मध्य में सविधि पूर्वक कलश स्थापित कर स्वर्ण, रजत आदि में से बने हुए पत्र पर स्वर्ण की शलाका से सुवर्ण, चाँदी या पट्टवस्त्र पर आचार्य इस प्रकार कालीयंत्र का निर्माण करें।

अष्टगन्ध या चन्दन से सर्वप्रथम एक त्रिकोण का निर्माण करें उसके बाहर फिर त्रिकोण बनावें पुनः बाहर की ओर तीन त्रिकोण

बनावें। इस प्रकार एक के बाद एक करके कुल पाँच त्रिकोण होते हैं, इन पाँचों त्रिकोणों के बाहर से एक वृत्त का निर्माण करके उस वृत्त पर अष्टदल, पद्मपत्र का निर्माण करें। अब आचार्य उसके बाहर चर्तुद्वार युक्त चतुरस्त्र मण्डल बनावें विभिन्न ग्रन्थों के आधार पर यही काली यंत्र निर्माण की विधि है।

अपने समीप पीठादि में स्वर्ण की अथवा चाँदी की थाली में काली देवी की स्थापन करें।

अग्न्युत्तारणविधिः

आचार्य कालीदेवी की प्रतिमा में अग्न्युत्तारण कर्म के लिए कर्ता से निम्न संकल्प करावें:-

देशकालौ संकीर्त्य-करिष्यमाण कालीपूजाकर्मणि न्यूनातिरिक्त दोष परिहारार्थं अथवा अवघातादि दोष परिहारार्थं अमुक गोत्रः अमुक शर्माहं [वर्मा-गुप्तः-दासः]अस्यां सुवर्णमय श्रीकाली देवी प्रतिमायाः सान्निध्यार्थं च अग्न्युत्तारणं करिष्ये।

संकल्प की समाप्ति के पश्चात् किसी पात्र में स्वर्ण की अथवा रजत की काली की प्रतिमा को पंचामृत से लेपन पूर्वक पान के ऊपर रख (समुद्रस्य से शिवोभव) तक के इन बारहवैदिक मंत्रों का उच्चारण करके सुवर्ण, रजत, ताम्र के पात्र में रखकर उसके ऊपर दुग्ध से युक्त जलधारा इन मंत्रों से प्रदान करें-

ॐ समुद्रस्य त्वावकयाग्ग्ने परि व्ययामसि।
पावको ऽअस्म्मभ्ब्यर्ठ० शिवो भव ॥ १ ॥
ॐ हिमस्य त्वा जरायुणाग्ग्ने परि व्वययामसि।
पावको ऽअस्म्मभ्ब्यर्ठ० शिवो भव ॥ २ ॥

ॐ उप ज्मनुप वेतसेऽवतर नदीष्ष्वा।
अग्ने पित्तमपामसि मण्डूकि ताभिरागहि।
सेमं नोयज्ञं पावकवर्ण्णठं शिवं कृधि ॥ ३ ॥
ॐ अपामिदं न्ययनठं समुद्द्रस्य निवेशनम्।
अन्याँस्ते ऽअस्म्मत्तपन्तु हेतयः पावको
अस्मभ्यठं शिवो भव ॥ ४ ॥
ॐ अग्ग्ने पावक रोचिषा मन्द्रया देव जिह्वया।
आ देवान्वक्षि यक्षि च ॥ ५ ॥
ॐ स नः पावक दीदिवोऽग्ग्ने देवाँ२ ॥ ऽइहावह।
उप यज्ञठं हविश्च्च नः ॥ ६ ॥

ॐ पावकया यश्चितयन्त्या कृपा क्षामन्नुरुच ऽउषसौ न भानुना। तूर्व्वन्न यामन्नेतशस्य नू रण ऽआ यो घृणे न ततृषाणो ऽअजरः ॥ ७॥

ॐ नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्ते ऽअस्त्वर्च्चिषे। अन्याँस्ते ऽअस्म्मत्तपन्तु हेतयः पावको ऽअस्म्मभ्यठं शिवो भव ॥ ८ ॥

ॐ नृषदे व्वेडप्सुषदे बेड् व्वहिषदे व्वेड् व्वनसदे व्वेट् स्वर्व्विदे व्वेट् ॥ ९ ॥

ॐ ये देवा देवानां य्यज्ञिया यज्ञियानाठं संवत्सरीण-मुपभागमासते। अहुतादो हविषो यज्ञे ऽअस्मिन्न्त्स्वय पिबन्तु मधुनो घृतस्य ॥ १० ॥

ये देवा देवेष्वधि देवत्वमायन्न्ये ब्रह्मणः पुर ऽएतारो ऽअस्य। येब्भ्यो न ऽऋते पवते धाम किञ्चन न ते दिवो न पृथिव्या ऽअधि स्न्नुषु ॥ ११ ॥

ॐ प्राणदा ऽअपानदा व्यानदा व्वर्च्चोदा व्वरिवोदाः। अन्याँस्ते ऽअस्म्मत्तपन्तु हेतयः पावको ऽअस्म्मभ्यर्ठ० शिवो भव ॥१२ ॥

इस प्रकार से अग्न्युत्तारायण कर्म करवा के आचार्य कर्ता से कालीदेवी की स्वर्ण अथवा रजत की प्रतिमा को जल से बाहर निकलवाकर नवीन वस्त्र से पोछकर यंत्र के ऊपर बायें हाथ से रखकर दाहिना हाथ रखकर इस प्रकार से प्राणप्रतिष्ठा करें।

कालीप्राणप्रतिष्ठाविधिः

विनियोगः-

अस्यश्रीप्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्म-विष्णु-महेश्वरा ऋषयः ऋग्यजुः सामानि छन्दांसि चैतन्य रूपिणी जगत्सृष्टिकर्त्री प्राणशक्तिर्देवता आंबीजं, ह्रीं शक्तिः, क्रीं कीलकं प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः।

ॐ आं ह्रीं क्रीं अं कं खं गं घं ङं आकाशवाय्यग्नि-जलमभ्यात्मने आम्-अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ आं ह्रीं क्रीं इं चं छं जं झं ञं शब्दस्पर्शरूपरसगन्धात्मने ईं-तर्जनीभ्यां नमः।

ॐ आं ह्रीं क्रीं उं टं ठं डं ढं णं श्रोत्रत्वक्चक्षुर्घ्राणात्मने ओं-मध्यमाभ्यां नमः।

ॐ आं ह्रीं क्रीं एं तं थं दं धं नं वाक्पाणिपादपायूपस्थात्मने ऐं-अनाभिकाभ्यां नमः।

ॐ ह्रीं क्रीं पं फं बं भं मं वचनदानाविहरणोत्सर्गानन्दात्मने ओं-कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

ॐ आं ह्रीं क्रीं अं यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं मनोबुध्यहङ्कारनिवृत्तात्मने ओं–करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः–एवं हृदयादि।

इस प्रकार से ध्यान करवाके प्राणप्रतिष्ठा करावे–

ॐ आं ह्रीं क्रीं यं रं लं वं शं षं हं क्षं सः देव्या प्राणाः। ॐ आं क्रीं ॐ यं रं हं सः देव्याः इह स्थितः। ॐ आं ह्रीं क्रीं ॐ यं रं लं देव्याः सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनस्त्वक्चक्षु श्रोत्रजिह्वाघ्राणपाणिपादपायूपस्थ इह देव्याः आगत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥

आचार्य सहित सभी ब्राह्मण अष्टसहस्र, अष्टसत् अथवा आठ बार मात्र ही पढ़ कर जल गिरा देवें। कालीदेवी के पीठानन्तर में प्रवेश करके वस्त्रयुग्म, गन्ध, अक्षत, पुष्प, दीप, नैवेद्यादि से पूजन करवाने के उपरान्त किसी तेजसपात्र में स्थित मधु को स्वर्ण की शलाका से ग्रहण करके नेत्रोन्मीलनकर्म को आचार्य विधिवत् निम्न क्रमानुसार करवायें–

आचार्य काली की मूर्ति के मुख तथा नेत्र में स्वर्ण की शलाका के द्वारा सहत तथा घृत को मिश्रित कर इस आधे मंत्र का उच्चारण करके चिह्न करें–

ॐ चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्म्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः।

निम्न मंत्र का आचार्य उच्चारण करके कर्ता द्वारा पायस, भक्ष्य, भोज्य, दर्पणादि कालीदेवी की मूर्ति को दिखा दें–

ॐ आ कृष्णेन रजसा व्वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्त्यं च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥

नेत्रोन्मीलन कर्म करवाने के उपरान्त काली देवी की मूर्ति के समक्ष नारिकेल अथवा कोहड़े की बलि प्रदर्शित करें।

निम्न आठ वैदिक मंत्रों का क्रम से उच्चारण करते हुए आठ दीपक देवी के सम्मुख कर्ता दिखा देवें–

१. हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्। सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।

२. य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः। यस्य छायामृतं यस्य मृत्यु कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

३. यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इन्द्राजा जगतो बभूव। य इशे अस्य द्विपदश्चतुष्पद कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

४. यस्येमे हिमवन्तो महित्वा यस्य समुद्रं रसया सहाहुः। यस्येमाः प्रदिशो यस्य बाहु कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

५. येन द्यौरुग्रा पृथिवी च इडहा येन स्वः स्तभितं येन नाकः। यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

६. यं क्रन्दसी अवसा तस्तमाने अभ्यैक्षेतां मनसा रेजमाने। यत्राधि सूर उदितो विभाति कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

७. आपो ह यद्वृहतीविंश्वमायन् गर्भ दधाना जनयन्तीरग्निम्। ततो देवानां समवर्ततासुरे कः कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

८. यश्चिदापो महिना पर्यपश्यद् दक्षं दधानां जनयन्तीर्यज्ञम्। यो देवेष्वधि देव एक आसीत् कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

उपरान्त आचार्य देवी के पीछे की ओर खड़े होकर सतूर्यघोष करें तथा इस वैदिक मन्त्र का उच्चारण करके दुर्गा के एक-एक नेत्र को खोल देवें–

ॐ चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्म्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः।

इस कर्म की समाप्ति के उपरान्त–

ॐ नमो भगवती काल्यै हिरण्यरेतस्यै परायै परमात्मायै हिरण्यरूपिण्यै शिवप्रियायै नमः।

इस क्रम के अनुसार ही नेत्राकार लिखकर अंजन और मधुअंजन काली देवी को प्रदान करें। पश्चात् नेत्रोन्मीलन के अंगत्व कर्ता अपने आचार्य को इस संकल्प का उच्चारण करके गौदान देवें।

देशकालौ संकीर्त्य–नेत्रोन्मीलन अङ्गत्वे गोदानं अहं करिष्ये।

गौदान कर्म के पश्चात् इस मन्त्र का उच्चारण कर आचार्य उत्थापन कर्म करवायें–

ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तस्त्वेमहे। उप प्रयन्तु मरुतः सुदानव ऽइन्द्र प्राशूर्भवा सचा॥

निम्न मंत्र का उच्चारण होते ही कर्ता कालीदेवी के सिर का स्पर्श करें–

ॐ विश्वानिदेव सवितर्दुरितानि परासुव यद् भद्रं तन्न ऽआसुव।

आचार्य द्वारा इस मंत्र का उच्चारण होने पर कर्ता काली देवी के सभी अंगों का स्पर्श करें–

ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतोऽनि दहाति वेदः। स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः॥

निम्न दो मन्त्रों का उच्चारण करते हुए आचार्य काली देवी का उत्थापन करावें–

१. ॐ उदुत्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः। दृक्षे विश्वाय सूर्यम्॥

२. ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतोऽ नि दहाति वेदः। स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः॥

यदि मंदिर का निर्माण किया गया हो तो आचार्य सहित कर्ता प्रवेश कर मणि, मुक्ता, प्रवाल, सुवर्ण, रजत का गर्त में निक्षेपन कर आचार्य सहित सभी ब्राह्मण विधिवत् काली देवी की स्थापना करावें।

पश्चात् आचार्य इस वैदिक मंत्र का उच्चारण करते हुए काली देवी का स्पर्श एवं जाप कालीदेवी के मन्त्र से कर्ता से करावें।

ॐ आ त्वाहार्षमन्तरभूर्ध्रुवस्तिष्ठा विचाचलिः। विशस्त्वा सर्व्वा वाञ्छन्तु मा त्वद्राष्टमधिभ्रशत्॥

स्पर्श एवं जाप के पश्चात् आचार्य काली देवी का षडङ्गन्यास कर्ता से करावें।

मातृकान्यास[1]

विनियोग:

ॐ अस्य मातृकान्यासमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, मातृका सरस्वती देवता, हलो बीजानि, स्वराः शक्तयः, सर्ग कीलकं, मातृका न्यासे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यास—शिरसि ॐ ब्रह्मणे ऋषये नमः। मुखे गायत्री-छन्द से नमः। हृदये श्रीमातृका सरस्वती-देवतायै नमः। गुह्ये ॐ व्यञ्जनेभ्यो बीजेभ्यो नमः। पादयोः ॐ स्वरेभ्यो शक्तिभ्यो नमः। सर्वाङ्गे ॐ सर्गाय कीलकाय नमः।

---

१. क-पूजाजपार्चना होमाः सिद्धमन्त्रकृता अपि। अङ्गविन्यासविधुरा न दास्यन्ति फलान्यमी॥
(शारदातिलक टीका, ४ पटल)

ख-न्यासं विना जपं प्राहुरासुरं विफलं बुधाः। न्यासात्तदात्मको भूत्वा देवो भूत्वा तु तं यजेत्॥
(शारदातिलक टीका, ४ पटल)

करन्यास-अं कं खं गं घं ङंआं अंगुष्ठाभ्यां नमः। इं चं छं झं जं ईं तर्जनीभ्यां स्वाहा। उं टं ठं डं ढं णं ऊं मध्यमाभ्यां वषट्। एं तं थं दं धं नं ऐं अनामिकाभ्यां हूँ। ओं पं फं बं भं मं ओं कनिष्ठाभ्यां वौषट्। अं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं अः करपृष्ठाभ्यां फट्।

इस प्रकार षडङ्गन्यास करके कर्ता निम्न श्लोकों से ध्यान करे-

पञ्चाशल्लिपिभिर्विभक्त-मुख-दोः पन्मध्य-वक्ष-स्थलाम्।
भास्वन्मौलि-निबद्ध-चन्द्र-शकलामापीन-तुङ्ग-स्तनीम्॥
मुद्रामक्षगुणं सुधाढ्यकलशं विद्यां च हस्ताम्बुजै-
विभ्राणां विशदप्रभां त्रिनयनां वाग्देवतामाश्रये॥

अन्तर्मातृका-न्यासः-

कर्ता-धूम्राभ विशुद्ध-चक्र (कण्ठ) के सोलहों दलों में सोलहों स्वरों के आदि में 'ॐ' और अन्त में 'नमः' युक्त कर प्रत्येक दल में न्यास करे।

यथा-'ॐ अं नमः' 'ॐ आं नमः' इत्यादि। मूंगे के सदृश लालवर्ण के अनाहत-चक्र (हृदय) के बारहों दलों में 'क' से लेकर 'ठ' तक के बारहों व्यञ्जनों को उसी प्रकार एक एक व्यञ्जन का एक-एक दल में न्यास करे। नील-जीमूत रंग के मणिपूर-चक्र (नाभि) के दशों दलों में 'ड' से 'फ' तक दशों अक्षरों का पूर्ववत् न्यास करे। वियत् के सदृश वर्णवाले स्वाधिष्ठान-चक्र (लिंग-मूल) के छः दलों में 'ब' से 'ल' तक के छहों वर्णों का पूर्ववत् न्यास करे। सुवर्ण के सदृश लाल रंग के मूलाधार-चक्र के चारों दलो में 'व श ष स' इन चारों वर्णों

का पूर्ववत् न्यास करे। चन्द्र के सदृश वर्णवाले आज्ञा (भ्रूमध्य) चक्र के दोनों दलो में 'ह' और 'क्ष' वर्णो का पूर्ववत् न्यास करे।

बहिर्मातृका-न्यासः

शास्त्रों के मतानुसार बहिर्मातृका-न्यास के सृष्टि, स्थिति और संहार ये तीन क्रम निम्न प्रकार से हैं।

(१) सृष्टि-मातृका-न्यास-हृदय में फूलोंसे तत्वमुद्रा वा निम्न मातृका-मुद्राओं से कर्ता न्यास करे। यथा–

ॐ अं नमः–ललाट–अनामा, ॐ आं नमः-मुखमण्डल मध्यमा, ॐ इं नमः, ॐ ईं नमः-दोनों नेत्र-तर्जनी-मध्यमा-अनामा-वृद्धा, ॐ उं नमः, ॐ ऊं नमः-दोनों कर्ण-अंगुष्ठ, ॐ ऋं नमः, ॐ ॠं नमः-दोनों नासापुट कनिष्ठांगुष्ठ, ॐ लृं नमः, ॐ लॄं नमः-दोनों गाल दोनों मध्यांगुलियाँ, ॐ एं नमः, ॐ ऐं नमः दोनों होठ-मध्यमा। अनामा से ॐ ओं नमः, ॐ औं नमः-दोनों दन्त-पंक्तियाँ, ॐ अं नमः, ॐ अः नमः-जिह्वा और तालु-मूल (ब्रह्म-रन्ध्र) ॐ कं नमः-दक्षिण बाहु-मूल, ॐ खं नमः-कूर्पर (कुहनी), ॐ गं नमः-मणि-बन्ध (कलाई), ॐ घं नमः-अंगुलिमूल, ॐ ङंनमः-अंगुलि अग्र-मध्यमा। इसी प्रकार मध्यमा से ॐ सं नमः, ॐ छं नमः, ॐ जं नमः ॐ झं नमः, ॐ ञं नमः-वाम-बाहु-मूल, कर्पूर, मणिबंध, अंगुलि-मूल और अंगुल्यग्र में, ॐ टं नमः, ॐ ठ नमः, ॐ डं नमः, ॐ ढं नमः, ॐ ण नमः-दक्षिणा पाद-मूल, जानु, गुल्फ और अंगुलियों के मूल ओर अग्रभाग में, ॐ तं नमः, ॐ थं नमः, ॐ दं नमः, ॐ

धं नमः, ॐ नं नमः–वाम–पाद–मूल, जानु, गुल्फ और अंगुलियों के अग्रभाग में, दक्ष–पार्श्व में ॐ पं नमः, वाम–पार्श्व में ॐ फं नमः। ॐ वं नमः–पृष्ठ में मध्यमा अनामा और कनिष्ठा तीनों से, ॐ भं नमः–नाभि–तर्जनी छोड़ चारों अंगुलियों से ॐ मं नमः–पेट–पाँचों अंगुलियों से। हस्त–तल से ॐ यं नमः–हृदय, ॐ रं नमः–दक्ष–बाहु–मूल, ॐ लं नमः–ककुन्–स्थल, ॐ व नमः–वाम बाहु–मूल, ॐ शं नमःॐहृदय से लेकर दाहिने हाथ तक, ॐ षं नमः–हृदय से वाम कर पर्यन्त, ॐ सं नमः–हृदय से दक्ष पाद पर्यन्त, ॐ हं नमः–हृदय से वाम पाद–पर्यन्त, ॐ लं नमः–हृदय से नाभि–पर्यन्त, ॐ क्षं नमः–हृदय से मुखपर्यन्त।

(२) स्थितिमातृकान्यास–पूर्वोक्त ऋष्यादि–कराङ्ग–न्यास कर स्थिति–मातृका सरस्वती का इस प्रकार कर्ता ध्यान करे–

सिन्दूर–कान्तिममिताभरणां त्रिनेत्रां।
विद्याक्ष–सूत्र–मृग–पोत–वरं दधानाम्॥
पार्श्व–स्थितां भगवतीमपि काञ्चनाङ्गी।
ध्यायेत् कराब्ज–धृत–पुस्तक–वर्ण–मालाम्॥

डकार से न्यास आरम्भ कर क्षकार तक, फिर अकार से लेकर ठकार तक न्यास करे।

(३) संहारमातृकान्यास–पूर्वोक्त ऋष्यादि–कराङ्ग–न्यास कर संहार–मातृका सरस्वती का इसी प्रकार कर्ता ध्यान करे–

अक्षस्त्रजं हरिण–पोतमुदग्र–टंकम्।
विद्यां करैरविरतं दधतीं त्रिनेत्राम्॥
अर्द्धेन्दु– मौलिभरुणामरविन्दवासां।
वर्णेश्वरीं प्रणमत–स्तन–भार–नम्राम्॥

कर्ता क्षकार से न्यास प्रारम्भ करके अकार तक विलोम रीति से न्यास करे तो संहारमातृकान्यास होता है।

कलामातृकान्यासः

विनियोगः

ॐ अस्य श्रीकलामातृकान्यासस्य प्रजापतिर्ऋषिर्गायत्री छन्दः श्रीशारदा देवता पूजाङ्गत्वे विनियोगः।

न्यासः–

शिरसि प्रजापति-ऋषये नमः। मुखे गायत्री-छन्दसे नमः। हृदि श्रीशारदा-देवतायै नमः

अं ॐ आं अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॠं ॐ ॠं अनामिकाभ्यां नमः। इं ॐ ईं तजनीभ्यां नमः। लृं ॐ लृं कनिष्ठाभ्यां नमः। उं ॐ ऊं मध्यमाभ्यां नमः। अं ॐ अः करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः।

इसी प्रकार षडङ्ग-न्यास करके निम्न श्लोक का उच्चारण करके कर्ता ध्यान करे–

हस्तैः पद्मं रथाङ्गं गुणमथ हरिणं पुस्तकं वर्णमालाम्।
टङ्कं शुभ्रं कपालं दरममृत-लसद्धेम-कुम्भं वहन्तीम्॥
मुक्ता विद्युत्पयोद-स्फटिक-नव-जवा-बन्धुरैः पञ्चवक्त्रै-
स्त्र्यक्षैर्वक्षोज-नम्रां सकल-शशि-निभां शारदां तां नमामि॥

ॐ अं निवृत्यै नमः। ॐ आं प्रतिष्ठायै नमः। ॐ इं विद्यायै नमः। ॐ ईं शान्त्यै नमः। ॐ उं इन्धिकायै नमः। ॐ ऊं दीपिकायै नमः। ॐ ॠं रेचिकायै नमः। ॐ ॠं मोचिकायै नमः। ॐ लृं परायै नमः। ॐ लृं सूक्ष्मायै नमः। ॐ एं सूक्ष्मामृतायै नमः। ॐ ऐं ज्ञानामृतायै नमः। ॐ ओं आप्यायिन्यै नमः। ॐ औं व्यापिन्यै

नमः। ॐ अं व्योम-रूपायै नमः। ॐ अंः अनन्तायै नमः। ॐ कं सृष्ट्यै नमः। ॐ खं ऋद्ध्यै नमः। ॐ गं स्मृत्यै नमः। ॐ घं मेधायै नमः। ॐ ङंकान्त्यै नमः। ॐ चं लक्ष्म्यै नमः। ॐ छं द्युत्यै नमः। ॐ जं स्थिरायै नमः। ॐ झं स्थित्यै नमः। ॐ ञं सिद्ध्यै नमः। ॐ टं जरायै नमः। ॐ ठं पालिन्यै नमः। ॐ डं शान्त्यै नमः। ॐ ढं ऐश्वर्यै नमः। ॐ णं रत्यै नमः। ॐ तं कामिकायै नमः। ॐ थं वरदायै नमः। ॐ दं ह्लादिन्यै नमः। ॐ चं प्रीत्यै नमः। ॐ नं दीर्घायै नमः। ॐ पं तीक्ष्णायै नमः। ॐ फं रौद्रयै नमः। ॐ वं भयायै नमः। ॐ भं निद्रायै नमः। ॐ मं तन्द्रायै नमः। ॐ यं क्षुधायै नमः। ॐ रं क्रोधिन्यै नमः। ॐ लं क्रियायै नमः। ॐ वं उत्कार्यै नमः। ॐ शं मृत्यवे नमः। ॐ षं पीतायै नमः। ॐ सं श्वेतायै नमः। ॐ हं अरुणायै नमः। ॐ लं असितायै नमः। ॐ क्षं अनन्तायै नमः।

कण्ठादिमातृकान्यासः

विनियोग तथा न्यासः-

ॐ अस्य श्रीकण्ठादि-मातृकान्यासस्य दक्षिणामूर्तिऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीअर्धनारीश्वरो देवता, हलो बीजानि, स्वराः शक्तय, अव्यक्तयः कीलकानि, पूजाङ्गत्वे (जपाङ्गत्वे) विनियोगः।

दक्षिणामूर्ति-ऋषये नमः शिरसि, गायत्री छन्द से नमः मुखे अर्ध-नारीश्वर-देवतायै नमः हृदये। हलो बीजेभ्यो नमः गुह्ये। स्वरेभ्यः शक्तिभ्यो नमः पादयोः। अव्यक्तेभ्यः कीलकेभ्यो नमः सर्वाङ्गे।

अं कं खं गं घं ङं आं ह्सां अंगुष्ठाभ्यां नमः।

इं चं छं जं झं ञं ईं ह्सीं तर्जनीभ्यां नमः।

उं टं ठं डं ढं णं ऊँ ह्सूँ मध्यमाभ्यां नमः।

एं तं थं दं धं नं ऐं ह्सैं अनामिकाभ्यां नमः।

ओं पं फं बं भं मं औं ह्सौं कनिष्ठाभ्यां नमः।

अं यं रं लं वं अंः ह्सः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

इस प्रकार हृदयादि छहों अंगों में न्यास करके कर्ता ध्यान करें—

बन्धूक-काञ्चन-निभं रुचिराक्ष-मालाम्,
पाशांकुशौ च वरदं निज-बाहुदण्डैः।
बिभ्राणमिन्दु-शकलाभरणं त्रिनेत्र
मर्धाम्बिकेशमनिशं वपुराश्रयामः।।

इसके पश्चात् कर्ता निम्न क्रम से श्रीकण्ठादि-न्यास करे। प्रत्येक मंत्र के आदि में ह्सौः और अन्त में नमः को जोड़ देना अत्यधिक आवश्यक है—

ह्सौः अं श्रीकण्ठेशपूर्णोदरीभ्यां नमः। श्रीअनन्तेश-विरजाभ्यां नमः। इं सूक्ष्मेश-शालीभ्यां। ईं त्रिमूर्तीश-लोलाक्षीभ्यां। उं अमरेश-वर्तुलाक्षीभ्यां। ऊं अर्घीश-दीर्घघोणाभ्यां। ऋं भारभंतीश-दीर्घ-मुखीभ्यां। ॠं अतिथीश-गोमुखीभ्यां। लृं स्थाण्वीश-दीर्घ-जिह्वाभ्यां। ॡं हरेश-कुण्डोदरीभ्यां। एं झिण्टीश-ऊर्ध्वकेशीभ्यां। ऐं भौतिकेश-विकृतमुखीभ्यां। ओं सद्योजातेश-ज्वालामुखीभ्यां। औं अनुग्रहेश-उल्कामुखीभ्यां। कं क्रोधीश-महाकालीभ्यां। खं चण्डेश-सरस्वतीभ्यां। गं

पञ्चान्तकेश–गौरीभ्यां। घं शिवेश–त्रैलोक्यविद्याभ्यां। ङं एकरुद्रेश–मन्त्रशक्तिभ्यां। चं कूर्मेश–अष्टशक्तिभ्यां। छं एक नेत्रेश–भूतमातृभ्यां। जं चतुराननेश–लम्बोदरीभ्यां। झं अजेश–द्राविणीभ्यां। ञं सर्वेश–नागरीभ्यां। टं सोमेश–खेचरीभ्यां। ठं लाङ्गलीश–मञ्जरीभ्यां। डं दारुकेश–कपिलीभ्यां। ढं अर्धनारीश–वीरिमीभ्यां। णं उमाकान्तेश–काकोदरीभ्यां। तं आषाढीश–पूतनाभ्यां। थं दण्डीश–भद्रकालीभ्यां। दं अत्रीश–योगिनीभ्यां। घं मीनेश–शंखिनीभ्यां। नं मेषेश–तर्जनीभ्यां। पं लोहितेश–कालरात्रिभ्यां। फं शिखीश–कुब्जिकाभ्यां। वं छगलण्ड–कपर्दिनीभ्यां। भं द्विरण्डेश–वज्रिणीभ्यां। मं महाकालेश–जयाभ्यां। यं वाणीश–सुमुखीश्वरीभ्यां। रं भुजंगेश–रेवतीभ्यां। लं पिनाकीश–माधवीभ्यां वं खड्गीश–वारुणीभ्यां। शं वकेश–वायवीभ्यां। षं श्वेतेश–रक्षोविधारिणीभ्वां। स भृग्वीश–सहजाभ्यां। हं नकुलीश–लक्ष्मीभ्यां लं शिवेश–ब्यापिनीभ्यां। क्षं सम्वतेकेश–महामायाभ्यां नमः।

वर्णन्यासः

कर्ता वर्णन्यास तत्वमुद्रा से ही यथोक्त स्थानों में विधिवत करें–

ॐ अं आं इं ईं उं ऊं ऋं लृं लॄं नमः– हृदय

ॐ एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं नमः–दाहिनी भुजा

ॐ ङंचं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं नमः– बायी भुजा

ॐ णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं नमः– दाहिनी जंघा

ॐ मं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं नमः– बायी जंघा

षोढान्यासः

१. ॐ से पुटित मातृका और मातृका-पुटित प्रणय मातृका

२. लक्ष्मीबीज-पुटित मातृका और मातृका-पुटित लक्ष्मी-बीज।

३. कामबीज-पुटित मातृका और मातृका-पुटित कामबीज

४. मायाबीज-पुटित मातृका और मातृका-पुटित माया-बीज।

५. काली-बीज-द्वय (क्रीं क्रीं) पुटित 'ॠं ॠं लृं लृं' और 'ॠं ॠं लृं लृं' पुटित काली-बीज-द्वय।

६. मूल-पटित मातृका और मातृका-पुटित मूल-बीज (क्रीं)।

इनसे अनुलोम और विलोम–क्रम के अनुसार तत्वमुद्रा से ही मातृकान्यास कर्ता करके सभी स्थानों में न्यास करने के उपरान्त मूल मंत्र से एक सौ आठ बार व्यापक–न्यास कर्ता पुनः करें।

तत्वन्यासः

यदि मूलमन्त्र 'क्रीं' हो, तो इसके तीन भाग करे–क, र, ई। यदि विद्याराज्ञी हो तो आदि के सात बीजों का प्रथम भाग (क्रीं क्रीं क्रीं हूँ हूँ ह्रीं ह्रीं), मध्य भाग छः अक्षरों (दक्षिणे कालिके) का और तृतीय खण्ड नौ (क्रीं क्रीं क्रीं हूँ हूँ ह्रीं ह्रीं स्वाहा) वर्णों का करे। इन खण्डों से क्रम से मस्तक से नाभिपर्य्यन्त उपरान्त नाभि से हृदय–पर्य्यन्त तथा हृदय से मस्तक पर्य्यन्त कर्ता न्यास करें।

बीजन्यासः

क्रीं नमः ब्रह्मरंध्रे। क्रीं नमः भ्रू-युगले। क्रीं नमः ललाट्े। हूँ नमः नाभिं। हूँ नमः गुह्ये। ह्रीं नमः मुखे। ह्रीं नमः सर्वाङ्गे।

विद्यान्यासः

सिर-क्रीं नमः, मूलाधार-क्रीं नमः, हृदय-क्रीं नमः, तीनों नेत्र-क्रीं नमः, दोनों कान-क्रीं नमः, मुख-क्रीं नमः, दोनों भुजा-क्रीं नमः, पीठ-क्रीं नमः, दोनों जानु-क्रीं नमः, नाभि-क्रीं नमः।

लघुषोढान्यासः

मस्तक-ॐ नमः, मूलाधार-स्त्रीं नमः, लिंग-एं नमः, नाभि-क्रीं नमः, हृदय-ऐं नमः, कण्ठ-क्रीं नमः, भ्रूमध्य-ह्सौः नमः दाहिनी बाहु-ॐ नमः, वाम बाहु-श्रीं नमः, दक्ष पाद-ह्रीं नम-, वाम-पाद-क्रीं नमः, पीठ-क्रीं नमः।

पीठन्यासः

कर्ता हृदय में तत्व-मुद्रा से—ॐ ह्रीं आधार-शक्तये नमः, पं प्रकृत्यै नमः, कं कूर्माय नमः, शं शेषाय नमः, लं पृथिव्यै नमः, ॐ सुधा-टम्बुधये नमः, ॐ मणि-द्वीपाय नमः, ॐ चिन्तामणि-गृहाय नमः-ॐ श्मशानाय नमः, ॐ पारिजाताय नमः, ॐ रत्न-वेदिकायै नमः, ॐ नाना-मुनिभ्यो नमः, ॐ नाना-देवेभ्यो नमः, ॐ बहु-मांसस्थिमोदमान-शिवाभ्यो नमः, ॐ शव-मुण्डेभ्यो नमः।

ॐ धर्माय नमः-दाहिना कंधा, ॐ ज्ञानाय नमः-बायाँ कन्धा, ॐ वैराग्याय नमः-दायीं कमर, ॐ ऐश्वर्याय नमः-बाईं कमर, ॐ अधमाय नमः-मुख, ॐ अज्ञानाय नमः-बाम भाग, ॐ अवैराग्याय नमः-नाभि, ॐ अनैश्वर्याय नमः-दाया भाग।

इसके बाद षोडश-दल के कमल की कर्णिका में-ॐ आनन्दकन्दाय नमः। ॐ अनन्ताय नमः। ॐ पद्माय नमः। ॐ अर्कमण्डलाय द्वादश-कलात्मने नमः। ॐ सोम-मण्डलाय षोडश-कलात्मने नमः। ॐ मं वह्नि-मण्डलाय दशकलात्मने नमः। ॐ सं सत्वाय नमः। ॐ रं रजसे नमः। ॐ तं तमसे नमः। ॐ आं आत्मने नमः। ॐ अन्तरात्मने नमः। ॐ पं परमात्मने। नमः ॐ ह्रीं ज्ञानात्मने नमः।

इसके बाद अष्ट-दलों पर पूर्व से-इं इच्छा-शक्त्यै नमः, ज्ञां ज्ञान शक्त्यै नमः, कं क्रिया-शक्त्यै नमः, कं कामिन्यै नमः, कां कामदायै नमः, रं रत्यै नमः, रं रति प्रियायै नमः, आं आनन्दायै नमः। कर्णिका पर-मं मनोन्मन्यै नमः। उसके बाद 'ऐं परायै नमः। ह्सौः अपरायै नमः। सदाशिव-महाप्रेत-पद्मासनय नमः।

इस प्रकार भूतशुद्धि न्यासादि कर देह को निष्पाप समझ पीठ-न्यास से देह को देवता के रहने के स्थान (पीठ) की भावना करके इसके आगे के वैदिक कर्मो को कर्ता से आचार्य निम्न क्रम से करावें-

अखण्डदीपस्थापनम्

काली देवी के दक्षिण भाग में घृत का दीप तथा बायें भाग में तेल का दीप स्थापित कर उसे प्रज्वलित करें तथा गन्धादि के द्वारा हाथ जोड़कर यह प्रार्थना करें-

भो दीप देवरूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत्।
यावत् कर्मसमाप्तिः स्यात्तावत्त्वं सुस्थिरो भव॥

इसके पश्चात् शंख, घण्टा, गन्ध, अक्षत, पुष्पादि से पूजन करें।

कर्मपात्रासादनम्

अपने वाम भाग में स्वर्ण, रजत, ताम्र, कांस्य अथवा शुद्ध मिट्टी का मध्यम आकार का सुद्रीण घट स्थापित करें। सर्वप्रथम रक्त चन्दन से बिन्दु, त्रिकोण, षटकोण, वृत्त तथा चतुरस्त्र वाला एक मंडल ताम्रपत्र पर बनवा कर रखें।

मध्ये मूलम्, त्रिकोणेत्रिपदैः–एं ह्रीं क्लीं, चामुण्डायै, विच्चे नमः, एवं द्विरावृत्या षट्कोणे, मातृकया वृत्तम्–अं आं इत्यादि क्षान्तम्॥

चतुरस्त्रे षडङ्गानि–आग्नेये ऐं हृदयाय नम :, ऐशाने ह्रीं शिरसे स्वाहा। नैऋत्ये क्लीं शिखायै वषट्, वायव्ये चामुण्डाये कवचाय हुम्, मध्ये विच्चे नेत्रत्रयाय वौषट्, चतुर्दिक्षु मूलम अस्त्राय फट्।

इस प्रकार से यंत्र का पूजन कर हुं से आधार का प्रक्षालन करें पुनः मूल से स्थापित करें।

ॐ मं वह्निमण्डलाय दशकलात्मने श्रीकाली देवता कलशपात्राधाराय नमः इति आधारं इस प्रकार से आधार का पूजन कर दश कलाओं का पूजन करें।

ॐ यं धूम्रार्चिषे नमः। ॐ रं ऊष्मायै नमः। लं ज्वलिन्यै नमः। ॐ वं ज्वालिन्यै नमः। ॐ शं विस्फुलिङ्गिन्यै नमः। ॐ षं सुश्रियै

नमः। ॐ सं सुरूपायै नमः। ॐ हं कपिलायै नमः। ॐ लं हव्यवाहायै नमः। ॐ क्षं कव्यवाहायै नमः।

इस प्रकार से पूजन करके हुं इस मन्त्र से पात्रों का प्रक्षालन कर मूल से स्थापित कर–**सूर्यमण्डलाय द्वादशकलात्मने काली देवता कलशपात्राय नमः** इस प्रकार से पूजन कर द्वादश कलाओं का पूजन निम्न क्रम से करें–

ॐ कं भं तापिन्यै नमः। ॐ खं बं तापिन्यै नमः। ॐ गं फं धूम्रायै नमः। ॐ घं पं मरिच्ये नमः। ॐ ङं नं ज्वालिन्यै नमः। ॐ चं घं मरिच्यै नमः। ॐ छं दं सुषुम्नायै नमः। ॐ जं थं भोगदायै नमः। ॐ झं तं विश्वायै नमः। ॐ ञं णं बोधिन्यै नमः। ॐ टं ढं क्षमायै नमः।

इस प्रकार से बारह कलाओं का पूजन करके–**तत्र विलोममातृकया जलमापूरयेत्।** यथा–

ॐ क्षं लं हं सं षं शं वं लं रं यं मं भं बं फं पं नं धं दं थं तं णं टं ढं डं ठं डं अं झं जं छं चं ङंघं गं खं कं अः अं औं ओं ऐं एं लॄं लृं ऊं उं ईं इं आं अं।।

गालिनीमुद्रा करके षोडशकलात्मने चन्द्रमण्डलाय **श्रीकाली देवता कलशा मृताय नमः** इस प्रकार से पूजन कर सोलह कलाओं का निम्न क्रम से पूजन करें।

अं अमृतायै नमः।आं मानदायै नमः।इं पूषायै नमः।ईं पुष्टयै नम :। उं तुष्टच्चै नमः। ऊं रत्यै नमः। ऋं धृत्यै नमः। ॠं शशिन्यै नमः। लृं चन्द्रिकायै नमः। लॄं कान्त्यै नमः। एं ज्योत्स्नायै नमः। ऐं

श्रिये नमः। ओं प्रीत्यै नमः। औं अङ्गदायै नमः। अं पूर्णायै नमः। अः पूर्णामुतायै नमः।

इस प्रकार से सोलह कलाओं का पूजन करके फट् मंत्र से संरक्ष्य करके मूल मंत्र से कालीदेवी का आवहन करके दशमुद्राओं को निम्न क्रम से प्रदर्शित करें–

मूल से–**आवाहिता भव, स्थापित भव, सन्निहिता भव, सन्निरुद्रा भव। सम्मुखीकृता भव। षडङ्गेन सकलीकृता भव। मूलेन हृदयायेत्यादि अवगुण्ठिता भव। अमृतीकृता भव। परमीकृता भव।**

योनि मुद्रा प्रदर्शित करके मूल से पूजन कर मत्स्यमुद्रा प्रदर्शित करे। पश्चात् मूल मंत्र से आठ बार अभिमंत्रित कर धेनुमुद्रा और योनि मुद्रा करे।

कालीपूजनम्

कर्ता के दाहिने हाथ में जल, अक्षत्, पुष्प सुपारी तथा यथाशक्ति द्रव्य देकर आचार्य काली पूजन के निमित्त उससे इस संकल्प को विधिवत् करावें–

देशकालौ सङ्कीर्त्य–अमुकगोत्रोत्पन्नो अमुकशर्माऽहं (वर्माऽहं, गुप्तोऽहं, दासोऽहं) श्रुति–स्मृतिपुराणोक्तप्रलप्राप्तचर्थं मम सुकुटुम्बस्य सपरिवारस्य श्रीकालीदेव्यनुग्रहतो देवकृत–ग्रहकृत–राजकृत–मनुष्यकृत–सर्वविधबाधानिवृत्तिपूर्वकं धन–धान्य–पुत्र–पौत्र–दीर्घायुरारोग्यैश्वर्यादिसमृद्ध्यर्थं, सर्वाभीष्टफल–प्राप्तिपूर्वकधर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधपुरुषार्थसिद्धिद्वारा श्रीकालीदेव्याः प्रीत्यर्थं यथोपचारैः कालीपूजन महं करिष्ये।

ध्यानम्–

श्मशानमध्ये कुणपाधिरूढां दिगम्बरां नीलरुचिंत्रिनेत्राम्।
चतुर्भुजां भीषणाहासयुक्तां कालीं स्वकीये हृदि चिन्तयामि॥

ॐ अम्बे ऽअम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्च्चन।
ससस्त्यश्वकः सुभद्द्रिकां काम्पीलवासिनीम्॥

आवाहनम्–

आधारभूते जगतोऽखिलस्य समस्तदेवासुरपूजनीये।
आवाहनं ते प्रकरोमि मातः! दयायुता मे भव सम्मुखीना॥

ॐ सहस्त्रशीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात्। स भूमिर्ठ० सर्व्वतः स्प्पृत्वात्त्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥

आगच्छेह कालीदेवी! सर्वसम्पत्प्रदायिनी!।
यावद् व्रतं समाप्येत तावत्त्वं सन्निधो भव॥

आसनम्–

प्रतप्तृकार्तस्वरनिर्मितं यत् प्रोढोल्लसद्रत्नगणैः सुरम्यम्।
दैत्यौघनाशाय प्रचण्डरूपे! सनाथ्यतामासनमेत्य देवि!॥

ॐ पुरुष ऽएवेदर्ठ० सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्। उतामृतत्व-स्येशानो यदन्नेनातिरोहति॥

अनेक-रत्न-संयुक्तं नानामणि-गणान्वितम्।
कार्तस्वरमयं दिव्यमासनं प्रतिगृह्यताम्॥

पाद्यम्–

सुवर्णपात्रेऽतितमां पवित्रे भागीरथीवारिमयोपनीतम्।
सुरासुरैरर्चितपादयुग्मे गृहाणपाद्यं विनिवेदितं ते॥

ॐ एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः। पादोऽस्य व्विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि॥

अर्घ्यम्–

दयार्दचिते मम हस्तमध्ये स्थितं पवित्रं धनसारयुक्तम्।
प्रफुल्लमल्लीकुसुमैः सुगन्धि–गृहाण कल्याणि! मदीयमर्घ्यम्॥

ॐ त्रिपादूद्ध्र्वऽउदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः। ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशनेऽअभि॥

आचमनम्–

समस्तदुःखौघविनाशदक्षे! सुगन्धितं फुल्लप्रशस्तपुष्पैः।
अये! गृहाणाचमनं सुवन्द्ये! निवेदनं भक्तियुतः करोमि॥

ॐ ततो व्विराडजायत व्विराजोऽ अधि पूरुषः। स जातो ऽअत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः॥

[1]पञ्चामृतम्–

दुग्धेन दध्या मधुना घृतेन संसाधितं शर्करया सुभक्तया।
आलोकतृप्ती कृतलोक! देवि! पञ्चामृतं स्वीकुरु लोकपूज्ये!॥

ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः। सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित्॥

पञ्चामृतं मयाऽऽनीतं पयो दधि घृतं मधु।
शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

१.क–शर्करा मधु दुग्धं च घृतं दधि समांशकम्। पञ्चामृतमिदं प्रोक्तं देहशुद्धौ विधीयते॥ (महानिर्माणतन्त्र)

ख–गव्यमाज्यं दधि क्षीरं माक्षिकं शर्करान्वितम्। एकत्र मिलितं ज्ञेयं दिव्यं पञ्चामृतं परम्॥ (धन्वन्तरिः)

मधुपर्कम्–

कर्पूरसम्पर्कसुगन्धरम्यं सुवर्णपात्रे निहितं सुभक्त्या।
मयोपनीतं मधुपर्कमेतं श्रमापनोदाय गृहाण मातः॥

ॐ यन्मधुनो मधव्यं परमर्ठ रूपमन्नाद्यम्। तेनाऽहं मधुनो मधव्येन परमेण रूपमान्नद्येन परमो मधव्यो ऽन्नादोऽसानि॥

दधि-मधु-घृतसमायुक्तं पात्रयुग्मं समन्वितम्।
मधुपर्कं गृहाण त्वं शुभदा भव शोभने॥

स्नानम्–

कर्पूरकाश्मीरजपिश्रितेन जलेन शुद्धेन सुशीतलेन।
स्वर्गापवर्गस्य फलप्रदाढ्ये स्नानं कुरू त्वं जगदेकधन्ये!॥

वस्त्रम्–

सुरञ्जितं कुङ्कुमरञ्जनेन सुवासितं द्राक् पटवासचूर्णैः।
कौशेयकं कल्मषनाशदक्षे ! गृहाण वस्त्रं विनिवेदितं ते॥

ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम्। पशूँस्ताँश्चक्क्रे व्वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये॥

गन्धम्–

लोकेश-लोकेशयमध्यवर्ति सुरासुरस्वान्तविनोदकारि।
सुगन्धद्रव्यं विनिविदितं ते गृहाणा कल्याणिनि बालकस्य॥

ॐ त्वां गन्धर्व्वा ऽअखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः। त्वामोषधे सोमो राजा व्विदद्वान्यक्ष्मादमुच्यत॥

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपनं च देवेशि! चन्दनं प्रतिगृह्यताम्॥

उपवस्त्रम्–

तिग्मांशुरश्मिप्रकरोपमानां सुकोमलां देवगणैः सुपूज्ये।
कल्याणि पूतामुपवस्त्रमेतदुरीकुरु त्वं विनिवेदितं ते॥

कुङ्कुमम्–

प्रत्यूषमार्तण्डमयूखतुल्यं सुगन्धयुक्तं मृगनाभिचूर्णैः।
माणिक्यपात्रस्थितमञ्जुकान्तिं त्रयीमये! देवि! गृहाण कुङ्कुमम्॥

कुङ्कुमं कान्तिदं दिव्यं कामिनीकामसम्भवम्।
कुङ्कुमेनाऽर्चिते देवि! प्रसीद परमेश्वरि॥

पुष्पम्–

प्रफुल्लरक्तोत्पलमल्लिकुन्दशेफालिकामालतिकेतकीभिः।
भक्त्या प्रसूनस्य कदम्बकैस्त्वामभ्यर्चये स्वीकुरु दृष्टिपातैः॥

ॐ यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्।
मुखं किमस्यासीत्किं बाहू किमूरू पादाऽ उच्येते॥

मन्दार–पारिजातादि–पाटाली–केतकानि च।
जाती–चम्पक–पुष्पाणि गृहाणेमानि शोभने!॥

कालीआवरणपूजा

आचार्य कालीदेवी की आवरणपूजा निम्न क्रम से कर्ता से करावें–

प्रथम आवरण–क्रां हृदयाय नमः हृदयं तर्पयामि पूजयामि नमः–अग्नि कोण–क्रीं शिरसे स्वाहा शिरो तर्पयामि पूजयामि नमः–ईशान क्रूं शिखायै वषट् शिखां तर्पयामि पूजयामि नमः–नैर्ऋत्य–कोण, क्रैं कवचाय हूं कवचं तर्पयामि पूजयामि नमः–

वायुकोण, क्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् नेत्र-त्रयं तर्पयामि पूजयामि नमः-पूर्वभाग-क्रः अस्त्राय फट् अस्त्रं तर्पयामि पूजयामि नमः-पृष्ठ भाग-

ॐ अभीष्ट-सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्॥

द्वितीय आवरण-प्रथम त्रिकोण के अन्दर बिन्दु से वायव्यकोण से लेकर ईशान-कोण तक गुरु-पंक्तियों की भावना कर प्रथम पंक्ति में गुरु, परम गुरु और परमेष्टि गुरु का तर्पण और पूजन करे। गुरु का गुरुपात्र से और परम गुरुओं का श्रीपात्र से तर्पण और पूजन करे-द्वितीय पंक्ति में दिव्यौघ गुरुओं-

महादेव्यम्बा महादेवानन्दनाथ, त्रिपुराम्बा और त्रिपुर भैरवानन्दनाथ। तीसरी पंक्ति में-सिद्धोध-ब्रह्मानन्दनाथ, पूर्णदेवानन्दनाथ, चलचित्तानन्दनाथ, चलचलानन्दनाथ (लोचनानन्दनाथ-पाठान्तर) कुमारानन्दनाथ, क्रोधानन्दनाथ, वरदानन्दनाथ, स्मरदीपानन्दनाथ, मायाम्बा और मायावत्यबाका। चौथी पंक्ति में मानवौध-विमलानन्दनाथ, कुशलानन्दनाथ, भीमसेनान्दनाथ, सुधाकरानन्दनाथ, मीनानन्दनाथ, गोरक्षानन्दनाथ, भोजदेवानन्दनाथ, प्रजापत्वयानन्दनाथ, मूलदेवानन्दनाथ, रन्तिदेवानन्दनाथ, विघ्नेश्वरानन्दनाथ, हुताशनानन्दनाथ, समयानन्दनाथ, सन्तोषानन्दनाथ, श्मशानानन्दनाथ और सर्वानन्दनाथका। पाँचवी पंक्ति में कुलगुरुओं-प्रह्लादानन्दनाथ, सनकानन्दनाथ, कुमारानन्दनाथ,

वशिष्ठानन्दनाथ, क्रोधानन्दनाथ, सुखानन्दनाथ, ध्यायानन्दनाथ और बोधानन्दनाथ का तर्पण और पूजन करें।

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम्॥

तृतीयआवरण–पाँचों त्रिकाणों के पन्द्रहों कोणों पर सबसे भीतर के त्रिकोण के स्वाग्र कोण अर्थात् नीचे के कोण से वामावर्त्त–क्रम से काली, कपालिनी, कुल्ला, कुरुकुल्ला, विरोधिनी, विप्रचित्ता, उग्रा, उग्रप्रभा, दीप्ता, नीला, घना, बलाका, मात्रा, मुद्रा और मिता इन पन्द्रह नित्याओं का तर्पण–पूजन करे। ये श्यामवर्ण की हैं, गले में मुण्डमाला है, दाहिने हाथ में खड्ग और वाम हाथ में तर्जनी है।

ॐ अभीष्ट-सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम्॥

चतुर्थ आवरण–आठों दलों पर पूर्वादि में वाम–क्रम से–१ ब्राह्मी, जो स्वर्ण–वर्ण हैं, हंस पर सवार, चार मुख चार भुजा तीन नेत्रावाली, चारों हाथ में कमल, दण्ड, पद्माक्ष–माला और ब्रह्मा–कूर्च लिये। जटाजूट धारिणी, हँसती है; २ नारायणी, जो दिव्य ज्योतिवाली, श्यामवर्ण की, गरुड पर सवार, नाना अलंकारों से भूषित, सुन्दर केशवाली चार हाथोंवाली, घण्टा शंख, कपाल और चक्र लिये, आसव–पान से घृर्णित नेत्रवाली हैं, ३ महेश्वरी जो बैल पर सवार, गौर–वर्णा, तीन नेत्र–वाली, छः हाथवाली, जिनमें कपाल, डमरु, वर, अभय, त्रिशूल और टक हैं, नाना आभूषणों से भूषिता है, ४ चामुण्डा, जो अट्टहास कर रही हैं, दाँत बाहर निकले हैं अर्थात् बहुत लम्बे हैं, विशालकाया, त्रिनेता, देखने में नीलकमल से सदृश्य, नर–मुण्ड की माला गले में, प्रसन्न मुखवाली, चार हाथवाली खड्ग,

त्रिशूल, कपाल, नृमुण्ड का खेटक लिये, प्रेत पर सवार, प्रमत्ता हैं, ५ कौमारी, जो कुंकुम–सदृश लालवर्णवाली, मयूर पर सवार, त्रिनेत्रा, चारहाथवाली, शक्ति, पाश, अंकुश और अभय लिये हैं, ६ अपराजिता, जो पीतवर्ण की, चारों हाथ में अक्ष–सूत्र, वर, कपाल और मातुलाङ्ग, ७ वाराही, जो धूम्र–वर्ण की वराह शरीरवाली, शुभा चार हाथ, फलक, खड्ग, मूषक हल लिये हैं, ८ नारसिंह, जो नृसिंह सदृश्य हैं–इन आठ शक्तियों का पूजन–तर्पण करें।

ॐ अभीष्ट-सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम्॥

पंचम आवरण–आठों दलों के केसरों पर असिताङ्ग, रुरु, चण्ड, क्रोध, उन्मत्त, कपाली, भीषण और संहार इन आठ भैरवों का तर्पण–पूजन करे। ध्यान–भीषण मुखवाले, त्रिनेत्र, अर्धचन्द्र–विभूषित आठ वर्ष की उम्रवाले, छोटे–छोटे केश से भूषित और दोनों हाथों में दण्ड और शूल लिये हैं। इनके साथ क्रमशः भैरवी, महाभैरवी, सिंह, धूम्र, भीम, उन्मत्त, वशिनी और मोहिनी इन आठ महाभैरवी का तर्पण–पूजन करे। ध्यान–कोटिचन्द्र के समान ज्योतिवाली, पूर्ण शुभ्र वदना, पाँच मुखवाली, त्रिनेत्रा और अठारह हाथवाली है।

ॐ अभीष्ट-सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं पञ्चमावरणर्चनम्॥

षष्ठ आवरण–भूपुर की आठों दिशाओं में पूर्वादि–क्रम से इन्द्र, अग्नि, यम, निर्ऋति, वरुण, वायु, कुबेर और ईशान का ईशान कोण के बीच को ऊर्ध्व मानकर ब्रह्मा का, नैऋत्यकोण और पश्चिम के बीच पाताल मान अनन्त का पूजन व तर्पण करे। इन्द्र–नीलवर्णा ऐरावत पर सवार, हजार नेत्रवाले, हाथ में वस्त्र शिर पर मुकुट। अग्नि–रक्तवर्ण, हाथ में शक्ति त्रिनेत्र, छाग पर सवार। यम–

श्यामवर्ण, दण्ड और पाश, महिष पर सवार। गौरवर्ण, हाथ में पाश मगर पर सवार। वायु–नीलवर्ण, हाथ में ध्वजा, हरिण पर सवार। कुबेर–श्यामवर्ण, हाथ में गदा मनुष्य पर सवार। ईशान (शिव) गौर वर्ण, त्रिनेत्र, हाथ में त्रिशूल बैल पर सवार हैं। ब्रह्मा–स्वर्णवाले (पीला), चार मुख वाले, जटाधारी, चारों हाथों में अक्ष, सूत्र पद्म, दण्ड और कमण्डल लिए, हंस पर सवार हैं। अनन्त–श्यामवर्ण, शंख, चक्र, गदा और पद्म लिए नाना अलंकारों से भूषित और गरुड पर सवार, सहस्र कलाओं से विभूषित हैं। इनके वज्र, शक्ति, दण्ड, खड्ग, पाश, ध्वजा, गदा त्रिशूल, पद्म और चक्र इन अस्त्रों का क्रमशः तर्पण व पूजन करें।

ॐ अभीष्ट-सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं षष्ठावरणार्चनम्।

सप्तम् आवरण–खड्ग, मुण्ड, वर और अभय का तर्पण पूजन करें।

ॐ अभीष्ट-सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं सप्तमावरणर्चनम्॥

उपरान्त–

ॐ अनुज्ञां देहि मातर्मे पूजनस्य तथाम्बिके।
आभारणानां सर्वेषां तव प्रसाद हेतवे॥

इस मन्त्र द्वारा आज्ञा ले आवरणपूजा करें।

ॐ चन्द्रं तर्पयामि पूजयामि नमः।

ॐ बाल-शव-युग्म-कर्णावतंसौ तर्पयामि पूजयामि नमः।

ॐ पञ्चाशद्-मुण्डमालां तर्पयामि पूजयामि नमः।

ॐ सहस्त्र-शव-कर-काञ्चीं तर्पयामि पूजयामि नमः।

ॐ नाना-विधाभरणानि तर्पयामि पूजयामि नमः।

ॐ अभीष्ट-सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं तवैवाभरणार्चनम्॥

धूपम्–

गोशीर्षकस्तूरीं सिताभ्रचूर्णैः विमिश्रितं मानससौख्यदं च।
अयेऽम्बिके सत्वरजस्तमोमयि! गृहाण धूपं विनिवेदितं मे॥

ॐ धूरसि धूर्व्व धूर्व्वन्तं धूर्व्वतं य्योऽस्म्मान् धूर्व्वति तं धूर्व्वयं व्वयं धूर्व्वामः।देवनामसि वह्नितमर्ठ० सस्निनतमं पप्रितमं जुष्ट्तमं देवहूतमम्॥

दशाङ्ग-गुग्गुलं धूपं चन्दना-ऽगरु-संयुतम्।
समर्पितं मया भक्त्या महादेवि! प्रतिगृह्यताम्॥

दीपम्–

मातः! स्फुरद्वर्तियुतं घृतेनपूर्णं तमस्तोमविनाशनं च।
भत्यार्पितं काञ्चनदीपमेनमङ्गीकुरु त्वं करुणार्द्रचित्ते॥

ॐ अग्गिनज्ज्योतिज्ज्योतिरग्गिनः स्वाहा सूर्य्यो ज्योतिज्ज्योतिः सूर्य्यः स्वाहा। अग्निर्व्वर्च्चो ज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा सूर्य्यो व्वर्च्चो ज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा ज्योतिः सूर्य्यः सूर्य्यो ज्योतिः स्वाहाः॥

आज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।
दीपं गृहाण देवेशि! त्रैलोक्यतिमिरापहम्॥

नैवेद्यम्–

सम्यक्तया स्थापित मादरेण नानारसास्वादयुतं षुपक्कम्।
कल्याणि! पापक्षयकारिणी त्वं नैवेद्यमङ्गीकुरु देवपूज्ये!॥

ॐ नाभ्या ऽ आसीदन्तरिक्ष शीर्ष्णो द्यौः समवर्त्तत। पद्भ्यां भूमिर्द्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ२॥ ऽअकल्पयन्॥

अन्नं चतुर्विधं स्वादु-रसैः षड्भिः समन्वितम्।
नैवेद्यं गृह्यतां देवि! भक्तिं मे ह्यचलां कुरु॥

ताम्बूलम्–

एलालवङ्गक्रमुकादिपूर्णां सुगन्धितां चन्दनवारिणा च।
ताम्बूल-वल्लीदलवीटिकां मे गृहाण मातरर्विनिवेदितां मे॥

ॐ सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः। देवा यद्य ज्ञं तन्वाना ऽअबध्नन्पुरुषं पशुम्॥

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लि-दलैर्युतम्।
एलादि-चूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

दक्षिणाम्–

राक्षसौघजयचण्डचरित्रे! कि ददामि निखिलं तव वस्तु।
भक्तिभावयुतदत्तसुवर्णदक्षिणां सफलयस्व तथापि॥

ॐ हिरण्यगर्ब्भः समवर्त्तताग्ग्रे भूतस्य जातः पतिरेक ऽआसीत्। स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा व्विधेम॥

नीराजनाम्–

सुवर्णपात्रस्थितचन्द्रखण्डैर्नीराजनां भक्तियुतः करोमि।
कारुण्यपूर्ण! जगदेकवन्द्ये! विधेहि दृष्ट्यां सफलां सुपूज्ये!॥

ॐ इदठं० हविः प्रजननं मे ऽअस्तु दशवीरठं० सर्व्वगणठं० स्वस्तये। आत्मसनि प्प्रजासानि पशुसनि लोकसन्न्यभयसनि।

अग्निः प्प्रजां बहुलां मे करोत्त्वन्नं पयो रेतो ऽअस्मामासु धत्त।
आ रात्रि पार्थिवर्ठ० रजः पितुरप्प्रायि धामभिः। दिव सदार्ठ०सि
बृहती व्वितिष्ठुस ऽआत्त्वेषं वर्त्तते तमः॥

प्रदक्षिणा–

अयेऽम्बिके पापविनाशदक्षां नानाविधां पुण्यफलप्रदां च।
कृपाकटाक्षैः सफलां कुरुष्व प्रदक्षिणां ते वितनोमि देवि!॥

ॐ सप्प्तास्यासन्प्परिधयस्त्रिः सप्प्त समिधः कृताः।
देवा यद्य ज्ञं तन्वाना ऽअबध्नन्पुरुषं पशुम्॥

पदे पदे या परिपूजकेभ्यः सद्योऽश्वमेधादिफलं ददाति।
तां सर्वपापक्षयहेतुभूतां प्रदक्षिणां ते परितः करोमि॥

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिण पदे पदे॥

पुष्पाञ्जलिः–

पत्रयीमये कल्मषपुञ्जहन्त्रि! प्रचण्डरूपे सुरसार्थपूज्ये!।
बद्धाञ्जलिस्तावकपादयुग्मे पुष्पाञ्जलिं देवि! समर्पयामि॥

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्प्रथमान्न्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्त्र पूर्व्वे साद्ध्याः सन्ति देवाः॥

ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे। स मे
कामान् कामकामाय मह्यं कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु। कुबेराय
वैश्रवणाय महाराजाय नमः।

ॐ स्वस्ति साम्राज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं
महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायै स्यात् सार्वभौमः सार्वायुषां

तद परार्धात् पृथिव्यै समुद्रपर्यन्ताया ऽएकराडिति। तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्या ऽवसन् गृहे। आवीक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति।

ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतो मुखो विश्वतो बाहुरुत विश्वतस्पात्। सम्बाहुभ्यां धमति सम्पतत्त्रैर्द्यावा भूमिं जनयन् देव एकः॥

स्तवनम्–

मनो मृगो धावति सर्वदा मुधा विचित्रसंसारमरीचिकां प्रति।
अयेऽधुना किं स्वदया सरोवरं प्रकाश्य तस्मान्न निवर्तयिष्यसि॥

अनया पूजया भगवती–श्रीकालीदेव्यै प्रीयतां न मम।

॥ कालीपूजापद्धति समासः॥

काली-हवन-पद्धतिः

कर्ता अपनी धर्मपत्नी के साथ हवन कुण्ड के समीप या स्थण्डिल के समीप आकर शुद्ध [1]आसन पर बैठे। इसके पश्चात् कुशा से जल लेकर अपने ऊपर तथा हवनसामग्री के ऊपर पवित्रा हेतु निम्न श्लोक का उच्चारण करके जल छिड़के।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपिवा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनात्, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनात्, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनात्॥

इसके उपरान्त ही आचार्य सहित सभी ब्राह्मण स्वस्तिवाचन करें। इसके पश्चात् कर्ता के दाहिने हाथ में जल, अक्षत्, पुष्प, सुपारी और यथाशक्ति द्रव्य देकर इस संकल्प को उससे करवायें–

१.क–शमी काशमरी शल्लः कदंबो वरणस्तथा। पञ्चासनानि शस्तानि श्राद्धे देवार्चने तथा॥
(श्राद्धकल्पलता)

ख–कौशेयं कम्बलं चैव अजिनं पट्टमेव च। दारुजं तालपत्रं वा आसनं परिकल्पयेत्॥

देशकालौ सङ्कीर्त्य–अमुक गोत्रः अमुक शर्माऽहं (वर्माऽहं, गुप्तोऽहं, दासोऽहं) काली अनुष्ठान होमकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं तद्दशांशहवनादिकर्म करिष्ये। तत्रादौ निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं गणेशादिदेवानां यथोपचारैः पूजनं च करिष्ये।

इस प्रकार से संकल्प करके गणेशादि देवताओ की लब्धोंपचारों से पूजन करें इसके पश्चात् यदि इच्छा हो तो पुण्याहवाचन कर्म भी करे इसके पश्चात् ही कर्ता कालीहवनकर्म के लिए आचार्य व ब्राह्मणों का वरण निम्न संकल्प करके करें।

आचार्यादिब्राह्मणानां वरण संकल्पः–

देशकालौ संकीर्त्य– अस्मिन् कालीहवनकर्मणि एभिर्वरण-द्रव्यैः नानानामगोत्रान् नानानामधेयान् शर्मणो आचार्यादिब्राह्मणान् युष्मानहं वृणे।

अग्निप्रतिष्ठा

तीन कुशाओं से पश्चिम दिशा से पूर्व दिशा या दक्षिण दिशा से उत्तर दिशा की तरफ तीन बार परिससमूहन कर उन कुशाओं को ईशानकोण में छोड़ दे, फिर जल मिश्रित गोबर को लेकर उदक संस्थ [दक्षिण से उत्तर] अथवा प्राक्संस्थ तीन बार कुण्ड या वेदी का लेपन करें, फिर स्रुव नाम यज्ञीय हवन करने वाले पात्र से प्रादेश प्रमाण या स्थाण्डिल प्रमाण प्रागग्र पश्चिम दिशा से पूर्व दिशा की तरफ ६ : ६ : अंगुल व्यवहित कर उल्लेखन क्रम से अनामिका और अंगुठे से जहाँ रेखा दी है। उन रेखाओं से एक बार वहाँ की मिट्टी को उठाकर बायें हाथ में रखे, फिर बायें हाथ की सब मिट्टी दाहिने हाथ में रख ईशान कोण में फेंक दे। मुष्टिकृत नीचे को हाथ कर जल से अभ्युक्षण कर बिना धूम वाली अग्नि को स्वाभिर्मुखमध्य

में ही अग्नि कोण में चुपचाप रख वही पर आमाद और क्रव्याद नामक दो अंगारों को त्याग अवशिष्ट अग्नि का मध्य में स्थापन करें, अर्थात्–आमाद तथा क्रव्याद को स्थाण्डिल के बाहर न निकाले (शारदा तिलक) आदि मत से तान्त्रिकों को बाहर निकालना लिखा है। किन्तु वैदिक कर्म में ऐसी बात नहीं है।

इस वैदिक मन्त्र का उच्चारण करते हुए, अग्नि स्थापन करे–

ॐ अग्निदूतं पुरोम दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे। देवाँ२॥ आसादयादिह॥

ग्रहाणामावाहनं पूजनं च

ईशानकोण की ओर पीढ़े अथवा चौकी पर वस्त्र बिछाकर नवग्रहमंडल लिखकर सूर्यादिनवग्रह–अधिदेवता–प्रत्यधिदेवता–पंचलोकपाल–वास्तोष्पति–क्षेत्रपाल–दशादिक्पाल का आवाहन निम्न क्रम से करें–

ॐ आ कृष्णेन रजसा व्वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्त्यं च। हिरण्येन सविता रथेनादेवी याति भुवनानि पश्यन्॥ सूर्याय नमः

ॐ इमन्देवा ऽअसपत्नर्ठ० सुबद्ध्वं महते क्षत्त्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमुस्यै व्विश ऽएष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानार्ठ० राजा॥ चन्द्रमसे नमः॥

ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या ऽअयम्। अपार्ठ० रेतार्ठ० सि जिन्वति॥ भौमाय नम :॥

ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्त्वमिष्टापूर्ते सर्ठ० सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थेऽध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत॥ बुधाय नमः॥

ॐ बृहस्पते ऽअति यदर्यो ऽअर्हाद्युमद्विभाति वक्रुतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऽऋतप्रजात तदस्मसु द्विणं धेहि चित्रम्॥ बृहस्पतये नमः॥

ॐ अन्नात्परिस्त्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्त्रं पयः सोमं प्रप्जापतिः। ऋतेन सत्त्यमिन्द्रिद्रयं व्विपानर्ठ० शुक्रमन्धसऽ-इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मघु॥ शुक्राय नमः॥

ॐ शं नो देवी रभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये। शंय्योरभिस्त्रवन्तुः नः॥ शनिश्चराय नमः॥

ॐ कया नश्चित्रऽ आभुवदूती सदावृधः सखा कया शचिष्ठठ्या व्वृता। राहवे नमः॥

ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्याऽअपेशसे। समुषद्भि रजायथाः। केतवे नमः॥

ग्रहदक्षिण पार्श्वे अधिदेवता स्थापनम् :-

ॐत्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥ ईश्वराय नमः॥

ॐ श्रीश्श्च ते लक्ष्मीश्श्च पत्नयावहोरात्त्रे पार्श्वे। नक्षत्त्राणि रूपवश्श्विनौ व्यात्तम्। इष्णणन्निषाणामुँ म ऽइषाणा सर्वलोकं म ऽइषाण॥ उमायै नमः॥

ॐयदक्क्रन्दः प्प्रथमं जायमान ऽउद्यन्त्समुद्द्रादुत वा पुरीषात्। श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुत्यं महि जातं ते ऽअर्व्वन्॥ स्कन्दाय नमः॥

ॐ व्विष्णो रराटमसि विष्णोः श्नप्त्रे स्तथोव्विष्णोः स्यूरसि व्विष्णोद्‌र्धुवोऽसि। व्वैष्णवमसि व्विष्णवे त्त्वा।। विष्णवे नमः।।

ॐ आ ब्ब्रह्मन्ब्राह्मणो ब्ब्रह्मवर्च्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूर ऽइषव्व्योऽतिव्याधी महारथी जायतां दोग्ध्री धेनुर्व्वोढानड्वानाशुः सप्तिर्ठ० पुरन्धिर्य्योषा जिष्णू रथेष्ठा सभेय युवास्य यजमानस्य व्वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्ज्जन्यो व्वर्षतु फलवत्यो न ऽओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्।। ब्रह्मणे नमः।।

ॐ सजोधा ऽइन्द्र सगणो मरूद्भिः सोमं पिब व्वृत्रहा शूर विद्वान्। जहि शत्रूँ २।। रपमृधो नुदस्वाथाभयं कृणुहि व्विश्वतो नः।। इन्द्राय नमः।।

ॐ यमायत्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्म्माय स्वाहा घर्मः पित्त्रे।। यमाय नमः।।

ॐ कार्षिरसि समुद्द्रस्य त्त्वाक्षित्या ऽउन्नयामि। समापो ऽअद्भिरग्मत समोषधी भिरोषधीः।। कालाय नमः।।

ॐ चित्रावसोस्वस्ति तेपारमशीय।। चित्रगुप्ताय नमः।।

ग्रहवाम पार्श्वे प्रत्यधिदेवता स्थापनम्–

ॐ अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे। देवाँ २।। ऽआसादयादिह।। अग्नये नमः।।

ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऽऊर्ज्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे।। अद्‌भ्यो नमः।।

ॐ स्योनापृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म्म सप्प्रथाः॥ पृथिव्यै नमः॥

ॐ इदं विष्णुर्व्विचक्क्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पाठ॰ सुरे स्वाहा॥ विष्णवे नमः॥

ॐ इन्द्रऽ आसान्नेता बृहस्पतिर्द्दक्षिणा यज्ञः पुर ऽएतु सोमः। देवसेनानामभिभञ्जतीनां जयन्तीनां मरुतो यन्त्वान्नेग्रम्॥ इन्द्राय नमः॥

ॐ अदित्त्यै रास्नासीन्द्राण्या ऽउण्णीषः। पूषासि घर्म्मायदीष्व॥ इन्द्राण्यै नमः॥

ॐ प्रजापते न त्वदेतान्न्यो विश्श्वा रूपाणि परि ता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो ऽअस्तु व्वयठ॰ स्याम पतयोरयीणाम्॥ प्रजापतये नमः॥

ॐ नमोऽस्तु सर्प्पेब्भ्यो ये के च पृथिवीमनु। ये ऽअन्तरिक्षे ये दिवितेब्भ्यः सर्प्पेब्भ्यो नमः॥ सर्पेभ्यो नमः॥

ॐ ब्रह्मयज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो व्वेन ऽआवः। स बुध्न्या ऽउपमा ऽअस्य व्विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्चव्विवः॥ ब्रह्मणे नमः॥

पंचलोकपालानां स्थापनं ग्रहाणांमुत्तरेः–

ॐ गणानां त्वा गणपतिठ॰ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिठ॰ हवामहे निधीनांत्वा निधिपतिठ॰ हवामहे व्वसो मम। आहमजानि गर्ब्भधमात्वमजासि गर्ब्भ धम्॥ गणपत्ये नमः॥

ॐ अम्बे ऽअम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्वश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्॥ अम्बिकायै नमः॥

ॐ व्वायो ये ते सहस्त्रिणो रथासस्ते भिगहि। नियुत्वान्त्सोमपीतये॥ वायवे न मः॥

ॐ घृतं घृतपावानः पिबत व्वसां व्वसापावानः पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा। दिशः प्रदिश ऽआदिशो व्विदिश ऽउद्दिशो दिग्भ्ब्यः स्वाहा॥ आकाशाय नमः॥

ॐ या वां कशा मधुमत्यश्विना सूनृतावती। तया यज्ञ म्मिमिक्षतम्॥ अश्विभ्यां नम :॥

ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानी ह्यस्यस्मान् स्वावेशो ऽअनमीवोभवा नः। यत्वेमहेप्रति तन्नो जुषष्व शं न्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे॥ वास्तोष्पतये नमः॥

ॐ नहिस्पशमविदन्नन्यमस्म्माद्वैश्वानरात्पुरऽएतारमग्नेः। एमेनमवृधन्नमृत ऽअमर्त्यं व्वैश्श्वानरङ् क्षैत्राजित्याय देवाः॥ क्षेत्राधिपतये नमः॥

मण्डलस्य बाह्ये इन्द्रादिदशदिक्पालानां मावाहनम्ः–

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रर्ठ० हवे हवे सुहवर्ठ० शूरमिद्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रर्ठ० स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः॥ इन्द्राय नमः॥

ॐ त्वं नो ऽअग्ने तव देव पायुब्भिर्मघोनो रक्षतन्वश्श्च वन्द्य। त्राता तोकस्य तनये गवामस्यनिमेषर्ठ० रक्षमाणस्तवव्व्रते॥ अग्नये नमः॥

ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। घर्म्माय स्वाहा घर्म्म पित्त्रे॥ यमाय नम :॥

ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्क्करस्य।

अन्यमस्मदिच्छ सा त ऽइत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु॥ निर्ऋतये नमः॥

ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणा व्वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्ब्भिः। अहेडमानो व्वरुणेह बोध्युरुशर्ठ० समान ऽआयुः प्रमोषीः॥ वरुणाय नमः॥

ॐ आ नो नियुद्धिः शतिनीभिरध्वरर्ठ० सहस्त्रिणी-भिरुपयाहियज्ञम्। व्वायो ऽअस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयं पातस्वस्तिभिः सदा नः॥ वायवे नमः॥

ॐ व्वयर्ठ० सोमव्रते तव मनस्तनुषु बिभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि॥ सोमाय नमः॥

ॐ तमीशानञ्जगतस्तस्थुषस्पतिं धियंजिन्वमवसे हूमहे व्वयम्।पूषा नो यथा व्वेदसामसद्वृधे रक्षितापायुरदब्धः स्वस्तये॥ ईशानाय नमः॥

ॐ अस्मे रुद्रा मेहना पर्वतासो व्वृत्रहत्ये भरहूतौ सजोषाः। यः शर्ठ० सते स्तुवते धायि पज्ज्र ऽइन्द्रज्येष्ठा ऽअस्म्माँ२ ऽअवन्तुदेवाः॥ ब्रह्मणे नमः॥

ॐ स्योना पृथिवि नो भवान्नृक्षरा निवेशनी। यच्छानः शर्म्मस प्रथाः॥ अनन्ताय नमः॥

असंख्यातरुद्रस्थापनम्

आचार्य ईशान कोण और प्रधान वेदी के मध्य में कलश को विधिवत् स्थापित करें, इसके पश्चात् इस मंत्र का उच्चारण करके रुद्र का पूजन कर्ता से करावें–

ॐ असङ्ख्याता सहस्त्राणि ये रुद्राऽअधिभूम्याम्। तेषार्ठ० सहस्त्र योजने वधन्वानि तन्मसि॥

कुशकण्डिकाविधि:

अग्नेर्दक्षिणतो ब्रह्मासनम्। अग्नेरुत्तरतः प्रणीतासनद्वयम्। ब्रह्मासने ब्रह्मोपवेशनम्। यावत्कर्म समाप्यते तावत्त्वं ब्रह्मा भव 'भवामि' इति। पठित्वा तत्रोपवेशनम्। 'भवामि' इति ब्रह्मणः प्रत्युक्तिः। ब्रहा वाग्यतश्च भवेत्। ततः प्रणीतापात्रं सव्यहस्ते धृत्वा दक्षिणहस्तगृहीतेनोदकपात्रेण तत्र जलं सम्पूर्य पश्चादास्तीर्णकुशैषु दक्षिणहस्तेन निधाय (कुशैराच्छाद्य तत्पात्रमालभ्य ब्रम्हणोमुखमवलोक्य ईक्षणमात्रेण ब्रम्हणाऽनुज्ञातः उत्तरत आस्तीर्णेषु कुशेषु निदध्यात्। ततो द्वादशानां परिस्तरण कुशानां चतुरो भागान् वामहस्ते कृत्वा एकैकभागेन आग्नेयादीशानान्तम्, ब्रह्मणोऽग्निपर्यन्तम्, नैर्ऋत्याद्वायव्यान्तम् अग्नितः प्रणीतापर्यन्तम्। इतरथा वृत्तिः। तत उत्तरतः स्तीर्णकुशेषु द्विशः पात्राणि यथासम्भवं न्युब्जानि उदक्संस्थानि प्राक्संस्थानि वा आसादयेत्। पवित्रे

अग्निदेव के दक्षिण दिशा की तरफ ब्रह्म देव के लिए कुशासन रखे। अग्नि के उत्तर दिशा में 'प्रणीता पात्र' के लिये दो आसन रखे।

ब्रह्मा के ही आसन पर ब्रह्मा को बैठा दे और कहे–हे ब्रह्मन् जब तक कर्म की समाप्ति न हो तब तक आप ब्रह्म के पद पर आसीन हो। ब्रह्मा मैं होता हूँ–यो कह कर पूर्व स्थापित आसन पर बैठे, तदनन्तर ब्रह्मा मौन हो जाये, फिर प्रणीता पात्र को बायें हाथ में धारण कर दाहिने हाथ से ग्रहण किये हुए जलपात्र से उस प्रणीता पात्र में जल को भरकर पहले से बिछी हुई कुशाओं पर दाहिने हाथ से रखकर कुशों द्वारा आच्छादन कर उस पात्र को स्पर्श कर ब्रह्मदेव के मुख को देखकर ईक्षण मात्र से ब्रह्मा की आज्ञा लेकर उत्तर दिशा की तरफ बिछी कुशाओं पर रख दे, तदनन्तर बाहर परिस्तरण कुशाओं के चार भागों को बायें हाथ में रखे उसमें से एक-एक भाग से परिस्तरण अग्निकोण से ईशानादि में ही करें। तदनन्तर-पश्चिम दिशा से उत्तर दिशा की ओर बिछी कुशाओं पर दो-दो पात्रों को यथा सम्भव

छेदनकुशाः। प्रोक्षणीपात्रम्। आज्यस्थाली। चरुस्थाली। संमार्जनकुशाः पञ्च। उपयमनकुशाः सप्त। समिधस्तिस्त्रः। स्त्रुवः। आज्यम्। तण्डुला। पूर्णापात्रम्। उपल्पनीयानि द्रव्याणि निधाय तत्तद्ग्रहवस्त्राणि। अधिदेवताद्यर्थं श्वेतानि। तत्तद्ग्रहवर्णाः। तत्तद्ग्रह पुष्पाणि। तत्तद्ग्रहधूपाः तत्तदग्रहनैवेद्यानि। फलानि। दक्षिणाः वितानम्। अर्कादिसमिधिः। सयवतिलाः पूर्णाहुत्यर्थं नारिकेल–स्त्रादि। ततः पवित्रकरणम्। आसादितकुशपत्रद्वयं स्थौल्येन समं मध्यशल्यरहितं वामहस्ते कृत्वा अग्रतः प्रादेशमात्रं परिमाय मूले तयोरुपरि कुशत्रयमुदग्ग्रं निधाय तत्कुशत्रय तयोर्मूलभागेन प्रादक्षिण्येन परिवेष्टय तयोः प्रादेशपरिमणमग्रभागं वामस्ते कृत्वा अवशिष्टं मूलभागंकुशत्रयं च दक्षिणहस्ते धृत्वा दक्षिणहस्तेन त्रोटयेत् परित्यजेच्च। शिष्टं पत्रद्वयं पवित्रम्। तस्मिन्पत्रद्वयेऽविश्लेषाय ग्रथिं कुर्यात्। ततः प्रागग्रं प्रोक्षणीपात्रं

न्युब्ज–उदक् संस्थ या प्राक्संस्थ आसादन करे। दो पवित्र छेदन करने के लिए कुशा, प्रोक्षणीपात्र, आज्यस्थाली, चरुस्थाली, संमार्जनकुशापाँच, उपयनकुशा सात, तीनसमीधा, स्त्रुव–घृत–चावल पूर्णपात्र आदि रखें, सूर्यादि ग्रहों के अनेक वर्ण के वस्त्र, अधिदेवता, देवता आदि के लिये सफेद वस्त्र, सूर्यादि ग्रहों के लिए अनेक प्रकार के चन्दन, तत्–तत् वर्ण के ग्रहों की धूप, ग्रहों के नैवेद्य–फल–दक्षिणा वितान सूर्यादि की समिधा यव और तिल, पूर्णाहुत्यर्थ नारिकेल और वस्त्र का आसादन करे। तदन्तर पवित्र बनाये जैसे–स्थापित मध्य (बीच कुशा से रहित) शल्य रहित दो कुशपत्रद्वय को आगे से बराबर नापकर बायें हाथ में कर कुशा के अग्रभाग से प्रादेशमात्र नापकर उसके मूल पर उन दोनों कुशा के ऊपर तीन कुशाओं को उद्ग्र रखकर उन कुशाओं को उस दो कुशा के मूल भाग से प्रादक्षिण्यक्रम से वेष्टन कर उन दो कुशपत्रों को प्रादेशमात्र परिमाण के अग्रभाग को बायें हाथ में कर बचे हुए मूल भाग को और तीन कुशाओं को दाहिने हाथ से तोड़ दें फिर उसका

त्याग कर दें, शिष्ट पत्रद्वय ही पवित्र है। उस पत्रद्वय में अविश्लेषण के लिए गाँठ दे। तदनन्तर

प्रणीतासन्निधौ निधाय तत्र सपवित्रेण पात्रान्तरेण हस्तेन वा प्रणीतोदकं त्रिरासिच्य प्रोक्षणीपात्रं सब्ये कृत्वा दक्षिणेन वामहस्तधृतमेव कर्णसमुत्थाय नीचैः कृत्वा प्रणीतोदकेन पवित्रानोतेनोत्तानहस्तेन प्रोक्षणीः प्रोक्षयेत्। ततः प्रोक्षणीजलेन आज्यस्थालीं प्रोक्षणम्। चरुस्थालीं प्रोक्षणम्। समार्जनकुशानां प्रोक्षणम्। उपयमनकुशानां प्रोक्षणम्। समिधां प्रोक्षणम्। स्रुवस्य प्रोक्षणम्। आज्यस्य प्रोक्षणम्। पूर्णपात्रस्य प्रोक्षणम्। ततस्ते पवित्रे प्रोक्षणीपात्रे संस्थाप्य प्रोक्षणीपात्रमग्निप्रणतयोर्मध्ये निदध्यात्। ततोऽग्रेः पश्चादाज्यस्थालीं निधाय तत्राज्यं प्रक्षिपेत् वं चरुस्थाली मग्नेः पश्चिमतो निधाय तत्र सपवित्रायां त्रिः क्षालियान् तण्डुलान् प्रक्षिप्य प्रणीतोदकमासिच्योपयुक्तं जलं तत्र निनीय ब्रम्हदक्षिणत आज्यम् आचार्य उत्तरतश्चरु-मदग्धमस्रावितमण्डमन्तरूष्मपक्वं सुश्रृतं पचेत्।(केवलाज्ये तु उत्तराश्रितामाज्य स्थाली मग्नावारोपयेत्।)

प्रागग्र प्रोक्षणीपात्र को प्रणीता के समीप रख दे वहाँ से सपवित्र पात्रान्तर हाथ से प्रणीता पात्र से जल को तीन बार आसेचन कर प्रोक्षणी पात्र को बायें हाथ में कर दाहिने से बायें हाथ से धारण किये हुए ही कान की तरफ उठाकर नीचे की तरफ कर प्रणीतापात्र के जल से पवित्र द्वारा ग्रहण किये हुए, उत्तानहाथ से प्रोक्षणीपात्र का प्रोक्षण करें। प्रोक्षणी जल से आज्यस्थाली का प्रोक्षण करे। चरुस्थाली का प्रोक्षण करे। संमार्जन कुशाओं का प्रोक्षण करे। उपयमन कुशाओं का, समिधा का, स्रुवका आज्यका और पूर्णपात्रका प्रोक्षण करे। तदन्तर उन दोनों पवित्रों को प्रोक्षणी पात्र में स्थापन कर उस प्रोक्षणी पात्र को अग्नि और प्रणीतापात्र के मध्य में रख दे। फिर अग्नि के पीछे आज्यस्थाली रख उसमें आज्य का प्रक्षेप करे। इसीप्रकार अग्नि के पश्चिम में चरुस्थाली रख सपवित्रवाली उसमें तीन बार धोये हुए चावलों को छोड़ प्रणीता पात्र के जल से आसेचन कर उपयुक्त जल को उसमें छोड़कर ब्रह्मा के

ततोऽग्नेर्ज्वलदुल्मुकमादाय ईशानादि प्रदक्षिणमीशान पर्यन्तमग्निमाज्यचर्वोः परितं भ्रामयित्वोल्मुकमग्नौ प्रक्षिप्य अप्रदक्षिणं हस्तमीशानकोणपर्यन्तं पर्यावर्तयेत्। अर्द्धश्रिते चरौ स्त्रुव गृहीत्वाऽधोबिलं सकृत् प्रतप्य संमार्जनकुशाना-ममग्रैरन्तरतः उपरि मूलादारभ्याग्रैपर्यन्तं प्राञ्चं सम्मृज्य कुश - मूलै - र्बहिरधः प्रदेशे अग्रादारभ्य प्रत्यञ्चं समृज्य संमार्जन कुशा नग्नौ प्रक्षिप्य प्रणीतोदकेन स्त्रुवमभ्युक्ष्य पुनःस्रुवं प्रत्यप्य दक्षिणस्यांदिशि तंतस्थापयेत् तत् श्रृंतचरु स्त्रुवेण गृहीतेनाज्येनाभिघार्य आज्यस्थालीं चरोः पूर्वेणानीयोत्तरत उद्वास्याग्रेः पश्चिमतः स्थापयेत्। ततश्चरुमादाय उत्तरत उद्वास्य आज्यस्य पूर्वेणानीय आज्यस्योत्तरतः स्थापयेत्। ततो दक्षिणहस्तस्याङ्-गुष्ठानामिकाभ्यां पवित्रयोर्मूलं सङ्गृह्यवाम-हस्तस्याङ्गुष्ठा-नामिकाभ्यां पवित्रयोर्मूलं संङ्गृह्यवा-महस्तस्याङ्गुष्ठा नामि काभ्यां तयोरग्रं संङ्गृह्य ऊर्ध्वा ग्रनेनम्रीकृत्य धारयन्ने वाज्ये प्रक्षिप्याज्यस्योत्पवनं

दक्षिण तरफ घी को आचार्य उत्तरदिशा से अदग्ध अश्रावित पक्वचरु को पका दे। तदन्तर अग्निकुंड या स्थण्डिल से जलते हुए, उल्मुक को लेकर ईशान कोण आदि से प्रदक्षिण कर ईशानकोण पर्यन्त अग्नि स्थित आज्य और चरु के चारों तरफ घुमकर उस उल्मुक को अग्नि में छोड़ दे। फिर अप्रदक्षिण क्रम से अपने हाथ को ईशान कोण पर्यन्त घुमा दे। चरु के आधे पक जाने पर स्त्रुव को हाथ में ग्रहण कर उस स्त्रुव के बिल को नीचे की तरफ कर एक बार अग्नि में तपाकर समार्जन कुशाओं के अग्रभाग से भीतर की तरफ से मूलभाग से आरम्भ कर अग्रभागपर्यन्त पूर्व की तरफ संमार्जन कर कुश मूलों से बाहर और नीचे के हिस्से में अग्रभाग से आरम्भ कर शुद्ध कर सर्माजन कुशाओं को अग्नि में फेककर प्रणीत जल से स्त्रुव का अभ्युक्षण तथा स्त्रुव का प्रतपन कर दक्षिणदिशा की तरफ उस स्त्रुव को रख दे। तदनन्तर पके हुए चरु में स्त्रुव के द्वारा घी को छोड़ आज्यस्थाली को चरु के पूर्व से लेकर उत्तरदिशा

कुर्यादुच्छालयेत्। तत आज्यमवेक्ष्य सत्यपद्रव्ये तन्निरस्येत्। ततः पूर्ववत्पवित्रे गृहीत्वाप्रोक्षणीनामपामुत्पवनं कुर्यात्। ततो वामहस्ते उपयमनादाय दक्षिणेन प्रादेशमात्रीः पालाशीस्तिस्रःसमिधो घृताक्ता द्व्यङ्गुलादूर्ध्वं मध्यमानामिकांगुष्ठैर्मूलभागे धृतास्तर्जन्यग्रवत्स्थूलास्तन्त्रेणाग्नौतूष्णीं प्रक्षिप्य सपवित्रेण प्रोक्षण्युदकेन चुलुकगृहीतेन ईशानादि प्रदक्षिणमीशान कोणपर्यन्तं पर्युक्ष्य अप्रदक्षिणमीशानकोणपर्यन्तं हस्तं पर्यावर्तयेत्। ततः पवित्रे प्रणीतासु निधाय दक्षिणं जान्वाच्य

की तरफ रख फिर अग्नि के पश्चिम दिशा की तरफ स्थापन करे। फिर चरु को लेकर उत्तर दिशा से उतारे हुए घी के पूर्व से ले आकर घी के उत्तर की तरफ स्थापन करे।

तदनन्तर-दाहिने हाथ के अंगूठे और अनामिका से उस दोनों कुशाओं (पवित्र) के अग्रभाग को पकड़कर ऊपर के अग्रभाग को नम्र बनाकर धारण करते हुए ही आज्य(घी) में प्रक्षेप कर आज्य को उत्पवन करे। फिर घी को देख कर उसमें जो अपद्रव्य हो उसे निकाल दे। तदनन्तर फिर पवित्रों को ग्रहण कर प्रोक्षणी स्थित जल का उत्पवन करे फिर बायें हाँथ में उपयमन कुशा को लेकर दाहिने हाथ में प्रादेश प्रमाण की तीन समिधाओं को घी में भिगोकर दो अंगुल ऊपर मध्यमा अनामिका अँगूठे के मूलभाग में धारण की हुई, तर्जनी की तरह मोटी समिधा को एक साथ चुपचाप अग्नि में प्रक्षेप कर सपवित्र वाली प्रोक्षणी पात्र के जल से चुल्लु द्वारा ग्रहण कर ईशान कोण से प्रक्षेप कर फिर ईशान पर्यन्त प्रदक्षिण क्रम से पर्युक्षण कर अप्रदक्षिण क्रम से ईशान कोण पर्यन्त अपने दाहिने हाथ को केवल घुमा दे। तदनन्तर उन पवित्र को प्रणीता पात्र में रख अपने दाहिने जानु को मोड़कर ब्रह्मा से कुशों द्वार अन्वारब्ध (स्पर्श) कर उपयमन कुशा के सहित अपने हाथ की अँगुलियों को फैलाकर उस हाथ को हृदय में लगा दाहिने हाथ से स्रुव के मूल से चार अंगुल छोड़कर शंखमुद्रा से स्रुव को ग्रहण कर प्रदीप्त अग्नि में वायव्यकोण से प्रारम्भ कर अग्निकोण पर्यन्त या पूर्व दिशा की तरफ निरन्तर घी की धारा द्वारा प्रजापति का मन से ध्यान कर स्रुव से चुपचाप शेष के सहित हवन करे, इसमें स्वाहाकार नहीं है। 'इदं प्रजापतये न मम' इस वाक्य का यजमान त्याग करे। होम त्याग के बाद स्रुव स्थित आज्य का सर्वत प्रोक्षणी पात्र में प्रक्षेप करे।

नात्र स्वाहाकारः। इदं प्रजापतये न मम इति यजमानेन त्यागः कर्तव्यः।होमत्यागानन्तरं स्त्रुवा वशिष्टस्याज्यस्य सर्वत्र प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेपः कार्यः। ततो निर्ऋतिकोणा दारभ्येशानकोणपर्यन्तं प्राञ्चं वा–ॐ इन्द्राय स्वाहा इति जुहुयात्। 'इदमिन्द्राय न मम' इति त्यजेत्। तत उत्तरपूर्वार्द्धे– ॐ अग्नये स्वाहा इदमग्नये न ब्रह्मणा कुशैरन्वारब्धः उपयमनकुशसहितं प्रसारितांगुलिहस्तं हृदि निधाय दक्षिणहस्तेन मूले चतुरङ्गुलं त्यक्त्वा शङ्खसन्निभमुद्रया श्रुवं गृहीत्वा समिद्धतमेऽग्नौवायव्य–कोणादारभ्याग्नि–कोणपर्यन्तं प्राञ्चं वा सन्ततघृतधारया मनसा प्रजापतिं ध्यायन् श्रुवेण तूष्णीं सशेषं मौनी जुहुयात्। मम।। इति हुत्वा दक्षिणगूर्वाधे–ॐ सोमाय स्वाहा– इदं सोमाय न मम इति जुहुयात् ततो यजमानः द्रव्यत्यागं कुर्यात्। तत्र च बहुकर्तृके होम यथाकालं प्रत्याहुतित्यागस्य कर्तुमशकत्वा– त्सर्वंहवनीयं द्रव्यं देवताश्च मनसा ध्यात्वा त्यजेत्। तच्चैवम् इदमुपकल्पितं समित्तिलादिव्यं (यथासम्पादितम्) या या यक्ष्यमाणदेव–तास्ताभ्यस्ताभ्यो मया परित्यक्तं न ममेति साक्षतजलं भूमौ क्षिपेत्।। यथा दैवतमस्तु।।

तदनन्तर–निर्ऋतिकोण से आरम्भ कर ईशान कोण पर्यन्त या पूर्व की तरफ 'इन्द्राय स्वाहा' इससे हवन करे। इद्रमिन्द्राय न मम, इससे त्याग करे फिर उत्तर पूर्वार्ध में 'अग्नये स्वाहा' से हवन करें। दक्षिण पूर्वार्ध में 'सोमाय स्वाहा' से हवन करे। तदनन्तर यजमान त्याग करे। क्योंकि बहुकर्तृक हवन में यथा समय प्रति आहुति के बाद प्रोक्षणी पात्र में त्याग करना असम्भव है। अतः सब हवनीय द्रव्य तथा देवताओं को मन से ध्यान कर 'इदमुपकल्पित्तं समित्तिलादि द्रव्यं या या यक्ष्णमाण देवतास्ताभ्यस्ताभ्यो मयापरित्यक्तं न मम्' इस वाक्य को पढ़कर जल सहित अक्षत भूमि में प्रक्षेप करे 'यथादैवतमस्तु' यह कहें।

आचार्य कुशकण्डिका के पश्चात् कर्ता से सविधि कुण्ड का पूजन करावें।

ग्रहादिदेवताहोमकर्म

आचार्य एवं सभी ब्राह्मण निम्न मंत्रों का क्रम से उच्चारण करते हुए प्रत्येक मंत्र के अन्त में स्वाहा का उच्चारण करते हुए कर्ता से प्रज्वलित अग्नि में आहुति प्रदान करवायें–

१. ॐ गणानां त्वा गणपतिर्ठ० हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिर्ठ० हवामहे निधीनां त्वा निधीपतिर्ठ० हवामहे व्वसो मम। आहमजानि गर्ब्भधमात्वमजासि गर्ब्भधम् स्वाहा॥

२. ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्च्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् स्वाहा॥

३. ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् स्वाहा।

४. ॐ इमंदेवाऽअसपत्नर्ठ० सुवद्ध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इममपुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै व्विशऽएष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानार्ठ० राजा स्वाहा॥

५. ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या ऽअयम्। अपार्ठ० रेतार्ठ० सि जिन्वति स्वाहा॥

६. ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्तेसर्ठ० सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थेऽअध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत स्वाहा॥

७. ॐ बृहस्पते ऽअति यदर्यो ऽअर्हाद्द्युमद्विभाति-क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऽऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् स्वाहा॥

८. ॐ अन्नात्परिस्त्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्त्यमिन्द्रियं व्विपानर्ठ० शुक्रमन्धस ऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु स्वाहा॥

९. ॐ शं नो देवीरभिष्टय ऽआपो भवन्तु पीतये शंय्योरभिस्त्रवन्तु नः स्वाहा॥

१०. ॐ कयानश्चित्रऽआभुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता स्वाहा॥

११. ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्य्या ऽअपेशसे समुषद्भिरजायथाः स्वाहा ॥

१२. ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्। उर्व्वारुकमिव बन्धनान्नमृत्योर्मुक्षीय मा ऽमृतात् स्वाहा ॥

१३. ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुं म ऽइषाण सर्व्वलोकं म इषाण स्वाहा॥

१४. ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमान ऽद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात्। श्ये नस्य पक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुयं महि जातं ते ऽअर्व्वन् स्वाहा॥

१५. ॐ विष्णो रराटमसि व्विष्णोः श्नप्त्रे स्तथो व्विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि वैष्णवमसि विष्णवे त्वा स्वाहा ॥

१६. ॐ आ ब्रह्मन्ब्राह्मणो ब्रह्मवर्च्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूर ऽइषव्व्यवो ऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्व्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णु रथेष्ठाः सभेयो

युवास्य यजमानस्य व्वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्ज्जन्न्यो व्वर्षतु फलवत्यो नऽओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम् स्वाहा ॥

१७. ॐ सजोषा ऽइन्द्र सगणो मरुद्भिः सोमं पिब व्वृत्रहा शूर विद्वान्। जहि शत्रूँ२॥ रप मृधो नुदस्वाथाभयं कृणुहि विश्वतो नः स्वाहा ॥

१८. ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा स्वाहा घर्म्माय स्वाहा घर्मः पित्त्रे स्वाहा ॥

१९. ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वाक्षित्या ऽउन्नयामि। समापो ऽअद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः स्वाहा ॥

२०. ॐ चित्रावसो स्वस्ति ते पारमशीय स्वाहा ॥

२१. ॐ अग्निन्दूतं पुरो दधे हव्व्यवाहमुपब्रुवे। देवाँ२॥ ऽआसादयादिह स्वाहा ॥

२२. ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऽउर्ज्जे दधातन। महे रणायचक्षसे स्वाहा ॥

२३. ॐ स्योना पृथिवी नो भवान्नृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म्म सप्प्रथाः स्वाहा ॥

२४. ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्यपार्ठ० सुरे स्वाहा॥

२५. ॐ इन्द्र ऽआसां नेता बृहस्पतिर्द्दक्षिणा यज्ञःपुर ऽएतु सोमः। देवसेनानामभिभञ्जतीनां जयन्तीनां मरुतो यन्त्वग्ग्रम् स्वाहा ॥

२६. ॐ अदित्यै रास्नासीन्द्राण्या ऽउष्णीषःपूषासि घर्म्माय दीष्व स्वाहा॥

२७. ॐ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वारूपाणिपरिता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नोऽअस्त्वयममुष्य पितासावस्य पिता व्वयर्ठ० स्याम पतयोरयीणार्ठ० स्वाहा ॥

२८. ॐ नमो ऽस्तु सर्प्पेब्भ्यो ये के च पृथिवी मनु। ये ऽअन्तरिक्षे ये दिवि तेब्भ्यः सर्प्पेब्भ्यो नमः स्वाहा॥

२९. ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो व्वेन ऽआवः। स बुध्न्या ऽउपमा ऽअस्य व्विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्श्च व्विवः स्वाहा ॥

३०. ॐ गणानां त्वा गणपतिर्ठ०हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपतिर्ठ० हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिर्ठ० हवामहे व्वसो मम। आहमजानि गर्ब्भधमा त्वमजासि गर्ब्भधम् स्वाहा ॥

३१. ॐ अम्बे ऽअम्बिके ऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकाँ काम्पीलवासिनीम् स्वाहा ॥

३२. ॐ व्यायो ये तेसहस्त्रिणो रथासस्तेभिरागहि। नियुत्वान्सोमपीतये स्वाहा॥

३३. ॐ घृतं घृतपावनः पिबत व्वसां व्वसापावानः पिबन्तान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा॥ दिशः प्रदिशऽआदिशो व्विदिशऽउदिशो दिग्भ्यः स्वाहा ॥

३४. ॐ या वां कशा मधुमत्यश्विना सूनृतावती तया यज्ञं मिमिक्षतम् स्वाहा ॥

३५. ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्स्वावेशो ऽअनमीवा भवो नः यतवेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे स्वाहा ॥

३६. ॐ नहिस्पशम् विदन्नन्यमस्माद्वैश्वानरात् पुर ऽएतारमग्नेः। ऐमेनमवृधन्नमृता ऽअमर्त्यं वैश्वानर क्षैत्रजित्त्याय देवाः स्वाहा ॥

३७. ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रर्ठ० हवे-हवे सुहवर्ठ० शूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रर्ठ० स्वस्तिनो मघवा धात्विन्द्रः स्वाहा ॥

३८. ॐ त्वं नो ऽअग्ने तव देव पायुभिर्म्म घोनो रक्ष तन्वश्च वन्द्य। त्राता तोकस्य तनये गवामस्य निमेषर्ठ० रक्षमाणस्तव व्रते स्वाहा ॥

३९. ॐ यमाय त्त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्म्माय स्वाहा घर्म्मः पित्रे स्वाहा ॥

४०. ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य। अन्यमस्मदिच्छ सा त ऽइत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु स्वाहा ॥

४१. ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो व्वरुणेह बोद्धयुरुशर्ठ० स मा नऽआयुः प्रमोषीः स्वाहा ॥

४२. ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरद्ध्वरर्ठ० सहस्त्रिणी-भिरुपयाहि यज्ञम्। व्वायो ऽअस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः स्वाहा॥

४३. ॐ वयर्ठ० सोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रत: प्रजावन्त: सचेमहि स्वाहा ॥

४४. ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे व्वयम्। पूषा नो यथा व्वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्ध: स्वस्त्ये स्वाहा ॥

४५. ॐ अस्मे रुद्रा मे हना पर्व्वतासो व्वृत्रहत्ये भरहूतौ सजोषा:। य: शर्ठ० सते स्तुवते धायि पज्र ऽइन्द्र ज्येष्ठा ऽअस्माँ२॥ अऽवन्तु देवा: स्वाहा ॥

४६. ॐ स्योना पृथिवी नो भवान्नृक्षरा निवेशनि यच्छा न: शर्म्म सप्प्रथा: स्वाहा ॥

कालीप्रधानहवनम्

निम्न मंत्र का आचार्य उच्चारण करते हुए प्रज्वलित हवनकुण्ड में यथा संख्या आहुति प्रदान करावें।

ॐ यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेब्भ्य:। ब्रह्मराजन्याब्भ्यार्ठ० शूद्राय चार्याय च स्वारणाय च। प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिह भूया समयं मे काम: समृध्यतामुपमादो नमतु स्वाहा॥

इस मंत्र से हवन करवाने के पश्चात् कालीसहस्रनामावल्या-स्वाहाकार से भी प्रत्येक नाम का उच्चारण करके हवनकर्म करावें–

अग्निपूजनम्

आचार्य इस वैदिक मंत्र द्वारा अग्नि का पूजन कर्ता से करवायें–

ॐ अग्ग्ने नय सुपथा रायेऽअस्म्मान्विश्श्वानि देव व्वयुनानि व्विद्वान्। युयोद्ध्यस्म्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते म नम ऽउक्तिं व्विधेम।

स्विष्टकृत्

अग्नि पूजन के उपरान्त आचार्य बड़े पात्र में तिलों को ग्रहण कर दाहिने हाथ से घी भर कर स्रुव को ले दाहिनेपैर की जांघ को मोड़कर ब्रह्मा से स्पर्श कर इस मन्त्र से स्विष्टकृत संज्ञक आहुति देवें-

ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा। इदमग्नये स्विष्टकृते न मम॥

व्याहृतिहोमकर्म

आचार्य निम्न मन्त्रादि का उच्चारण करते हुए नौ व्याहृति आदि की आहुति कर्ता से घृत द्वारा प्रदान करवायें-

ॐ भूः स्वाहा–इदमग्नये न मम। ॐ भुवः स्वाहा–इदं वायवे न मम। ॐ स्वः स्वाहा–इदं सूर्याय न मम।

ॐ त्वन्नोऽअग्ने व्वरुणस्य व्विद्वान्देवस्य हेडोऽअवया-सिसीष्ठाः। यजिष्ठो व्वह्नितमः शोशुचानो व्विश्वाद्वेषाठं॰ सि प्प्रमुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा॥ इदमग्नी वरुणाभ्यां न मम।

ॐ स त्त्वं नो ऽअग्नेऽवमो भवोती ने दिष्टोऽअस्याऽउषसो व्युष्टौ। अवयक्ष्व नो वरुणठं॰ रराणोव्वीहि मृडीकठं॰ सुहवो न ऽएधि स्वाहा। इदमग्नी वरुणाभ्यां न मम।

ॐ अयाश्चाग्ने ऽस्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्वमयाऽअसि। अयानो यज्ञं वहास्ययानो धेहि भेषजठं॰ स्वाहा॥ इदमग्नये अयसे न मम।

ॐ ये ते शतं वरुणं ये सहस्त्रं यज्ञिया: पाशा: वितता महान्त:। ते भिर्न्नोऽअद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुत: स्वर्क्का: स्वाहा। इदं वरुणाय सविते विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्य: स्वर्केभ्यश्च न मम।

ॐ उदुत्तमं व्वरुण पाशमस्मदवाधमं व्विमध्यमर्ठ० श्रथाय। अथा व्वयमादित्य व्व्रते वानागसोऽअदितये स्याम स्वाहा। इदं वरुणायादित्यायादि- तये न मम।

ॐ प्रजापतये स्वाहा–इदं प्रजापतये न मम।

दशदिक्पालबलि:

आचार्य इस मन्त्र का उच्चारण करें–

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रर्ठ० हवे–हवे सुहवर्ठ० शूर मिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिनोर्ठ० स्वस्ति घमन्द्रवा धात्विन्द्र:॥

पश्चात् आचार्य पुष्प, अक्षत और जल कर्ता के दाऐं हाथ में देकर यह उच्चारण करवायें–

ॐ इन्द्राय नम: इन्द्राय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिभाष भक्त बलिं समर्पयामि। भो इन्द्र! स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य, सपरिवारस्य, आयु:कर्ता, क्षेमकर्ता, शान्तिकर्ता, पुष्टिकर्ता, तुष्टिकर्ता, वरदो भव अनेन बलिदानेन इन्द्र: प्रीयताम्।

पूर्वाभिमुख होकर आचार्य पुष्प–अक्षत और जल भूमि में डलवायें–

आग्नेय्याम्-'ॐत्वन्नो ऽअग्ने' ॐ अग्नये नमः अग्नये साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधि माष भक्त बलिं समर्पयामि। भो अग्ने ! स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता, क्षेमकर्ता, शान्तिकर्ता, पुष्टिकर्ता, तुष्टिकर्ता वरदो भव।अनने बलिदानेन अग्निः प्रीयताम्।

दक्षिणे 'ॐ यमाम त्त्वा' ॐ यमाय नमः यमाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीप दधि माषभक्त बलिं समर्पयामि। भो यम! स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता, क्षेमकर्ता, शान्तिकर्ता, पुष्टिकर्ता, तुष्टिकर्ता वरदो भव।अनेन बलिदानेन यमः प्रीयताम्।

नैर्ऋत्याम्–'ॐ असुन्वन्त' ॐ निर्ऋत्ये नमः निर्ऋतये साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्ति काय इमं सदीप दधि माष भक्त बलिं समर्पयामि। भो निर्ऋते! स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता, क्षेमकर्ता, शांतिकर्ता, पुष्टिकर्ता तुष्टि कर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन निर्ऋतिः प्रीयताम्।

पश्चिमे–'ॐ तत्वा यामि' ॐ वरुणाय नमः वरुणाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीप दधिभाष भक्त बलिं समर्पयामि। भो वरुण! स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन वरुणः प्रीयताम्।

वायव्याम्–'ॐ आनो नियुद्भिः' ॐ वायवे नमः वायवे साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधि माष भक्त बलिं समर्पयामि। भो वायो! स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन वायुः प्रीयताम्

उत्तरे 'ॐ वयठं० सोम' ॐ सोमाय नमः सोमाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाष भक्त बलिं समर्पयामि। भो सोम! स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता, तुष्टिकर्ता वरदो भव।अनेन बलिदानेन सोमः प्रीयताम्।

ईशान्याम्–'ॐ तमीशानं जगतः' ॐ ईशानाय नमः ईशानाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाषभक्त बलिं समर्पयामि। भो ईशान! स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता पुष्टिकर्ता, तुष्टिकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन ईशानः प्रीयताम्।

ईशान पूर्वयोर्मध्ये–'ॐ अस्मे रुद्रा मेहना' ॐ ब्रह्मणे नमः ब्रह्मणे साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीप दधिमाष भक्तबलिं समर्पयामि। भो ब्रह्मन्! स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता-तुष्टिकर्ता वरदो भव।अनेन बलिदानेन ब्रह्मा प्रीयताम्।

निर्ऋति पश्चिमयोर्मध्ये–'ॐ स्योना पृथिवि' ॐ अनन्ताय नमः, अनन्ताय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं

सदीपदधिभाषभक्त बलिं समर्पयामि। भो अनन्त! स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव अनेन बलि दानेन अनन्त प्रीयताम्।

'अथवा'

एकतन्त्रेणदिक्पालबलिदानकर्म

आचार्य निम्न मन्त्रादि का क्रम से उच्चारण करते हुए कर्ता के द्वारा इन्द्रादि–दशदिक्पालों के लिए क्रम से ही बलि समर्पण करावें–

ॐ प्राच्च्यै दिशे स्वाहा र्व्वाच्च्यैदिशे स्वाहा दक्षिणायै दिशे स्वाहा र्व्वाच्च्यैदिशे स्वाहा प्रतीच्च्यै दिशे स्वाहा र्व्वाच्च्यै दिशे स्वाहो दीच्च्यै दिशे स्वाहा र्व्वाच्च्यै दिशे स्वाहो द्ध्र्वायै दिशे स्वाहा र्व्वाच्च्यै दिशे स्वाहा र्वाच्च्यै दिशे स्वाहा र्वाच्च्यै दिशे स्वाहा॥ इन्द्रादिभ्योदशेभ्यो दिक्पालेभ्यो नमः। ॐ इन्द्रादि दशदिक्पालेभ्यः साङ्गेभ्य सपरिवारेभ्य सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्यः इमान् सदीपदधिभाषभक्तबलीन् समर्पयामि। भो इन्द्रादिदशदिक्पालाः! स्वां स्वां दिशं रक्षता बलिं भक्षत मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्तारः, क्षेमकर्तारः, शान्तिकर्तारः, पुष्टिकर्तारः, तुष्टिकर्तारः, वरदाः भवत। अनेन बलिदानेन इन्द्रादयोदशदिक्पालाः प्रीयन्ताम्।

एकतन्त्रेणग्रहबलिः

आचार्य निम्न मंत्रादि का उच्चारण करते हुए कर्ता से ग्रहपीठस्थ–अधिदेवता, प्रत्यधिदेवता, पञ्चलोकपाल, यज्ञसंरक्षक–

इन्द्रादिदशदिक्पालों सहित सूर्यादि सपरिवार और आयुध सशक्तियों के लिए दधि–उड़द युक्त बलि कर्ता से समर्पित करावें–

ॐ ग्रहाऽऊर्ज्जा हुतयोव्वयन्तो व्विप्प्रायमतिम्। तेषां विशिप्प्रिया- णांव्वोहमिषमूर्ज्जर्ठ० समग्ग्रभमुपयामगृही- तोसीद्रायत्वा जुष्टङ्गृह्णाम्येषतेयो निरिन्द्रायत्वाजुष्टतमम्॥

ग्रहपीठ स्थेभ्य:सूर्यादिनवग्रहेभ्य: अधिदेवता प्रत्यधिदेवता पञ्चलोकपाल क्रतुसंरक्षकदशदिक्पा–लसहितेभ्योदेवेभ्यो नम:। सूर्यादिभ्य: सांगेभ्य सपरिवारेभ्य: सायुधेभ्य: सशक्तिकेभ्य: इमं सदीपदधिमाषभक्त बलिं समर्पयामि। भो सूर्यादयो नवग्रहा इमं बलिं गृह्णीत मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयु:कर्तार:, क्षेमकर्तार:, शान्तिकर्तार:, पुष्टिकर्तार:, तुष्टिकर्तार: वरदाभवत अनेन बलिदानेन सांगा: सूर्यादिनवग्रहा: प्रीयन्ताम्॥

कूष्माण्डबलिविधि:

कर्ता से निम्न संकल्प आचार्य कूष्माण्डबलि के निमित्त करवायें–

देशकालौ सङ्कीर्त्य –मम सकुटम्बस्य–सपरिवारस्य सर्वारिष्ट शांति सर्वाभिष्टसिद्धि कल्पोक्तफलावाप्तिद्वारा श्रीकालीदेवी- हवन प्रीत्यर्थं कूष्माण्डबलिदानं करिष्ये।

तदंगत्वेन पंचोपचारै: बलिपूजनं करिष्ये।

मूल मंत्र से कालीदेवी की पंचोपचार से पूजा करके कर्ता उनके सामने स्वयं उत्तर की ओर मुख करके बैठे और बलिद्रव्य कूष्माण्ड को वस्त्र से ढकी हुई पीठ पर रखकर इन श्लोकों का उच्चारण करें–

पशुस्त्वं बलिरूपेण मम भाग्यादवस्थितः।
प्रणमामि ततः सर्वरूपिणं बलिरूपिणम्॥ १॥
चण्डिकाप्रीतिदानेन दातुरापद्-विनाशनम्।
चामुण्डाबलिरूपाय बले! तुभ्यं नमोऽस्तु ते॥ २॥
यज्ञार्थं बलयः सृष्टाः स्वयमेव स्वयम्भुवा।
अतस्त्वां घातयाम्यद्य यस्माद्यज्ञे मतोवधः॥ ३॥

आचार्य शस्त्र की गन्धादि से पूजा करके उसे इस अभिमन्त्रित करें–

ऐं ह्रीं श्रीं। रसना त्वं चण्डिकायाः सुरलोकप्रसाधकः।

अपने दायें हाथ में शस्त्र लेकर वीरासन मुद्रा से इसका उच्चारण करें–**ह्रां ह्रीं खड्ग आं हुं फट्।**

निम्न वाक्य का उच्चारण करके कूष्माण्ड का छेदन करें तथा बलि की ओर कदापि अपनी दृष्टि न डालें–

ॐ कालि कालि वज्रेश्वरि लोहदण्डायै नमः

कौशिकि रूधिरेणाप्यायताम्–इस वाक्य का उच्चारण कर देवी को आधा भाग निवेदित कर अवशिष्ट आधे भाग का पाँच भाग इस प्रकार से करें–

पूतनायै बलिभागं निवेदयामि।
चरक्यै बलिभागं निवेदयामि।
विदार्यै बलिभागं निवेदयामि।
पापराक्षस्यै बलिभागं निवेदयामि।
क्षेत्रपालं बलिभागं निवेदयामि।

इसके उपरान्त पिसी हुई उड़द् की दाल से निर्मित पशु का शस्त्र से छेदन करें।

स्कन्दाय पश्वर्धं समर्पयामि।

विशिखाय पश्वर्धं समर्पयामि।

उपरोक्त दोनों वाक्यों का उच्चारण कर शेषभाग राक्षसों के लिए निवेदित कर कर्ता प्रार्थनादि करें।

क्षेत्रपालबलिकर्म

आचार्य सूर्प आदि में चारमुँखवालादीपक, उड़द, दधिमिश्रितचावल, पान, दक्षिणा, कूष्माण्ड पात्र मेंजल, हलदी, रोली, सिन्दूर, पताका और '**लालपुष्पयुक्तबलि**' को रख कर यजमान से इस वाक्य का उच्चारण करवायें—**ॐ क्षेत्रपालादिभ्यो नमः** इसके उपरान्त इन श्लोकों का क्रम से उच्चारण करते हुए आचार्य यजमान से यह प्रार्थना करवायें—

आवाहयामि देवेशं भैरवं क्षेत्रपालकम्।
दिव्यतेजं महाकायं नानाभरण भूषितम्॥ १॥
क्षेत्राणां रक्षणार्थाय बलिं गृह्णन्नमोऽस्तु ते।
असुरा यातुधानाश्च पिशाचोरगराक्षसाः॥ २॥
डाकिन्यो यक्ष-वेतालाः योगिन्यःपूतनाःशिवाः।
जृम्भकाःसिद्धगन्धर्वा नानाविद्याधरा नगाः॥ ३॥
दिक्पालाः लोकपालाश्च ये च विघ्नविनायकाः।
जगतां शांतिकर्तारौ ब्रह्माद्याश्च महर्षयः॥ ४॥
मा विघ्नं मा च मे पापं मा सन्तु परिपन्थिनः।
सौम्या भवन्तु तृप्ताश्च भूतप्रेताः सुखावहाः॥ ५॥

आचार्य इन मन्त्रादि का उच्चारण करके निम्न क्रम से ही वेतालादि परिवार सहित, क्षेत्रपालादि समस्तपरिवारभूतों के लिए यजमान से इस बलि को समर्पित करवायें–

ॐ नहिस्प्पशमविदन्नन्यमस्म्माद्वैश्श्वा नरात्पुरऽएतार-मग्नेर्ठ०। एमेनमवृधन्नमृताऽअमर्त्त्यंव्वैश्श्वा नरङ् क्षैत्रजित्त्याय देवाः॥

वेतालादि परिवारयुत क्षेत्रपालादिसर्वभूतेभ्यः सांगेभ्यः सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्यः भूत-प्रेत-पिशाच-राक्षस-शाकिनी सहितेभ्यः कुंकुमारक्तपुष्पादियुतं सदीपं सदक्षिणं बलिं समर्पयामि॥ भो भो क्षेत्रपालादयः इमं बलिं गृह्णीत यजमानस्य आयुःकर्तारः, क्षेमकर्तारः, पुष्टिकर्तारः, तुष्टिकर्तारः, निर्विघ्नकर्तारः, वरदाः भवत॥ अनेन सार्वभौतिक बलिप्रदानेन क्षेत्रपालादयः प्रीयन्ताम्॥

इस बलि को शूद्र या दूर्ब्राह्मण एक बार शिर पर से घुमाकर ले जाए और वह पीछे की ओर कदापि न देखे और उसे लेजाकर नैऋत्यकोण में पड़ने वाले चौराहे पर रख आवे। उस समय आचार्य कर्ता के साथ उस स्थान पर जावे तथा कर्ता से ही अक्षत एवं जल छिड़कवाकर इन मंत्रों का स्वयं उच्चारण करें–

ॐ हिङ्काराय स्वाहा हिङ्कृताय स्वाहा क्रन्दते स्वाहा वक्क्रन्दाय स्वाहा प्प्रोथते स्वाहा प्प्रप्रोथाय स्वाहा गन्धाय स्वाहा ग्घ्राताय स्वाहा निविष्ट्टाय स्वाहो पविष्ट्टाय स्वाहा सन्दिताय स्वाहा व्वल्गते स्वाहाऽऽसीनाय स्वाहा शयानाय स्वाहा स्वपते स्वाहा जाग्ग्रते स्वाहा कूजते स्वाहा प्प्रबुद्धाय स्वाहा

विजृम्भमाणाय स्वाहा विचृताय स्वाहासर्ठ० हानाय स्वाहो पस्थिताय स्वाहा यनाय स्वाहा प्रायणाय स्वाहा॥

इसके पश्चात् कर्ता अपने हाथ–पैर को शुद्ध जल से धोकर अपने आसन पर पुन: बैठ जावे।

पूर्णाहुति[1] विधि:

आचार्य पूर्णाहुति के लिये कर्ता से इस संकल्प को करावें–

कालीहवनकर्मण: सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं 'मृडनामाग्नौ' पूर्णाहुतिं होष्यामि।

अथवा–**ॐ अद्यपुण्यतिथौ 'कालीहवनकर्मण: साङ्गता-सिद्ध्यर्थं मृडनामाग्नौ पूर्णाहुतिं होष्ये॥'**

उपरोक्त संकल्प के पश्चात् चार अथवा बारहबार घी को यज्ञीयपात्र स्रुव के द्वारा स्रुचि नामक पात्र में ग्रहण कर शिष्टाचार से उस स्रुचि पर सुपारी, पान, पुष्प, रेशमीवस्त्र से वेष्टित कर पुष्पमालाओं से सुशोभित तथा सुगन्धयुक्तद्रव्य सिन्दूर आदि द्रव्य से सुसज्जित कर उसे स्रुचि पर रखकर आचार्य इस वैदिक मंत्र से उसका पूजन कर्ता से करावें–

ॐ पूर्णादर्व्विपरापत सुपूर्णा पुनरापत। व्वस्नेवव्वि-क्रीणावहा-ऽइषमूर्ज्जर्ठ० शतक्रतो॥

उपरोक्त कर्म के पश्चात् अधोमुख स्रुव को रख स्रुचि को हाथों से यथोचित रूप से पकड़ के तथा आचार्य व सभी ब्राह्मण खड़े[2] होकर इन वैदिक मंत्रों का उच्चारण करें–

---

१. पूर्णाहुत्या सर्वान् कामानवाप्नोति।

२. मूर्धानं दिवमन्त्रेण संस्रुवेण च धारयेत्। दद्यादुत्थाय पूर्णां तु नोपविश्य कदाचन्॥ (अग्निपुराण)

ॐ समुद्द्रादूर्म्मिर्मधुमाँ२॥ उदारदुपाठं० शुना सममृतत्वमानट्॥ घृतस्य नामगुह्यं यदस्ति जिह्वादेवानाममृतस्य नाभिः॥ १॥

ॐ व्वयन्नाम प्रब्रवामा घृतस्यास्मिन्यज्ञेधारया मा नमोभिः। उपब्रह्मा शृणवच्छस्यमानञ्चतुः शृङ्गोवमीद्गौरऽएतत्॥ २॥

ॐ चत्वारिशृङ्गात्त्रयोऽअस्य पादाद्वेशीर्षेसप्तहस्तासोऽअस्य॥ त्रिधाबद्धोव्वृषभोरोरवीति महोदेवोमँर्त्या२॥ ऽआविवेश॥ ३॥

ॐ त्रिधाहितम्पणिभिर्गुह्यमानङ्गविदेवासोघृतमन्वविन्दन्। इन्द्रऽएकठं० सूर्य्य ऽएकञ्जजानव्वेनादेकठं० स्वधयानिष्टतक्षुः॥ ४॥

ॐ एताऽअर्षन्तिहृद्यात् समुद्द्राच्छत व्रजारिपुणानावचक्षे। घृतस्यधाराऽअभिचाकशीमि हिरण्ययोव्वेतसोमध्यऽआसाम्॥ ५॥

ॐ सम्म्यक्स्त्रवन्तिसरितोनधेनाऽअन्तर्हृदा मनसापूयमानाः। एतेऽअर्षन्त्यूर्म्मयो घृतस्यमृगा ऽइवक्षिपणोरीषमाणाः॥ ६॥

ॐ सिन्धोरिवप्राध्वनेशूघनासोव्वातप्प्रमियः पतयन्ति यह्वाः॥ घृतस्यधारा ऽअरुषोनव्वाजीकाष्ठा भिन्दन्नूर्म्मिभिः पिन्वमानः॥ ७॥

ॐ अभिप्प्रवन्तसमनेवयोषाः कल्याण्यः स्मयमानासोऽअग्निम्॥ घृतस्यधाराः समिधो न सन्तताजुषाणो हर्य्यतिजातवेदाः॥ ८॥

ॐ कन्याऽइवव्वहतुमेतवाऽउऽअञ्ज्यञ्जा नाऽअभिचाक-शीमि। यत्रय सोमः सूयतेयत्र-यज्ञोघृतस्यधारा अभित त्पवन्ते॥ ६॥

ॐ अभ्यर्षतसुष्टुतिङ्गव्यमाजिमस्म्मासुभद्द्राद्द्र विणानिधत्त। इमंयज्ञन्नयतदेवतानो घृतस्यधारा मधुमत्पवन्ते॥ १०॥

ॐ धामन्तेव्विश्श्वम्भुवनमधिश्श्रितमन्तः समुद्रेहद्युन्त-रायुषि॥ अपामनीकेसमिथेय ऽआभृतस्तमश्याममधुमन्त-न्तऽऊर्म्मिम्॥ ११॥

ॐ पुनस्त्वादित्यारुद्राव्वसवःसमिन्धतांपुनर्ब्रह्माणोव्वसुनीथयज्ञैः। घृतेनत्वन्तन्वं व्वर्धयस्वसत्याः सन्तुयजमानस्यकामाः॥ १२॥

ॐ सप्त ते ऽअग्ने समिधः सप्त जिह्वाः सप्तऽऋषयः सप्त धाम प्प्रियाणि॥ सप्त होत्राः सप्तधा त्त्वा यजन्ति सप्त योनीराप्टणस्व घृतेन स्वाहा॥ १३॥

ॐ मूर्द्धानन्दिवोऽअरतिम्पृथिव्या व्वैश्श्वानरमृतऽआ जातमग्निम्। कविर्ठ० सम्म्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः॥ १४॥

ॐ पूर्ण्णादर्व्विपरापतसुपूर्णापुनरापत॥ व्वस्नेवव्विक्क्री-णावहा ऽइषमूर्जर्ठ० शतक्क्रतो स्वाहा॥ १५॥

उपरोक्त मंत्रों के पश्चात् स्रुचि में स्थित नारिकेल को अग्निकुंड में यथोचित् रूप से सीधा रख दे। उपरान्त श्रुचि स्थित घी के शेष भाग को इस वाक्य का उच्चारण कर प्रोक्षणी पात्र में छोड़ देवें–**इदमग्नये वैश्वानराय न मम॥**

वसोर्धाराहोमविधिः

आचार्य इस संकल्प को वसोर्धाराहोम के निमित्त कर्ता से करावें–

देशकालौ सङ्कीर्त्य-कृतस्यकालीहवनकर्मणः साङ्गता सिध्यर्थं वसोर्द्धारां होष्यामि।

संकल्प के उपरान्त अग्नि के ऊपर दो स्तम्भों में धारण की हुई, उदुम्बर की सीधी मनोहर बाहुमात्र प्रमाण की वसोर्धारा को प्रागग्र रख, उसके ऊपर शृंखला से परिपूर्ण निर्मल घी से ताम्र आदि द्वारा नीचे कर्ता छित्र द्वारा आज्य को छोड़ते हुए अग्नि के ऊपर ही वसोर्धारा गिरावे। उसके मुख में सोने की जिह्वा बाँधे, श्रुचिपात्र द्वारा नाली से अग्नि में गिरती हुई जो धारा है, अतः उस समय आचार्य एवं सभीब्राह्मण इन मन्त्रों का उच्चारण करते हुए कर्ता से वसोर्धाराकर्म के निमित्त हवन करावें–

ॐ सप्तेऽअग्ने समिधः सप्तजिह्वाः सप्तऽऋषयः सप्तधामप्रियाणि। सप्तहोत्राः सप्तधात्वा यजन्तिसप्तयो-नीरापृणस्वघृतेन स्वाहा॥ १॥

ॐ शुक्रज्ज्योतिश्च चित्रज्ज्योतिश्श्च सत्यज्ज्योतिश्श्च ज्ज्योतिष्म्माँश्च शुक्कश्चऋतपाश्चात्यर्ठ० हाः॥ २॥

ॐ ईदृङ्चान्या दृञ्च सदृङ्चप्प्रति सदृङ् च। मितश्च्च सम्मितश्च्चसभराः॥ ३॥

ॐ ऋतश्श्च सत्यश्श्च ध्रुवश्श्चधरुणश्श्च। धर्त्ता चव्विधर्त्ता च व्विधारयः॥ ४॥

ॐ ऋतजिच्चसत्य जिच्चसेनजिच्च सुषेणश्श्च। अन्तिमित्रश्च दूरेऽअमित्रश्च गणः॥ ५॥

ॐ ईदृक्षासऽएतादृक्षासऽऊषणुः सदृक्षासः प्प्रति सदृक्षासऽएतन। मितासश्च सम्मितासोनोऽअद्य सभरसो मरुतो यज्ञेऽअस्मिन्।। ६।।

ॐ स्वतवाँश्च प्रघासी च सान्त पनश्च गृहमेधी च। क्रीडी च शाकी चो ज्जे षी।। ७।।

ॐ इन्द्रं दैवीर्व्विशोमरुतो नुवर्त्मानो ऽभवन्न्यथेन्द्रन्दैवी र्व्विशोमरुतोऽनुवर्त्मानो ऽभवन्। एवमिमं यजमानंदैवीश्श्चव्विशोमानुषीश्श्चा नुवर्त्मानो भवन्तु।। ८।।

ॐ इमंठं॰ स्तनमूर्ज्जस्वन्तंधयापां प्रपीनमग्ग्ने सरिरस्य मद्ध्ये। उत्सं जुषस्वमधुमन्तमर्व्वन्तसमुद्रियठं॰ सदनमाविशस्व।। ६।।

ॐ व्वसोः पवित्रमसिशतधारं व्वसोः पवित्र मसिसहस्त्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु व्वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वाकामधुक्षः स्वाहा।। १०।।

हवन के उपरान्त जो घृतादि शेष हो उसे प्रोक्षणीपात्र में इस वाक्य का उच्चारण करके छोड़ देवें–**'इदमग्गनये वैश्वानराय न मम'।।**

अग्निप्रदक्षिणादिकर्म

कर्ता अग्नि देव की प्रदक्षिणा कर अग्नि के पीछे पश्चिमदेश में पूर्वाभिमुख बैठे पश्चात् आचार्य स्रुव के द्वारा कुंड से भस्म लेकर इनचार मन्त्रों द्वारा क्रम से कर्ता के ललाट–गले–दाहिने बाहु और हृदय में भस्म लगावें–

१. **ॐ त्र्यायुषञ्जमदग्ने:** –ललाट् पर इस मन्त्र से लगावें।

२. **ॐ कश्यपश्यत्र्यायुषम्** –गले पर इस मन्त्र से लगावें।

३. **ॐ यद्देवेषुत्र्यायुषम्** –दाहिने बाहु पर इस मन्त्र से लगावें।

४. **ॐ तन्नोऽअस्तुत्र्यायुषम्** –हृदय में इस मन्त्र से लगावें।

उपरोक्त कर्म के पश्चात् प्रोक्षणी में स्थित घृत का कर्ता प्राशन करें व आचमन भी करें। पुन: प्रणीता में स्थित पवित्री ग्रन्थि को अलग कर उन पवित्रीयों से प्रणीता जल को अपने शिर पर छिड़क कर उन दोनों पवित्र कुशों को अग्नि में छोड़ देवें।

ब्राह्मणभोजनसंकल्प:

कर्ता से ब्राह्मण भोजन के निमित्त यह संकल्प आचार्य करावें–

कृतस्य कालीहोमकर्मण: समृद्धये यथाशक्ति ब्राह्मणान् भोजयिष्यामि।

पीठदानादिसंकल्प:

कर्ता से पीठदानादि के लिए यह संकल्प आचार्य करावें–

कृतस्य कालीहोमकर्मण: समृद्धयर्थमिमानि सोपस्कर-सहितानि प्रधानपीठादीनि आचार्याय सम्प्रददे। कृतैतत् पीठदानकर्मण: साङ्गतासिद्धयर्थं यथाशक्ति-दक्षिणामाचार्याय संप्रददे।

श्रेयोदानादिकर्म

पूर्णपात्रदान के उपरान्त आचार्य कालीहवनकर्म के लिए श्रेयोदान इस प्रकार से करें स्वयं आचार्य अपने दाहिने हाथ में जल–अक्षत–सुपारी लेकर यह संकल्प करें–

देशकालौ सङ्कीर्त्य-अथ कालीहोम कर्मणः श्रेयोदानं करिष्ये।

तत्रादौ ॐ शिवा आपः सन्तु ! सौमनस्यस्तु!

अक्षतं चारिष्टं चास्तु।

दीर्घमायुः शांतिः पुष्टिस्तुष्टिश्चास्तु।

उपरोक्त वाक्यों का आचार्य उच्चारण करते हुए क्रमानुसार जल, पुष्प, अक्षत, सुपारी, नारिकेल आदि वस्तुएँ लेकर निम्नवाक्य का उच्चारण करते हुए सभी वस्तुएँ कर्ता को प्रसन्न मुद्रा से प्रदान करें-

भवन्नियोगेनमया अस्मिन् कालीहोमकर्मणि तदुत्पन्नं यच्छ्रेयस्तत्तुभ्यमहं संप्रददे।

तेन श्रेयसा त्वं श्रेयोवान् भवः।

आचार्य के द्वारा दी गई वस्तुओं को कर्ता किसी गुप्त स्थान पर रखें अवसर मिलने पर ही उसका भक्षण करें।

[1]आचार्यादिनांदक्षिणा संकल्पः

कर्ता के दाएँ हाथ में जल, अक्षत, सुपारी तथा यथा शक्ति दक्षिणा रखवाकर इस संकल्प को करावावे-

कृतस्य कालीहोमकर्मणः सांगतासिध्यर्थं तत्संपूर्ण फलप्राप्त्यर्थं च आचार्यादिभ्यो, महर्त्विग्भयः सूक्तपाठकेभ्यो, मंत्रजापकेभ्यो, हवनकर्तृभ्योऽन्येभ्यो देवयजनमागतेभ्यश्च दक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृज्ये॥

१.क-एकादश स्वर्णनिष्काः प्रदातव्याः सदक्षिणाः। पलान्येकादश तथा दद्याद्वित्तानुसारतः।
अन्येभ्योऽपि यथाशक्ति द्विजेभ्यो दक्षिणां दिशेत्॥ (शातातपस्मृति २।३३-३४)

ख-दक्षिणा दक्षतेः समर्धयति कर्मणः वृद्धिं समर्धयतीति। (१।३।७)

'सर्वेषां कर्मणां देवि! सारभूता च दक्षिणा'। (गणपतिखण्ड ७।२३)

पूर्णपात्रदानविधिः

कर्ता से निम्न संकल्प आचार्य करावें–

अद्य कृतस्य कालीदेवीहोमकर्मणः साङ्गतासिद्धये तत्सम्पूर्ण फलप्राप्तये च इदं पूर्णापात्रं सदक्षिणं ब्रह्मणे तुभ्यमहं संप्रददे।

संकल्प के पश्चात् अग्नि के पीछे जल से युक्त पात्रको लेकर कर्ता रख दे फिर उसे उलट दे इसके पश्चात् आचार्य निम्न मंत्र द्वारा उपयमन कुशा से कर्ता एवं उसकी धर्मपत्नी, पुत्र, पौत्रादि तथा परिवार के अन्य लोगों के सिरपर सेचन करें–

ॐ आपः शिवा शिवतमाः शान्ताः शान्ततमास्तास्ते कृण्वन्तु भेषजम्॥

उपरोक्त कर्म के समापन के पश्चात् उपयमनकुशाको अग्नि में फेक देवे।

[1]अभिषेकविधिः

आचार्य सहित सभी ब्राह्मण उत्तरदिशा की ओर मुख करके पूर्वाभिमुख बैठे सपत्नीक कर्ता तथा उसके सपरिवार के सभी सदस्यों का पूर्वस्थापित समस्त कलशों के जल को चौड़े मुख के ताम्र के पात्र में जरा–जरा सा जल लेकर दूर्वा तथा पंचपल्लवादि के द्वारा निम्न वैदिक मंत्रों तथा पौराणिक श्लोकों का क्रम से उच्चारण करते हुये अभिषेक कर्म करावें–

१–देवकुम्भैस्ततः कुर्याद्यजमानाभिषेचनम्। चतुर्भिरष्टाभिर्वापि द्वाभ्यामेकेन वा पुनः॥
सपञ्चरत्नकनकैः सितवस्त्रादिवेष्टितैः। देवस्यत्वेति मन्त्रेण साम्ना चाथर्वणेन च॥
(मत्स्यपुराण)

ॐ देवस्य त्त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्व्वाहुब्भ्यां पूष्णो हस्ताब्भ्याम्। सरस्वत्यै व्वाचो यन्तुर्यन्तिये दधामि बृहस्प्पतेष्ट्वा साम्म्राज्ज्येनाभिषिञ्चाम्यसौ॥ १॥

ॐ देवस्य त्त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्व्वाहुब्भ्यां पूष्णो हस्ताब्भ्याम्। सरस्वत्यै व्वाचो यन्तुर्यन्त्रेणाग्नेः साम्म्राज्ज्येनाभिषिञ्चामि॥ २॥

ॐ देवस्य त्त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्व्वाहुब्भ्यां पूष्णो हस्ताब्भ्याम्। अश्विनौर्भैषज्ज्येन तेजसे ब्ब्रह्मवर्च्चसाया-भिषिञ्चामि सरस्वत्यै भैषज्ज्येन व्वीर्य्यायान्नाद्यायाभिषि-ञ्चामीन्द्रस्येन्द्रियेण बलाय श्श्रियै यशसेऽभिषिञ्चामि ॥ ३॥

सुरास्त्वामभिषिञ्चन्तु ब्रह्म-विष्णु-महेश्वराः।
वासुदेवो जगन्नाथस्तथा सङ्कर्षणो विभुः ॥ १॥
प्रद्युम्नश्चाऽनिरुद्धश्च भवन्तु विजयाय ते।
आखण्डलोऽग्निर्भगवान् यमो वै निर्ऋतिस्तथा ॥ २॥
वरुणः पवनश्चैव धनाध्यक्षस्तथा शिवः।
ब्रह्मणा सहिताः सर्वे दिक्पालाः पान्तु ते सदा॥ ३॥
कीर्तिर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा पुष्टिः श्रद्धा क्रिया मतिः।
बुद्धिर्लज्जा वपुः शान्तिः कान्तिस्तुष्टिश्च मातरः ॥ ४॥
एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु देवपत्न्यः समागताः।
आदित्यश्चन्द्रमा भौमो बुध-जीव-सिताऽर्कजा ॥ ५॥
ग्रहास्त्वामभिषिञ्चन्तु राहुः केतुश्च तर्पिताः।
देव-दानव-गन्धर्वा यक्ष-राक्षस-पन्नगाः॥ ६॥

ऋषयो मुनयो गावो देवमातर एव च।
देवपत्न्यो द्रुमा नागा दैत्याश्चाऽप्सरसां गणाः ॥७॥
अस्त्राणि सर्वशस्त्राणि राजानो वाहनानि च।
औषधानि च रत्नानि कालस्यावयवाश्च ये ॥८॥
सरितः सागराः शैलास्तीर्थानि जलदा नदाः।
एते त्वामभिषिञ्चन्तु धर्मकामार्थसिद्धये ॥९॥
अमृताभिषेकोऽस्तु। शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिश्चास्त्वित्यभिषेकः।

घृतच्छायापात्रदानकर्म

कर्ता निम्न संकल्प को करके ही कास्य के चौड़े मुख के पात्र में घृत भरकर अपने मुख की छाया को देखें–

देशकालौ सङ्कीर्त्य "अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहं (वर्माऽहं, गुप्तोऽहं, दासोऽहं) कृतस्य कालीहवनकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं सर्वारिष्टविनाशार्थं चाज्यावेक्षणं करिष्ये"।

उपरोक्त संकल्प के पश्चात् आचार्य निम्नमंत्र का उच्चारण करें–

ॐ रूपेण वो रूपमभ्यागा तुथो वो विश्ववेदा विभजतु। ऋतस्य पथा प्रेत चन्द्रदक्षिणा विस्वः पश्य व्यन्तरिक्षं यत्तस्व सदस्यैः॥

इस मंत्र की समाप्ति के पश्चात् कर्ता ने जिस पात्र में उसने अपनी मुखाकृति देखी हो उसे दक्षिणा सहित ब्राह्मण को दे दें।

भूयसीदक्षिणा

कर्ता से भूयसीदक्षिणा के लिए आचार्य इस संकल्प को करावें–

देशकालौ सङ्कीर्त्य–"कृतेऽस्मिन् कालीहवनकर्मणि न्यूनातिरिक्तदोषपरिहारार्थं नानानामगोत्रेभ्यो नानाशर्मेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दीनानाथेभ्यश्च यथाशक्तिभूयसीं दक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृज्ये"

उत्तरपूजनम्

कर्ता से उत्तर पूजन के निमित्त इस संकल्प को आचार्य करावें–

कृतस्य कालीहवनकर्मणः साङ्गता सिद्धये आवाहित देवानामुतर पूजां करिष्ये।

संकल्प की समाप्ति के पश्चात् विधि–विधान से कर्ता से गणपत्यादि देवताओं की पूजा आचार्य करावें।

देवविसर्जन

आचार्य देवताओं के विसर्जन के निमित्त निम्न संकल्प कर्ता से करावें–

देशकालौ सङ्कीर्त्य "गोत्रः शर्माऽहं (वर्माऽहं, गुप्तोऽहं, दासोऽहं) कालीहवनकर्माङ्गत्वेन स्थापितानां देवतानामुत्थापनं करिष्ये"।।

उपरोक्त संकल्प करके पूर्व स्थापित अग्नि में विनयपूर्वक पुष्पाक्षत छोड़ दें। उसके पश्चात् आचार्य एवं सभी ब्राह्मण निम्न मंत्र एवं श्लोकों का उच्चारण करके विसर्जन कर्म को पूर्ण करावें·

ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तस्त्वेमहे। उप प्रयन्तु मरुतः सुदानव ऽइन्द्र प्राशुर्ब्भवा सचा ॥ १ ॥

यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामिकाम्।
इष्टकामसमृद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च॥

ॐ यज्ञ यज्ञं गच्छ यज्ञपतिं गच्छ स्वां योनिं गच्छ स्वाहा। एष ते यज्ञो यज्ञपते सहसूक्तवाकः सर्व्ववीरस्तं जुषस्व स्वाहा॥

गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ! स्वस्थाने परमेश्वर।
यत्र ब्रह्मादयो देवास्तत्र गच्छ हुताशन!॥

आचार्य इस वाक्य का उच्चारण कर्ता से करावें-

अनेन यथाशक्तिकृतेन कालीहवनकर्मणाः श्रीपापापहा महाविष्णुः प्रीयताम्॥

कर्ता निम्न वाक्य का तीन बार उच्चारण करें-

ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः।

क्षमापनम्

कर्ता से इन श्लोकों का उच्चारण करवाते हुए आचार्य क्षमापन कृत को सम्पन्न करावें-

जपच्छिद्रं तपश्छिद्रं यच्छिद्रं शान्तिकर्मणि।
सर्वं भवतु मेऽच्छिद्रं ब्राह्मणानां प्रसादतः॥ १ ॥
प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्।
स्मरणादेव तद् विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः॥ २ ॥
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपो-यज्ञ-क्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥ ३ ॥

मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि।
यत्पूजितं मया देवि परिपूर्णं तदस्तु मे॥ ४॥
कर्मणा मनसा वाचा पूजनं यत् यथाकृतम्।
तेन तुष्टिं समासाद्य प्रसीद परमेश्वरि॥ ५॥

आशीर्वादः

इन पौराणिक श्लोकों तथा उसके पश्चात् वैदिक मंत्रों का उच्चारण करके आचार्य एवं उपस्थित ब्राह्मण कर्ता एवं उसकी धर्मपत्नी तथा उसके पुत्र–पौत्रों सहित परिवार के सदस्यों को आशीर्वाद प्रदान करें–

श्रीर्वर्च्चस्वमायुष्मारोग्यमाविधात् पवमानं मदीयते।
धान्यं धनं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः॥ १॥
आयुष्कामो यशस्कामो पुत्र–पौत्रस्तथैव च।
आरोग्यं धनकामश्च सर्वे कामा भवन्तु ते॥ २॥
मन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः।
शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव॥ ३॥
अपुत्राः पुत्रिणः सन्तु पुत्रिणः सन्तु पौत्रिणः।
निर्धनाः सधनाः सन्तु जीवन्तु शरदां शतम्॥ ४॥

कर्ता तिलक आशीर्वाद मन्त्राः–

ॐ स्वस्ति न ऽइन्द्रो व्वृद्धश्श्रवाः स्वस्ति नः पूषा व्विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो ऽअरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्प्पतिर्द्दधातु॥ १॥

ॐ पुनस्त्वाऽऽदित्त्या रुद्द्रा व्वसवः समिन्धतां पुनर्ब्रह्माणो व्वसुनीथ यज्ञैः। घृतेन त्वं तन्वं व्वर्द्धयस्व सत्त्याः सन्तु यजमानस्य कामाः॥ २॥

कर्ता पत्नी आशीर्वाद मन्त्राः-

ॐ अनाधृष्टा पुरस्तादग्नेराधिपत्य ऽआयुर्म्मेदाः पुत्रवती दक्षिणत ऽइन्द्रस्याधिपत्त्ये प्प्रजां मे दाः सुषदा पश्चाद्देवस्य सवितु राधिपत्त्ये चक्षुर्म्मे दा ऽआश्श्रुतिरुत्तरतो धातुराधिपत्त्ये रायस्पोषं मे दाः॥ व्विधृतिरुपरिष्ट्टाद् बृहस्पतेराधिपत्त्य ऽओजो मे दा व्विश्श्वाब्भ्यो मा नाष्ट्राब्भ्यस्प्पाहि मनोरश्श्वासि॥

इसके पश्चात् आचार्य काली देवी के प्रसाद को कर्ता एवं उसकी धर्मपत्नी एवं परिवार के सदस्यों को प्रदान करें।

॥ कालीहवन पद्धतिः समाप्तः॥

तन्त्रोक

दक्षिण-काली-हवन-पद्धतिः

आचार्य काली हवन के लिए सर्वप्रथम अपने दायें भाग में एक हाथ लम्बा तथा एक ही हाथ चौड़ा चार अंगुल जिसकी ऊंचाई हो ऐसे मिट्टी से निर्मित स्थण्डिल का निर्माण कर उसे काली के मूलमंत्र से अभिमंत्रित करके 'फट्' मंत्र से कुशा के द्वारा उसका प्रोक्षण करके उसके आगे लालचंदन से एक त्रिकोण का निर्माण करें। इसके पश्चात् अग्नि के मूल मंत्र के द्वारा फट् वाक्य का उच्चारण करके अस्त्र मुद्रा से रक्षण कर **हूं फट् कव्या देवेभ्यो नमः** से अग्नि की एक चिनगी नैर्ऋत्य कोण में रख कर पुनः मूलमंत्र से स्थण्डिल पर अग्नि का स्थापन कर-

ॐ भूः स्वाहा, ॐ भुवः स्वाहा, ॐ स्वः स्वाहा, ॐ भूर्भुव स्वः स्वाहा इन व्याहृति से हवन कर वह्नि के षडङ्गों को एक-एक आहुति विधिवत् कर्ता से प्रज्वलित अग्नि में प्रदान करावें–

यथा–**ॐ सहस्त्रार्चिषे हृदयाय नमः स्वाहा।**

ॐ स्वस्ति पूर्णाय शिरसे स्वाहा।

ॐ उत्तिष्ठ-पुरुषाय शिखायै वषट् स्वाहा।

ॐ धूम्र-व्यापिने कवचाय हूं स्वाहा।

ॐ सप्तजिह्वाय नेत्रत्रयाय वौषट् स्वाहा।

ॐ धनुर्द्धराय अस्त्राय फट् स्वाहा।

उपरोक्त हवन के पश्चात् निम्न वाक्य का आचार्य उच्चारण करके प्रज्वलित अग्नि में क्रम से तीन बार ही कर्ता से आहुति प्रदान करावें–

ॐ वैश्वानर जातवेद इहावह लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय स्वाहा।

इस मंत्र द्वारा क्रम पूर्वक तीन बार आहुति प्रदान करने के पश्चात् अग्नि में देवता का विधिवत् ध्यान कर एक फूल कर-कच्छप मुद्रा से ग्रहण करें। अपने श्वाश द्वारा प्राणशक्ति द्वारा परा-शक्ति से ब्रह्मरन्ध्र में मिलाकर निश्वास द्वारा फूल में रख फूल को अग्नि में पुनः रखकर दक्षिण कालिका देवी का स्थापन अग्नि में निम्न वाक्य का उच्चारण करके आचार्य करावें–

ॐ क्रीं दक्षिणकालिके देवि इहागच्छ इहतिष्ठ।

इसके पश्चात् देवी को वैदिक, पौराणिक, अथवा तान्त्रिक मंत्र से एक पुष्पाञ्जलि अर्पित करें। इसके पश्चात् पञ्चोपचारों से

उनकी पूजा करके देवताओं के षड़ङ्गों को एक एक आहुति निम्न क्रम से पुनः प्रज्वलित अग्नि में कर्ता प्रदान करें–

ॐ क्रां हृदयाय नमः। ॐ क्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ क्रूं शिखायै वषट्। ॐ क्रैं कवचाय हूं स्वाहा। ॐ क्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् स्वाहा। ॐ क्रः अस्त्राय फट् स्वाहा।

इसके पश्चात् निम्न मन्त्र का आचार्य पच्चीस बार उच्चारण करके प्रत्येक बार एक–एक आहुति अग्नि में कर्ता से प्रदान करावें–

क्रीं श्रीं दक्षिण-कालिकायै स्वाहा।

निम्न मन्त्र से क्रम से तीन बार आहुति प्रदान करावें–

क्रीं सांगायै सायुधायै सवाहनायै सपरिवारायै श्रीदक्षिण-कालिकायै स्वाहा।

इसके पश्चात निम्न मन्त्र से सोलह आहुति अग्नि में कर्ता से प्रदान करावें–

क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं दक्षिणकालिके क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा।

इसके पश्चात् आचार्य ताम्बूल, सुपाड़ी, घृत और अक्षत् सब को एक में मिलाकर–**क्रीं वौषट्** इस नाम मन्त्र से अग्नि में पूर्णाहुति देवें।

उपरोक्त कर्म के पश्चात्–**श्रीदक्षिणे कालिके पूजितासि प्रसीद क्षमस्व** का उच्चारण करके विशेषार्ध्य बिन्दु अग्नि में डाल कर संहार मुद्रा से तेजोरूप देवता को अपने पास वापस ले आवे। पुनः अग्नि का विसर्जन निम्न मन्त्र का उच्चारण करके करें–

ॐ भो भो वह्नि-महाशक्ते सर्वकर्मप्रसाधक।
कर्मान्तरेऽपि सम्प्राप्ते सान्निध्यं कुरु सादरम्॥

इसके पश्चात् कर्ता कहे, हे अग्नि मैं आपका पूजन कर रहा हूँ। अत: आप मेरे ऊपर प्रसन्न होवें तथा मेरे अपराधों को क्षमा करें। इसके पश्चात् स्थण्डिल में से स्रुवे द्वारा भस्म निकाल कर तिलक कर्म मूल मन्त्र के द्वारा ही करें।

कालीसहस्रनामावल्या: स्वाहाकारविधि:

आचार्य काली सहस्रनामावली के द्वारा कर्ता से हवन कराने के लिए कुण्ड का निर्माण करे यदि संक्षिप्त रूप से हवन कर्म करवाना हो तो ताम्रकुण्ड में अग्नि प्रज्वलित कर कालातिल, शाकल्य, कमलगट्टा, मखाना, तालमिश्री, शक्कर, देशी घृत इन सभी वस्तुओं को एक में मिलाकर काली के प्रत्येक मंत्र का आचार्य उच्चारण करके कर्ता से प्रज्वलित अग्नि में आहुति यथा क्रम प्रदान करावें–

१. ॐ क्रीं काल्यै स्वाहा
२. ॐ क्रूं कराल्यै स्वाहा
३. ॐ कल्याण्यै स्वाहा
४. ॐ कमलायै स्वाहा
५. ॐ कलायै स्वाहा
६. ॐ कलावत्यै स्वाहा
७. ॐ कलाढ्यायै स्वाहा
८. ॐ कलापूज्यायै स्वाहा
९. ॐ कलात्मिकायै स्वाहा
१०. ॐ कलाहृष्टायै स्वाहा
११. ॐ कलापुष्टायै स्वाहा
१२. ॐ कलामस्तायै स्वाहा
१३. ॐ कलाकरायै स्वाहा
१४. ॐ कलाकोटिसभासायै स्वाहा
१५. ॐ कलाकोटिप्रपूजितायै स्वा०
१६. ॐ कलाकर्मकलाधरायै स्वाहा
१७. ॐ कलापरायै स्वाहा
१८. ॐ कलागमायै स्वाहा
१९. ॐ कलधारायै स्वाहा
२०. ॐ कमलिन्यै स्वाहा
२१. ॐ ककरायै स्वाहा
२३. ॐ काव्यै स्वाहा
२४. ॐ ककारवर्णसर्वाङ्ग्यै स्वाहा
२५. ॐ कलाकोटिप्रभूषिताय स्वा०

२६. ॐ ककारकोटिगुणितायै स्वा०
२७. ॐ ककारकोटिभूषणायै स्वा०
२८. ॐ ककारवर्णहृदयायै स्वाहा
२९. ॐ ककारमनुमण्डितायै स्वाहा
३०. ॐ ककारवर्णनिलयायै स्वाहा
३१. ॐ काकशब्दपरायणायै स्वाहा
३२. ॐ ककारवर्णमुकुटायै स्वाहा
३३. ॐ ककारवर्णभूषणायै स्वाहा
३४. ॐ ककारवर्णरूपायै स्वाहा
३५. ॐ ककशब्दपरायणायै स्वाहा
३६. ॐ ककवीरास्फालरतायै स्वाहा
३७. ॐ कमलाकरपूजितायै स्वाहा
३८. ॐ कमलाकरनाथायै स्वाहा
३९. ॐ कमलाकररूपधृषे स्वाहा
४०. ॐ कमलाकरसिद्धिस्थायै स्वा०
४१. ॐ कमलाकरपारदायै स्वाहा
४२. ॐ कमलाकरमध्यस्थायै स्वाहा
४३. ॐ कमलाकरतोषितायै स्वाहा
४४. ॐ कथङ्कारपरालापायै स्वाहा
४५. ॐ कथङ्कारपरायणायै स्वाहा
४६. ॐ कथङ्कारपदान्तरस्थायै स्वा०
४७. ॐ कथङ्कारपदार्थभुवे स्वाहा
४८. ॐ कमलाक्ष्यै स्वाहा
४९. ॐ कमलजायै स्वाहा
५०. ॐ कमलाक्षप्रपूजितायै स्वाहा
५१. ॐ कमलाक्षवरोद्युक्तायै स्वाहा
५२. ॐ ककरायै स्वाहा
५३. ॐ कबूराक्षरायै स्वाहा
५४. ॐ करतारायै स्वाहा
५५. ॐ करच्छिन्नायै स्वाहा
५६. ॐ करश्यामायै स्वाहा
५७. ॐ करार्णवायै स्वाहा
५८. ॐ करपूज्यायै स्वाहा
५९. ॐ कररतायै स्वाहा
६०. ॐ करदायै स्वाहा
६१. ॐ करजितायै स्वाहा
६२. ॐ करतोयायै स्वाहा
६३. ॐ करामर्षायै स्वाहा
६४. ॐ कर्मनाशायै स्वाहा
६५. ॐ करप्रियायै स्वाहा
६६. ॐ करप्राणायै स्वाहा
६७. ॐ करकजायै स्वाहा
६८. ॐ करकायै स्वाहा
६९. ॐ करकान्तरायै स्वाहा
७०. ॐ करकाचलरूपायै स्वाहा
७१. ॐ करकाचलशोभिन्यै स्वाहा
७२. ॐ करकाचलपुत्र्यै स्वाहा
७३. ॐ करकाचलतोषितायै स्वाहा
७४. ॐ करकाचलगेहस्थायै स्वाहा
७५. ॐ करकाचलरक्षिण्यै स्वाहा
७६. ॐ करकाचलसंमान्यायै स्वाहा
७७. ॐ करकाचलकारिण्यै स्वाहा
७८. ॐ करकाचलवर्षाढ्यायै स्वा.
७९. ॐ करकाचलरञ्जितायै स्वाहा

८०. ॐ करकाचलकान्तारायै स्वा.
८१. ॐ करकाचलमालिन्यै स्वाहा
८२. ॐ करकाचलभोज्यायै स्वाहा
८३. ॐ करकाचलरूपिण्यै स्वाहा
८४. ॐ करामलकसंस्थायै स्वाहा
८५. ॐ करामलकसिद्धिदायै स्वा०
८६. ॐ करामलकसम्पूज्यायै स्वाहा
८७. ॐ करामलकतारिण्यै स्वाहा
८८. ॐ करामलककाल्यै स्वाहा
८९. ॐ करामलकरोचिन्यै स्वाहा
९०. ॐ करामलकमात्रे स्वाहा
९१. ॐ करामलकसेविन्यै स्वाहा
९२. ॐ करामलकवद्ध्येयायै स्वा०
९३. ॐ करामलकदायिन्यै स्वाहा
९४. ॐ कञ्जनेत्रायै स्वाहा
९५. ॐ कञ्जमत्यै स्वाहा
९६. ॐ कञ्जस्थायै स्वाहा
९७. ॐ कञ्जधारियै स्वाहा
९८. ॐ कञ्जमालाप्रियकर्यै स्वाहा
९९. ॐ कञ्जरूपायै स्वाहा
१००. ॐ कञ्जजायै स्वाहा
१०१. ॐ कञ्जजात्यै स्वाहा
१०२. ॐ कञ्जगत्यै स्वाहा
१०३. ॐ कञ्जहोमपरायणायै स्वाहा
१०४. ॐकञ्जमण्डलमध्यस्थायै स्वा०
१०५. ॐ कञ्जाभरणभूषितायै स्वाहा
१०६. ॐ कञ्जसम्माननिरतायै स्वाहा
१०७. ॐ कञ्जोत्पत्तिपरायणायै स्वा०
१०८. ॐ कञ्जराशिसमाकारायै स्वा०
१०९. ॐ कञ्जारण्यनिवासिन्यै स्वा०
११०. ॐ करञ्जवृक्षमध्यस्थायै स्वा०
१११. ॐ करञ्जवृक्षवासिन्यै स्वाहा
११२. ॐ करञ्जफलभूषाढ्यायै स्वा०
११३. ॐ करञ्जारण्यवासिन्यै स्वाहा
११४. ॐ करञ्जमालाभरणायै स्वाहा
११५. ॐ करवालपरायणायै स्वाहा
११६. ॐ करवालप्रहृष्टात्मने स्वाहा
११७. ॐ करवालप्रियागत्यै स्वाहा
११८. ॐ करवालप्रियाकन्थायै स्वा०
११९. ॐ करवालविहारिण्यै स्वाहा
१२०. ॐ करवालमयै स्वाहा
१२१. ॐ कर्मायै स्वाहा
१२२. ॐ करवालप्रियङ्कर्यै स्वाहा
१२३. ॐ कबन्धमालाभरणायै स्वाहा
१२४. ॐ कबन्धराशिमध्यगायै स्वाहा
१२५. ॐ कबन्धकूटसंस्थानायै स्वा०
१२६. ॐ कबन्धानन्तभूषणायै स्वाहा
१२७. ॐ कबन्धनादसन्तुष्टायै स्वाहा
१२८. ॐ कबन्धासनधारिण्यै स्वाहा
१२९. ॐ कबन्धगृहमध्यस्थायै स्वाहा
१३०. ॐ कबन्धवनवासिन्यै स्वाहा
१३१. ॐ कबन्धकाञ्च्यै स्वाहा
१३२. ॐ करण्यै स्वाहा
१३३. ॐ कबन्धराशिभूषणायै स्वाहा

१३४. ॐ कबन्धमालाजयदायै स्वाहा
१३५. ॐ कबन्धदेहवासिन्यै स्वाहा
१३६. ॐ कबन्धासनमान्यायै स्वाहा
१३७. ॐ कपालमाल्यधारिण्यै स्वाहा
१३८. ॐ कपालमालामध्यस्थायै स्वा.
१३९. ॐ कपालव्रततोषितायै स्वाहा
१४०. ॐ कपालदीपसन्तुष्टायै स्वाहा
१४१. ॐ कपालदीपरूपिण्यै स्वाहा
१४२. ॐ कपालदीपवरदायै स्वाहा
१४३. ॐ कपालकज्जलस्थितायै स्वा.
१४४. ॐ कपालमालाजयदायै स्वाहा
१४५. ॐ कपालजलतोषिण्यै स्वाहा
१४६. ॐ कपालसिद्धिसंहृष्टायै स्वाहा
१४७. ॐ कपालभोजनोद्यतायै स्वाहा
१४८. ॐ कपालव्रतसंस्थानायै स्वाहा
१४९. ॐ कपालकमलालयायै स्वाहा
१५०. ॐ कवित्वामृतसारायै स्वाहा
१५१. ॐ कवित्वामृतसागरायै स्वाहा
१५२. ॐ कवित्वसिद्धिसंहृष्टायै स्वाहा
१५३. ॐ कवित्वादानकारिण्यै स्वाहा
१५४. ॐ कविपूज्यायै स्वाहा
१५५. ॐ कविगत्यै स्वाहा
१५६. ॐ कविरूपायै स्वाहा
१५७. ॐ कविप्रियायै स्वाहा
१५८. ॐ कविब्रह्मानन्दरूपायै स्वाहा
१५९. ॐ कवित्वव्रततोषितायै स्वाहा
१६०. ॐ कवित्वव्रतसंस्थानायै स्वाहा
१६१. ॐ कविवाञ्छाप्रपूरिण्यै स्वाहा
१६२. ॐ कविकण्ठस्थितायै स्वाहा
१६३. ॐ कं ह्रीं कं कं क कविपूर्तिदायै स्वाहा
१६४. ॐ कज्जलायै स्वाहा
१६५. ॐ कज्जलदानमानसायै स्वाहा
१६६. ॐ कज्जलप्रियायै स्वाहा
१६७. ॐ कपालकज्जलसभायै स्वाहा
१६८. ॐ कज्जलेशप्रपूजितायै स्वाहा
१६९. ॐ कज्जलार्णवमध्यस्थायै स्वा.
१७०. ॐ कज्जलानन्यरूपिण्यै स्वाहा
१७१. ॐ कज्जलप्रियसन्तुष्टायै स्वाहा
१७२. ॐ कज्जलप्रियतोषिण्यै स्वाहा
१७३. ॐ कपालमालाभरणायै स्वाहा
१७४. ॐ कपालकरभूषणायै स्वाहा
१७५. ॐ कपालकरभूषाढ्यायै स्वाहा
१७६. ॐ कपालचक्रमण्डितायै स्वाहा
१७७. ॐ कपालकोटिनिलयायै स्वाहा
१७८. ॐ कपालदुर्गकारिण्यै स्वाहा
१७९. ॐ कपालगिरिसंस्थानायै स्वाहा
१८०. ॐ कपालचक्रवासिन्यै स्वाहा
१८१. ॐ कपालपात्रसन्तुष्टायै स्वाहा
१८२. ॐ कपालार्घ्यपरायणायै स्वाहा
१८३. ॐ कपालार्घ्यप्रियप्राणायै स्वाहा
१८४. ॐ कपालर्घ्यवरप्रदायै स्वाहा
१८५. ॐ कपालचक्ररूपायै स्वाहा
१८६. ॐ कपालरूपमात्रगायै स्वाहा

१८७. ॐ कदल्यै स्वाहा
१८८. ॐ कदलीरूपायै स्वाहा
१८९. ॐ कदलीवनवासिन्यै स्वाहा
१९०. ॐ कदलीपुष्पसम्प्रीतायै स्वाहा
१९१. ॐ कदलीफलमानसायै स्वाहा
१९२. ॐ कदलीहोमसम्पुष्टायै स्वाहा
१९३. ॐ कदलीदर्शनोद्यतायै स्वाहा
१९४. ॐ कदलीगर्भमध्यस्थायै स्वाहा
१९५. ॐ कदलीवनसुन्दर्य्यै स्वाहा
१९६. ॐ कदम्बपुष्पनिलयायै स्वाहा
१९७. ॐ कदम्बवनमध्यगायै स्वाहा
१९८. ॐ कदम्बकुसुमामोदायै स्वाहा
१९९. ॐ कदम्बवनतोषिण्यै स्वाहा
२००. ॐ कदम्बपुष्पसम्पूज्यायै स्वाहा
२०१. ॐ कदम्बपुष्पहोमदायै स्वाहा
२०२. ॐ कदम्बपुष्पमध्यस्थायै स्वाहा
२०३. ॐ कदम्बफलभोजिन्यै स्वाहा
२०४. ॐ कदम्बकाननान्तस्थायै स्वाहा
२०५. ॐ कदम्बाचलवासिन्यै स्वाहा
२०६. ॐ कक्षपायै स्वाहा
२०७. ॐ कक्षपाराध्यायै स्वाहा
२०८. ॐ कच्छपासनस्थितायै स्वाहा
२०९. ॐ कर्णपूरायै स्वाहा
२१०. ॐ कर्णनासायै स्वाहा
२११. ॐ कर्णाढ्यायै स्वाहा
२१२. ॐ कालभैरव्यै स्वाहा
२१३. ॐ कलहप्रीतायै स्वाहा
२१४. ॐ कलहदायै स्वाहा
२१५. ॐ कलहायै स्वाहा
२१६. ॐ कलहापुरायै स्वाहा
२१७. ॐ कर्णयक्ष्यै स्वाहा
२१८. ॐ कथिन्यै स्वाहा
२१९. ॐ कर्णसुन्दर्यै स्वाहा
२२०. ॐ कर्णपिशाचिन्यै स्वाहा
२२१. ॐ कर्णमञ्जर्यै स्वाहा
२२२. ॐ कपिदक्षदायैस्वाहा
२२३. ॐ कविकक्षविरूपाढ्यायै स्वा.
२२४. ॐ कविकक्षस्वरूपिण्यै स्वाहा
२२५. ॐ कस्तूरीमृगसंस्थानायै स्वाहा
२२६. ॐ कस्तूरीमृगरूपिण्यै स्वाहा
२२७. ॐ कस्तूरीमृगसन्तोषायै स्वाहा
२२८. ॐ कस्तूरीमृगमध्यगायै स्वाहा
२२९. ॐ कस्तूरीरसनीलाङ्ग्यै स्वाहा
२३०. ॐ कस्तूरीगन्धतोषितायै स्वाहा
२३१. ॐ कस्तूरीपूजकप्राणायै स्वाहा
२३२. ॐ कस्तूरीपूजकप्रियायै स्वाहा
२३३. ॐ कस्तूरीप्रेमसन्तुष्टायै स्वाहा
२३४. ॐ कस्तूरीप्राणधारिण्यै स्वाहा
२३५. ॐ कस्तूरीपूजकानन्दायै स्वाहा
२३६. ॐ कस्तूरीगन्धरूपिण्यै स्वाहा
२३७. ॐ कस्तूरीमालिकारूपायै स्वा०
२३८. ॐ कस्तूरीभोजनप्रियायै स्वाहा
२३९. ॐ कस्तूरीतिलकानन्दायै स्वा०
२४०. ॐ कस्तूरीतिलकप्रियायै स्वाहा

२४१. ॐ कस्तूरीहोमसन्तुष्टायै स्वाहा
२४२. ॐ कस्तूरीतर्पणोद्यतायै स्वाहा
२४३. ॐ कस्तूरीमार्जनोद्युक्तायै स्वा०
२४४. ॐ कस्तूरीचक्रपूजितायै स्वाहा
२४५. ॐ कस्तूरीपुष्पसम्पूज्यायै स्वाहा
२४६. ॐ कस्तूरीचर्वणोद्यतायै स्वाहा
२४७. ॐ कस्तूरीगर्भमध्यस्थायै स्वाहा
२४८. ॐ कस्तूरीवस्त्रधारिण्यै स्वाहा
२४९. ॐ कस्तूरीकामोदरतायै स्वाहा
२५०. ॐ कस्तूरीवनवासिन्यै स्वाहा
२५१. ॐ कस्तूरीवनसंरक्षायै स्वाहा
२५२. ॐ कस्तूरीप्रेमधारिण्यै स्वाहा
२५३. ॐ कस्तूरीशक्तिनिलयायै स्वाहा
२५४. ॐ कस्तूरीकुण्डगायै स्वाहा
२५५. ॐ कस्तूरीकुण्डसंस्नातायै स्वाहा
२५६. ॐ कस्तूरीकुण्डमज्जनायै स्वाहा
२५७. ॐ कस्तूरीजीवसन्तुष्टायै स्वाहा
२५८. ॐ कस्तूरीजीवधारिण्यै स्वाहा
२५९. ॐ कस्तूरीपरमामोदायै स्वाहा
२६०. ॐ कस्तूरीजीवनक्षमायै स्वाहा
२६१. ॐ कस्तूरीजातिभावस्थायै स्वा०
२६२. ॐ कस्तूरीगन्धचुम्बनायै स्वाहा
२६३. ॐ कस्तूरीगन्धसंशोभाविराजितकपालभुवे स्वाहा
२६४. ॐ कस्तूरीमदनान्तस्थायै स्वाहा
२६५. ॐ कस्तूरीमदहर्षदायै स्वाहा
२६६. ॐ कस्तूर्यै स्वाहा
२६७. ॐ कवितानाढ्यायै स्वाहा
२६८. ॐ कस्तूरीगृहमध्यगायै स्वाहा
२६९. ॐ कस्तूरीस्पर्शकप्राणायै स्वाहा
२७०. ॐ कस्तूरीनिन्दाकान्तकायै स्वा०
२७१. ॐ कस्तूर्यामोदरसिकायै स्वाहा
२७२. ॐ कस्तूरीक्रीडनोद्यतायै स्वाहा
२७३. ॐ कस्तूरीदाननिरतायै स्वाहा
२७४. ॐ कस्तूरीवरदायिन्यै स्वाहा
२७५. ॐ कस्तूरीस्थापनाशक्तायै स्वाहा
२७६. ॐ कस्तूरीस्थानरञ्जिन्यै स्वाहा
२७७. ॐ कस्तूरीकुशलप्राणायै स्वाहा
२७८. ॐ कस्तूरीस्तुतिवन्दितायै स्वाहा
२७९. ॐ कस्तूरीवन्दकाराध्यायै स्वाहा
२८०. ॐ कस्तूरीस्थानवासिन्यै स्वाहा
२८१. ॐ कहरूपायै स्वाहा
२८२. ॐ कहाढ्यायै स्वाहा
२८३. ॐ कहानन्दायै स्वाहा
२८४. ॐ कहात्मभुवे स्वाहा
२८५. ॐ कहपूज्यायै स्वाहा
२८६. ॐ कहेत्याख्यायै स्वाहा
२८७. ॐ कहहेयायै स्वाहा
२८८. ॐ कहात्मिकायै स्वाहा
२८९. ॐ कहमालायै स्वाहा
२९०. ॐ कण्ठभूषायै स्वाहा
२९१. ॐ कहमन्त्रजपोद्यतायै स्वाहा
२९२. ॐ कहनामस्मृतिपरायै स्वाहा
२९३. ॐ कहनामपरायणायै स्वाहा

२६४. ॐ कहपरायणरतायै स्वाहा
२६५. ॐ कहदेव्यै स्वाहा
२६६. ॐ कहेश्वर्य्यै स्वाहा
२६७. ॐ कहहेत्वै स्वाहा
२६८. ॐ कहानन्दायै स्वाहा
२६९. ॐ कहनादपरायणायै स्वाहा
३००. ॐ कहमात्रे स्वाहा
३०१. ॐ कहान्तस्थायै स्वाहा
३०२. ॐ कहमन्त्रायै स्वाहा
३०३. ॐ कहेश्वरायै स्वाहा
३०४. ॐ कहगेयायै स्वाहा
३०५. ॐ कहाराध्यायै स्वाहा
३०६. ॐ कहध्यानपरायणायै स्वाहा
३०७. ॐ कहतन्त्रायै स्वाहा
३०८. ॐ कहकहायै स्वाहा
३०९. ॐ कहचर्यापरायणायै स्वाहा
३१०. ॐ कहाचारायै स्वाहा
३११. ॐ कहगत्यै स्वाहा
३१२. ॐ कहताण्डवकारिण्यै स्वाहा
३१३. ॐ कहारण्यायै स्वाहा
३१४. ॐ कहगत्यै स्वाहा
३१५. ॐ कहशक्तिपरायणायै स्वाहा
३१६. ॐ कहराज्यरतायै स्वाहा
३१७. ॐ कर्मसाक्षिण्यै स्वाहा
३१८. ॐ कर्मसुन्दर्यै स्वाहा
३१९. ॐ कर्मविद्यायै स्वाहा
३२०. ॐ कर्मगत्यै स्वाहा
३२१. ॐ कर्मतन्त्रपरायणायै स्वाहा
३२२. ॐ कर्ममात्रायै स्वाहा
३२३. ॐ कर्मगात्रायै स्वाहा
३२४. ॐ कर्मधर्मपरायणायै स्वाहा
३२५. ॐ कर्मरेखानाशकर्त्र्यै स्वाहा
३२६. ॐ कर्मरेखाविनोदिन्यै स्वाहा
३२७. ॐ कमरेखामोहकर्यै स्वाहा
३२८. ॐ कर्मकीर्तिपरायणायै स्वाहा
३२९. ॐ कर्मविद्यायै स्वाहा
३३०. ॐ कर्मसारायै स्वाहा
३३१. ॐ कर्माधारायै स्वाहा
३३२. ॐ कर्मभुवे स्वाहा
३३३. ॐ कर्मकार्य्यै स्वाहा
३३४. ॐ कर्महार्य्यै स्वाहा
३३५. ॐ कर्मकौतुकसुन्दर्य्यै स्वाहा
३३६. ॐ कर्मकाल्यै स्वाहा
३३७. ॐ कर्मतारायै स्वाहा
३३८. ॐ कर्मछिन्नायै स्वाहा
३३९. ॐ कर्मदायै स्वाहा
३४०. ॐ कर्मचाण्डालिन्यै स्वाहा
३४१. ॐ कर्मवेदमात्रे स्वाहा
३४२. ॐ कर्मभुवे स्वाहा
३४३. ॐ कर्मकाण्डरतानन्तायै स्वाहा
३४४. ॐ कर्मकाण्डानुमानितायै स्वा०
३४५. ॐ कर्मकाण्डपरीणाहायै स्वा०
३४६. ॐ कर्मठच्यै स्वाहा
३४७. ॐ कमटाकृत्यै स्वाहा

३४८. ॐ कमठाराध्यहृदयायै स्वाहा
३४९. ॐ कमठायै स्वाहा
३५०. ॐ कण्ठसुन्दर्य्यै स्वाहा
३५१. ॐ कमठासनसंसेव्यायै स्वाहा
३५२. ॐ कमठ्यै स्वाहा
३५३. ॐ कर्मतत्परायै स्वाहा
३५४. ॐ करुणाकरकान्तायै स्वाहा
३५५. ॐ करुणाकरवन्दितायै स्वाहा
३५६. ॐ कठोरायै स्वाहा
३५७. ॐ करमालायै स्वाहा
३५८. ॐ कठोरकुचधारिण्यै स्वाहा
३५९. ॐ कपर्दिन्यै स्वाहा
३६०. ॐ कपटिन्यै स्वाहा
३६१. ॐ कठिन्यै स्वाहा
३६२. ॐ कङ्कभूषणायै स्वाहा
३६३. ॐ करभोर्वै स्वाहा
३६४. ॐ कठिनदायै स्वाहा
३६५. ॐ करभायै स्वाहा
३६६. ॐ करभालयायै स्वाहा
३६७. ॐ कलभाषामय्यै स्वाहा
३६८. ॐ कल्पायै स्वाहा
३६९. ॐ कल्पनायै स्वाहा
३७०. ॐ कल्पदायिन्यै स्वाहा
३७१. ॐ कमलस्थायै स्वाहा
३७२. ॐ कलामालायै स्वाहा
३७३. ॐ कमलास्यायै स्वाहा
३७४. ॐ क्वणत्प्रभायै स्वाहा
३७५. ॐ ककुद्मिन्यै स्वाहा
३७६. ॐ कष्टवत्यै स्वाहा
३७७. ॐ करणीयकथार्चितायै स्वाहा
३७८. ॐ कचार्चितायै स्वाहा
३७९. ॐ कचतन्वै स्वाहा
३८०. ॐ कचसुन्दरधारिण्यै स्वाहा
३८१. ॐ कठोरकुचसंलग्नायै स्वाहा
३८२. ॐ कटिसूत्रविराजितायै स्वाहा
३८३. ॐ कर्णभक्षप्रियायै स्वाहा
३८४. ॐ कन्दायै स्वाहा
३८५. ॐ कथायै स्वाहा
३८६. ॐ कन्दगत्यै स्वाहा
३८७. ॐ कल्यै स्वाहा
३८८. ॐ कलिघ्न्यै स्वाहा
३८९. ॐ कलिदूत्यै स्वाहा
३९०. ॐ कविनायकपूजितायै स्वाहा
३९१. ॐ कणकक्षानियन्त्र्यै स्वाहा
३९२. ॐ कश्चित् कविवरार्चितायै स्वा.
३९३. ॐ कर्त्र्यै स्वाहा
३९४. ॐ कर्तृकाभूषायै स्वाहा
३९५. ॐ करिण्यै स्वाहा
३९६. ॐ कर्णशत्रुपायै स्वाहा
३९७. ॐ करणेश्यै स्वाहा
३९८. ॐ कर्णपायै स्वाहा
३९९. ॐ कलवाचायै स्वाहा
४००. ॐ कलानिध्यै स्वाहा
४०१. ॐ कलनायै स्वाहा

४०२. ॐ कलनाधारायै स्वाहा
४०३. ॐ कारिकायै स्वाहा
४०४. ॐ करकायै स्वाहा
४०५. ॐ करायै स्वाहा
४०६. ॐ कलगेयायै स्वाहा
४०७. ॐ कर्कराश्यै स्वाहा
४०८. ॐ कर्कराशिप्रपूजितायै स्वाहा
४०९. ॐ कन्याराश्यै स्वाहा
४१०. ॐ कन्यकायै स्वाहा
४११. ॐ कन्यकाप्रियभाषिण्यै स्वाहा
४१२. ॐ कन्यकादानसन्तुष्टायै स्वाहा
४१३. ॐ कन्यकादानतोषिण्यै स्वाहा
४१४. ॐ कन्यादानकरानन्दायै स्वाहा
४१५. ॐ कन्यादानग्रहेष्टायै स्वाहा
४१६. ॐ कर्षणायै स्वाहा
४१७. ॐ कक्षदहनायै स्वाहा
४१८. ॐ कामितायै स्वाहा
४१९. ॐ कमलासनायै स्वाहा
४२०. ॐ करमालानन्दकर्त्र्यै स्वाहा
४२१. ॐ करमालाप्रतोषितायै स्वाहा
४२२. ॐ करमालाशयानन्दायै स्वाहा
४२३. ॐ करमालासमागमायै स्वाहा
४२४. ॐ करमालासिद्धिदात्र्यै स्वाहा
४२५. ॐ करमालायै स्वाहा
४२६. ॐ करप्रियायै स्वाहा
४२७. ॐ करप्रियाकररतायै स्वाहा
४२८. ॐ करदानपरायणायै स्वाहा
४२९. ॐ कलानन्दायै स्वाहा
४३०. ॐ कलिगत्यै स्वाहा
४३१. ॐ कलिपूज्यायै स्वाहा
४३२. ॐ कलिप्रस्वै स्वाहा
४३३. ॐ कलनादनिनादस्थायै स्वाहा
४३४. ॐ कलनादवरप्रदायै स्वाहा
४३५. ॐ कलनादसमाजस्थायै स्वाहा
४३६. ॐ कहोलायै स्वाहा
४३७. ॐ कहोलदायै स्वाहा
४३८. ॐ कहोलगेहमध्यस्थायै स्वाहा
४३९. ॐ कहोलवरदायिन्यै स्वाहा
४४०. ॐ कहोलकविताधारायै स्वाहा
४४१. ॐ कहोलऋषिमानितायै स्वाहा
४४२. ॐ कहोलमानसाराध्यायै स्वाहा
४४३. ॐ कहोलवाक्यकारिण्यै स्वाहा
४४४. ॐ कर्तृमात्रे स्वाहा
४४५. ॐ कर्तृमय्यै स्वाहा
४४६. ॐ कर्तृमात्रे स्वाहा
४४७. ॐ कर्त्तर्यै स्वाहा
४४८. ॐ कनीयायै स्वाहा
४४९. ॐ कनकाराध्यायै स्वाहा
४५०. ॐ कनीनकमय्यै स्वाहा
४५१. ॐ कनीयानन्दनिलयायै स्वाहा
४५२. ॐ कनकानन्दतोषितायै स्वाहा
४५३. ॐ कनीनककरायै स्वाहा
४५४. ॐ काष्ठायै स्वाहा
४५५. ॐ कथार्णवकर्य्यै स्वाहा

४५६. ॐ कर्य्यै स्वाहा
४५७. ॐ करिगम्यायै स्वाहा
४५८. ॐ करिगत्यै स्वाहा
४५९. ॐ करिध्वजपरायणायै स्वाहा
४६०. ॐ करिनाथप्रियायै स्वाहा
४६१. ॐ कण्ठायै स्वाहा
४६२. ॐ कथानकप्रतोषितायै स्वाहा
४६३. ॐ कमनीयायै स्वाहा
४६४. ॐ कमनायै स्वाहा
४६५. ॐ कमनीयविभूषणायै स्वाहा
४६६. ॐ कमनीयसमाजस्थायै स्वाहा
४६७. ॐ कमनीयव्रतप्रियायै स्वाहा
४६८. ॐ कमनीयगुणाराध्यायै स्वाहा
४६९. ॐ कपिलायै स्वाहा
४७०. ॐ कपिलेश्वर्य्यै स्वाहा
४७१. ॐ कपिलाराध्यहृदयायै स्वाहा
४७२. ॐ कपिलाप्रियवादिन्यै स्वाहा
४७३. ॐ कहचक्रमन्त्रवर्णायै स्वाहा
४७४. ॐ कहचक्रप्रसूनकार्य स्वाहा
४७५. ॐ कएईलह्रींस्वरूपायै स्वाहा
४७६. ॐ कएईलह्रींवरदायै स्वाहा
४७७. ॐ कएईलह्रींसिद्धिदात्र्यै स्वाहा
४७८. ॐ कएईलह्रींस्वरूपिण्यै स्वाहा
४७९. ॐ कएईलह्रींमन्त्रवर्णायै स्वाहा
४८०. ॐ कएईलह्रींप्रसूकलायै स्वाहा
४८१. ॐ कवर्गायै स्वाहा
४८२. ॐ कपाटस्थायै स्वाहा
४८३. ॐ कपाटोद्घाटनक्षमायै स्वाहा
४८४. ॐ कङ्काल्यै स्वाहा
४८५. ॐ कपाल्यै स्वाहा
४८६. ॐ कङ्कालप्रियभाषिण्यै स्वाहा
४८७. ॐ कङ्कालभैरवाराध्यायै स्वाहा
४८८. ॐ कङ्कालमानससंस्थितायै स्वा.
४८९. ॐ कङ्कालमोहनिरतायै स्वाहा
४९०. ॐ कङ्कालमोहदायिन्यै स्वाहा
४९१. ॐ कलृषघ्न्यै स्वाहा
४९२. ॐ कलुषहायै स्वाहा
४९३. ॐ कलुषार्त्तिविनाशिन्यै स्वाहा
४९४. ॐ कलिपुष्पायै स्वाहा
४९५. ॐ कलादायै स्वाहा
४९६. ॐ कशिप्वै स्वाहा
४९७. ॐ कश्यपार्चितायै स्वाहा
४९८. ॐ कश्यपायै स्वाहा
४९९. ॐ कश्यपाराध्यायै स्वाहा
५००. ॐ कलिपूर्णकलेवरायै स्वाहा
५०१. ॐ कलेवरकर्य्यै स्वाहा
५०२. ॐ कांच्यै स्वाहा
५०३. ॐ कवर्गाये स्वाहा
५०४. ॐ करालवायै स्वाहा
५०५. ॐ करालभैरवाराध्यायै स्वाहा
५०६. ॐ करालभैरवेश्वर्य्यै स्वाहा
५०७. ॐ करालायै स्वाहा
५०८. ॐ कलनाधारायै स्वाहा
५०९. ॐ कपर्दीशवरप्रदायै स्वाहा

५१०. ॐ कपर्दीशप्रेमलतायै स्वाहा
५११. ॐ कपर्दिमालिकायै स्वाहा
५१२. ॐ कपर्दिजपमालाढ्यायै स्वाहा
५१३. ॐ करवीरप्रिसूनदायै स्वाहा
५१४. ॐ करवीरप्रयप्राणायै स्वाहा
५१५. ॐ करवीरप्रपूजितायै स्वाहा
५१६. ॐ कर्णिकारसमाकारायै स्वाहा
५१७. ॐ कर्णिकारप्रपूजितायै स्वाहा
५१८. ॐ करीषाग्निस्थितायै स्वाहा
५१९. ॐ कर्षायै स्वाहा
५२०. ॐ कर्षमात्रसुवर्णदायै स्वाहा
५२१. ॐ कलाशायै स्वाहा
५२२. ॐ कलशाराध्यायै स्वाहा
५२३. ॐ कषायायै स्वाहा
५२४. ॐ करिगानदायै स्वाहा
५२५. ॐ कपिलायै स्वाहा
५२६. ॐ कलकण्ठ्यै स्वाहा
५२७. ॐ कलिकल्पलतायै स्वाहा
५२८. ॐ कल्पलतायै स्वाहा
५२९. ॐ कल्पमात्रे स्वाहा
५३०. ॐ कल्पकार्यै स्वाहा
५३१. ॐ कल्पभुवे स्वाहा
५३२. ॐ कर्पूरामोदरुचिरायै स्वाहा
५३३. ॐ कर्पूरामोदधारिण्यै स्वाहा
५३४. ॐ कर्पूरमालाभरणायै स्वाहा
५३५. ॐ कर्पूरवासपूर्तिदायै स्वाहा
५३६. ॐ कर्पूरमालाजयदायै स्वाहा
५३७. ॐ कर्पूरार्णवमध्यगायै स्वाहा
५३८. ॐ कर्पूरतर्पणरतायै स्वाहा .
५३९. ॐ कटकाम्बरधारिण्यै स्वाहा
५४०. ॐ कपटेश्वरसम्पूज्यायै स्वाहा
५४१. ॐ कपटेश्वररूपिण्यै स्वाहा
५४२. ॐ कट्वै स्वाहा
५४३. ॐ कपिध्वजाराध्यायै स्वाहा
५४४. ॐ कलापपुष्परूपिण्यै स्वाहा
५४५. ॐ कलापपुष्परुचिरायै स्वाहा
५४६. ॐ कलापपुष्पपूजितायै स्वाहा
५४७. ॐ क्रकचार्य स्वाहा
५४८. ॐ क्रकचाराध्यायै स्वाहा
५४९. ॐ कथंब्रूमायै स्वाहा
५५०. ॐ करलतायै स्वाहा
५५१. ॐ कथङ्कारविनिर्मुक्तायै स्वाहा
५५२. ॐ काल्यै स्वाहा
५५३. ॐ कालक्रियायै स्वाहा
५५४. ॐ क्रत्वै स्वाहा
५५५. ॐ कामिन्यै स्वाहा
५५६. ॐ कामिनीपूज्यायै स्वाहा
५५७. ॐ कामिनीपुष्पधारिण्यै स्वाहा
५५८. ॐ कामिनीपुष्पनिलयायै स्वाहा
५५९. ॐ कामिनीपुष्पपूर्णिमायै स्वाहा
५६०. ॐ कामिनीपुष्पपूजार्हायै स्वाहा
५६१. ॐ कामिनीपुष्पभूषणायै स्वाहा
५६२. ॐ कामिनीपुष्पतिलकायै स्वाहा
५६३. ॐ कामिनीपुष्पचुम्बनायै स्वाहा

५६४. ॐ कामिनीयोगसंतुष्टायै स्वाहा
५६५. ॐ कामिनीयोगभोगदायै स्वाहा
५६६. ॐ कामिनीकुण्डसम्मग्नायै स्वा.
५६७. ॐ कामिनीकुण्डमध्यगायै स्वा.
५६८. ॐ कामिनीमानसाराध्यायै स्वा.
५६९. ॐ कामिनीमानतोषितायै स्वाहा
५७०. ॐ कामिनीमानसंचारायै स्वाहा
५७१. ॐ कालिकायै स्वाहा
५७२. ॐ कालकालिकायै स्वाहा
५७३. ॐ कामायै स्वाहा
५७४. ॐ कामदेव्यै स्वाहा
५७५. ॐ कामेश्यै स्वाहा
५७६. ॐ कामसम्भवायै स्वाहा
५७७. ॐ कामभावायै स्वाहा
५७८. ॐ कामरतायै स्वाहा
५७९. ॐ कामार्त्तायै स्वाहा
५८०. ॐ काममञ्जर्य्यै स्वाहा
५८१. ॐ काममञ्जीररणितायै स्वाहा
५८२. ॐ कामदेवप्रियान्तरायै स्वाहा
५८३. ॐ कामकल्यै स्वाहा
५८४. ॐ कामकलायै स्वाहा
५८५. ॐ कालिकायै स्वाहा
५८६. ॐ ककलार्चितायै स्वाहा
५८७. ॐ कादिकायै स्वाहा
५८८. ॐ कमलायै स्वाहा
५८९. ॐ काल्यै स्वाहा
५९०. ॐ कालानलसमप्रभायै स्वाहा
५९१. ॐ कल्पान्तदहनायै स्वाहा
५९२. ॐ कान्तायै स्वाहा
५९३. ॐ कान्तारप्रियवासिन्यै स्वाहा
५९४. ॐ कालपूज्यायै स्वाहा
५९५. ॐ कालरतायै स्वाहा
५९६. ॐ कालमात्रे स्वाहा
५९७. ॐ कालिन्यै स्वाहा
५९८. ॐ कालवीरायै स्वाहा
५९९. ॐ कालघोरायै स्वाहा
६००. ॐ कालसिद्धायै स्वाहा
६०१. ॐ कालदायै स्वाहा
६०२. ॐ कालाञ्जनसमाकारायै स्वा०
६०३. ॐ कालञ्जरनिवासिन्यै स्वा०
६०४. ॐ कालऋद्ध्यै स्वाहा
६०५. ॐ कालवृद्ध्यै स्वाहा
६०६. ॐ कारागृहविमोचिन्यै स्वाहा
६०७. ॐ कादिविद्यायै स्वाहा
६०८. ॐ कादिमात्रे स्वाहा
६०९. ॐ कादिस्थायै स्वाहा
६१०. ॐ कादिसुन्दर्य्यै स्वाहा
६११. ॐ काश्यै स्वाहा
६१२. ॐ काञ्च्यै स्वाहा
६१३. ॐ काञ्चीशायै स्वाहा
६१४. ॐ काशीशवरदायिन्यै स्वाहा
६१५. ॐ क्रींबीजायै स्वाहा
६१६. ॐ क्रींबीजाहृदयायै स्वाहा
६१७. ॐ काम्यायै स्वाहा

६१८. ॐ काम्यगत्यै स्वाहा
६१९. ॐ काम्यसिद्धिदात्र्यै स्वाहा
६२०. ॐ कामभुवे स्वाहा
६२१. ॐ कामाख्यायै स्वाहा
६२२. ॐ कालरूपायै स्वाहा
६२३. ॐ कामचापविमोचिन्यै स्वाहा
६२४. ॐ कामदेवकलारामायै स्वाहा
६२५. ॐ कामदेवकलालयायै स्वाहा
६२६. ॐ कामरात्र्यै स्वाहा
६२७. ॐ कामदात्र्यै स्वाहा
६२८. ॐ कान्ताराचलवासिन्यै स्वाहा
६२९. ॐ कालरूपायै स्वाहा
६३०. ॐ कालगत्यै स्वाहा
६३१. ॐ कामयोगपरायणायै स्वाहा
६३२. ॐ कामसम्मर्दनरतायै स्वाहा
६३३. ॐ कामगेहविकाशिन्यै स्वाहा
६३४. ॐ कालभैरवभार्यायै स्वाहा
६३५. ॐ कालभैरवकामिन्यै स्वाहा
६३६. ॐ कालभैरवयोगस्थायै स्वाहा
६३७. ॐ कालभैरवभोगदायै स्वाहा
६३८. ॐ कामधेन्वै स्वाहा
६३९. ॐ कामदोग्ध्र्यै स्वाहा
६४०. ॐ काममात्रे स्वाहा
६४१. ॐ कान्तिदायै स्वाहा
६४२. ॐ कामुकायै स्वाहा
६४३. ॐ कामुकाराध्यै स्वाहा
६४४. ॐ कामुकानन्दवर्द्धिन्यै स्वाहा
६४५. ॐ कार्त्तवीर्यायै स्वाहा
६४६. ॐ कार्तिकेयायै स्वाहा
६४७. ॐ कार्त्तिकेयप्रपूजितायै स्वाहा
६४८. ॐ कार्यायै स्वाहा
६४९. ॐ कारणदायै स्वाहा
६५०. ॐ कार्यकारिण्यै स्वाहा
६५१. ॐ कारणान्तरायै स्वाहा
६५२. ॐ कान्तिगम्यायै स्वाहा
६५३. ॐ कान्तिमय्यै स्वाहा
६५४. ॐ कात्यायै स्वाहा
६५५. ॐ कात्यायन्यै स्वाहा
६५६. ॐ कायै स्वाहा
६५७. ॐ कामसारायै स्वाहा
६५८. ॐ काश्मीरायै स्वाहा
६५९. ॐ काश्मीराचारतत्परायै स्वाहा
६६०. ॐ कामरूपाचाररतायै स्वाहा
६६१. ॐ कामरूपप्रियंवदायै स्वाहा
६६२. ॐ कामरूपाचारसिद्ध्यै स्वाहा
६६३. ॐ कामरूपमनोमय्यै स्वाहा
६६४. ॐ कार्त्तिक्यै स्वाहा
६६५. ॐ कार्त्तिकाराध्यायै स्वाहा
६६६. ॐ काञ्चनारप्रसूनभुवे स्वाहा
६६७. ॐ काञ्चनारप्रसूनाभायै स्वाहा
६६८. ॐ काञ्चनारप्रपूजितायै स्वाहा
६६९. ॐ काञ्चरूपायै स्वाहा
६७०. ॐ काञ्चभूम्यै स्वाहा
६७१. ॐ कांस्यपात्रप्रभोजिन्यै स्वाहा

६७२. ॐ कांस्यध्वनिमय्यै स्वाहा
६७३. ॐ कामसुन्दर्य्यै स्वाहा
६७४. ॐ कामचुम्बनायै स्वाहा
६७५. ॐ काशपुष्पप्रतीकाशायै स्वा.
६७६. ॐ कामद्रुमसमागमायै स्वाहा
६७७. ॐ कामपुष्पायै स्वाहा
६७८. ॐ कामभूम्यै स्वाहा
६७९. ॐ कामपूज्यायै स्वाहा
६८०. ॐ कामदायै स्वाहा
६८१. ॐ कामदेहायै स्वाहा
६८२. ॐ कामगेहायै स्वाहा
६८३. ॐ कामबीजपरायणायै स्वाहा
६८४. ॐ कामध्वजसमारूढायै स्वाहा
६८५. ॐ कामध्वजसमास्थितायै स्वा.
६८६. ॐ काश्यप्यै स्वाहा
६८७. ॐ काश्यपाराध्यायै स्वाहा
६८८. ॐ काश्यपानन्ददायिन्यै स्वाहा
६८९. ॐकालिन्दीजलसंकाशायै स्वा.
६९०. ॐ कालिन्दीजलपूजितायै स्वा.
६९१. ॐ कादेवपूजानिरतायै स्वाहा
६९२. ॐ कादेवपरमार्थदायै स्वाहा
६९३. ॐ कार्मणायै स्वाहा
६९४. ॐ कार्मणाकारायै स्वाहा
६९५. ॐ कामकार्मणकारिण्यै स्वाहा
६९६. ॐ कार्मणत्रोटनकर्य्यै स्वाहा
६९७. ॐ काकिन्यै स्वाहा
६९८. ॐ कारणाह्वयायै स्वाहा
६९९. ॐ काव्यामृतायै स्वाहा
७००. ॐ कालिङ्गायै स्वाहा
७०१. ॐ कालिङ्गमर्दनोद्यतायै स्वाहा
७०२. ॐ कालागुरुविभूषाढ्यायै स्वा.
७०३. ॐ कालागुरुविभूतिदायै स्वाहा
७०४. ॐ कालागुरुसुगन्धायै स्वाहा
७०५. ॐ कालागुरुप्रतर्पणायै स्वाहा
७०६. ॐ कावेरीनीरसम्प्रीतायै स्वाहा
७०७. ॐ कावेरीतीरवासिन्यै स्वाहा
७०८. ॐ कालचक्रभ्रमाकारायै स्वाहा
७०९. ॐ कालचक्रनिवासिन्यै स्वाहा
७१०. ॐ काननायै स्वाहा
७११. ॐ काननाधारायै स्वाहा
७१२. ॐ कार्व्यै स्वाहा
७१३. ॐ कारुणिकामय्यै स्वाहा
७१४. ॐ काम्पिल्यवासिन्यै स्वाहा
७१५. ॐ काष्ठायै स्वाहा
७१६. ॐ कामपत्न्यै स्वाहा
७१७. ॐ कामभुवे स्वाहा
७१८. ॐ कादम्बरीपानरतायै स्वाहा
७१९. ॐ कादम्बर्य्यै स्वाहा
७२०. ॐ कलायै स्वाहा
७२१. ॐ कामवन्द्यायै स्वाहा
७२२. ॐ कामेश्यै स्वाहा
७२३. ॐ कामराजप्रपूजितायै स्वाहा
७२४. ॐ कामराजेश्वरीविद्यायै स्वाहा
७२५. ॐ कामकौतुकसुन्दर्य्यै स्वाहा

७२६. ॐ काम्बोजायै स्वाहा
७२७. ॐ काञ्चिनदायै स्वाहा
७२८. ॐ कांस्यकाञ्चनकारिण्यै स्वा.
७२९. ॐ काञ्चनाद्रिसमाकारायै स्वा.
७३०. ॐ काञ्चनाद्रिप्रदायै स्वाहा
७३१. ॐ कामकीर्त्यै स्वाहा
७३२. ॐ कामकेश्यै स्वाहा
७३३. ॐ कारिकायै स्वाहा
७३४. ॐ कान्ताराश्रयायै स्वाहा
७३५. ॐ कामभेद्यै स्वाहा
७३६. ॐ कामार्त्तिनाशिन्यै स्वाहा
७३७. ॐ कामभूमिकायै स्वाहा
७३८. ॐ कालनिर्णाशिन्यै स्वाहा
७३९. ॐ काव्यवनितायै स्वाहा
७४०. ॐ कामरूपिण्यै स्वाहा
७४१. ॐ कायस्थाकामसन्दीप्त्यै स्वा.
७४२. ॐ काव्यदायै स्वाहा
७४३. ॐ कालसुन्दर्य्यै स्वाहा
७४४. ॐ कामेश्यै स्वाहा
७४५. ॐ कारणवरायै स्वाहा
७४६. ॐ कामेशीपूजनोद्यतायै स्वाहा
७४७. ॐ काञ्चीनूपुरभूषाढ्यायै स्वाहा
७४८. ॐ कुङ्कुमाभरणान्वितायै स्वा०
७४९. ॐ कालचक्रायै स्वाहा
७५०. ॐ कालगत्यै स्वाहा
७५१. ॐ कालचक्रमनोभवायै स्वाहा
७५२. ॐ कुन्दमध्यायै स्वाहा
७५३. ॐ कुन्दपुष्पायै स्वाहा
७५४. ॐ कुन्दपुष्पप्रियायै स्वाहा
७५५. ॐ कुजायै स्वाहा
७५६. ॐ कुजमात्रे स्वाहा
७५७. ॐ कुजाराध्यायै स्वाहा
७५८. ॐ कुठारवरधारिण्यै स्वाहा
७५९. ॐ कुञ्जरस्थायै स्वाहा
७६०. ॐ कुशरतायै स्वाहा
७६१. ॐ कुशेशयविलोचनायै स्वाहा
७६२. ॐ कुनठ्यै स्वाहा
७६३. ॐ कुरर्य्यै स्वाहा
७६४. ॐ क्रुद्धायै स्वाहा
७६५. ॐ कुरङ्ग्यै स्वाहा
७६६. ॐ कुटजाश्रयायै स्वाहा
७६७. ॐ कुम्भीनसविभूषायै स्वाहा
७६८. ॐ कुम्भीनसवधोद्यतायै स्वाहा
७६९. ॐ कुम्भकर्णमनोल्लासायै स्वा.
७७०. ॐ कुलचूडामण्यै स्वाहा
७७१. ॐ कुलायै स्वाहा
७७२. ॐ कुलालगृहकन्यायै स्वाहा
७७३. ॐ कुलचूडामणिप्रियायै स्वाहा
७७४. ॐ कुलपूज्यायै स्वाहा
७७५. ॐ कुलाराध्यायै स्वाहा
७७६. ॐ कुलपूजापरायणायै स्वाहा
७७७. ॐ कुलभूषायै स्वाहा
७७८. ॐ कुक्ष्यै स्वाहा
७७९. ॐ कुररीगणसेवितायै स्वाहा

७८०. ॐ कुलपुष्पायै स्वाहा
७८१. ॐ कुलरतायै स्वाहा
७८२. ॐ कुलपुष्पपरायणायै स्वाहा
७८३. ॐ कुलवस्त्रायै स्वाहा
७८४. ॐ कुलाराध्यायै स्वाहा
७८५. ॐ कुलकुण्डसमप्रभायै स्वाहा
७८६. ॐ कुलकुण्डसमोल्लासायै स्वा.
७८७. ॐ कुण्डपुष्पपरायणायै स्वाहा
७८८. ॐ कुण्डपुष्पप्रसन्नास्थायै स्वाहा
७८९. ॐ कुण्डगोलोद्भवात्मिकायै स्वा.
७९०. ॐ कुण्डगोलोद्भवाधारायै स्वा.
७९१. ॐ कुण्डगोलमय्यै स्वाहा
७९२. ॐ कुह्वै स्वाहा
७९३. ॐ कुण्डगोलप्रियप्राणायै स्वा.
७९४. ॐ कुण्डगोलप्रपूजितायै स्वाहा
७९५. ॐ कुण्डगोलमनोल्लासायै स्वा.
७९६. ॐ कुण्डगोलबलप्रदायै स्वाहा
७९७. ॐ कुण्डदेवरतायै स्वाहा
७९८. ॐ क्रुद्धायै स्वाहा
७९९. ॐ कुलसिद्धिकरीपरायै स्वाहा
८००. ॐ कुलकुण्डसमाकारायै स्वा.
८०१. ॐ कुलकुण्डसमानभुवे स्वाहा
८०२. ॐ कुण्डसिद्ध्यै स्वाहा
८०३. ॐ कुण्डऋद्ध्यै स्वाहा
८०४. ॐ कुमारीपूजनोद्यतायै स्वाहा
८०५. ॐ कुमारीपूजकप्राणायै स्वाहा
८०६. ॐ कुमारीपूजकालयायै स्वाहा
८०७. ॐ कुमार्य्यै स्वाहा
८०८. ॐ कामसन्तुष्टायै स्वाहा
८०९. ॐ कुमारीपूजनोत्सुकायै स्वाहा
८१०. ॐ कुमारीव्रतसन्तुष्टायै स्वाहा
८११. ॐ कुमारीरूपधारिण्यै स्वाहा
८१२. ॐ कुमारीभोजनप्रीतायै स्वाहा
८१३. ॐ कुमार्यै स्वाहा
८१४. ॐ कुमारदायै स्वाहा
८१५. ॐ कुमारमात्रे स्वाहा
८१६. ॐ कुलदायै स्वाहा
८१७. ॐ कुलयोन्यै स्वाहा
८१८. ॐ कुलेश्वर्यै स्वाहा
८१९. ॐ कुललिङ्गायै स्वाहा
८२०. ॐ कुलानन्दायै स्वाहा
८२१. ॐ कुलरम्यायै स्वाहा
८२२. ॐ कुतर्कधृषे स्वाहा
८२३. ॐ कुन्त्यै स्वाहा
८२४. ॐ कुलकान्तायै स्वाहा
८२५. ॐ कुलमार्गपरायणायै स्वाहा
८२६. ॐ कुल्लायै स्वाहा
८२७. ॐ कुरुकुल्लायै स्वाहा
८२८. ॐ कुल्लाकायै स्वाहा
८२९. ॐ कुलकामदायै स्वाहा
८३०. ॐ कुलिशाङ्ग्यै स्वाहा
८३१. ॐ कुब्जिरिकायै स्वाहा
८३२. ॐ कुब्जिकानन्दवर्द्धिन्यै स्वा.
८३३. ॐ कुलीनायै स्वाहा

८३४. ॐ कुञ्जरगत्यै स्वाहा
८३५. ॐ कुञ्जरेश्वरगामिन्यै स्वाहा
८३६. ॐ कुलपाल्यै स्वाहा
८३७. ॐ कुलवत्यै स्वाहा
८३८. ॐ कुलदीपिकायै स्वाहा
८३९. ॐ कुलयोगेश्वर्य्यै स्वाहा
८४०. ॐ कुण्डायै स्वाहा
८४१. ॐ कुङ्कुमारुणविग्रहायै स्वा.
८४२. ॐ कुङ्कुमानन्दसन्तोषायै स्वा.
८४३. ॐ कुङ्कुमार्णववासिन्यै स्वाहा
८४४. ॐ कुसुमायै स्वाहा
८४५. ॐ कुसुमप्रीतायै स्वाहा
८४६. ॐ कुलभुवे स्वाहा
८४७. ॐ कुलसुन्दर्यै स्वाहा
८४८. ॐ कुमुद्वत्यै स्वाहा
८४९. ॐ कुमुदिन्यै स्वाहा
८५०. ॐ कुशलायै स्वाहा
८५१. ॐ कुलटालयायै स्वाहा
८५२. ॐ कुलटालयमध्यस्थायै स्वाहा
८५३. ॐ कुलटासङ्गतोषितायै स्वाहा
८५४. ॐ कुलटाभुवनोद्युक्तायै स्वाहा
८५५. ॐ कुशावर्त्तायै स्वाहा
८५६. ॐ कुलार्णवायै स्वाहा
८५७. ॐ कुलार्णवाचाररतायै स्वाहा
८५८. ॐ कुण्डल्यै स्वाहा
८५९. ॐ कुण्डलकृत्यै स्वाहा
८६०. ॐ कुमत्यै स्वाहा
८६१. ॐ कुलश्रेष्ठायै स्वाहा
८६२. ॐ कुलचक्रपरायणायै स्वाहा
८६३. ॐ कूटस्थायै स्वाहा
८६४. ॐ कुटदृष्ट्यै स्वाहा
८६५. ॐ कुन्तलायै स्वाहा
८६६. ॐ कुन्तलाकृत्यै स्वाहा
८६७. ॐ कुशलाकृतिरूपायै स्वाहा
८६८. ॐ कूर्चबीजधरायै स्वाहा
८६९. ॐ क्वै स्वाहा
८७०. ॐ कुंकुंकुंकुंशब्दरतायै स्वाहा
८७१. ॐ क्रुंक्रुंक्रुंक्रुंपरायणायै स्वाहा
८७२. ॐ कुंकुंकुंशब्दनिलयायै स्वाहा
८७३. ॐ कुक्कुरालयवासिन्यै स्वाहा
८७४. ॐ कुक्कुरासङ्गसंयुक्तायै स्वाहा
८७५. ॐ कुक्कुरानन्तविग्रहायै स्वाहा
८७६. ॐ कूर्चारम्भायै स्वाहा
८७७. ॐ कूर्चबीजायै स्वाहा
८७८. ॐ कूर्चजापपरायणायै स्वाहा
८७९. ॐ कुलिन्यै स्वाहा
८८०. ॐ कुलस्थानायै स्वाहा
८८१. ॐ कूर्चकण्ठपरागत्यै स्वाहा
८८२. ॐ कूर्चवीणाभालदेशायै स्वाहा
८८३. ॐ कूर्चमस्तकभूषितायै स्वाहा
८८४. ॐ कुलवृक्षगतायै स्वाहा
८८५. ॐ कूर्मायै स्वाहा
८८६. ॐ कूर्माचलनिवासिन्यै स्वाहा
८८७. ॐ कुलबिन्द्वै स्वाहा
८८८. ॐ कुलशिवायै स्वाहा
८८९. ॐ कुलशक्तिपरायणायै स्वाहा
८९०. ॐ कुलबिन्दुमणिप्रख्यायै स्वाहा
८९१. ॐ कुङ्कुमद्रुमवासिन्यै स्वाहा

८९२. ॐ कुचमर्दनसन्तुष्टायै स्वाहा
८९३. ॐ कुचजापपरायणायै स्वाहा
८९४. ॐ कुचस्पर्शनसन्तुष्टायै स्वाहा
८९५. ॐ कुचालिङ्गनहर्षदायै स्वाहा
८९६. ॐ कुगतिघ्न्यै स्वाहा
८९७. ॐ कुबेरार्चायै स्वाहा
८९८. ॐ कुचभुवे स्वाहा
८९९. ॐ कुलनायिकायै स्वाहा
९००. ॐ कुगायनायै स्वाहा
९०१. ॐ कुचधरायै स्वाहा
९०२. ॐ कुमात्रे स्वाहा
९०३. ॐ कुन्ददन्तिन्यै स्वाहा
९०४. ॐ कुगेयायै स्वाहा
९०५. ॐ कुहराभाषायै स्वाहा
९०६. ॐ कुगेयाकुघ्नदारिकाये स्वाहा
९०७. ॐ कीर्त्यै स्वाहा
९०८. ॐ किरातिन्यै स्वाहा
९०९. ॐ क्लिन्नायै स्वाहा
९१०. ॐ किन्नरायै स्वाहा
९११. ॐ किन्नर्य्यै स्वाहा
९१२. ॐ क्रियायै स्वाहा
९१३. ॐ क्रींङ्कारायै स्वाहा
९१४. ॐ क्रींजपासक्तायै स्वाहा
९१५. ॐ क्रींहूंस्त्रींमन्त्ररूपिण्यै स्वाहा
९१६. ॐ किर्मीरितदृशापाङ्ग्यै स्वाहा
९१७. ॐ किशोर्यै स्वाहा
९१८. ॐ किरीटिन्यै स्वाहा
९१९. ॐ कीटभाषायै स्वाहा
९२०. ॐ कीटयोन्यै स्वाहा
९२१. ॐ कीटमात्रे स्वाहा
९२२. ॐ कीटदायै स्वाहा
९२३. ॐ किंशुकायै स्वाहा
९२४. ॐ कीरभाषायै स्वाहा
९२५. ॐ क्रियासारायै स्वाहा
९२६. ॐ क्रियावत्यै स्वाहा
९२७. ॐ कींकींशब्दपरायै स्वाहा
९२८. ॐ क्रींक्लींक्लूंक्लैंक्लौंमन्त्र रूपिण्यै स्वाहा
९२९. ॐ कांकींकूंकैंस्वरूपायै स्वाहा
९३०. ॐ क:फट्मन्त्रस्वरूपिण्यै स्वाहा
९३१. ॐ केतकीभूषणानन्दायै स्वाहा
९३२. ॐ केतकीभरणान्वितायै स्वाहा
९३३. ॐ कैकदायै स्वाहा
९३४. ॐ केशिन्यै स्वाहा
९३५. ॐ केशीसूदनतत्परायै स्वाहा
९३६. ॐ केशरूपायै स्वाहा
९३७. ॐ केशमुक्तायै स्वाहा
९३८. ॐ कैकेय्यै स्वाहा
९३९. ॐ कौशिक्यै स्वाहा
९४०. ॐ कैरवायै स्वाहा
९४१. ॐ कैरवाह्लादायै स्वाहा
९४२. ॐ केशरायै स्वाहा
९४३. ॐ केतुरूपिण्यै स्वाहा
९४४. ॐ केशवाराध्यहृदयायै स्वाहा
९४५. ॐ केशवासक्तमानसायै स्वाहा
९४६. ॐ क्लैव्याविनाशिन्यै स्वाहा
९४७. ॐ क्लैं च क्लैं बीजजप-तोषितायै स्वाहा

६४८. ॐ कौशल्यायै स्वाहा
६४९. ॐ कोशलाक्ष्यै स्वाहा
६५०. ॐ कोशायै स्वाहा
६५१. ॐ कोमलायै स्वाहा
६५२. ॐ कोलापुरनिवासायै स्वाहा
६५३. ॐ कोलासुरविनाशिन्यै स्वाहा
६५४. ॐ कोटिरूपायै स्वाहा
६५५. ॐ कोटिरतायै स्वाहा
६५६. ॐ क्रोधिन्यै स्वाहा
६५७. ॐ क्रोधरूपिण्यै स्वाहा
६५८. ॐ केकायै स्वाहा
६५९. ॐ कोकिलायै स्वाहा
६६०. ॐ कोटचै स्वाहा
६६१. ॐ कोटिमन्त्रपरायणायै स्वाहा
६६२. ॐ कोटचनन्तमन्त्रयुतायै स्वाहा
६६३. ॐ कैरूपायै स्वाहा
६६४. ॐ केरलाश्रयायै स्वाहा
६६५. ॐ केरलाचारनिपुणायै स्वाहा
६६६. ॐ केरलेन्द्रगृहेस्थितायै स्वाहा
६६७. ॐ केदाराश्रमसंस्थायै स्वाहा
६६८. ॐ केदारेश्वरपूजितायै स्वाहा
६६९. ॐ क्रोधरूपायै स्वाहा
६७०. ॐ क्रोधपदायै स्वाहा
६७१. ॐ क्रोधमात्रै स्वाहा
६७२. ॐ कौशिक्यै स्वाहा
६७३. ॐ कोदण्डधारिण्यै स्वाहा
६७४. ॐ क्रौञ्चायै स्वाहा
६७५. ॐ कौशल्यायै स्वाहा
६७६. ॐ कौलमार्गगायै स्वाहा
६७७. ॐ कौलिन्यै स्वाहा
६७८. ॐ कौलिकाराध्यायै स्वाहा
६७९. ॐ कौलिकागारवासिन्यै स्वाहा
६८०. ॐ कौतुक्यै स्वाहा
६८१. ॐ कौमुद्यै स्वाहा
६८२. ॐ कौलायै स्वाहा
६८३. ॐ कौमार्यै स्वाहा
६८४. ॐ कौरवार्चितायै स्वाहा
६८५. ॐ कौण्डिन्यायै स्वाहा
६८६. ॐ कौशिक्यै स्वाहा
६८७. ॐ क्रोधज्वालाभासुररूपिण्यै स्वा.
६८८. ॐ कोटिकालानलज्वालायै स्वा.
६८९. ॐ कोटिमार्तण्डविग्रहायै स्वाहा
६९०. ॐ कृत्तिकायै स्वाहा
६९१. ॐ कृष्णवर्णायै स्वाहा
६९२. ॐ कृष्णायै स्वाहा
६९३. ॐ कृत्यायै स्वाहा
६९४. ॐ क्रियातुरायै स्वाहा
६९५. ॐ कृशाङ्ग्यै स्वाहा
६९६. ॐ कृतकृत्यायै स्वाहा
६९७. ॐ क्रः फट्स्वाहास्वरूपिण्यै स्वा०
६९८. ॐ क्रौं क्रौं हूं फट्मन्त्रवर्णायै स्वा०
६९९. ॐ क्रीं ह्रीं हूंफट्नमःस्वधायै स्वा०
१०००. ॐ क्रीं क्रीं-ह्रीं ह्रीं च हूं हूं फट्स्वाहामन्त्ररूपिण्यै स्वाहा

॥ काली सहस्त्रनामावल्याः स्वाहाकारविधिः समाप्तः॥

काली-पटलम्

ॐ अथ कालीमनून्वक्ष्ये सद्योवाक् सिद्धिदायकान्।
आराधितैर्यैः सर्वेष्टं प्राप्नुवंति जनाभुवि॥ १॥
ब्रह्मरेफौ वामनेत्र-चंद्रारूढौ मनुर्मताः।
एकाक्षरो महाकाल्याः सर्वसिद्धिप्रदायकः॥ २॥
बीजं दीर्घयुतश्चक्री पिनाकी नेत्रसंयुतः।
क्रोधीशो भगवान् स्वाहा खंडार्णो मंत्र ईरितः॥ ३॥
काली कूर्चं तथा लज्जा त्रिवर्णो मनुरीरितः।
हुँफट् ततश्च-पंचार्णःस्वाहांतः सप्तवर्णकः॥ ४॥
कूर्चद्वयं त्रयं काल्या मायायुग्मं च दक्षिणो।
कालिके पूर्वबीजानि स्वाहामंत्रो वशीकृतौ॥ ५॥
मंत्रराजे पुनः प्रोक्तं बीजसप्तक-मुत्सृजेत्।
तिथिवर्णो महामंत्र उपास्तिः पूर्ववन्मता॥ ६॥
न चाऽत्र सिद्धि-साध्यादि-शोधनं मनसाऽपिवा।
न यत्नातिशयः कश्चित्पुरश्चर्यानिमित्त कः॥ ७॥
विद्याराज्ञीस्मृतेरेव सिध्यष्ट-कमवाप्नुयात्।
भैरवोऽस्य ऋषिश्छन्दो उष्णिक्-काली तु देवता॥ ८॥
बीजं माया दीर्घवर्मशक्तिरुक्ता मनीषिभिः।
षड्दीर्घाढ्याद्यबीजेन विद्याया अंगमीरितम्॥ ९॥
मातृकान् पंचधा भक्त्वा वर्णान् दशदशक्रमात्।
हृदये भुजयोः पादद्वये मन्त्री प्रविन्यसेत्॥
व्यापकं मनुना कृत्वा ध्यायेच्चेतसि कालिकां॥ १०॥

सद्यश्छिन्नशिरः कृपाणमभयं हस्तैर्वरं बिभ्रतीं,
घोरास्यां शिरसा स्त्रजा सुरुचिरामुन्मत्तकेशावलीम्।
सृक्का-ऽसृक्-प्रवहां श्मशान-निलयां श्रुत्योः शवालिङ्कृतीं,
श्यामाङ्गी कृतमेखलां शवकरैर्देवीं भजेत्कालिकाम्॥ ११॥

एवं ध्यात्वा जपेल्लक्षं जुहुयात्तद्दशांशतः।
प्रसूनैः करवीरोत्थैः पूजायन्त्रमथोच्यते॥ १२॥
आदौ षट्कोणमारच्य त्रिकोणत्रितयं ततः।
पद्ममष्टदलं बाह्ये भूपुरं तत्र पूजयेत्॥ १३॥
जयाख्या विजया पश्चादजिता चापराजिता।
नित्या विलासिनी चाऽपि दोग्धा घोरा च मंगला॥ १४॥
पीठशक्तय एताः स्युः कालिकायोगपीठतः।
आत्मनो हृदयांतोऽयं मयादिपीठमंत्रकः॥ १५॥
अस्मिन् पीठे यजेद्देवीं वशरूपशि वास्थितां।
महाकालरताशक्तां शिवाभिर्दिक्षु वेष्टिताम्॥ १६॥
अंगानि पूर्वमाराध्य षट्पत्रेषु समर्चयेत्।
कालीं कपालिनीं कुल्वां कुरुकुल्वां विरोधिनीम्॥ १७॥
विप्रचित्तां तु संपूज्य नवकोणेषु पूजयेत्।
उग्रामुग्रप्रभ दीप्तां नीलां घनां बलाकिकाम्॥ १८॥
मात्रां मुद्रां तथाऽमित्रां पूज्याः पत्रेषु मातरः।
पद्मस्याऽष्टसु नेत्रेषु ब्राह्मी नारायणी तथा॥ १९॥
माहेश्वरी च चामुंडा कौमारी चाऽपराजिता।
वाराही नारसिंही च पुनरेताश्च भूपुरे॥ २०॥

भैरवीं महदाद्यन्तां सिंहाद्यां धूम्रपूर्विकाम्।
भीमोन्मत्तादिकां चाऽपि वशीकरणभैरवीम्॥ २१॥
मोहनाद्यां समाराध्य शक्रादीन्यायुधान्यपि।
एवमाराधिता काली सिद्धा भवति मंत्रिणाम्॥ २२॥
ततः प्रयोगान् कुर्वीत महाभैरवभाषितान्।
आत्मनोऽर्थं परस्यार्थं क्षिप्रसिद्धिप्रदायकान्॥ २३॥
स्त्रीणां प्रहारं निन्दां च कौटिल्यं चाऽप्रियं वच।
आत्मनो हितमन्विच्छन् कालीभक्तो विवर्जयेत्॥ २४॥
सुदृशो मदनावासं तस्या यः प्रजपेन्मनुम्।
अयुतं सोऽचिरादेव वाक्पतेः समतामियात् ॥ २५॥
दिगंबरो मुक्तकेशः श्मशानस्थो धिया मिति।
जपेदयुमेतस्य भवेयुः सर्वकामनाः॥ २६॥
शवहृदयमारुह्य निर्वासाः प्रेतभूगतः।
अर्कपुष्पसहस्त्रेणाभ्यक्तेन स्वीयरेतसा॥ २७॥
देवीं यः पूजयेद् भक्त्या जपन्नेकैकशो मनुम्।
सोऽचिरेणैव कालेन धरणी-प्रभुतां व्रजेत्॥ २८॥
रजःकीर्णं भगं नार्या ध्यायन् योऽयुतमाजपेत्।
स कवित्वेन रम्येण जनान् मोहयति ध्रुवम्॥ २९॥
त्रिपञ्चारे महापीठे शवस्य हृदि संस्थिताम्।
महाकालेन देवेन नारयुद्धं प्रकुर्वतीम् ॥ ३०॥
तां ध्यायन् स्मेरवदनां विद्धत्सुरतं स्वयम्।
जपेत् सहस्त्रमपि यः स शङ्करसमो भवेत्॥ ३१॥

अस्थि-लोम-त्वचायुक्तं मांसं मार्जार-मेषयोः।
उष्ट्रस्य महिषस्यापि बलिं यस्तु समर्पयेत्॥ ३२॥
भूताष्टभ्यो मध्यरात्रे वश्याः स्युः सर्वजन्तवः।
विद्या-लक्ष्मी-यशः-पुत्रैः सुचिरं सुखमेधते॥ ३३॥
यो हविष्याशनरतो दिवा देवीं स्मरन् जपेत्।
नक्तं निधूवनासक्तो लक्षं स स्याद् धरापतिः॥ ३४॥
रक्तां भोजैर्भवेन् मैत्री धनैर्जयति वित्तपम्।
बिल्वपत्रैर्भवेद्राज्यं रक्तपुष्पैर्वशीकृतिः॥ ३५॥
असृजा महिषादीनां कालिकां यस्तु तर्पयेत्।
तस्य स्युरचिरादेव करस्थाः सर्वसिद्धयः॥ ३६॥
यो लक्षं प्रजपेन् मन्त्रं शवमारुह्य मन्त्रवित्।
तस्य सिद्धो मनुः सद्यः सर्वेप्सितफलप्रदः ॥ ३७॥
तेनाऽश्वमेधप्रमुखैर्यागैरिष्ट्वा सुजन्मना।
दत्तं दानं तपस्तप्तं पूजेत् यस्तु कालिकाम्॥ ३८॥
ब्रह्मा विष्णुः शिवो गौरी लक्ष्मीर्गणपती-रविः।
पूजिताः सकला देवा यः कालीं पूजयेत् सदा॥ ३९॥

॥श्रीदक्षिणकालिकापटलं संपूर्णम्॥

इस दक्षिणकाली पटल द्वारा दक्षिणकालिका की आराधना करके अपने समस्त मनोरथों को पूर्ण किया जा सकता है। क्योंकि इसके श्लोक में सात बीज वाला दक्षिण कालिका का मन्त्र राज संज्ञक दिया गया है। जो कर्ता के लिए अतिश्रेष्ठ है। इस दक्षिण कालिका मन्त्र के द्वारा महाकाली का ध्यान व काली के मन्त्र का एक लाख जप और उसका दशांश हवन भी किया जा सकता है।

अपने कल्याण की कामना करने वाले प्राणियों को इस स्त्रोत का पाठ बिना किसी संदेह के प्रतिदिन ही करना चाहिए। क्योंकि इसके सत्ताइसवें श्लोक से स्पष्ट होता है कि मरे हुए व्यक्ति के शव के हृदय में विराजमान होकर अर्थात् बैठकर श्मशानवासिनी नग्न अवस्था में अपने वीर्य से मन्दार के हजार पुष्पों को सिंचन करने वाली है। इसके इकतीसवें श्लोक से पूर्णत: सिद्ध होता है कि जो भी प्राणी काली मन्त्र का एक हजार जप पवित्रता एवं शुद्धता से करता है वह भगवान् शंकर के सदृश हो जाता है। इसमें किसी भी प्रकार का संशय नहीं है।

इसके अतिरिक्त दक्षिण कालिका का उपासक यदि लाल कमल से देवी की उपासना करता है तो वह शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता है। उसके शत्रु भी उसके मित्र के तुल्य हो जाते हैं। अन्त में यही कहा जा सकता है कि, जो भी प्राणी सदैव काली का पूजन करता है। उसे ब्रह्मा, विष्णु, शिव, पार्वती, लक्ष्मी, गणेश तथा सूर्य आदि सभी देवताओं के पूजन का फल प्राप्त होता है।

कालिकासहस्त्रनामस्तोत्रस्यपाठक्रम:

कर्ता नित्यक्रियाओं से निवृत होकर आसन शुद्धि के पश्चात् लालचन्दन तथा जल से अपने सामने भूमि पर त्रिकोण लिखें, इसके पश्चात्–**ॐ आधारशक्तये नम:** इस नाम मंत्र से गन्ध और अक्षत् से पूजा कर आसन ग्रहण करे।

विनियोग:–**ॐ पृथ्वित्वयेति मंत्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषि: सुतलं छन्द: कूर्मो देवता आसनोपवेशने विनियोग:।**

विनियोग के पश्चात् इस श्लोक का उच्चारण करें–

ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुनां धृता।
त्वञ्च धारण माँ नित्यं पवित्रं कुरु चासनम्॥

इस श्लोक का उच्चारण करने के बाद ही निम्न वाक्य से आसन बिछावें–

ॐ आधारशक्तिकम्बलासनाय नमः

उपरोक्त वाक्य से अपनी आत्मा एवं समस्त पूजन उपकरणों की शुद्धि करें इसके पश्चात् क्रम से ऋष्यादिन्यास करके षडङ्गन्यास करें।

विनियोग :–

अस्य श्री दक्षिणकालिकामंत्रस्य महाकालऋषिरनुष्टुप्छन्दा-दक्षिणकालिका देवता ह्रीं बीज हूँ शक्तिः क्रौं कीलकं चतुवर्गफल-प्राप्तये जपे विनियोगः।

न्यास :–

ॐ महाकालभैरवऋषयै नमः–शिरसि

ॐ उष्णिक्छन्द नमः–मुखे

ॐ दक्षिणा कालिकायै देवतायै नमः–हृदि

ॐ ह्रीं बीजाय नमः–गुह्ये

ॐ हूँ शक्तये नमः–पादयो

ॐ क्रीं कीलकाय नमः–सर्वाङ्गे

करन्यास :–

ॐ क्रीं तर्ज्जनीभ्यां स्वाहा इत्यङ्गुष्ठाभ्यां तर्ज्जनयोः।

ॐ क्रां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः इति तर्ज्जनीभ्याङ्गुष्ठयो।

ॐ क्रूं मध्यमाभ्यां वषट् इत्यङ्गुष्ठाभ्यां मध्यमयाः।

ॐ क्रैं अनामिकाभ्या हूँ इत्यङ् गुष्ठाभ्यामनामिकयोः।

ॐ क्रों कनिष्ठाभ्यां वौषट् इत्यङ् गुष्ठाभ्यां कनिष्ठयोः।

ॐ कः करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् इति परस्परंकरतलकरपृष्ठयोः।

षडङ्गन्यासः-

ॐ क्रां हृदयाय नमः तर्ज्जनीमध्यमानामा-भिर्हृदि।

ॐ क्रीं शिरसे स्वाहा इति तर्ज्जनी मध्यमाभ्यां शिरसि।

ॐ क्रूं शिखायै वषट् इति मुष्टिबद्धाङ्गुष्ठेन शिखायाम्।

ॐ क्रूं शिखायै वषट् इति मुष्टिबद्धाङ्गुष्ठेन शिखायाम्।

ॐ क्रैं कवचाय हूँ सर्वाङ्गुलीभिरंशौ।

ॐ क्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् तर्ज्जनीमध्यमानाभामि नेत्रत्रये।

ॐ क्रः अस्त्राय फट् इति तर्ज्जनीमध्यमाभ्यामूर्द्धाद्वं तालत्रयं दत्वा छोटिकाभिर्दिशोद बध्नीयात्। इति षडङ्गन्यासं कृत्वा ध्यायेद्यथा।

कैलासशिखरे रम्ये नानादेवगणावृते।
नानावृक्षलताकीर्णे नानापुष्पैर-लङ्कृते॥ १॥
चतुर्मण्डलसंयुक्ते शृङ्गारमण्डपे स्थिते।
समाधौ संस्थितं शान्तं क्रीडन्तं योगिनीप्रियम्॥ २॥

देव्युवाच-

तत्र मौनधरं दृष्ट्वा देवी पृच्छति शङ्करम्।
किं त्वया जप्यते देव! किं त्वया स्मर्यते सदा॥ ३॥
सृष्टिः कुत्र विलीनाऽस्ति पुनः कुत्र प्रजायते।
ब्रह्माण्डकारणं यत् तत् किमाद्य कारणं महत्॥ ४॥
मनोरथमयी सिद्धिस्तथा वाञ्छामयी शिव!।
तृतीया कल्पनासिद्धिः कोटिसिद्धीश्वरत्वकम्॥ ५॥

शक्तिपाताष्टदशकं चराऽचरपुरीगतिः।
महेन्द्रजालमिन्द्रादिजालानां रचनां तथा॥ ६॥
अणिमाद्यष्टकं देव! परकाय-प्रवेशनम्।
नवीनसृष्टिकरणं समुद्रशोषणं तथा॥ ७॥
अमायां चन्द्रसंदर्शो दिवा चन्द्रप्रकाशनम्।
चन्द्राष्टकं चाऽष्टदिक्षु तथा सूर्याष्टकं शिव!॥ ८॥
जले जलमयत्वं च वह्नौ वह्निमयत्वकम्।
ब्रह्मविष्ण्वादि-निर्माणमिन्द्राणां कारणं करे॥ ६॥
पातालगुटिका-यक्ष-वेताल-पञ्चकं तथा।
रसायनं तथा गुप्तिस्तथैव चाऽखिलाञ्जनम्॥ १०॥
महामधुमती सिद्धिस्तथा पद्मावती शिव!।
तथा भोगवती सिद्धिर्यावत्यः सन्ति सिद्धयः॥ ११॥
केन मन्त्रेण तपसा कलौ पापसमाकुले।
आयुष्यं पुण्यरहिते कथं भवति तद् वद?॥ १२॥

शिव उवाच–

विना मन्त्रं विना स्तोत्रं विनैव तपसा प्रिये।
विना बलिं विना न्यासं भूत-शुद्धिं विना प्रिये!॥ १३॥
विना ध्यानं विना यन्त्रं विना पूजादिना प्रिये।
विना क्लेशादिभिर्देवि! देहदुःखादिभिर्विना॥ १४॥
सिद्धिराशु भवेद्येन तदेवं कथ्यते मया।
शून्ये ब्रह्माण्डगोले तु पञ्चाशच्छून्यमध्यके॥ १५॥

पञ्चशून्य स्थिता तारा सर्वान्ते कालिका स्मृता।
अनन्तकोटि-ब्रह्माण्ड-राजदन्ताग्रके शिवे!॥ १६॥
स्थाप्यं शून्यलयं कृत्वा कृष्णवर्णं विधाय च।
महानिर्गुणरूपा च वाचातीता परा कला॥ १७॥
क्रीडायां संस्थिता देवी शून्यरूपा प्रकल्पयेत्।
सृष्टेरारम्भकार्ये तु दृष्टा छाया तया यदा॥ १८॥
इच्छाशक्तिस्तु सा जाता तया कालो विनिर्मित:।
प्रतिबिम्ब तत्र दृष्टं जाता ज्ञानाभिधातु सा॥ १६॥
इदमेतत् किं विशिष्टं जातं विज्ञानकं मुदा।
तदा क्रियाभिधा जाता तदीक्षातो महेश्वरी॥ २०॥
ब्रह्माण्डगोले देवेशि! राजदन्तस्थितं च यत्।
सा क्रिया स्थापयामास स्व-स्व स्थान क्रमेण च॥ २१॥
तत्रैव स्वेच्छया देवि! सामरस्य परायणा।
तदिच्छा कथ्यते देवि! यथावदवधारय॥ २२॥
युगादिसमये देवि! शिवं परगुणोत्तमम्।
तदिच्छा निर्गुणं शान्तं सच्चिदानन्दविग्रहम्॥ २३॥
शाश्वतं सुन्दरं शुक्लं सर्व-देवयुतं वरम्।
आदिनाथं गुणातीतं काल्या संयुतमीश्वरम्॥ २४॥
विपरीतरतं देवं सामरस्यपरायणम्।
पूजार्थमागतं देवगन्धर्वाऽप्सरसां गणम्॥ २५॥
यक्षिणीं-किन्नरी-मन्यामुर्वश्याद्यां तिलोत्तमाम्।
वीक्ष्य तन्मायया प्राह सुन्दरी प्राणवल्लभा॥ २६॥

त्रैलोक्यसुन्दरी प्राणस्वामिनी प्राणरञ्जिनी।
किमागतं भवत्याद्य मम भाग्यार्णवो महान्॥ २७॥

अप्सरस ऊचुः-

उक्त्वा मौनधर शम्भुं पूजयन्त्यप्सरोगणाः।
संसारात्तारितं देव! त्वया विश्व जनप्रिय॥ २८॥
सृष्टेरारम्भकार्यार्थमुद्युक्तोऽसि महाप्रभो!।
वेश्याकृत्यमिदं देव! मङ्गलार्थ प्रगायनम्॥ २९॥
प्रयाणोत् स वकाले तु समारम्भे प्रगायनम्।
गुणाद्यारम्भकालो हि वर्तते शिवशङ्कर!॥ ३०॥
इन्द्राणीकोटयः सन्ति तस्याः प्रसवबिन्दुतः।
ब्रह्माणी वैष्णवी चैव माहेशीकोटि-कोटयः॥ ३१॥
तव सामरसानन्द-दर्शनार्थं समुद्भवाः।
सञ्जाताश्चाऽग्रतो देव! चाऽस्माकं सौख्यसागर!॥ ३२॥
रतिं हित्वा कामिनीनां नाऽन्यत् सौख्यं महेश्वर!।
सा रतिर्दृश्यतेऽस्माभिर्महत् सौख्यार्थकारिका॥ ३३॥
एवमेतत्तु चाऽस्माभिः कर्तव्यं भर्तृणा सह।
एवं श्रुत्वा महादेवी ध्यानावस्थितमानसः॥ ३४॥
ध्यानं हित्वा मायया तु प्रोवाच कालिकां प्रति।
कालि-कालि रुण्डमाले प्रिये भैरववादिनि!॥ ३५॥
शिवारूपधरे क्रूरे घोरदंष्ट्रे भयानके!।
त्रैलोक्य-सुन्दरकरी-सुन्दर्यः सन्ति मेऽग्रतः॥ ३६॥

सुन्दरीवीक्षणं कर्म कुरु कालि प्रिये शिवे!।
ध्यानं मुञ्च महादेवि! ता गच्छन्ति गृहं प्रति॥ ३७॥
तं रूपं महाकालि! महाकाल-प्रियङ्करम्।
एताषां सुन्दरं रूपं त्रैलोक्य-प्रियकारकम्॥ ३८॥
एवं मायाप्रभाविष्टो महाकाली वदन्निति।
इति कालवचः श्रुत्वा कालं प्राह च कालिका॥ ३९॥
माययाऽऽच्छाद्य चात्मानं निजस्त्रीरूपधारिणी।
इतः प्रभृति स्त्रीमात्रं भविष्यति युगे-युगे॥ ४०॥
वल्ल्याद्यौषधयो देवि! दिवा वल्लीस्वरूपताम्।
रात्रौ स्त्रीरूपमासाद्य रतिकेलिः परस्परम्॥ ४१॥
अज्ञानं चैव सर्वेषां भविष्यति युगे-युगे।
एवं शापं दत्त्वा तु पुनः प्रोवाच कालिका॥ ४२॥
विपरीत रतिं कृत्वा चिन्तयन्ति भजन्ति ये।
तेषां वरं प्रदास्यामि नित्यं तत्र वसाम्यहम्॥ ४३॥
इत्युक्त्वा कालिका विद्या तत्रैवान्तरधीयत्।
त्रिंशत्-त्रिखर्व-षड्वृन्द-नवत्यर्बुद-कोटयः॥ ४४॥
दर्शनार्थं तपस्तेपे सा वै कुत्र गता प्रिया।
मम प्राणप्रिया देवी हा-हा प्राणप्रिये शिवे!॥ ४५॥
किं करोमि क्व गच्छामि इत्येवं भ्रमसंकुलः?।
तस्याः काल्या दया जाता मम चिन्ता परः शिवः॥ ४६॥
यन्त्रप्रस्तारबुद्धिस्तु काल्या दत्तातिसत्त्वरम्।
यन्त्रयागं तदारभ्य पूर्व बिन्दुत्वगोचरम्॥ ४७॥

श्रीचक्रं यन्त्रप्रस्तार-रचनाभ्यासतत्परः।
इतस्ततो भ्राम्यमाणस्त्रैलोक्यं चक्रमध्यकम्॥ ४८॥
चक्रपारं दर्शनार्थं कोटच्यर्बुद-युगं गतम्।
भक्तप्राणप्रिया देवी महाश्रीचक्रनायिका॥ ४९॥
तत्र बिन्दौ परं रूपं सुन्दरं सुमनोहरम्।
रूपं जातं महेशानि जाग्रत्-त्रिपुरसुन्दरि!॥ ५०॥
रूप दृष्ट्वा महादेवो राजराजेश्वरोऽभवत्।
तस्याः कटाक्षमात्रेण तस्या रूपधरः शिवः॥ ५१॥
विना शृङ्गार संयुक्ता तदा जाता महेश्वरी।
विना काल्यंशतो देवि! जगत्स्थावरजङ्गमम्॥ ५२॥
न शृङ्गारो न शक्तित्वं क्वाऽपि नास्ति महेश्वरी।
सुन्दर्या प्रार्थिता काली तुष्टा प्रोवाच कालिका॥ ५३॥
सर्वाषां नेत्रकेशे च ममांशोऽत्र भविष्यति।
पूर्वावस्थासु देवेशि! ममांशस्तिष्ठति प्रिये!॥ ५४॥
साऽवस्था तरुणाख्या तु तदन्ते नैव तिष्ठति।
मद् भक्तानां महेशानि! सदा तिष्ठति निश्चितम्॥ ५५॥
शक्तिस्तु कुण्ठिता जाता तथा रूपं न सुन्दरम्।
चिन्ताविष्टा तु मलिना जाता तत्र तु सुन्दरी॥ ५६॥
क्षणं स्थित्वा ध्यानपरा काली चिन्तनतत्परा।
तदा काली प्रसन्नाऽभूत् क्षणार्द्धेन महेश्वरी॥ ५७॥

सुन्दर्युवाच–

वरं ब्रूहि वरं ब्रूहि वरं ब्रूहीति सादरम्।
मम सिद्धिवरं देहि वरो यः प्रार्थ्यते मया॥ ५८॥

श्रीकाल्युवाच-

तादृगुपायं कथय येन शक्तिर्भविष्यति?।
मम नामसहस्त्रं च मया पूर्वं विनिर्मितम्॥ ५९॥
मत् स्वरूपं ककाराख्यं महासाम्राज्यनामकम्।
वरदानामिधं नाम क्षणार्द्धाद् वरदायकम्॥ ६०॥
तत् पठस्व महामाये! तव शक्तिर्भविष्यति।
ततः प्रभृति श्रीविद्या तन् नामपाठतत्परा॥ ६१॥
तदेव नामसाहस्त्र सुन्दरीशक्ति-दायकम्।
कथ्यते नामसाहस्त्र सावधानमनाः शृणु॥ ६२॥
सर्वसाम्राज्य-मेधाख्य-नामसाहस्त्रकस्य च।
महाकाल ऋषिः प्रोक्त उष्णिक् छन्दः प्रकीर्तितम् ॥ ६३॥
देवता दक्षिणा काली मायाबीजं प्रकीर्तितम्।
हूंशक्तिः कालिका बीजं कीलकं परिकीर्तितम्॥ ६४॥
ध्यानं च पूर्ववत् कृत्वा साधयस्वेष्टसाधनम्।
कालिका वरदानादिस्वेष्टार्थे विनियोगतः।
कीलकेन षडङ्गानि षड्दीर्घाब्जेन कारयेत्॥ ६५॥

कर्ता इस विनियोग को करें-

ॐ अस्य श्रीसर्वसाम्राज्यमेधानामकाली-रूपकलारात्मक-सहस्त्रनामस्तोत्रमन्त्रस्य महाकाल ऋषिरनुष्टुप्छन्दः श्रीदक्षिण-महाकाली देवता, ह्रीं बीजं, हूं शक्तिः, क्रींकीलकं, काली-वरदानाद्यखिलेष्टार्थे जपे विनियोगः।

ॐ क्रींकाली क्रूंकराली च कल्याणी कमला कला।
कलावती कलाढ्या च कलापूज्या कलात्मिका॥ १॥
कलादृष्टा कलापुष्टा कलामस्ता कलाधरा।
कलाकोटिसमभासा कलाकोटि-प्रपूजिता॥ २॥
कलाकर्मकलाधारा कलापारा कलागमा।
कलाधारा कमलिनी ककारा करुणा कविः॥ ३॥
ककारवर्णसर्वाङ्गी कलाकोटिप्रभूषिता।
ककारकोटिगुणिता ककारकोटिभूषणा॥ ४॥
ककारवर्णहृदया ककारमनुमण्डिता।
ककारवर्णनिलया काकशब्दपरायणा॥ ५॥
ककारवर्णमुकुटा ककारवर्णभूषणा।
ककारवर्णरूपा च ककशब्दपरायणा॥ ६॥
ककवीरास्फालरता कमलाकरपूजिता।
कमलाकरनाथा च कमलाकररूपधृक्॥ ७॥
कमलाकरसिद्धिस्था कमलाकरपारदा।
कमलाकरमध्यस्था कमलाकरतोषिता॥ ८॥
कथङ्कारपरालापा कथङ्कारपरायणा।
कथङ्कारपदान्तस्था कथङ्कारपदार्थभूः॥ ९॥
कमलाक्षी कमलजा कमलाक्षप्रपूजिता।
कमलाक्षवरोद्युक्ता ककाराकर्बुराक्षरा॥ १०॥
करतारा करच्छिन्ना करश्यामा करार्णवा।
करपूज्या कररता करदा करपूजिता॥ ११॥

करतोया करामर्षा कर्मनाशा करप्रिया।
करप्राणा करकजा करकान्तरा॥ १२॥
करकाचलरूपा च करकाचलशोभिननी।
करकाचलपुत्री च करकाचलतोषिता॥ १३॥
करकाचलगेहस्था करकाचलरक्षिणी।
करकाचलसम्मान्या करकाचलकारिणी॥ १४॥
करकाचलवर्षाढ्या करकाचलरञ्जिता।
करकाचलकान्तारा करकाचलमालिनी॥ १५॥
करकाचलभोज्या च करकाचलरूपिणी।
करामलकसंस्था च करामलकसिद्धिदा॥ १६॥
करामलकसम्पूज्या करामलकतारिणी।
करामलककाली च करामलकरोचिनी॥ १७॥
करामलकमाता च करामलकसेविनी।
करामलकवद्ध्येया करामलकदायिनी॥ १८॥
कञ्जनेत्रा कञ्जगतिः कञ्जस्था कञ्जधारिणी।
कञ्जमालाप्रियकरी कञ्जरूपा च कञ्जना॥ १६॥
कञ्जजातिः कञ्जगतिः कञ्जहोमपरायणा।
कञ्जमण्डलमध्यस्था कञ्जाभरणभूषिता॥ २०॥
कञ्जसम्माननिरता कञ्जोत्पत्तिपरायणा।
कञ्जराशिसमाकारा कञ्जारण्यनिवासिनी॥ २१॥
करञ्जवृक्षमध्यस्था करञ्जवृक्षवासिनी।
करञ्जफलमाषाढ्या करञ्जारण्यवासिनी॥ २२॥

करञ्जमालाभरणा करवालपरायणा।
करवालप्रहृष्टात्मा करवालप्रियागतिः॥ २३॥
करवालप्रियाकन्या करवालविहारिणी।
करवालमयीकर्मा करवालप्रियङ्करी॥ २४॥
कबन्धमालाभरणा कबन्धराशिमध्यगा।
कबन्धकूटसंस्थाना कबन्धानन्तभूषणा॥ २५॥
कबन्धनादसन्तुष्टा कबन्धासनधारिणी।
कबन्धगृहमध्यस्था कबन्धवनवासिनी॥ २६॥
कबन्धकाञ्चीकरणी कबन्धराशिभूषणा।
कबन्धमालाजयदा कबन्धदेहवासिनी॥ २७॥
कबन्धासनमान्या च कपालमाल्यधारिणी।
कपालमालामध्यस्था कपालव्रततोषिता॥ २८॥
कपालदीपसन्तुष्टा कपालदीपरूपिणी।
कपालदीपवरदा कपालकज्जलस्थिता॥ २९॥
कपालमालाजयदा कपालजपतोषिणी।
कपालसिद्धिसंहृष्टा कपालभोजनोद्यता॥ ३०॥
कपालव्रतसंस्थाना कपालकमलालया।
कवित्वामृतसारा च कवित्वामृतसागरा॥ ३१॥
कवित्वसिद्धिसंहृष्टा कवित्वादानकारिणी।
कविपूज्या कविगतिः कविरूपा कविप्रिया॥ ३२॥
कविब्रह्मानन्दरूपा कवित्वव्रततोषिता।
कविमानससंस्थाना कविवाञ्छाप्रपूरिणी॥ ३३॥

कविकण्ठस्थिता कंह्रींकंकंकंकविपूर्तिदा।
कज्जला कज्जलादानमानसा कज्जलप्रिया॥ ३४॥
कपालकज्जलसमा कज्जलेशप्रपूजिता।
कज्जलार्णवमध्यस्था कज्जलानन्दरूपिणी॥ ३५॥
कज्जलप्रियसन्तुष्टा कज्जलप्रियतोषिणी।
कपालमालाभरणा कपालकरभूषणा॥ ३६॥
कपालकरभूषाढ्या कपालचक्रमण्डिता।
कपालकोटिनिलया कपालदुर्गकारिणी॥ ३७॥
कपालगिरिसंस्थाना कपालचक्रवासिनी।
कपालपात्रसन्तुष्टा कपालार्घ्यपरायणा॥ ३८॥
कपालार्घ्यप्रियप्राणा कपालार्घ्यवरप्रदा।
कपालचक्ररूपा च कपालरूपमात्रगा॥ ३९॥
कदली कदलीरूपा कदलीवनवासिनी।
कदलीपुष्पसम्प्रीता कदलीफलमानसा॥ ४०॥
कदलीहोमसन्तुष्टा कदलीदर्शनोद्यता।
कदलीगर्भमध्यस्था कदलीवनसुन्दरी॥ ४१॥
कदम्बपुष्पनिलया कदम्बवनमध्यगा।
कदम्बकुसुमामोदा कदम्बवनतोषिणी॥ ४२॥
कदम्बपुष्पसम्पूज्या कदम्बपुष्पहोमदा।
कदम्बपुष्पमध्यस्था कदम्बफलभोजिनी॥ ४३॥
कदम्बकाननान्तःस्था कदम्बाचलवासिनी।
कक्षपा कक्षपाराध्या कक्षपासनसंस्थिता॥ ४४॥

कर्णपूरा कर्णनासा कर्णाढ्या कालभैरवी।
कल्पप्रीता कलहदा कलहा कलहातुरा॥ ४५॥
कर्णयक्षी कर्णवार्ता कथिनी कर्णसुन्दरी।
कर्णपिशाचिनी कर्णमञ्जरी कविकक्षदा॥ ४६॥
कविकक्षाविरूपाढ्या कविकक्षस्वरूपिणी।
कस्तूरीमृगसंस्थाना कस्तूरीमृगरूपिणी॥ ४७॥
कस्तुरीमृगसन्तोषा कस्तूरीमृगमध्यगा।
कस्तूरीरसनीलाङ्गी कस्तूरीगन्धतोषिता॥ ४८॥
कस्तूरीपूजकप्राणा कस्तूरीपूजकप्रिया।
कस्तूरीप्रेमसन्तुष्टा कस्तूरीप्राणधारिणी॥ ४९॥
कस्तूरीपूजकानन्दा कस्तूरीगन्धरूपिणी।
कस्तूरीमालिकारूपा कस्तूरीभोजनप्रिया॥ ५०॥
कस्तूरीतिलकानन्दा कस्तूरीतिलकप्रिया।
कस्तूरीहोमसन्तुष्टा कस्तूरीतर्पणोद्यता॥ ५१॥
कस्तूरीमार्जनोद्युक्ता कस्तूरीचक्रपूजिता।
कस्तूरीपुष्पसम्पूज्या कस्तूरीचर्वणोद्यता॥ ५२॥
कस्तूरीगर्भमध्यस्था कस्तूरीवस्त्रधारिणी।
कस्तूरीकामोदरता कस्तूरीवनवासिनी॥ ५३॥
कस्तूरीवनसंरक्षा कस्तूरीप्रेमधारिणी।
कस्तूरीशक्तिनिलया कस्तूरीशक्तिकुण्डगा॥ ५४॥
कस्तूरीकुण्डसंस्नाता कस्तूरीकुण्डमज्जना।
कस्तूरीजीवसन्तुष्टा कस्तूरीजीवधारिणी॥ ५५॥

कस्तूरीपरमामोदा कस्तूरीजीवनक्षमा।
कस्तूरीजातिभावस्था कस्तूरीगन्धचुम्बना॥ ५६॥
कस्तूरीगन्धसंशोभा-विराजित-कपालभूः।
कस्तूरीमदनान्तःस्था कस्तूरीमदहर्षदा॥ ५७॥
कस्तूरीकांवेतानाढ्या कस्तूरीगृहमध्यगा।
कस्तूरीस्पर्शकप्राणा कस्तूरीविन्दकान्तका॥ ५८॥
कस्तूर्यामोदरसिका कस्तूरीक्रीडनोद्यता।
कस्तूरीदाननिरता कस्तूरीवरदायिनी॥ ५९॥
कस्तूरीस्थापनासक्ता कस्तूरीस्थानरञ्जिनी।
कस्तूरीकुशलप्रश्ना कस्तूरीस्तुतिवन्दिता॥ ६०॥
कस्तूरीवन्दकाराध्या कस्तूरीस्थानवासिनी।
कहरूपा कहाख्या च कहानन्दा कहात्मभूः॥ ६१॥
कहपूज्या कहात्याख्या कहहेया कहात्मिक।
कहमाला कण्ठभूषा कहमन्त्रजपोद्यता॥ ६२॥
कहनामस्मृतिपरा कहनामपरायणा।
कहपरायणरता कहदेवी कहेश्वरी॥ ६३॥
कहहेतुकहानन्दा कहनादपरायणा।
कहमाता कहान्तःस्था कहमन्त्रा कहेश्वरा॥ ६४॥
कहगेया कहाराध्या कहध्यानपरायणा।
कहतन्त्रा कहकहा कहचर्यापरायणा॥ ६५॥
कहचारा कहगतिः कहताण्डवकारिणी।
कहारण्या कहगतिः कहशक्तिपरायणा॥ ६६॥

कहराज्यनता कर्मसाक्षिणी कर्मसुन्दरी।
कर्मविद्या कर्मगतिः कर्मतन्त्रपरायणा॥ ६७॥
कर्ममात्रा कर्मगात्रा कर्मधर्मपरायणा।
कर्मरेखानाशकर्त्री कर्मरेखाविनोदिनी॥ ६८॥
कर्मरेखामोहकारी कर्मकीर्तिपरायणा।
कर्मविद्या कर्मसारा कर्मधारा च कर्मभूः॥ ६९॥
कर्मकारी कर्महारी कर्मकौतुकसुन्दरी।
कर्मकाला कर्मतारा कर्मच्छिन्ना च कर्मदा॥ ७०॥
कर्मचाण्डालिनी कर्मवेदमाता च कर्मभूः।
कर्मकाण्डरतानन्ता कर्मकाण्डानुमानिता॥ ७१॥
कर्मकाण्डपरीणाहा कमठी कमठाकृतिः।
कमठाराध्यहृदया कमठाकण्ठसुन्दरी॥ ७२॥
कमठासनसंसेव्या कमठीकर्मतत्परा।
करुणाकरकान्ता च करुणाकरवन्दिता॥ ७३॥
कठोराकरमाला च कठोरकुचधारिणी।
कपर्दिनी कपटिनी कठिनी कङ्कभूषणा॥ ७४॥
करभोरूः कठिनदा करभा करमालया।
कलभाषामयी कल्पा कल्पना कल्पदायिनी॥ ७५॥
कमलस्था कलामाला कमलास्या क्वणत्प्रभा।
ककुद्मिनी कष्टवती करणीयकथार्चिता॥ ७६॥
कतार्चिता कचतनुः कचसुन्दरधारिणी।
कठोरकुचसलग्ना कटिसूत्रविराजिता॥ ७७॥

कर्णभक्षप्रिया कन्दाकथा कन्दगतिः कलिः।
कलिघ्नी कलिदूती च कविनायकपूजिता॥ ७८॥
कणकक्षानियन्त्री च कश्चित्कविवरार्चिता।
कर्त्री च कर्तृकाभूषा करिणी कणशत्रुपा॥ ७९॥
करणेशी करणया कलवाचा कलानिधिः।
कलना कलनाधारा कलनाकारिकाकरा॥ ८०॥
कलगेया कर्कराशिः कर्कराशिप्रपूजिता।
कन्याराशिः कन्यका च कन्यकाप्रियभाषिणी॥ ८१॥
कन्यकादानसन्तुष्टा कन्यकादानतोषिणी।
कन्यादानकरानन्दा कन्यादानग्रहेष्टदा॥ ८२॥
कर्षणाकक्षदहना कामिता कमलासना।
करमालानन्दकर्त्री करमालाप्रपोषिता॥ ८३॥
करमालाशयानन्दा करमालासमागमा।
करमालासिद्धिदात्री करमालाकरप्रिया॥ ८४॥
करप्रिया कररता करदानपरायणा।
कलानन्दा कलिगतिः कलिपूज्या कलिप्रसूः॥ ८५॥
कलनाद-निनादस्था कलनाद-वरप्रदा।
कलनाद-समाजस्था कहोला च कहोलदा॥ ८६॥
कहोलगेह-मध्यस्था कहोलवरदायिनी।
कहोलकविताधारा कहोलऋषिमानिता॥ ८७॥
कहोलमानसाराध्या कहोलवाक्यकारिणी।
कर्तृरूपा कर्तृमयी कर्तृमाता च कर्तरी॥ ८८॥

कनीया कनकाराध्या कनीनकमयी तथा।
कनीयानन्दनिलया कनकानन्दतोषिता॥ ८९॥
कनीयककराकाष्ठा कथार्णवकरी करी।
करिगम्या करिगतिः करिध्वजपरायणा॥ ९०॥
करिनाथप्रिया कण्डा कथानकप्रतोषिता।
कमनीया कमनका कमनीय-विभूषणा॥ ९१॥
कमनीयसमाजस्था कमनीयव्रतप्रिया।
कमनीयगुणाराध्या कपिला कपिलेश्वरी॥ ९२॥
कपिलाराध्यहृदया कपिलाप्रियवादिनी।
कहचक्रमन्त्रवर्णा कहचक्रप्रसूनका॥ ९३॥
क-ए-ईल्-ह्रींस्वरूपा च क-ए-ईल्ह्रीं वरप्रदा।
क-ए-ईल्-ह्रींसिद्धिदात्री क-ए-ईल्-ह्रींस्वरूपिणी॥ ९४॥
क-ए-ईल्-ह्रींमन्त्रवर्णा क-ए-ईल्-ह्रींप्रसूकला।
कवर्गा च कपाटस्था कपाटोद्घाटनक्षमा॥ ९५॥
कङ्काली च कपाली च कङ्कालप्रियभाषिणी।
कङ्कालभैरवाराध्या कङ्कालमानसस्थिता॥ ९६॥
कङ्कालमोहनिरता कङ्कालमोहदायिनी।
कलुषघ्नी कलुषहा कलुषार्तिविनाशिनी॥ ९७॥
कलिपुष्पा कलादाना कशिपुः कश्यपार्चिता।
कश्यपा कश्यपाराध्या कलिपूर्णकलेवरा॥ ९८॥
कलेवरकरी काञ्ची कवर्गा च करालका।
करालभैरवाराध्या करालभैरवेश्वरी॥ ९९॥

कराला कलनाधारा कपर्दीशवरप्रदा।
कपर्दीशप्रेमलता कपर्दिमालिकायुता॥ १००॥
कपर्दिजपमालाढ्या करवीरप्रसूनदा।
करवीरप्रियप्राणा करवीरप्रपूजिता॥ १०१॥
कर्णिकारसमाकारा कर्णिकारप्रपूजिता।
करिषाग्निस्थिता कर्षाकर्षमात्रसुवर्णदा॥ १०२॥
कलशा कलशाराध्या कषाया करिगानदा।
कपिला कलकण्ठी च कलिकल्पलता मता॥ १०३॥
कल्पलता कल्पमाता कल्पकारी च कल्पभूः।
कर्पूरामोदरुचिरा कर्पूरामोदधारिणी॥ १०४॥
कर्पूरमालाभरणा कर्पूरवासपूर्तिदा।
कर्पूरमालाजयदा कर्पूरार्णवमध्यगा॥ १०५॥
कर्पूरतर्पणरता कटकाम्बरधारिणी।
कपटेश्वरसम्पूज्या कपटेश्वररूपिणी॥ १०६॥
कटुः कविध्वजाराध्या कलापपुष्पधारिणी।
कलापपुष्परुचिरा कलापपुष्पपूजिता॥ १०७॥
क्रकचा क्रकचाराध्या कथं ब्रूमा करालता।
कथंकार-विनिर्मुक्ता काली कालक्रिया क्रतुः॥ १०८॥
कामिनी कामिनीपूज्या कामिनीपुष्पधारिणी।
कामिनीपुष्पनिलया कामिनीपुष्पपूर्णिमा॥ १०९॥
कामिनीपुष्पपूजार्हा कामिनीपुष्पभूषणा।
कामिनीपुष्पतिलका कामिनीकुण्डचुम्बना॥ ११०॥

कामिनीयोगसन्तुष्टा कामिनीयोगभोगदा।
कामिनीकुण्डसम्मग्ना कामिनीकुण्डमध्यगा॥ १११॥
कामिनीमानसाराध्या कामिनीमानतोषिता।
कामिनीमानसञ्चारा कालिका कालकालिका॥ ११२॥
कामा च कामदेवी च कामेशी कामसम्भवा।
कामभावा कामरता कामार्ता काममञ्जरी॥ ११३॥
कामपञ्जीर-रणिता कामदेवप्रियान्तरा।
कामकाली कामकला कालिका कमलार्चिता॥ ११४॥
कादिका कमला काली कालानलसमप्रभा।
कल्पान्तदहना कान्ता कान्तारप्रियवासिनी॥ ११५॥
कालपूज्या कालरता कालमाता च कालिनी।
कालवीरा कालघोरा कालसिद्धा च कालदा॥ ११६॥
कालाञ्जन-समाकारा कालञ्जरनिवासिनी।
कालऋद्धिः कालवृद्धिः कारागृहविमोचिनी॥ ११७॥
कादिविद्या कादिमाता कादिस्था कादिसुन्दरी।
काशी काञ्ची च काञ्चीशा काशीशवरदायिनी॥ ११८॥
क्रींबीजा चैव क्रांबीजा हृदयाय नमः स्मृता।
काम्या काम्यगतिः काम्यसिद्धिदात्री च काम्यभूः॥ ११९॥
कामाख्या कामरूपा च काम्यचापविमोचिनी।
कामदेवकलारामा कामदेवकलालया॥ १२०॥
कामरात्रिः कामदात्री कान्ताराचलवासिनी।
कामरूपा कालगतिः कामयोगपरायणा॥ १२१॥

कामसम्मर्दनरता कामगेहविकाशिनी।
कालभैरवभार्या च कालभैरवकामिनी॥ १२२॥
कालभैरवयोगस्था कालभैरवभोगदा।
कामधेनुः कामदोग्ध्री काममाता च कान्तिदा॥ १२३॥
कामुका कामुकाराध्या कामुकानन्दवर्द्धिनी।
कार्तिवीर्या कार्तिकेया कार्तिकेयप्रपूजिता॥ १२४॥
कार्या कारणदा कार्यकारिणी कारणान्तरा।
कान्तिगम्या कान्तिमयी कात्या कात्यायनी च का॥ १२५॥
कामसारा च काश्मीरा कश्मीराचारतत्परा।
कामरूपाचाररता कामरूपप्रियंवदा॥ १२६॥
कामरूपाचारसिद्धिः कामरूपमनोमयी।
कार्तिकी कार्तिकाराध्या काञ्चनारप्रसूनभूः॥ १२७॥
काञ्चनारप्रसूनाभा काञ्चनारप्रपूजिता।
काञ्चरूपा काञ्चभूमिः कांस्यपात्रप्रभोजिनी॥ १२८॥
कांस्यध्वनिमयी कामसुन्दरी कामचुम्बना।
काशपुष्पप्रतीकाशा कामद्रुमसमागमा॥ १२९॥
कामपुष्पा कामभूमिः कामपूज्या च कामदा।
कामदेहा कामगेहा कामबीजपरायणा॥ १३०॥
कामध्वजसमारूढा कामध्वजसमास्थिता।
काश्यपी काश्यपाराध्या काश्यपानन्ददायिनी॥ १३१॥
कालिन्दीजलसङ्काशा कालिन्दीजलपूजिता।
कामदेवपूजानिरता कामदेवपरमार्थदा॥ १३२॥

कार्मणा कार्मणाकारा कामकार्मणकारिणी।
कार्मणत्रोटनकरी काकिनी कारणाह्वया॥ १३३॥
काव्यामृता च कालिङ्गा कालिङ्गमर्दनोद्यता।
कालागुरुविभूषाढ्या कालागुरुविभूतिदा॥ १३४॥
कालागुरुसुगन्धा च कालागुरुप्रतर्पणा।
कावेरीनीरसम्प्रीता कावेरीतीरवासिनी॥ १३५॥
कालचक्रभ्रमाकारा कालचक्रनिवासिनी।
कानना काननाधारा कारुः कारुणिकामयी॥ १३६॥
काम्पिल्यवासिनी काष्ठा कामपत्नी च कामभूः।
कादम्बरीपानरता तथा कादम्बरीकला॥ १३७॥
कामवन्द्या च कामेशी कामराजप्रपूजिता।
कामराजेश्वरीविद्या कामकौतुकसुन्दरी॥ १३८॥
काम्बोजजा काञ्चिनदा कांस्यकाञ्चनकारिणी।
काञ्चनाद्रिसमाकारा काञ्चनाद्रिप्रदानदा॥ १३९॥
कामकीर्तिः कामकेशी कारिका कान्तराश्रया।
कामभेदी च कामार्तिनाशिनी कामभूमिका॥ १४०॥
कालनिर्णाशिनी काव्यवनिता कामरूपिणी।
कायस्था कामसन्दीप्तिः काव्यदा कालसुन्दरी॥ १४१॥
कामेशी कारणवरा कामेशीपूजनोद्यता।
काञ्चीनूपुरभूषाढ्या कुङ्कुमाभरणान्विता॥ १४२॥
कालचक्रा कालगतिः कालचक्रामनोभवा।
कुन्दमध्या कुन्दपुष्पा कुन्दपुष्पप्रिया कुजा॥ १४३॥

कुजमाता कुजाराध्या कुठारवरधारिणी।
कुञ्जरस्था कुशरता कुशेशयविलोचना॥ १४४॥
कुनठी कुररी कुद्रा कुरङ्गी कुटजाश्रया।
कुम्भीनसविभूषा च कुम्भीनसवधोद्यता॥ १४५॥
कुम्भकर्णमनोल्लासा कुलचूडामणिः कुला।
कुलालगृहकन्या च कुलचूडामणिप्रिया॥ १४६॥
कुलपूज्या कुलाराध्या कुलपूजापरायणा।
कुलभूषा तथा कुक्षिः कुररीगणसेविता॥ १४७॥
कुलपुष्पा कुलरता कुलपुष्पपरायणा।
कुलवस्त्रा कुलाराध्या कुलकुण्डसमप्रभा॥ १४८॥
कुलकुण्डसमोल्लासा कुण्डपुष्पपरायणा।
कुण्डपुष्पाप्रसन्नास्या कुण्डगोलोद्भवात्मिका॥ १४९॥
कुण्डगोलोद्भवाधारा कुण्डगोलमयी कुहूः।
कुण्डगोलप्रियप्राणा कुण्डगोलप्रपूजिता॥ १५०॥
कुण्डगोलमनोल्लासा कुण्डगोलबलप्रदा।
कुण्डदेवरता क्रुद्धा कुलसिद्धिकरा परा॥ १५१॥
कुलकुण्डसमाकारा कुलकुण्डसमानभूः।
कुण्डसिद्धिः कुण्डऋद्धिः कुमारीपूजनोद्यता॥ १५२॥
कुमारीपूजकप्राणा कुमारीपूजकालया।
कुमारीकामसन्तुष्टा कुमारीपूजनोत्सुका॥ १५३॥
कुमारीव्रतसन्तुष्टा कुमारीरूपधारिणी।
कुमारीभोजनप्रीता कुमारी च कुमारदा॥ १५४॥

कुमारमाता कुलदा कुलयोनिः कुलेश्वरी।
कुललिङ्गा कुलानन्दा कुलरम्या कुतर्कधृक्॥१५५॥
कुन्ती च कुलकान्ता च कुलमार्गपरायण।
कुल्ला च कुरुकुल्ला च कुल्लुका कुलकामदा॥१५६॥
कुलिशाङ्गी कुब्जिका च कुब्जिकानन्दवर्धिनी।
कुलीना कुञ्जरगतिः कुञ्जरेश्वरगामिनी॥१५७॥
कुलपाली कुलवती तथैव कुलदीपिका।
कुलयोगेश्वरी कुण्डा कुङ्कुमारुणविग्रहा॥१५८॥
कुङ्कुमानन्दसन्तोषा कुङ्कुमार्णववासिनी।
कुसुमा कुसुमप्रीता कुलभूः कुलसुन्दरी॥१५९॥
कुमुद्वती कुमुदिनी कुशला कुलटालया।
कुलटालयमध्यस्था कुलटासङ्गतोषिता॥१६०॥
कुलटाभवनोद्युक्ता कुशावर्ता कुलार्णवा।
कुलार्णवाचाररता कुण्डली कुण्डलाकृतिः॥१६१॥
कुमती च कुलश्रेष्ठा कुलचक्रपरायणा।
कूटस्था कूटदृष्टिश्च कुन्तला कुन्तलाकृतिः॥१६२॥
कुशलाकृतिरूपा च कूर्चबीजधरा च कूः।
कुं कुं कुं कुं शब्दरता क्रूं क्रूं क्रूं क्रूंपरायणा॥१६३॥
कुं कुं कुं शब्दनिलया कुक्कुरालयवासिनी।
कुक्कुरागसङ्गसंयुक्ता कुक्कुरालयवासिनी ॥१६४॥
कूर्चारम्भा कूर्चबीजा कूर्चजापपरायणा।
कुचस्पर्शनसुतुष्टा कूचालिङ्गनर्षदा॥१६५॥

कुगतिघ्नी कुबेरार्च्या कुचभूः कुलनायिका।
कुगायना कुचधरा कुमाता कुन्ददन्तिनी॥ १६६॥
कुगेया कुहराभाषा कुगेया कुघ्नदारिका।
कीर्तिः किरातिनी क्लिन्ना किन्नरा किन्नरी क्रिया॥ १६७॥
क्रींकारा क्रींजपासक्ता क्रींहूँस्त्रींमन्त्ररुपिणी।
कीर्मीरितदृशापाङ्गी किशोरी च किरीटिनी॥ १६८॥
कीटभाषा कीटयोनिः कीटमाता च कीटदा।
किंशुका कीरभाषा च क्रियासारा क्रियावती॥ १६९॥
कीं कींशब्दापरा क्लींक्लींक्लूं क्लैंक्लौंमन्त्ररुपिणी।
कांकींकूंकैंस्वरूपा च कःफट्मन्त्रस्वरूपिणी॥ १७०॥
केतकी भूषणानन्दा केतकीभरणान्विता।
कैकदा केशिनी केशी केशीसूदनतत्परा॥ १७१॥
केशरुपा केशमुक्ता कैकेयी कौशिकी तथा।
कंरवा कैरवाह्लादा केशरा केतुरूपिणी॥ १७२॥
केशवाराध्यहृदया केशवासक्तमानसा।
क्लव्यविनाशिनी क्लैं च क्लैंबीजजपतोषिता॥ १७३॥
कौशल्या कोशलाक्षी च कोशा च कोमला तथा।
कोलापुरनिवासा च कोलासुरविनाशिनी॥ १७४॥
कोटिरूपा कोटिरता क्रोधिनी क्रोधरूपिणी।
केका च कोकिला कोचिः कोटिमन्त्रपरायणा॥ १७५॥
कोटयनन्तमन्त्रयुता कैरूपा केरलाश्रया।
केरलाचारनिपुणा केरलेन्द्रगृहस्थिता॥ १७६॥

केदाराश्रमसंस्था च केदारेश्वरपूजिता।
क्रोधरुपा क्रोधपदा क्रोधमाता च कौशिकी॥ १७७॥
कोदण्डधारिणी क्रौञ्चा कौशिल्या कौलमार्गगा।
कौलिनी कौलिकाराध्या कौलिकागारवासिनी॥ १७८॥
कौतुकी कौमुदी कौला कुमारी कौरवार्चिता।
कौण्डिन्या कौशिकी क्रोधज्वालाभासुररूपिणी॥ १७९॥
कोटिकालानलज्वाला कोटिमार्तण्डविग्रहा।
कृत्तिका कृष्णवर्णा च कृष्णकृत्या क्रियातुरा॥ १८०॥
कृशाङ्गी कृतकृत्या च क्रः फट्स्वाहारूपिणी।
क्रौंक्रौंहूंफट्मन्त्रवर्णा क्रींह्रीह्रूं फट् नमः स्वधा॥ १८१॥
क्रींक्रींह्रींह्रीं तथा ह्रं ह्रं फट्स्वाहामन्त्ररूपिणी।
इति श्रीसर्वसाम्राज्यमेधानाम सहस्त्रकम्॥ १८२॥
सुन्दरीशक्तिदानाख्यस्वरूपाभिधमेव च।
कथितं दक्षिणाकाल्याः सुन्दर्यै प्रीतियोगतः॥ १॥
वरदानप्रसङ्गेन रहस्यमपि दर्शितम्।
गोपनीयं सदा भक्त्या पठनीयं परात्मपरम्॥ २॥
प्रातर्मध्याह्नकाले च मध्यार्द्धरात्रयोरपि।
यज्ञकाले जपान्ते च पठनीयं विशेषतः॥ ३॥
यः पठेत्साधको धीरः कालीरूपो हि वर्षतः।
पठेद् वा पाठयेद् वाऽपि शृणोति श्रावयेदपि॥ ४॥
वाचकं तोषयेद् वाऽपि स भवेत्कालिकातनुः।
सहेल वा सलिलं व यश्चैनं मानवः पठेत्॥ ५॥

सर्वदुख विनिर्मुक्तस्त्रैलोक्यविजयी कविः।
मृतबन्ध्या काकबन्ध्या कन्याबन्ध्या च बन्ध्याका॥ ६॥
पुष्पबन्ध्या शूलबन्ध्या शृणुयात् स्तोत्रमुत्तमम्।
सर्वसिद्धिप्रदातारं सत्कविं चिरजीवितम्॥ ७॥
पाण्डित्यं कीर्तिसंयुक्तं लभते नाऽत्र संशयः।
स यं काममुपस्कृत्य कालीं ध्यात्वा जपेत्स्तवम्॥ ८॥
तं तं कामं करे कृत्वा मन्त्री भवति नान्यथा।
योनिपुष्पै-लिङ्ग-पुष्पैः कुण्ड-गोलोद्भवैरपि॥ ९॥
संयोगामृतपुष्पैश्च वस्त्रदेवीप्रसूनकैः।
कालिपुष्पैः पीठतोयैर्योनिक्षालनतोयकैः॥ १०॥
कस्तूरी-कुङ्कुमैर्देवीं नखकालागुरुक्रमात्।
अष्टगन्धै धूप-दीपै-र्यव-यावय-संयुतैः॥ ११॥
रक्त चन्दन- सिन्दूरै-र्मत्स्य-मांसादिभूषणैः।
मधुभिः पायसैः क्षीरैः शोधितैः शोणितैरपि॥ १२॥
महोपचारै रक्तैश्च नैवेद्यैः सुरसान्वितैः।
पूजयित्वा महाकालीं महाकालेन लालिताम्॥ १३॥
विद्याराज्ञीं कुल्लुकां च जप्त्वा स्तोत्रं जपेच्छिवे!।
कालीभक्तस्त्वेकचित्तः सिन्दूर-तिलकान्वितः॥ १४॥
ताम्बूलपूरितमुखो मुक्तकेशो दिगम्बरः।
शवयोनिस्थितो वीरः श्मशानसुरतान्वितः॥ १५॥
शून्यालये बिन्दुपीठे पुष्पाकीर्णे शिवावने।
शयानोत्थ-प्रभुञ्जानः काली-दर्शनमाप्नुयात्॥ १६॥

तत्र यद्यत् कृतं कर्म तदनन्तफलं भवेत्।
ऐश्वर्ये कमला साक्षात् सिद्धौ श्रीकालिकाम्बिका॥ १७॥
कवित्वे तारिणीतुल्यः सौन्दर्ये सुन्दरीसमः।
सिन्धोर्धारासमः कार्ये श्रुतौ श्रुतिधरस्तथा॥ १८॥
वज्रास्त्र इव दुर्धर्षस्त्रैलोक्य-विजयास्त्र-भृत्।
शत्रुहन्ता काव्यकर्ता भवेच्छिवसमः कलौ॥ १९॥
दिग्-विदिक्-चन्द्रकर्ता च दिवारात्रिविपर्ययी।
महादेवसमो योगी त्रैलोक्यस्तम्भकः क्षणात्॥ २०॥
गानेन तुम्बरुः साक्षाद् दाने कर्मसमो भवेत्।
गजा-ऽश्व-रथ-पत्तीनामस्त्राणामधिपः कृती॥ २१॥
आयुष्येषु भुशुण्डी च जरापलितनाशकः।
वर्षषोडशवान् भूयात् सर्वकाले महेश्वरि!॥ २२॥
ब्रह्माण्डगोले देवेशि! न तस्य दुर्लभं क्वचित्।
सर्वं हस्तगतं भूयान्नाऽत्र कार्या विचारणा॥ २३॥
कुलपुष्पयुतं दृष्ट्वा तत्र कालीं विचिन्त्य च।
विद्याराज्ञीं तु सम्पूज्य पठेन् नमसहस्त्रकम्॥ २४॥
मनोरथमयी सिद्धिस्तस्य हस्ते सदा भवेत्।
परदारान् समालिङ्ग्य सम्पूज्य परमेश्वरीम्॥ २५॥
हस्ताहस्तिकयायोगं कृत्वा जप्त्वा स्तवं पठेत्।
योनीं वीक्ष्य जपेद् स्त्रोत्रं कुबेरादधिको भवेत्॥ २६॥
कुण्डगोलोद्भवं गृह्य वर्णाक्तं होमयेन्निशि।
पितृभूमो महेशानि विधिरेखां प्रमार्जयेत्॥ २७॥

तरुणीं सुन्दरीं रम्यां चञ्चलां कामगर्विताम्।
समानीय प्रयत्नेन संशोध्य न्यास-योगतः॥ २८॥
प्रसूनमञ्चं संस्थाप्य पृथिवीं कशितां चरेत्।
मूलचक्रं तु संभाव्य देव्याश्चारणसंयुतम्॥ २९॥
सम्पूज्य परमेशानि सङ्कल्प्य तु महेश्वरि!।
जप्त्वा स्तुत्वा महेशानीं प्रणवं संस्मरेच्छिवे!॥ ३०॥
अष्टोत्तरशतैर्योनिं प्रमन्त्र्याचुम्ब्य यत्नतः।
संयोगीभूय जप्तव्यं सर्वविद्याधिपो भवेत्॥ ३१॥
शून्यागारे शिवारण्ये शिवदेवालये तथा।
शून्यदेशे तडागे च गङ्गागर्भे चतुष्पथे॥ ३२॥
श्मशाने पर्वतप्रान्ते एकलिङ्गे शिवामुखे।
मुण्डयोनौ ऋतौ स्नात्वा गेहे वेश्यागृहे तथा॥ ३३॥
कट्टिनीगृहमध्ये च कदलीमण्डपे तथा।
पठत् सहस्रनामाख्यं स्तोत्रं सर्वार्थसिद्धये॥ ३४॥
अरण्ये शून्येगर्ते च रणे शत्रुसमागमे।
प्रजपेच्च ततो नाम काल्याश्चैव सहस्रकम्॥ ३५॥
बालानन्दपरो भूत्वा पठित्वा कालिकास्तवम्।
कालीं संचिन्त्य प्रजपेत् पठेन्नामसहस्रकम्॥ ३६॥
सर्वसिद्धीश्वरो भूयाद् वाञ्छासिद्धीश्वरो भवेत्।
मुण्डचूडकयोर्योनौ त्वचि वा कोमले शिवे॥ ३७॥
विष्टरे शववस्त्रे वा पुष्पवस्त्रासनेऽपि वा।
मुक्तकेशी दिशावासा मैथुनी शयने स्थितः॥ ३८॥

जप्त्वा कालीं पठेत्स्तोत्रं खेचरी-सिद्धिभाग् भवेत्।
चिकुरं योगमासाद्य शुक्रोत्सारणमेव च॥ ३९॥
जप्त्वा श्रीदक्षिणां कालीं शक्तिपातशतं भवेत्।
लतां स्पृशन् जपित्वा च रमित्वा त्वर्चयन्नपि॥ ४०॥
आलोकयन् दिशावासा: परशक्तिं विशेषत:।
स्तुत्वा श्रीदक्षिणां कालीं योनिं स्वकरगां चरेत्॥ ४१॥
पठेन्नामसहस्रं य: स शिवबादधिको भवेत्।
लतान्तरेषु जप्तन्तव्यं स्तुत्वा कालीं निराकुल:॥ ४२॥
दशावधानो भवति मासमात्रेण साधक:।
कालरात्र्यां महारात्र्यां वीररात्र्यामपि प्रिये!॥ ४३॥
महारात्र्यां चतुर्दश्यामष्टभ्यां संक्रमेऽपि वा।
कुहूपूर्णेन्दुशुक्रेषु भौमामायां निशामुखे॥ ४४॥
नवम्यां मङ्गलदिने तथा कुलतिथो शिवे।
कुलक्षेत्रे प्रयत्नेन पठेन्नामसहस्रकम्॥ ४५॥
सौदर्शनो भवेदाशु किन्नरीसिद्धिभाग् भवेत्।
पश्चिमाभिमुखं लिङ्गं वृषशून्यं पुरातनम्॥ ४६॥
तत्र स्थित्वा जपेत् सर्वमाप्तये शिवे।
भौमवारे निशीथे वा अमावस्यादिने शुभे॥ ४७॥
माषभक्तबलिं छागं कृसरान्नं च पायसम्।
दग्धमीनं शोणितं च दधि-दुग्धं गुडार्द्रकम्॥ ४८॥
बलिं दत्वा जपेत्तत्र त्वष्टोत्तरसहस्रकम्।
देव-गन्धर्व-सिद्धौघै: सेवितां सुरसुन्दरीम्॥ ४९॥

लभेद् देवेशि! मासेन तस्य चासनसंहतिः।
हस्तत्रयं भवेदूर्ध्वं नाऽत्र कार्या विचारणा॥ ५०॥
हेलया लीलया भक्त्या कालीं स्तौति नरस्तु यः।
ब्रह्मादींस्तम्भयेद् देवि! माहेशीं मोहयेत् क्षणात्॥ ५१॥
आकर्षयेत् महाविद्यां दशपूर्वां त्रियामतः।
कुर्वीत विष्णुनिर्माणं यमादीनां तु मारणम्॥ ५२॥
ध्रुवमुच्चाटयेन्नूनं सृष्टिनूतनतां नरः।
मेष-माहिष-मार्जार-खर-छाग-नरादिकैः॥ ५३॥
खड्गी-शूकर-कापोतैष्टिट्टिभैः शशकैः पलैः।
शणितैः साऽस्थि-मांसैश्च कारण्डैर्दुगध-पायसैः॥ ५४॥
कादम्बरी-सीधुमद्यैः सुरारिष्टैश्च सासवैः।
योनि-क्षालित-तोयैश्च योनिलिङ्गामृतैरपि॥ ५५॥
स्वजात-कुसुमैः पूज्यां जपान्ते तर्पयेच्छिवाम्।
सर्वसाम्राज्यनाम्ना तु स्तुत्वा नत्वा स्वशक्तितः॥ ५६॥
शक्त्यालभन् पठेत् स्तोत्रं कालीरूपो दिनत्रयात्।
दक्षिणाकालिका तस्य गेहे तिष्ठति नाऽन्यथा॥ ५७॥
वेश्यालता गृहे गत्वा तस्याश्चुम्बनतत्परः।
तस्या योनौ मुखं दत्वा तद्रसं विलिहन् जपेत्॥ ५८॥
तदन्ते नामसाहस्त्रं पठेद् भक्तिपरायणः।
कालिकादर्शनः तस्य भवेदेव त्रियामतः॥ ५९॥
नृत्यपात्रगृहे गत्वा मकार-पञ्चकान्वितः।
प्रसूनमञ्चे संस्थाप्य शक्तिन्यासपरायणः॥ ६०॥

पात्राणां साधनं कृत्वा दिग्वस्त्रान्तां समाचरेत्।
सम्भव्य चक्रं तन्मूले तत्र सावरणान् जपेत्॥ ६१॥
शतं भाले शतं केशे शतं सिन्दूरमण्डले।
शतत्रयं कुचद्वन्द्वे शतं नाभौ महेश्वरि!॥ ६२॥
शतं योनौ महेशानि संयोगे च शतत्रयम्।
जपेत्तत्र महेशानि तदन्ते प्रपठेत् स्तवम्॥ ६३॥
शतावधानो भवति मासमात्रेण साधकः।
मातङ्गिनीं समानीय किं वा कापालिनीं शिवे!॥ ६४॥
दन्तमाला जपे कार्या गले धार्या नृमुण्डजा।
नेत्रपद्मे योनिचक्रं शक्तिचक्रं स्ववक्त्रके॥ ६५॥
कृत्वा जपेन् महेशानि मुण्डयन्त्रं प्रपूजयेत्।
मुण्डासनस्थितो वीरो मकारपञ्चकान्वितः॥ ६६॥
अन्यामालिङ्ग्य प्रजपेदन्यां सञ्चुम्ब्य वै पठेत्।
अन्यां सम्पूजयेत्तत्र त्वन्यां सम्मर्दयन् जपेत्॥ ६७॥
अन्यायोनौ शिवं दत्वा पुनः पूर्ववदाचरेत्।
अवधानसहस्त्रेषु शशिपातशतेषु च॥ ६८॥
राजा भवति देवेशि! मासपञ्चकयोगतः।
यवनीशक्तिमानीय गानशक्तिपरायणाम्॥ ६९॥
कुलाचारमतेनैव तस्या योनिं विकासयेत्।
तत्र जिह्वां प्रदत्त्वा तु जपेन्नामसहस्त्रकम्॥ ७०॥
नृकपाले तत्र दीपं ज्वाल्य यत्नेन वै जपेत्।
महाकविवरो भूयान्नाऽत्र कार्या विचारणा॥ ७१॥

कामार्तो शक्तिमानीय योनौ तु मूलचक्रकम्।
विलख्य परमेशानि! तत्र मन्त्रं लिखेच्छिवे!॥ ७२॥
तल्लिहन् प्रजपेद् देवि! सर्वशास्त्रार्थतत्त्ववित्।
अश्रुतानि च शास्त्राणि वेदादीन् पाठयेद् ध्रुवम्॥ ७३॥
विना न्यासैर्विना पाठैर्विना ध्यानादिभिः प्रिये!।
चतुर्वेदाधिपो भूत्वा त्रिकालज्ञस्त्रिवर्षतः॥ ७४॥
चतुर्विधं च पाण्डित्यं तस्य हस्तगतं क्षणात्।
शिवाबलिः प्रदातव्या सर्वदा शून्यमण्डले॥ ७५॥
कालीध्यानं मन्त्रचिन्ता नीलसाधनमेव।
सहस्त्रनामपाठश्च कालीनाम-प्रकीर्तनम्॥ ७६॥
भक्तस्य कार्यमेतावदन्यदभ्युदय विदुः।
वीरसाधनकं कर्म शिवापूजा बलिस्तथा॥ ७७॥
सिन्दूरतिलको देवि! वेश्यालापो निरन्तरम्।
वेश्यागृहे निशाचारो रात्रो पर्यटनं तथा॥ ७८॥
शक्तिपूजा योनिद्दष्टि खड्गहस्तो दिगम्बरः।
मुक्तकेशो वीरवेषः कुलमूर्तिधरो नर॥ ७९॥
कालीभक्तो भवेद् देवि! नाऽन्यथा क्षोभमाप्नुयात्।
दुग्धस्वादी योनिलेही संविदासवघूर्णितः॥ ८०॥
वेश्यालता-समायोगान् मासात् कल्पलता स्वयम्।
वेश्याचक्र-समायोगात् कालीचक्रसमः स्वयम्॥ ८१॥
वेश्यादेह-समायोगात् कालीदेहसमः स्वयम्।
वेश्यामध्यदतं वीरं कदा पश्यामि साधकम्॥ ८२॥

एवं वदति सा काली तस्माद् वेश्या वरा मता।
वेश्याकन्या तथा पीठ-जातिभेद-कुलक्रमात्॥ ८३॥
अकुलक्रमभेदेन ज्ञात्वा चाऽपि कुमारिकाम्।
कुमारीं पूजयेद् भक्त्या जपान्ते भवनं प्रिये!॥ ८४॥
पठेन्नासहस्त्रं यः कालीदर्शनभाग् भवेत्।
भक्त्या पूज्या कुमारीं च वेश्याकुलसमुद्भवाम्॥ ८५॥
वस्त्र-हेमादिभिस्तोष्य यत्नात् स्तोत्रं पठेच्छिवे!।
त्रैलोक्यविजयी भूयाद् दिवाचन्द्रप्रकाशकः॥ ८६॥
यद्यद् दत्तं कुमार्यै तु तदनन्तफलं भवेत्।
कुमारीपूजनफलं मया वक्तुं न शक्यते॥ ८७॥
चाञ्चल्यादुदिकं चिञ्चित् क्षम्यतामयमञ्जलिः।
एका चेत् पूजिता बाला द्वितीया पूजिता भवेत्॥ ८८॥
कुमार्यः शक्तयश्चैव सर्वमेतच्चराचरम्।
शक्तिमानीय तद्गात्रे न्यासजालं प्रविन्यसेत्॥ ८९॥
वामभागे च संस्थाप्य जपेन्नाम-सहस्त्रकम्।
सर्वसिद्धीश्वरो भूयान्नात्र कार्या विचारणा॥ ९०॥
श्मशानस्थो भवेत् स्वस्थो गलितं चिकुरं चरेत्।
दिगम्बरः सहस्त्रं च सूर्यपुष्पं समानयेत्॥ ९१॥
स्ववीर्येण युतं कृत्वा प्रत्येकं प्रजपन् हुनेत्।
पूज्य ध्यात्वा महाभक्त्या क्षमापालो नरः पठेत्॥ ९२॥
नखकेशं स्ववीर्य च यद्यत् सम्मार्जनीगतम्।
मुक्तकेशो दिशावासो मूलमन्त्रपुरःसरः॥ ९३॥

कुजवारे मध्यरात्रे होमं कृत्वा श्मशानके।
पठेन्नाम-सहस्त्रं यः पृथ्वीशाकर्षण भवेत्॥ ९४॥
पुष्पयुक्ते भगे देवि! संयोगानन्दतत्परः।
पुनश्चिकुरमासाद्य मूलमन्त्र जपन् शिवे!॥ ९५॥
चितावह्नौ मध्यरात्रे वीर्यमुत्सार्ययत्नतः।
कालिकां पूजयेत् तत्र पठेन्नाम-सहस्त्रकम्॥ ९६॥
पृथ्वीशाकर्षणं कुर्यान्नाऽत्र कार्या विचारणा।
कदलीवनमासाद्य लक्षमात्रं जपेन्नरः॥ ९७॥
मधुमत्या स्वयं देव्या सेव्यमानः स्मरोपमः।
श्रीमधुमतीत्युक्त्वा तथा स्थावर-जङ्गमान्॥ ९८॥
आकर्षिणीं समुच्चार्य ठं ठं स्वाहा समुच्चरेत्।
त्रैलोक्याकर्षिणी विद्या तस्य हस्ते सदा भवेत्॥ ९९॥
नदीं पुरीं च रत्नानि हेम-स्त्री-शैलभूरुहान्।
आकर्षयत्यम्बुनिधिं सुमेरुं च दिगन्ततः॥ १००॥
अलभ्यानि च वस्तूनि दूराद् भूमितलादपि।
वृत्तान्तं च सुरस्थानाद् रहस्यं विदुषामपि॥ १०१॥
राज्ञां च कथयत्येषा सत्यं सत्त्वरमादिशेत्।
द्वितीयवर्षपाठेन भवेत् पद्मावती शुभा॥ १०२॥
ॐ ह्रीं पद्मावतिपदं ततस्त्रैलोक्यनाम च।
वार्त्तां च कथय द्वन्द्वं स्वाहान्तो मन्त्र ईरितः॥ १०३॥
ब्रह्म-विष्णवादिकानां च त्रैलोक्ये यादृशी भवेत्।
सर्वं वदति देवेशी त्रिकालज्ञः कविः शुभः॥ १०४॥

त्रिवर्षं पठतो देवि! लभेद् भोगवतीं कलाम्।
महाकालेन दष्टोऽपि चितामध्यगतोऽपि वा॥१०५॥
तस्या दर्शनमात्रेण चिरञ्जीवी नरो भवेत्।
मृतसञ्जीविनीत्युक्त्वा मृतमुत्थापय द्वयम्॥१०६॥
स्वाहानेतो मनुराख्यातो मृतसञ्जीवनात्मकः।
चतुर्वर्षं पठेद्यस्तु स्वप्नसिद्धस्ततो भवेत्॥१०७॥
ॐ ह्रीं स्वप्नवाराहि कलिस्वप्ने कथयोचरेत्।
अमुकस्याऽमुकं देहि क्रींस्वाहान्तो मनुर्मतः॥१०८॥
स्वप्नसिद्धा चतुर्वर्षात्तस्य स्वप्ने सदा स्थिता।
चतुवर्षस्य पाठेन चतुर्वेदाधिपो भवेत्॥१०९॥
तद्धस्त-जलसंयोगान् मूर्खः काव्यं करोति च।
तस्य वाक्यपरिचयान् मूर्तिर्विन्दति काव्यताम्॥११०॥
मस्तके तु करं कृत्वा वद वाणीमिति ब्रुवन्।
साधको वाञ्छया कुर्यात्तत्तथैव भविष्यति॥१११॥
ब्रह्माण्डगोलके याश्च याः काश्चिज्जगतीतले।
समस्ताः सिद्धयो देविः करामलकवद् भवेत्॥११२॥
साधकःस्मृतिमात्रेण यावन्त्यः सन्ति सिद्धयः।
स्वयमायान्ति पुरतो जपादीनां तु का कथा?॥११३॥
विदेशवर्तिनो भूत्वा वर्तन्ते चेटका इव।
अमायां चन्द्रसन्दर्शश्चन्द्रग्रहममेव च॥११४॥
अष्टम्यां पूर्णचन्द्रत्वं चन्द्रसूर्याष्टकं तथा।
अष्टदिक्षु तथाऽष्टौ च करोत्येव महेश्वरी॥११५॥

अणिमाखेचरत्वं च चराऽचरपुरीगतिम्।
पादुका-खड्ग-वेताल-यक्षिणी-गुह्यकादयः॥ ११६॥
तिलको गुप्ततादृश्यं चराऽचरकथानकम्।
मृतसञ्जीविनीसिद्धिर्गुटिका च रसायनम्॥ ११७॥
उड्डीनसिद्धिर्देवेशिः षष्टिसिद्धीश्वरत्वकम्।
तस्य हस्ते वसेद् देविः नाऽत्र कार्या विचारणा॥ ११८॥
केतौ वा दुन्दुभो वस्त्रे विताने वेष्टने गृहे।
भित्तौ च फलके देवि! लेख्यं पूज्यं च यत्नतः॥ ११९॥
मध्ये चक्रं दशाङ्कोक्तं परितो नामलेखनम्।
तद्धारणान् महेशानिः त्रैलोक्यविजयी भवेत्॥ १२०॥
एको हि शतसाहस्त्रं निजित्य च रणाङ्गणे।
पुनरायाति च सुखं स्वगृहं प्रति पार्वति!॥ १२१॥
एको हि शतसन्दर्शी लोकानां भवति ध्रुवम्।
कलशं स्थाप्य यत्रेन नाम-साहस्त्रकं पठेत्॥ १२२॥
सेकः कार्यो महेशानि सर्वापत्तिनिवारणे।
भूत-प्रेत-ग्रहादीनां रक्षसां ब्रह्मरक्षसाम्॥ १२३॥
वेतालानां भैरवाणां स्कन्द-वैनायकादिकान्।
नाशयेत् क्षणमात्रेण नाऽत्र कार्या विचारणा॥ १२४॥
भस्माभिमन्त्रितं कृत्वा ग्रहग्रस्ते विलेपयेत्।
भस्मसं-क्षेपणादेव सर्वग्रहविनाशनम्॥ १२५॥
नवनीतं चाऽभिमनत्य स्त्रीणां दद्यान्महेश्वरिः।
वन्ध्या पुत्रप्रदा देविः नाऽत्र कार्या विचारणा॥ १२६॥

कण्ठे वा वामबाहौ वा योनौ वा धारणाच्छिवे:।
बहुपुत्रवती नारी सुभगा जायते ध्रुवम्॥१२७॥
पुरुषो दक्षिणाङ्गे तु धारयेत् सर्वसिद्धये।
बलवान् कीर्तिमान् धन्यो धामिक: साधक: कृती॥१२८॥
बहुपुत्रो रथानां च गजानामधिप: सुधी:।
कामिनीकर्षणोद्युक्त: क्रीं च दक्षिणकालिके॥१२९॥
क्रीं स्वाहा प्रजपेन् मन्त्रमयुतं नामपाठक:।
आकर्षणं चरेद् देवि: जलखेचरभूगतान्॥१३०॥
वशीकरणकामो हि हूं-हूं ह्रीं-ह्रीं च दक्षिणे।
कालिके पूर्वबीजानि पूर्ववत् प्रजपन् पठेत्॥१३१॥
उर्वशीमपि वशयेन्नाऽत्र कार्या विचारणा।
क्रीं च दक्षिणकालिके स्वाहायुक्तं जपेन्नर:॥१३२॥
पठेन्नाम-सहस्त्रं तु त्रैलोक्यं मारयेद् ध्रुवम्।
सद्भक्ताय प्रदातव्या विद्याराज्ञि शुभे दिने॥१३३॥
सद्विनीताय शान्ताय दान्तायाऽतिगुणाय च।
भक्ताय ज्येष्ठपुत्राय गुरुभक्तिपराय च॥१३४॥
वैष्णवाय प्रशुद्धाय शिवाबलिरताय च।
वेश्यापूजनयुक्ताय कुमारीपूजकाय च॥१३५॥
दुर्गाभक्ताय रौद्राय महाकालप्रजापिने।
अद्वैतभावयुक्ताय कालीभक्तिपराय च॥१३६॥
देयं सहस्त्र नामाख्यं स्वयं काल्या प्रकाशितम्।
गुरुदैवतमन्त्राणां महेशस्याऽपि पार्वति:॥१३७॥

अभेदेन स्मरेन् मन्त्रं स शिवः स गणाधिपः।
यो मन्त्रं भावयेन् मन्त्री स शिवो नाऽत्र संशयः॥ १३८॥
श शाक्तो वैष्णवः सौरः स एव पूर्णदीक्षितः।
अयोग्याय न दातव्यं सिद्धिरोधः प्रजायते॥ १३९॥
वेश्यास्त्री-निन्दकायाऽथ सुरासंवित्प्रनिन्दके।
सुरामुखीमनुं स्मृत्वा सुराचारो भविष्यति॥ १४०॥
आसां वाग्देवता घोरे परघोरे च हूं वदेत्।
घोररूपे महाघोरे मुखी भीमपदं वदेत्॥ १४१॥
भीषण्यमुपषष्ठयन्तं हेतूर्वामयुगे शिवे।
शिववह्नियुगास्त्रं हूं-हूं कवचमनुर्भवेत्॥ १४२॥
एतस्य स्मरणादेव दुष्टानां च मुखे सुरा।
अवतीर्णा भवेद देविः दुष्टानां भद्रनाशिनी॥ १४३॥
खलाय परतन्त्राय परनिन्दापराय च।
भ्रष्टाय दुष्टसत्त्वाय परवादरताय च॥ १४४॥
शिवाभक्ताय दुष्टाय परदाररताय च।
न स्तोत्रं दर्शयेद् देविः शिवाहत्याकरो भवेत्॥ १४५॥
कालिकानन्दहृदयः कालिकाभक्तिमानसः।
कालीभक्तो भवेत् सो हि धन्यरूपःस एव तु॥ १४६॥
कलौ काली कलौ काली कलौ काली वरप्रदा।
कलौ काली कलौ काली कलौ काली तु केवला॥ १४७॥
बिल्वपत्रसहस्राणि करवीराणि वै तथा।
प्रतिनाम्ना पूजयेद् हि तेन काली वरप्रदा॥ १४८॥

कमलानां सहस्त्रं तु प्रतिनाम्ना समर्पयेत्।
चक्रं सम्पूज्य देवेशिः कालिकावरमाप्नुयात्॥१४६॥
मन्त्रक्षोभयुतो नैव कलशस्थजलेन च।
नाम्ना प्रसेचयेद् देविः सर्वक्षोभविनाशकृत्॥१५०॥
तथा मदनकं देवि! सहस्त्रमाहरेद् व्रती।
सहस्त्रनाम्ना सम्पूज्य कालीवरमवाप्नुयात्॥१५१॥
चक्रं विलिख्य देहस्थं धारयेत् कालिकातनुः।
काल्यै निवेदितं यद्यदश भक्षयेच्छिवे!॥१५२॥
दिव्यदेहधरो भूत्वा कालीदेहे स्थिरो भवेत्।
नैवेद्य-निन्दकान् दुष्टान् दृष्ट्वा नृत्यन्ति भैरवाः॥१५३॥
योगिन्यश्च महाबीरा रक्तपानोद्यताः प्रिये!।
मांसा-ऽस्थि-चर्मणोद्युक्ता भक्षयन्ति न संशयः॥१५४॥
तस्मान्न निन्दयेत् देवि! मनसा कर्मणा गिरा।
अन्यथा कुरुते यस्तु तस्या नाशो भविष्यति॥१५५॥
क्रमदीक्षायुतानां च सिद्धिर्भवति नाऽन्यथा।
मन्त्रक्षोभश्च वा भूयात् क्षीणायुर्वा भवेद् ध्रुवम्॥१५६॥
पुत्रहारी स्त्रियोहारी राज्यहारी भवेद् ध्रुवम्।
क्रमदीक्षायुतो देवि! क्रमाद्राज्यमवाप्नुयात्॥१५७॥
एकवारं पठेद् देवि! सर्वपापविनाशनम्।
द्विवारं च पठेद् यो हि वाञ्छां विन्दति नित्यशः॥१५८॥
त्रिवारं च पठेद्यस्तु वागीशसमतां व्रजेत्।
चतुर्वारं पठेद् देवि! चतुर्वर्णाधियो भवेत्॥१५६॥

पञ्चवारं पठेद् देवि! पञ्चकामाधियो भवेत्।
षड्वारं च पठेद् देवि! षडैश्वर्याधियो भवेत्॥ १६०॥
सप्तवार पठेत् सप्तकामानां चिन्तितं लभेत्।
वसुवारं पठेद् देवि! दिगीशो भवित ध्रुवम्॥ १६१॥
नववारं पठेद् देवि! नवनाथसमो भवोत्।
दशवारं कीर्तयेद् यो दशाई: खेचरेश्वरः॥ १६२॥
विंशद्-वारं कीर्तयेद् यः सर्वैश्वर्यमयो भवेत।
पञ्चविंशतिवारैस्तु सर्वचिन्ताविनाशकः॥ १६३॥
पञ्चाशद्वारमावर्त्य पञ्चभूतेश्वरो भवेत्।
शतवारं कीर्तयेद् यः शतानन-समान-धीः॥ १६४॥
शतपञ्चकमावर्त्य राजराजेश्वरो भवेत्।
सहस्रावर्तनाद् देवि! लक्ष्मीरावृणुते स्वयम्॥ १६५॥
त्रिसहस्त्रं समावर्त्य त्रिनेत्रसदृशो भवेत्।
पञ्चसाहस्त्रमावर्त्य कामकोटिविमोहनः॥ १६६॥
दशसहस्त्रावर्तनैर्भवेद् दशमुखेश्वरः।
पञ्चविंशतिसाहस्त्रैश्चतुर्विंशति-सिद्धिधृक॥ १६७॥
लक्षावर्तनमात्रेण लक्ष्मीपतिसमो भवेत्।
लक्षत्रयादवर्त्तनात्तु महादेवं विजेष्यति॥ १६८॥
लक्षपञ्चकमावर्त्त्य कलापञ्चकसंयुतः।
दशलक्षावर्तनात्त दशविद्यासिरुत्तमा॥ १६९॥
पञ्चविंशतिलक्षैस्तु दशविद्येशवरो भवेत्।
पञ्चाशल्लक्षमावृत्य महाकालसमो भवेत्॥ १७०॥

कोटिमावर्तयेद्यस्तु कालीं पश्यति चक्षुषा।
वरदानोद्युक्तकरां महाकाल समन्विताम्॥ १७१॥
प्रत्यक्षं पश्यति शिवे! तस्या देवि भवेद् ध्रुवम्।
श्रीविद्या-कालिका-तारा-त्रिशक्तिविजयी भवेत्॥ १७२॥
विधेर्लिपिं च सम्मार्ज्य किङ्करत्वं विसृज्य च।
महाराज्यमवाप्नोति नाऽत्र कार्या विचारणा॥ १७३॥
त्रिशक्तिविषये देवि! क्रमदीक्षा प्रकीर्तिता।
क्रमदीक्षायुतो देवि! राजा भवित निश्चितम्॥ १७४॥
क्रमदीक्षाविहीनस्य फलं पूर्वमिहेरितम्।
करमदीक्षायुतो देवि! शिव एव न चाऽपः॥ १७५॥
क्रमदीक्षासमायुक्तः काल्योक्तसिद्धिभाग् भवेत्।
क्रमदीक्षाविहीनस्य सिद्धिहानिः पदे पदे॥ १७६॥
अहो जन्मवतां मध्ये धन्यः क्रमयुतः कलौ।
तत्राऽपि धन्यो देवेशि! नामसहस्त्रपाठकः॥ १७७॥
दशकालीविधौ देवि! स्तोत्रमेतत् सदा पठेत्।
सिद्धिं विन्दति देवशि! नाऽत्र कार्या विचारणा॥ १७८॥
काली काली महाविद्या कलौ काली च सिद्धिदा।
कलौ काली च सिद्धा च कलौ काली वरप्रदा॥ १७९॥
कलौ काली साधकस्य दर्शनार्थं समुद्यता।
कलौ काली केवला स्यान्नाऽत्र विचारणा॥ १८०॥
नाऽन्यविद्या नाऽन्यविद्या नाऽन्यविद्या कलौ भवेत्।
कलौ कालीं विहायाऽथ यः कश्चित् सिद्धिकामुकः॥ १८१॥

स तु शक्तिं विना देवि! रतिसम्भोगमिच्छति।
कलौ कालीं विना देवि! यः कश्चित् सिद्धिमिच्छति॥ १८२॥
स नीलसाधनं त्यक्त्वा परिभ्रमति सर्वतः।
कलौ कलीं विहायाऽथयः कश्चिन् मोक्षमिच्छति॥ १८३॥
गुरुध्यानं परित्यज्य सिद्धिमिच्छति साधकः।
कलौ कलीं विहायऽथयः कश्चिद् राज्यमिच्छति॥ १८४॥
स भोजनं परित्यज्य भिक्षुवृत्तिमभीप्सति।
स धन्यः स च विज्ञानी स एव सुरपूजितः॥ १८५॥
स दीक्षितः सुखी साधुः सत्यवादी जितेन्द्रियः।
स वेदवक्ता स्वाध्यायी नाऽत्र कार्या विचारणा॥ १८६॥
शिवरूपं गुरुं ध्यात्वा शिवरूप गुरुं स्मरेत्।
सदाशिवः स एवं स्यान्नाऽत्र कार्या विचारणा॥ १८७॥
स्वस्मिन् कालीं तु सम्भाव्य पूजयेज्जगदम्बिकाम्।
त्रैलोक्यविजयी भूयान्नाऽत्र कार्या विचारणा॥ १८८॥
गोपनीयं गोपनीयं गोपनीयं प्रयत्नतः।
रहस्याऽतिरहस्यं च रहस्याऽतिरहस्यकम्॥ १८९॥
श्लोकार्द्धं पादमात्रं वा पादार्द्धं च तदर्द्धकम्।
नामार्द्धं यः पठेद् देवि! न वन्ध्यदिवसं न्यसेत॥ १९०॥
पुस्तकं पूजयेद् भक्त्या त्वरितं फलसिद्धये।
न च मारीभयं तत्र न चाऽग्निर्वायुसम्भवम्॥ १९१॥
न भूतादिभयं तत्र सर्वत्र सुखमेधते।
कुङ्कुमालक्तकेनैव रोचनाऽगुरुपोगतः॥ १८२॥

भूर्जपत्रे लिखेत पुस्तकं सर्वकामार्थसिद्धये ।। १६३ ।।

इति गदितमशेष कालिकावर्णरूपं
प्रपठति यदि भक्त्या सर्वसिद्धीश्वरः स्यात्।
अनभविसुखकामः सर्वविद्याभिरामो
भवति सकलसिद्धिः सर्ववीरासमृद्धिः ।। १६४ ।।

इत संक्षेपतः प्रोक्तं किमन्यच्छ्रोतुमिच्छसि? ।। १६५ ।।

।। कालीसहस्त्रनामस्तोत्रं समाप्तः ।।

शास्त्रकारों के मत से इस कलिकाल में काली ही अपने अर्चन कर्ता को प्रत्यक्ष दर्शन देने के लिए सदैव तत्पर रहती हैं। कलयुग में केवल काली ही विद्यमान हैं, इसलिये इसमें संदेह का प्रश्न ही नहीं उठता। काली सहस्त्रनाम का पाठ करने से उस स्थान पर अग्नि, वायु से कभी भी कष्ट नहीं होता। इसके अतिरिक्त भूत, राक्षस, पिशाच उस स्थान पर वास नहीं करते। वह स्थान सदैव सुखमय रहता है।

पाठ कर्ता को सम्पूर्ण कामना की सिद्धि के लिए शुद्ध भोजपत्र पर इस सहस्त्र नाम को अंकित करना चाहिये। क्योंकि इस कलिकाल में केवल महाकाली ही श्रेष्ठ है एवं वर प्रदान करने में समर्थ हैं। काली सहस्त्रनाम के प्रत्येक नाम मन्त्र से बिल्वपत्र कर्वी-पुष्प काली को समर्पित करके पूजन करना चाहिये।

महाकाली की निन्दा करने वाले दुष्ट एवं पतितों को भैरव तथा योगिनियाँ स्वयं आकर उनके रक्त का पान करती हैं तथा उनके शरीर के मांस एवं अस्थि तथा चमड़े का भी भक्षण करती है। इसलिये काली की किसी भी अवस्था में निन्दा नहीं करनी चाहिये। जो भी उनकी निन्दा बिना उनके महत्व को जाने करता है। उस प्राणी का विनाश होना सुनिश्चित है।

इस कालीसहस्त्र नाम का प्रतिदिन एक बार अवश्य ही पाठ करना चाहिये। इसके पाठ करने मात्र से समस्त प्रकार के कष्टों और पापों का विनाश होना निश्चित है। जो प्राणी इसी प्रकार काली पाठ वृद्धि से पाठ करता है, उसे नाना प्रकार के फल प्राप्त होते हैं।

कालिका-शतनामस्तोत्रम्

भैरव उवाच–

शतनाम प्रवक्ष्यमि कालिकाया वरानने!।
यस्य प्रपठनाद् वाग्मी सर्वथ्र विजयी भवेत्॥ १॥
काली कपालिनी कान्ता कामदा कामसुन्दरी।
कालरात्रिः कालिका च कालभैरवपूजिता॥ २॥
कुरुकुल्ला कामिनी च कमनीयस्वभाविनी।
कुलीना कुलकर्त्री च कुलवर्त्मप्रकाशिनी॥ ३॥
कस्तूरीरसनीला च काम्या कामस्वरूपिणी।
ककारवर्णनिलया कामधेनुः करालिका॥ ४॥
कुलकान्ता करालास्या कामार्ता च कलावती।
कृशोदरी च कामाख्या कौमारी कुलपालिनी॥ ५॥
कुलजा कुलकन्या च कलहा कुलपूजिता।
कामेश्वरी कामकान्ता कुञ्जरेश्वरगामिनी॥ ६॥
कामदात्री कामहर्त्री कृष्णा चैव कपर्दिनी।
कुमुदा कृष्णदेव च कालिन्दी कुलपूजिता॥ ७॥
काश्यपी कृष्णमाता च कुलिशाङ्गी कला तथा।
क्रींरूपा कुलगम्या च कमला कृष्णपूजिता॥ ८॥

कृशाङ्गी किन्नरी कर्त्री कलकण्ठी च कार्तिकी।
कम्बुकण्ठी कौलिनी च कुमुदा कामजीविनी॥ ९॥
कुलस्त्री कीर्त्तिका कृत्या कीर्तिश्च कुलपालिका।
कामदेवकला कल्पलता कामाङ्गवर्द्धिनी॥ १०॥
कुन्ती च कुमुदप्रीता कदम्ब-कुसुमोत्सुका।
कादम्बिनी कमलिनी कृष्णानन्दप्रदायिनी॥ ११॥
कुमारीपूजनरता कुमारीगणशोभिता।
कुमारीरञ्जनरता कुमारीव्रतधारिणी॥ १२॥
कङ्काली कमनीया च कामशास्त्रविशारदा।
कपालखट्वाङ्गधरा कलिभैरवरूपिणी॥ १३॥
कोटरी कोटराक्षी च काशी कैलाशवासिनी।
कात्यायिनी कार्यकरी काव्यशास्त्रप्रमोदिनी॥ १४॥
कामाकर्षणरूपा च कामपीठनिवासिनी।
कङ्गिनी काकिनी कुत्सिता कलहप्रिया॥ १५॥
कुण्डगोलोद्भवप्राणा कौशिकी कीर्तिवर्द्धिनी।
कुम्भस्तनी कटाक्षा च काव्या कोकनदप्रिया॥ १६॥
कान्तारवासिनी कान्तिः कठिना कृष्णवल्लभा।
इति ते कथितं देवि! गुह्याद् गुह्यातरं परम्॥ १७॥
प्रपठेद् य इदं नित्यं कालीनाम शताष्टकम्।
त्रिषु लोकेषु देवेशि! तस्याऽसाध्यं न विद्यते॥ १८॥
प्रातः काले च मध्याह्ने सायाह्ने च सदा निशि।
यः पठेत् परया भक्त्या कालीनाम शताष्टकम्॥ १९॥

कालिका तस्य गेहे च संस्थानं कुरुते सदा।
शून्यागारे श्मशाने वा प्रान्तरे जलमध्यतः॥ २०॥
वह्निमध्ये च सङ्ग्रामे तथा प्राणास्य संशये।
शताष्टकं जपन्मन्त्री लभते क्षेममुत्तमम्॥ २१॥
कालीं संस्थाप्य विधिवत् स्तुत्वा नामशताष्टकैः।
साधकः सिद्धिमाप्नोति कालिकायाः प्रसादतः॥ २१॥

॥ कालिका–शतनाम–स्तोत्र समाप्तः॥

कालिका शतनाम स्तोत्र में काली के एकसौआठ नामों का समावेश है। ये काली के अत्यन्त गुप्त एकसौआठ नाम हैं। जो भी प्राणी काली के इन एकसौआठ नामों का प्रतिदिन पाठ करता है। उसे इस संसार में किसी भी वस्तु की कमी नहीं होती। इसके पाठ करने के लिये तीन काल बताये गये हैं। यथा–प्रातःकाल, मध्यान काल, सायंकाल। इन तीनों कालों में जो भी प्राणी त्रिकाल काली के एक सौ आठ नामों का श्रद्धा एवं भक्ति से अपने गृह में पाठ करता है। उसके गृह में काली सदैव निवास करती है। बड़ी से बड़ी विपत्ति एवं कठिनाईयों के समय भी जो भी प्राणी क्रम से भगवती काली के इन नामों का पाठ करते हैं। वह प्राणी संसार में कीर्ति यश, वैभव, धन धान्य को प्राप्त करते हुये सदैव सुखी जीवन व्यतीत करते हैं।

काली-हृदयम्

श्रीमहाकाल उवाच–

महाकौतूहलस्तोत्रं हृदयाख्यं महोत्तमम्।
शृणु प्रिये! महागोप्यं दक्षिणायाः सुगोपितम्॥ १॥
अवाच्यमपि वक्ष्यामि तव प्रीत्या प्रकाशितम्।
अन्येभ्यः कुरु गोप्य च सत्यं-सत्यं च शैलजे॥ २॥

श्रीदेव्युवाच–

कस्मिन् युगे समुत्पन्नं केन स्तोत्रं कृतं पुरा?।
तत्सर्वं कथ्यतां शम्भो! महेश्वर दयानिधे!॥ ३॥

श्रीमहाकाल उवाच–

पुरा प्रजापतेः शीर्षश्छेदनं कृतवानहम्।
ब्रह्म-हत्याकृतैः पापैर्भैरवत्वं ममागतम्॥ ४॥
ब्रह्महत्याविनाशाय कृतं स्तोत्रं मया प्रिये!।
कृत्याविनाशकं स्तोत्रं ब्रह्महत्यापहारकम्॥ ५॥

विनियोगः–

ॐ अस्य श्रीदक्षिणकाल्या हृदयस्तोत्रमन्त्रस्य श्रीमहाकाल-ऋषिरुष्णिक्छन्दः श्रीदक्षिणकालिका देवता, क्रीं बीजं, ह्री शक्तिः, नमः कीलकं, सर्वत्र सदा जपे विनियोगः।

हृदयादिन्यासः–

ॐ क्रां हृदयाय नमः, ॐ क्रीं शिरसे स्वाहा, ॐ क्रूं शिखायै वषट्, ॐ क्रैं कवचाय हुम्, ॐ क्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ क्रः अस्त्राय फट्।

ध्यानम्–

ध्यायेत् कालीं महामायां त्रिनेत्रां बहुरूपिणीम्।
चतुर्भुजां लल्लज्जिह्वां पूर्णचन्द्रनिभाननाम्॥ १॥
नीलोत्पलदलप्रख्यां शत्रुसङ्घविदारिणीम्।
नरमुण्डं तथा खड्गं कमलं वरदं तथा॥ २॥
बिभ्राणां रक्तवदनां दंष्ट्रालीं घोररूपिणीम्।
अट्टट्टहासनिरतां सर्वदा च दिगम्बराम्॥ ३॥

शवासनस्थितां देवीं मुण्डमालाविभूषिताम्।
इति ध्यात्वा महादेवीं ततस्तु हृदयं पठेत्॥ ४॥
ॐ कालिका घोररूपाद्या सर्वकामफलप्रदा।
सर्व-देवस्तुता देवी शत्रुनाशं करोतु मे॥ ५॥
ह्रीं-ह्रीं स्वरूपिणी श्रेष्ठा त्रिषु लोकेषु दुर्लभा।
तव स्नेहान् मयाख्यातं न देयं यस्य कस्यचित्॥ ६॥
अथ ध्यान प्रवक्ष्यामि निशामय परात्मिके।
यस्य विज्ञानमात्रेण जीवन्मुक्तो भविष्यति॥ ७॥
नागयज्ञोपवीतां च चन्द्रार्द्धकृतशेखराम्।
जटाजूटां च सञ्चिन्त्य महाकालसमीपगाम्॥ ८॥
एवं न्यासादयः सर्वे ये प्रकुर्वन्ति मानवः।
प्राप्नुवन्ति च ते मोक्षं सत्यं-सत्यं वरानने!॥ ९॥
यन्त्रं शृणु परं देव्याः सर्वार्थ सिद्धिदायकम्।
गोप्याद् गोप्यतरं गोप्यं गोप्याद् गोप्यतरं महत्॥ १०॥
त्रिकोणं पञ्चकं चाऽष्टकमलं भूपुरान्वितम्।
मुण्ड-पङ्क्तिं च ज्वालां च कालियन्त्रं सुसिद्धिदम्॥ ११॥
मन्त्रं तु पूर्व-कथितं धारयस्व सदा प्रिये!।
देव्या दक्षिण-काल्यास्तु नाममालां निशामय॥ १२॥
काली दक्षिणकाली च कृष्णरूपा परात्मिका।
मुण्डमाली विशालाक्षी सृष्टिसंहार कारिका॥ १३॥
स्थितिरूपा महामाया योगिनिद्रा भगात्मिका।
भागसर्पिः पानरता भगोद्योता भगाङ्गजा॥ १४॥

आद्या सदा नवा घोरा महातेजाः करालिका।
प्रेतवाहा सिद्धिलक्ष्मीरनिरुद्धा सरस्वती॥ १५॥
एतानि नाममाल्यानि ये पठन्ति दिने-दिने।
तेषां दासस्य दासोऽहं सत्यं-सत्यं महेश्वरि!॥ १६॥
कालीं कालहरां देवीं कङ्कालबीजरूपिणीम्।
काकरूपां कालातीतां कालिकां दक्षिणां भजे॥ १७॥
कुण्डगोलप्रियां देवीं स्वयम्भूकुसुमेरताम्।
रतिप्रियां महारौद्रीं कालिकां प्रणमाम्यहम्॥ १८॥
दूतीप्रियां महादूतीं दूतीयोगेश्वरी पराम्।
दूतीयोगोद्भवरतां दूतीरूपां नमाम्यहम्॥ १९॥
क्रींमन्त्रेण जलं जप्त्वा सप्तधा सेचनेन तु।
सर्वे रोगा विनश्यन्ति नाऽत्र कार्या विचारणा॥ २०॥
क्रींस्वाहान्तै-र्महामन्त्रैश्चन्दनं साधयेत्ततः।
तिलकं क्रियते प्राज्ञैर्लोको वश्यो भवेत् सदा॥ २१॥
क्रीं-हूं-ह्रींमन्त्रजप्तेन चाऽक्षत सप्तभिः प्रिये!।
महाभयविनाशश्च जायते नाऽत्र संशयः॥ २२॥
क्रीं-ह्रीं-हूं-स्वाहामन्त्रेण श्मशानाऽग्निं च मन्त्रयेत्।
शत्रोर्गृहे प्रतिक्षिप्त्वा शत्रोर्मृत्युर्भविष्यति॥ २३॥
हूं-ह्रीं-क्रीं चैव उच्चाटे पुष्पं संशोध्य सप्तधा।
रिपूणां चैव चोच्चाटन्नयत्येव न संशयः॥ २४॥
आकर्षणे च क्रीं-क्रीं-क्रीं जप्त्वाऽक्षतं प्रतिक्षिपेत्।
सहस्त्रयोजनस्था च शीघ्रमागच्छति प्रिये!॥ २५॥

क्रीं-क्रीं-क्रीं-हूं-हूं-ह्रीं-ह्रीं च कज्जलं शोधितं तथा।
तिलकेन जगन्मोहं सप्तधा मन्त्रमाचरेत्॥ २६॥
हृदयं परमेशानि सर्वपापहरं परम्।
अश्वमेधादि-दानानां कोटि-कोटिगुणोत्तरम्॥ २७॥
कन्यादानादि-दानानां कोटि-कोटिगुणं फलम्।
दूत-यागादियागानां कोटि-कोटिफलं स्मृतम्॥ २८॥
गङ्गादिसर्वतीर्थाणां फलं कोटिगुणं स्मृतम्।
एकधा पाठमात्रेण सत्यं-सत्यं मयोदितम्॥ २६॥
कौमारी स्वेष्टरूपेण पूजां कृत्वा विधानतः।
पठेत् स्तोत्रं महेशानि! जीवन्मुक्ताः स उच्यते॥ ३०॥
रजस्वलाभगं दृष्ट्वा पठेदेकाग्र-मानसः।
लभते परमं स्थानं देवीलोके वरानने!॥ ३१॥
महादुःखे महारोगे महासङ्कटके दिने।
महाभये महाघोरे पठेत् स्तोत् महोत्तमम्॥
सत्यं-सत्यं पुनः सत्यं गोपयेनू मातृजारवत्॥ ३२॥

॥ काली–हृदयं समाप्तः॥

उपरोक्त काली हृदय नामक स्तोत्र समस्त पापों को नष्ट करते हुए अनेक प्रकार के मनोवांछित फलों को कर्ता को प्रदान करता है। कन्यादान तथा देवी–देवताओं के यज्ञों से भी श्रेष्ठ इसे कहा गया है। क्योंकि जो भी प्राणी इस कालीहृदय का तीनों कालों के अन्दर मात्र एक ही काल में केवल एक बार श्रद्धा एवं भक्ति से इसका पाठ करता है। उसे गंगादि समस्त तीर्थों से भी श्रेष्ठ फल प्राप्त होते हैं। प्राणी चाहे जितने भी दुःख, कष्ट, महामारी एवं

असाध्य रोगों से घिरा हो, यदि वह इस स्तोत्र का नियम से एवं संयम से पाठ करता है तो उसके सभी प्रकार के रोगों एवं कष्टों की निवृत्ति निःसंदेह होती है।

काली-स्तोत्रम्

प्राग्-देहस्थो यदाऽहं तव चरणयुगं नाश्रितो नाऽर्चितोऽहं

तेनाद्याकीर्तिवर्गै-र्जठरज-दहनैबार्द्ध्यमानो बलिष्ठैः।

क्षिप्त्वा जन्मान्तरान्नः पुनरिह भविता क्वाश्रयः क्वाऽपि सेवा

क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटितवदने कामरूपे कराले॥ १॥

बाल्ये बालाऽभिलाषै-र्जडित-जडमति-र्बाललीलाप्रसक्तो

न त्वां जानामि मातः! कलिकलुषहरां भोग-मोक्षप्रदात्रीम्।

नाचारो नैव पूजा न च यजनकथा च स्मृतिनैव सेवा।

क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटितवदने कामरूपे कराले॥ २॥

प्राप्तोऽहं यौवनं चेद् विषधर-सदृशैरिन्द्रियैर्द्दष्टगात्रो

नष्टप्रज्ञः परस्त्रीपरधनहरणे सर्वदा साऽमिलापः।

त्वत् पादाम्भोजयुग्मं क्षणमपि मनसा न स्मृतोऽहं कदापि

क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटितवदने कामरूपे कराले॥ ३॥

प्रौढा भिक्षामिलाषी सुतदुहितृ-कलत्रार्थमन्नादिचेष्टः

क्व प्राप्सये कुत्र यामीत्यनुदिनमनिशं चिन्तया भग्नदेहः।

नो ते ध्यानं न चास्था न च भजनविधिर्नामसंकीर्त्तनं वा।

क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटितवदने कामरूपे कराले॥ ४॥

वृद्धत्वे बुद्धिहीनः कृशविवशतनुः श्वासकासतिसारैः
कर्मानर्होऽक्षिहीनः प्रगलितदशनाः क्षुप्तिपासाभिभूतः।
पश्चात्तापेन दग्धो मरणमनुनिंद ध्येयमात्रं न चाऽन्यत्
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटितवदने कामरूपे कराले॥ ५॥
कृत्वा स्नानं दिनादौ क्वचिपदि सलिलं नो कृतं नैव पुष्पं
ते नैवेद्यादिकं च क्वचिदपि न कृतं नाऽपि भावो न भक्तिः
न न्यासो नैव पूजा न च गुणकथनं नाऽपि चाऽर्चा कृता ते
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटिवदने कामरूपे कराले॥ ६॥
जनामि त्वां न चाऽहं भव-भयहरणीं सर्वसिद्धिप्रदात्रीं
नित्यानन्दोदयाढ्यां त्रितयगुणमयीं नित्यशुद्धोदयाढ्याम्।
मिथ्याकर्माभिलषैरनुदिनमभितः पीडितो दुःखसङ्घैः
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटिवदने कामरूपे कराले॥ ७॥
कालाभ्रां श्यामलाङ्गी विगलित चिकुरां खड्ग-मुण्डाभिरामां
त्रासत्राणेष्टदात्रीं कुणपगणशिरोमालिनीं दीर्घनेत्राम्।
संसारस्यैकसारं भवजननहरां भावितो भावनाभिः
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटिवदने कामरूपे कराले॥ ८॥
ब्रह्मा-विष्णुस्तथेशः परिणमति सदा त्वत् पदाम्भोजयुग्मं
भाग्याभावान्न चाऽहं भवजननि भवत् पादयुग्मं भजामि।
नित्यं लोभ-प्रलोभैः कृतवशमतिः कामुकस्त्वा प्रयाचे
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटिवदने कामरूपे कराले॥ ९॥

रागद्वैषैः प्रमत्तः कलुषयुततनुः कामनाभोगलुब्धः
कार्याऽकार्याविचारी कुलमतिरहितः कौलसङ्घैर्विहीनः।
क्व ध्यानं ते क्व चाऽर्चा क्व च मनु जपन्नैव किञ्चत् कृतोऽहं
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटिवदने कामरूपे कराले॥ १०॥

रोगी दुःखी दरिद्रः परवशकृपणः पांशुलः पापचेता
निद्रालस्यप्रसक्तः सुजठरभरणे व्याकुलः कल्पितात्मा।
किं ते पूजाविधानं त्वयि क्व च नुमतिः क्वानुरागः क्व चास्था
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटितवदने कामरूपे कराले॥ ११॥

मिथ्याव्यामोहरागैः परिवृतमनसः क्लेशसङ्घान्वितस्य
क्षुन्निद्रौघान्वितस्य स्मरणविरहिणः पापकर्मप्रवृत्तेः।
दारिद्युस्य क्व धर्मः क्व च जननि रुचिः क्व स्थितिः साधुसङ्घैः।
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटितवदने कामरूपे कराले॥ १२॥

मातस्यातस्य देहाज्जननि जठरगः संस्थितस्त्वद्वशेऽह
त्वं हर्त्रा कारयित्री करणगुणमयी कर्महेतु-स्वरूपा।
त्वं बुद्धिश्चित्तसंस्थाऽप्यहमतिभवती सर्वमेतत् क्षमस्व
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटिवदने कामरूपे कराले॥ १३॥

त्वं भूमिस्त्वं जलं च त्वमसि हुतवहस्त्वं जगद्वायुरूपा
त्वं चाऽऽकाशं मनश्च प्रकृतिरसि महत्पूर्विका पूर्वपूर्वा।
आत्मा त्वं चाऽसि मातः! परमसि भवती त्वत् परं नैव किञ्चित्
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटितवदने कामरूपे कराले॥ १४॥

त्वं काली त्वं च तारा त्वमसि गिरीसुता सुन्दरी भैरवी त्वं
त्वं दुर्गा छिन्नमस्ता त्वमसि च भुवना त्वं लक्ष्मीः शिवा त्वम्।
धूमा मातङ्गिनी त्वं त्वमसि च बगला मङ्गलादिस्तवाख्या
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटितवदने कामरूपे कराले॥ १५॥
स्तोत्रेणाऽनेन देवीं परिणमति शतं विघ्नता नाशमेति।
दुष्कृत्या दुर्गसङ्घ परितरति शतं विघ्नता नाशमेति।
नाधिर्व्याधिः कदाचित् भवति यदि पुनः सर्वदा सापराधः
सर्वं तत्कामरूपे त्रिभुवनजननि क्षामये पुत्रबुद्धया॥ १६॥
ज्ञाता वक्ता कवीशो भवति धनपतिर्दानशीलो दयात्मा
निःपापी निःकलङ्की कुलपतिकुशलः सत्यवाग् धार्मिकश्च।
नित्यानन्दो दयाढ्यः पशुगणविमुखः सत्पथाचारशीलः
संसाराब्धिं सुखेने प्रतरति गिरिजापादयुग्मावलम्बात्॥ १७॥

॥ काली–स्तोत्र समाप्तः॥

उपरोक्त कालीस्तोत्र का पाठ प्रात:काल स्नानादि दैनिक एवं नित्यक्रियाओं को करके कर्ता को श्रद्धा एवं भक्ति से करना चाहिये। क्योंकि इसके पाठ करने मात्र से ही घर में दरिद्रता का अन्त होता है। इसका कारण यह है कि इसके पन्द्रहवें श्लोक में काली के प्रमुख नामों का वर्णन तथा स्पष्ट लिखा है कि हे माँ, आप समस्त अपराधों एवं पापों को दूर करने में समर्थ हैं।

अत: ऐसे स्तोत्र का जो भी प्राणी श्रद्धा एवं भक्ति से सदैव पाठ करते हैं। उनके नाना प्रकार के पापों का अन्त होता है। उनके परिवार में आदि--व्याधि का कभी भी प्रवेश नहीं होता है। वह सदैव भयमुक्त होकर अपना जीवनयापन करते हैं। अत: कल्याण की प्राप्ति के लिये सभी प्राणियों को इस स्तोत्र का सदैव पाठ करना चाहिये।

कर्पूर-स्तोत्रम्

विनियोग:

ॐ अस्य श्रीकर्पूरस्तवराजस्य महाकाल ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीदक्षिणाकालिका देवता, हलो बीजानि, स्वराः शक्तयः, अव्यक्तं कीलकं, श्रीदक्षिणाकालिका-देव्याप्रसादसिद्धचर्थं तत्तसम्पूर्णकामनासिद्धये वा विनियोगः।

कर्पूरं मध्यमा-ऽन्त्य-स्वर-पररहितं सेन्दुवामाक्षियुक्तं
बीजं ते मातरेतत्त्रिपुर-हरवधु! त्रिष्कृतं ये जपन्ति।
तेषां गद्यानि-पद्यानि च मुरवकुहरादुल्लसन्तयेव वाचः
स्वच्छन्दं ध्वान्त-धाराधर-रुचिरुचिरे सर्वसिद्धिं गतानाम्॥ १॥

ईशानः सेन्दुवामश्रवणपरिगतो बीजमन्यन् महेशि!
द्वन्द्वं ते मन्दचेता यदि जपति जनो वारमेकं कदाचित्।
जित्वा वाचामधीसं धनदमपि चिरं मोहयन्नम्बुजाक्षी
वृन्दं चन्द्रार्धचूडे प्रभवति स महाघोरशावावतंसे॥ २॥

ईशो वैश्वनारस्थः शशधरविलसद् वामनेत्रेण युक्तो
बीजं ते द्वन्द्वमन्यद् विगलितचिकुरे कालिके ये जपन्ति।
द्वेष्टारं घ्नन्ति ते च त्रिभुवनमभितो वश्यभावं नयन्ति
सृक्क-द्वन्द्वास्त्र-धाराद्वयधर-वदने दक्षिणे कालिकेति॥ ३॥

ऊर्ध्वं वामे कृपाणं कर-कमलतले छिन्नमुण्डं ततोऽधः
सव्येऽभीतिं वरं च त्रिजगदघहरे दक्षिणे कालिके च।
जप्त्वैतन् नाम ये वा तव विमलतनुं भावयन्त्येतदम्ब!
तेषामष्टौ करस्थाः प्रकटितरदने सिद्धयस्त्र्यम्बकस्य॥ ४॥

वर्गाद्यं वह्निसंस्थं विधुरतिललितं तत्त्रयं कूर्चयुग्मं

लज्जाद्वन्द्वं च पश्चात् स्मितमुखि तदधष्टद्वयं योजयित्वा।

मातर्ये त्वां जपन्ति स्मरहरमहिले भावयन्तः स्वरूपं

ते लक्ष्मीलास्यलीला-कमलदलदृशः कामरूपा भवन्ति॥ ५॥

प्रत्येकं वा द्वयं वा त्रयमपि च परं बीजमत्यन्तगुह्यं

त्वन् नाम्ना योजयित्वा सकलमपि सदा भावयन्तो जपन्ति।

तेषां नेत्रारविन्दे विहरति कमला वक्त्रशुभ्रांशुविम्बे

वाग्देवी, देवि! मुण्ड-स्त्रगतिशय-लसत्-कण्ठि-पीनस्तनाढ्य॥ ६॥

गतासूनां बाहु-प्रकरकृतकाञ्ची-परिलसन्

नितम्बां दिग्वस्त्रां त्रिभुवनविधात्रीं त्रिनयनाम्।

श्मशानस्थे तल्पे शवहृदि महाकालसुरत-

प्रसक्तां त्वां ध्यायन् जननि जडचेता जडचेता अपि कतिः॥ ७॥

शिवाभिर्घोराभिः शवनिवहमुण्डास्थि-निकरैः

परं सङ्कीर्णायां प्रकटितचितायां हरवधूम्।

प्रविष्टां सन्तुष्टामुपरिसुरतेनातियुवतीं

सदा त्वां ध्यायन्ति क्वचिदपि न तेषां परिभवः॥ ८॥

वदामस्ते किं वा जननि! वयमुच्चैर्जडधियो

न धाता नापीशो हरिरपि न ते वेत्ति परमम्।

तथापि त्वद् भक्तिर्मुखरयति चास्माननमिते

तदेतत् क्षन्तव्यं न खलु पशुरोषः समुचितः॥ ९॥

समन्तादापीन–स्तन–जघन–दृगयौवनवती–
रतासक्तो नक्तं यदि जपति भक्तस्तव मनुम्।
विवासास्त्वां ध्यायन् गलित–चिकुरस्तस्य वशगाः
समस्ताः सिद्धौधा भुवि चिरतरं जीवति कविः॥ १०॥

समाः स्वस्थीभूतां जपति विरपीतां यदि सदा
विचिन्त्य त्वां व्यायन्नतिशय–महाकाल–सुरताम्।
तदा तस्य क्षोणीतल–विहरमाणस्य विदुषः
कराम्भोजे वश्या हरवधु महासिद्धिनिवहाः॥ ११॥

प्रसूते संसारं जननि! जगतीं पालयति च
समस्तं क्षित्यादि प्रलयसमये संहरति च।
अतस्त्वां धाताऽपि त्रिभुवनपतिः श्रीपतिरति
महेशोऽपि प्रायः सकलमपि किं स्तौति भवतीम्॥ १२॥

अनेके सेवन्ते भवदधिक–गीर्वाण–निवहान्
विमूढास्ते मातः! किमपि नहि जानन्ति परमम्।
समाराध्यामाद्यां हरिहरविरंच्यादि–विबुधैः
प्रपन्नोऽस्मि स्वैरं रतिरसमहानन्द–निरताम्॥ १३॥

धरित्री कीलालं शुचिरपि समीरोऽ गगनं
त्वमेका कल्याणी गिरिशरमणी कालि सकलम्।
स्तुतिः का ते मातर्निजकरुणया मामगितकं
प्रसन्ना त्वं भूया भवमनु न भूयान् मम जनुः॥ १४॥

श्मशानस्थः स्वस्थो गलितचिकुरो दिक् पटधरः
सहस्त्र त्वर्काणां निजगलितवीर्येण कुसुमम्।
जपंस्तत् प्रत्येकं मनुमपि तव ध्याननिरतो
महाकलि! स्वैरं स भवति धरित्री परिवृढः॥ १५॥

गृहे संमार्जन्या परिगलितवीर्यं हि चिकुरं
समूलं मध्याह्ने वितरति चितायां कुजदिने।
समुच्चार्य प्रेम्णा मनुमपि सकृत् कालि! सततं
गजारूढो याति क्षितिपरिवृढः सत् कविवरः॥ १६॥

स्वपुष्पैराकीर्णं कुसुमधनुषो मन्दिरमहो
पुरो ध्यायन् ध्यायन् यदि जपति भक्तस्तव मनुम्।
स गन्धर्वश्रेणीपतिरपि कवित्वामृतनदी-
नदीनः पर्यन्ते परमपदलीनः प्रभवति॥ १७॥

त्रिपञ्चारे पीठे शवशिवहृदि स्मेरवदनां
महाकालेनोच्चैर्मदनरस-लावण्य-निरताम्।
समासक्तो नक्तं स्वयमपि रतानन्दनिरतो
जनो यो ध्यायेत् त्वामपि जननि! स स्यात् स्मरहरः॥ १८॥

सलोमास्थि स्वैरं पललमपि मार्जारमसिते!
पर वौष्ट्र मैष नरमहिषयोश्छागमपि वा।
बलिं ते पूजायामपि वितरतां मत्यवसतां
सतां सिद्धिः सर्वा प्रतिपदमपूर्वा प्रभवति॥ १९॥

वशी लक्षं मन्त्रं प्रजपति हविष्याशनरतो

दिवा मातर्युष्मच्चरण-कमलध्यान-निरतः।

परं नक्तं नग्नो निधुवन-विनोदेन च मनुं

जपेल्लक्षं स स्यात् स्मरहरसमानः क्षितितले॥ २०॥

इदं स्तोत्रं मातस्तव मनुसमुद्धारणमनु

स्वरूपाख्यं पादाम्बुज-युगल-पूजावधियुतम्।

निशार्धे वा पूजासमयमधि वा यस्तु पठति

प्रलापस्तस्याऽपि प्रसरति कवित्वामृतरसः॥ २१॥

कुरङ्गाक्षीवृन्दं तमनुसरति प्रमतरलं

वशस्तस्य क्षोणीपतिरपि कुबेरप्रतिनिधिः।

रिपुः कारागारं कलयति च तं केलिकलया

चिरं जीवन्मुक्तः प्रभवति स भक्तः प्रतिजनुः॥ २२॥

॥ श्रीमहाकालप्रणीतं कर्पूरस्तोत्रं समाप्तः॥

उपरोक्त कर्पूरस्तोत्रं श्रीमहाकाल द्वारा प्रणीत है। इस स्तोत्रं का जो भी प्राणी शुद्धता एवं पवित्रा से प्रतिदिन प्रातः काल में अथवा निशाकाल में एकाग्रचित्त होकर श्रद्धा व भक्ति से पाठ करता है। उसके विरोधी उसके समक्ष नतमस्तक होते हैं। धनवान् से धनवान् व्यक्ति भी उस व्यक्ति के समक्ष सदैव नतमस्तक हो जाते हैं। सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इस स्तोत्र का पाठ करने वाला प्राणी दीर्घायु होते हुए संसार के सभी सुख साधनों को प्राप्त करता है।

कालिका-कवचम्

कैलास-शिखरासीनं देव-देवं जगद् गुरुम्।
शङ्करं परिपप्रच्छ पार्वती परमेश्वरम्॥ १॥

पार्वत्युवाच–

भगवन् देवदेवेश! देवानां भोगद प्रभो!।
प्रब्रूहि मे महादेव! गोप्यं चेद् यदि हे प्रभो!॥ २॥
शत्रूणां येन नाशः स्यादात्मनो रक्षणं भवेत्।
परमैश्वर्यमतुलं लभेद् येन हि तद् वद?॥ ३॥

भैरव उवाच–

वक्ष्यामि ते महादेवि! सर्वधर्मविदां वरे।
अद्भूतं कवचं देव्याः सर्वकामप्रसाधकम्॥ ४॥
विशेषतः शत्रुनाशं सर्वरक्षाकरं नृणाम्।
सर्वारिष्टप्रसमनं सर्वाभद्रविनाशनम्॥ ५॥
सुखदं भोगदं चैव वशीकरणमुत्तमम्।
शत्रुसङ्घाः क्षयं यान्ति भवन्ति व्याधिपीडितः॥ ६॥
दुःखिनो ज्वरिणश्चैव स्वाभीष्ट-द्रोहिणस्तथा।
भोगमोक्षप्रदं चैव कालिका-कवचं पठेत्॥ ७॥

विनियोगः–

ॐ अस्य श्रीकालिकाकवचस्य भैरव ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीकालिका देवता, शत्रुसंहारार्थं जपे विनियोगः।

ध्यानम्-

ध्यायेत् कालीं महामायां त्रिनेत्रां बहुरूपिणीम्।
चतुर्भुजां ललज्जिह्वां पूर्णचन्द्रनिभाननाम्॥ ८॥
नीलोत्पलदलश्यामां शत्रुसङ्घविदारिणीम्।
नरमुण्डं तथा खड्गं कमलं च वरं तथा॥ ९॥
निर्भयां रक्तवदनां दंष्ट्रालीघोररूपिणीम्।
साट्टहासाननां देवीं सर्वदा च दिगम्बरीम्॥ १०॥
शवासनस्थितां कालीं मुण्डमालाविभूषिताम्।
इति ध्यात्वा महाकालीं ततस्तु कवचं पठेत्॥ ११॥

कवचम्-

ॐ कालिका घोररूपा सर्वकामप्रदा शुभा।
सर्वदेवस्तुता देवी शत्रुनाशं करोतु मे॥ १२॥
ॐ ह्रींह्रींरूपिणीं चैव ह्रांह्रींह्रांरूपिणीं तथा।
ह्रां ह्रीं क्षों क्षौंस्वरूपा सा सदा शत्रून् विदारयेत्॥ १३॥
श्रीं ह्रीं ऐंरूपिणी देवी भवबन्धविमोचनी।
हुँरूपिणी महाकाली रक्षाऽस्मान् देवि! सर्वदा॥ १४॥
यया शुम्भो हतो दैत्यो निशुम्भश्च महासुरः।
वैरिनाशाय वन्दे तां कालिकां शङ्करप्रियाम्॥ १५॥
ब्राह्मी शैवी वैष्णवी च वाराही नारसिंहिका।
कौमार्यैन्द्री च चामुण्डा खादन्तु मम विद्विषः॥ १६॥
सुरेश्वरी घोररूपा चण्ड-मुण्ड-विनाशिनी।
मुण्डमालावृताङ्गी च सर्वतः पातु मां सदा॥ १७॥

ह्लीं ह्लीं ह्लीं कालिके घोरे दंष्ट्र व रुधिरप्रिये!।
रुधिरापूर्णवक्त्रे च रुधिरेणावृतस्तनि॥ १८॥

'मम शत्रून् खादय खादय हिंस हिंस मारय मारय भिन्धि भिन्धि छिन्धि छिन्धि उच्चाटय उच्चाटय द्रावय द्रावय शोषय शोषय स्वाहा। ह्रां ह्रीं कालिकायै मदीय-शत्रून् समर्पयामि स्वाहा।

ॐ जय जय किरि किरि किटि किटि कट कट मदं मदं मोहय मोहय हर हर मम रिपून् ध्वंस ध्वंस भक्षय भक्षय त्रोटय त्रोटय यातुधानान् चामुण्डे सर्वजनान् राज्ञो राजपुरुषान् स्त्रियो मम वश्यान् कुरु कुरु तनु तनु धान्यं धनं मेऽश्वान् गजान् रत्नानि दिव्यकामिनीः पुत्रान् राजश्रियं देहि यच्छ क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः स्वाहा।'

इत्येतत् कवचं दिव्यं कथितं शम्भुना पुरा।
ये पठन्ति सदा तेषां ध्रुवं नश्यन्ति शत्रवः॥ १६॥
वैरिणः प्रलयं यान्ति व्याधिता वा भवन्ति हि।
बलहीनाः पुत्रहीनाः शत्रवस्तस्य सर्वदा॥ २०॥
सहस्त्रपठनात् सिद्धिः कवचस्य भवेत्तदा।
तत् कार्याणि च सिद्ध्यन्ति यथा शङ्करभाषितम्॥ २१॥
श्मशानाङ्गारमादाय चूर्णं कृत्वा प्रयत्नतः।
पादोदकेन पिष्ट्वा तल्लिखेल्लोहशलाकया॥ २२॥
भूमौ शत्रून् हीनरूपानुत्तराशिरसस्तथा।
हस्तं दत्त्वा तु हृदये कवचं तु स्वयं पठेत्॥ २३॥

शत्रोः प्राणप्रतिष्ठां तु कुर्यान् मन्त्रेण मन्त्रवित्।
हन्यादस्त्रं प्रहारेण शत्रो! गच्छ यमक्षयम्॥ २४॥
ज्वलदङ्गारतापेन भवन्ति ज्वरिता भृशम्।
प्रोञ्छनैर्वामपादेन दरिद्रो भवति ध्रुवम्॥ २५॥
वैरिनाशकरं प्रोक्तं कवचं वश्यकारकम्।
परमैश्वर्यदं चैव पुत्र-पौत्रादिवृद्धिदम्॥ २६॥
प्रभातसमये चैव पूजाकाले च यत्नतः।
सायंकाले तथा पाठात् सर्वसिद्धिर्भवेद् ध्रुवम्॥ २७॥
शत्रूरुच्चाटनं याति देशाद् वा विच्युतो भवेत्।
पश्चात् किङ्करतामेति सत्यं-सत्यं न संशयः॥ २८॥
शत्रुनाशकरे देवि! सर्वसम्पत्करे शुभे!।
सर्वदेवस्तुते देवि कालिके! त्वां नमाम्यहम्॥ २९॥

॥ रुद्रयामलोक्तं कालिका–कवचं समाप्तः॥

उपरोक्त कालिकाकवच रुद्रयामलोक्त ग्रन्थ से लिया गया है। इस कवच का जो भी प्राणी पाठ करता है। उसके समस्त शत्रुओं का नाश होता है, अर्थात् उसे अपने जीवनकाल में शत्रुओं से कभी भी भय अथवा कष्ट प्राप्त नहीं होता इसके साथ ही साथ वंश की वृद्धि अर्थात् पुत्र–पौत्रादि से वह सदैव युक्त रहते हुए इस पृथ्वि पर निवास करता है। जो भी प्राणी प्रातः काल तथा सायंकाल इस कवच का श्रद्धा व भक्ति से पाठ करता है, उसे इस संसार की समस्त सिद्धियाँ निःसन्देह प्राप्त होती है। इसके साथ ही साथ शत्रुपक्ष पर उसका पूर्ण प्रभुत्त्व स्थापित होता है। इस काली कवच की यह विशेषता सर्व विदित है। अतः अपने जीवन में कल्याण की प्राप्ति के लिए इस कवच का पाठ सभी प्राणियों को करना चाहिये।

काली-कवचम्

कालीपूजा श्रुता नाथ! भावाश्च विविधा प्रभो!।
इदानीं श्रोतुमिच्छामि कवचं पूर्वसूचितम्॥ १॥
त्वमेव स्त्रष्टा पाता च संहर्ता च त्वमेव च।
त्वमेव शरणं नाथ! त्राहि मां दुःख सङ्कटात्॥ २॥

भैरव उवाच—

रहस्यं शृणु वक्ष्यामि भैरवि प्राणवल्लभे!।
श्रीजगन् मङ्गलं नाम कवचं मन्त्र-विग्रहम्॥ ३॥
पठित्वा धारयित्वा च त्रैलोक्यं मोहयेत् क्षणात्।
नारायणोऽपि यद्धृत्वा नारी भूत्वा महेश्वरम्॥ ४॥
योगिनं क्षोभमनयद् यद् धृत्वा च रघूत्तमः।
वरतृप्तो जघानैव रावणादिनिशाचरान्॥ ५॥
यस्य प्रसादादीशोऽहं त्रैलोक्यविजयी विभुः।
धनाधिपः कुबेरोऽपि सुरेशोऽभूच्छचीपतिः॥ ६॥
एवं सकला देवाः सर्वसिद्धीश्वराः प्रिये!।
श्रीजगन्मङ्गलस्याऽस्य कवचस्य ऋषिः शिवः॥ ७॥
छन्दोऽनुष्टुप् देवता च कालिका दक्षिणेरिता।
जगतां मोहने दुष्टविजये भुक्ति-मुक्तिषु॥ ८॥
योषिदाकर्षणे चैव विनियोगः प्रकीर्तितः।
शिरो मे कालिका पातु क्रींकारैकाक्षरी परा॥ ९॥
क्रीं क्रीं क्रीं मे ललाटं च कालिका खड्गधारिणी।
हूं हूं पातु नेत्रयुगं ह्रीं ह्रीं पातु श्रुती मम॥ १०॥

दक्षिणे कालिका पातु घ्राणयुग्मं महेश्वरी।
क्रीं क्रीं क्रीं रसनां पातु हूं हूं पातु कपोलकम्॥ ११॥
वदनं सकलं पातु ह्रीं ह्रीं स्वाहास्वरूपिणी।
द्वाविंशत्यक्षरी स्कन्धौ महाविद्या सुखप्रदा॥ १२॥
खड्ग–मुण्डधरा काली सर्वाङ्गमभितोऽवतु।
क्रीं हूं ह्रीं त्र्यक्षरी पातु चामुण्डा हृदये मम॥ १३॥
ऐं हूं ओं ऐं स्तनद्वन्द्वं ह्रींफट् स्वाहा ककुत्स्थलम्।
अष्टाक्षरी महाविद्या भुजौ पातु सकर्तृका॥ १४॥
क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रींह्रींकारी पातु षडक्षरी मम।
क्रीं नाभिं मध्यदेशं च दक्षिणे कालिकाऽवतु॥ १५॥
क्रीं स्वाहा पातु पृष्ठं च कालिका सा दशाक्षरी।
क्रीं मे गुह्यं सदा पातु कालिकायै नमस्ततः॥ १६॥
सप्ताक्षरी महाविद्या सर्वतन्त्रेषु गोपिता।
ह्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिके हूं हूं पातु कटिद्वयम्॥ १७॥
काली दशाक्षरी विद्या स्वाहा मामूरुयुग्मकम्।
ॐ क्रीं क्रीं मे स्वाहा पातु कालिका जानुनी सदा॥ १८॥
कालीहृन्नामविद्येयं चतुर्वर्गफलप्रदा।
क्रीं ह्रीं ह्रीं पातु सा गुल्फं दक्षिणे कालिकाऽवतु॥ १९॥
क्रीं हूं ह्रीं स्वाहापदं चतुर्दशाक्षरी मम।
खड्गमुण्डधरा काली वरदाभय धारिणी॥ २०॥
विद्याभिः सकलाभिः सा सर्वाङ्गमभितोऽवतु।
काली कपालिनी कुल्ला कुरुकुल्ला विरोधिनी॥ २१॥

विप्रचिता तथोग्रोग्रप्रभा दीप्ता धनत्त्विषा।
नीला घना बलाका च मात्रा मुद्रा मिता च माम्॥ २२॥
एताः सर्वाः खड्गधरा मुण्डमालाविभूषणाः।
रक्षन्तु दिग्-विदिक्षु मां ब्राह्मी नारायणी तथा॥ २३॥
माहेश्वरी च चामुण्डा कौमारी चाऽपराजिता।
वाराही नारसिंही च सर्वाश्चाऽमितभूषणाः॥ २४॥
रक्षन्तु स्वायुधैर्दिक्षु विदिक्षु मां यथा तथा।
इति ते कथितं दिव्यं कवचं परमाद्भुतम्॥ २५॥
श्रीजगन् मङ्गलं नाम महाविद्यौधविग्रहम्।
त्रैलोक्याकर्षणं ब्रह्मन्! कवचं मन्मुखोदितम्॥ २६॥
गुरुपूजां विधायाऽथ विधिवत् प्रपठेत्ततः।
कवचं त्रिसकृद् वाऽपि यावज्जीवं च वा पुनः॥ २७॥
एतच्छतार्द्धमावृत्य त्रैलोक्यविजयी भवेत्।
त्रैलोक्यं क्षोभयत्येव कवचस्य प्रसादतः॥ २८॥
महाकविर्भवेन्मासं सर्वसिद्धीश्वरो भवेत्।
पुष्पाञ्जलिं कालिकायै मूलेनैवाऽर्पयेत्। सकृत्॥ २९॥
शतवर्षसहस्राणां पूजायाः फलमाप्नुयात्।
भूर्जे विलिखितं चैतत् स्वर्णस्थं धारयेद् यदि॥ ३०॥
विशाखायां दक्षबाहौ कण्ठे वा धारयेद् यदि।
त्रैलोक्यं मोहयेत् क्रोधात् त्रैलोक्यं चूर्णयेत् क्षणात्॥ ३१॥
पुत्रवान् धनवान् श्रीमान् नानाविद्या-निधिर्भवेत्।
ब्रह्मास्त्रादीनि शस्त्राणि तद्गात्रस्पर्शनात्ततः॥ ३२॥

नाशमायाति या नारी बन्ध्या वा मृतपुत्रिणी।
बह्वपत्या जीवतोका भवत्येव न संशयः॥ ३३॥
न देयं परशिष्येभ्यो ह्यभक्तेभ्यो विशेषतः।
शिष्येभ्यो भक्तियुक्तेभ्यो ह्यन्यथा मृत्युमाप्नुयात्॥ ३४॥
स्पर्द्धामुद्धय कमला वाग्देवी मन्दिरे सुखे।
पौत्रान्तं स्थैर्यमास्थाय निवसत्येव निश्चितम्॥ ३५॥
इदं कवचमज्ञात्वा यो भजेद् घोर-दक्षिणाम्।
शतलक्षं प्रजप्त्वाऽपि तस्य विद्या न सिद्धयति॥
सहस्त्रघातमाप्नो सोऽचिरान्मृत्युमाप्नुयात्॥ ३६॥

॥ काली कवचं समाप्तः॥

शास्त्रों के मतानुसार जो भी प्राणी अपने गुरु का सर्वप्रथम पूजन करने के उपरान्त इस कवच का पाठ प्रातः काल, मध्याह्न काल एवं सायं काल करता है। वह समस्त प्रकार के सुखों को प्राप्त करते हुए इस पृथ्वी पर निवास करता है। जो भी प्राणी विशाखा नक्षत्र में इस कवच को भोजपत्र पर अनार की कलम से लिखकर स्वर्ण में मढ़वाकर विधि-विधान से इसका पूजन करता है अथवा इस कवच को ताम्र यंत्र में पुटीत कर अपने दाहिने हाथ अथवा अपने गले में धारण करता है। वह प्राणी सदैव धन व सम्पत्ति से युक्त होते हुए समस्त विद्याओं का ज्ञाता होता है।

इसके साथ ही साथ उसे पुत्र का अभाव कभी भी नहीं होता, इसके अतिरिक्त जिस स्त्री को पुत्र न होते हो अथवा संतान होते ही उसकी मृत्यु हो जाती हो यदि ऐसी स्त्री इस कवच को अपनी दाहिनीभुजा अथवा गले में ग्रहण करती है तो उसे निःसन्देह पुत्र की प्राप्ति होती है।

इसके विपरीत जो भी प्राणी इस कवच के महत्व व इसके अगाध ज्ञान को बिना जाने दक्षिणकाली का मंत्र जाप करता है, वह प्राणी क्यों न अनेकानेक संख्या में काली के मंत्र का जाप करें। किन्तु उसे कभी भी व किसी भी अवस्था में मंत्र सिद्धि प्राप्त नहीं होती इसके साथ ही साथ उस प्राणी को अकास्मिक कष्ट चोट-चपेट लगने का पूर्ण योग प्राप्त होता है। उस प्राणी की आयु क्षीण हो जाती है। जिसके फलस्वरूप वह अकाल मृत्यु को प्राप्त करता है।

काली-स्तव:

नमामि कृष्णरूपिणीं कृशाङ्गयष्टिधारिणीम्।
समग्रतत्त्व-सागराम-पार- गह्वराम्॥ १ ॥
शिवां प्रभासमुज्ज्वलां स्फुरच्छशाङ्कशेखराम।
ललाटरत्न-भास्वरां जगत्प्रदीप्ति-भास्कराम्॥ २ ॥
महेन्द्रकश्यपार्चितां सनत्कुमार-संस्तुताम्।
सुराऽसुरेन्द्र-वन्दितां यदार्थ निर्मलाद्भुताम्॥ ३ ॥
अतर्क्यरोचिरूर्जितां विकारदोषवर्जिताम्।
मुमुक्षुभिर्विचिन्तितां विकारदोषवार्जिताम्॥ ४॥
मृतास्थिनिर्मितस्त्रजां मृगेन्द्रवाहनाग्रजाम्।
सुशुद्धतत्त्वतोषणां त्रिवेदसारभूषणाम्॥ ५ ॥
भुजङ्गहारहारिणीं कपालषण्डधारिणीम्।
सुधार्मिकोपकारिणीं सुरेन्द्रवैरिधातिनीम्॥ ६ ॥
कुठारपाशचापिनीं कृतान्तकाममेदिनीम्।
शुभां कपालमालिनीं सुवर्णकल्पशाखिनीम्॥ ७ ॥

श्मशानभूमिवासिनीं द्विजेन्द्रमौलिभाविनीम्।
तमोऽन्धकारयामिनीं शिवस्वभावकामिनीम्॥ ८ ॥
सहस्त्रसूर्यराजिकां धनं योपकारिकाम्।
सुशुद्धकाल-कन्दलां सुभृङ्गवृन्दमञ्जुलाम्॥ ९॥
प्रजायिनीं प्रजावतीं नमानि मातरं सतीम्।
स्वकर्मकारणो गतिं हरप्रियां च पार्वतीम्॥ १०॥
अनन्तशक्ति-कान्तिदां यशोऽर्थ-भुक्ति-मुक्तिदाम्।
पुनः पुनर्जगद्धितां नमाम्यहं सुरार्चिताम्॥ ११॥
जयेश्वरि! त्रिलोचने! प्रसीद देवि! पाहि माम्।
जयन्ति ते स्तुवन्ति ये शुभं लभन्त्यभीक्ष्णशः॥ १२॥
सदैव ते हतद्विषः परं भवन्ति सज्जुषः।
ज्वरापहे शिवेऽधुना प्रशाधि मां करोमि किम्॥ १३॥
अतीव मोहितात् मनो वृथा विचेष्टितस्य मे।
तथा भवन्तु ताबका यथैव चोपितालकाः॥ १४॥
इमां स्तुतिं मयेरितां पठन्ति कालिसाधकाः।
न ते पुनः सुदुस्तरे पतन्ति मोहगह्वरे॥ १५॥

॥ कालीस्तवः समास॥

जिन देवी का रूप काला है। जिनके आदि और अन्त को जानना अत्यधिक कठिन कार्य है। जो सदैव ही अपने भक्तों का कल्याण करती हैं। जिनका निवास ही श्मशानभूमि है। इस प्रकार की कालीदेवी के इस कालीस्तव का जो भी प्राणी नियमित रूप से पाठ करता है, उसके कठिन से कठिन कार्य भी सफलता से पूर्ण होते हैं।

कालिकाष्टकम्

ध्यानम्-

गलद्-रक्तमुण्डावली-कण्ठमाला
महाघोररावा सुदंष्ट्रा कराला।
विवस्त्रा श्मशानालया मुक्तकेशी
महाकालकामाकुला कालिकेयम्॥ १॥

भुजे वामयुग्मे विरोऽसि दधाना
वरं दक्षयुग्मेऽभयं वै तथैव।
सुमध्याऽपि तुङ्गस्तनाभारनम्रा
लसद्रक्तसृक्कद्वया सुस्मितास्या॥ २॥

शवद्वन्द्वकर्णावतसा सुकेशी
लसत् प्रेतपाणि-प्रयुक्तैक-काञ्ची।
शवाकार-मञ्चाधिरूढा शिवाभि-
श्चतुर्दिक्षु शब्दायमानाऽभिरेजे॥ ३॥

विरञ्च्यादिदेवास्त्रयन्ते गुणांस्त्रीन्
समाराध्य कालि! प्रधाना बभूवुः।
अनादिं सुरादिं मखादिं भवादि
स्वरूप त्वदीपं न विन्दन्ति देवाः॥ ४॥

जगन् मोहनीयं तु वाग्वादिनीयं
सुहृत् पोषिणीं शत्रु-संहारणीयम्।
वचः सतंभनीयं शत्रु-संहारणीयम्
स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः॥ ५॥

इयं स्वर्गदात्री पुनः कल्पवल्ली
मनोजांस्तु कामान् यथार्थं प्रकुर्यात्।
कथा ते कृतार्था भवन्तीति नित्यं
स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः॥ ६॥

सुरापानमत्ते! सुभक्तामुरुक्ते!
लसत् पूतचित्ते! सदाविर्भवस्ते।
जप-ध्यान-पूजा-सुधाधौतपङ्काः
स्वरूपं त्वदीपं न विन्दन्ति देवाः॥ ७॥

चिदानन्दकन्दं हसन् मन्दमन्दं
शरच्चन्द्रकोटि-प्रभुपुञ्ज-बिम्बम्।
मुनीनां कवीनां हृदि द्योतमानं
स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः॥ ८॥

महामेघकाली सुरक्ताऽपि शुभ्रा
कदाचिद् विचित्राकृतिर्योगमाया।
न बाला न वृद्धा न कामातुराऽपि
स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः॥ ९॥

क्षमस्वापराधं महागुप्तभावं
मया लोकमध्ये प्रकाशीकृतं यत्।
तव ध्यानपूतेन चापल्यभावात्
स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः॥ १०॥

फलश्रुति–

यदि ध्यानयुक्तः पठेद् यो मनुष्य-
स्तदा सर्वलोके विशालो भवेच्च।
गृहे चाऽष्टसिद्धिर्मृते चापि मुक्तिः
स्वरूपं त्वदीपं न विन्दन्ति दवाः॥ ११॥

॥ कालिकाष्टकं समाप्तः॥

जिन काली के गले में रहने वाली नर मुण्डमाला से सदैव खून की धारा गिरती रहती है। ब्रह्मा, विष्णु और महेश जैसे देव भी आपकी उपासना में सदैव तत्पर रहते हैं। इस प्रकार की देवी पर वर्णित कालिकाष्टक का जो भी प्राणी कालीदेवी का ध्यान करके इस स्तोत्र का संयम और नियम से पाठ करता है, वह समस्त संसार में कीर्ति व यश को प्राप्त करता है। फल श्रुति के अनुसार– उसके गृहद्वार पर अष्ट सिद्धियों का पूर्ण निवास होता है, अर्थात् सभी प्रकार से वह प्राणी सम्पन्न ही होता है। मृत्यु के उपरान्त उस प्राणी का पुनः जन्म नहीं होता है। उसे पूर्णतः मुक्ति प्राप्त होती है।

●

परिशिष्ट

महाकाली की उत्पत्ति

प्रलयकाल में सम्पूर्ण संसार के जलमग्न होने पर विष्णु भगवान् शेषशय्यापर योगनिद्रा से शयन कर रहे थे। उस समय विष्णु भगवान् के कर्णकीट से उत्पन्न मधु और कैटभ नामक दो अत्यधिक बलशाली राक्षस ब्रह्माजी को मारने को उद्यत हुए। भगवान् के नाभिकमलमें स्थित ब्रह्माजी ने उन दोनों असुरों को देखकर भगवान् विष्णु को जगाने के लिए एकाग्रहृदय से हरि भगवान् के नेत्रकमलस्थित योगनिद्राकी स्तुति इसप्रकार से की–

हे देवी! तू ही इस संसार की उत्पत्ति, स्थिति और संहार करनेवाली है, तू ही महाविद्या, महामाया, महामेघा, महास्मृति महामोहस्वरूपा है, दारुण कालरात्रि, महारात्रि तथा मोहरात्रि भी तू ही है। तूने संसार की उत्पत्ति स्थिति तथा लय करने वाले सक्षात् विष्णुभगवान् को योग निद्रा वश कर दिया है और विष्णु, शङ्कर एवं मैं स्वयं शरीर ग्रहण करने को बाधित किये गये हैं। ऐसी महामाया शक्ति.की स्तुति कौन कर सकता है? हे देवि अपने प्रभाव से इन असुरों को मोहित कर मारने के लिए भगवान् विष्णु को निद्रा से जगाओं।

इसप्रकार ब्रह्माजी के द्वारा स्तुति करनेपर वह महामाया भगवान् विष्णु के नेत्र, मुख, नासिका, बाहु और हृदय से बाहर निकलकर प्रत्यक्ष खड़ी हो गयी, उसके बाहर निकलते ही भगवान् विष्णु तत्काल उठे और उन्होंने देखा कि दो भयंकर राक्षस ब्रह्माजी को मारने अथवा उनको खाने के लिए उद्यत हो रहे हैं। ब्रह्माजी की रक्षा के लिए भगवान् स्वयं उनसे युद्ध करने लगे। युद्ध करते-करते लगभग पांच हजार वर्ष व्यतीत हो गये, किन्तु उन राक्षसों का संहार न हो सका। उस स्थिति में महामाया ने उन दोनों राक्षसों की बुद्धि मोहित कर दी, जिससे वे स्वयं अभिमानपूर्वक भगवान्

विष्णु से स्वयं कहने लगे कि हम तुम्हारे युद्ध से अत्यधिक संतुष्ट हुए तुम हमसे अपनी इच्छानुसार वर मांगों विष्णु भगवान् कहने लगे, यदि आप मुझे वर ही देना चाहते है तो आप दोनों मेरे द्वारा ही मारे जाये मुझे यही वर दीजिए। मधु–कैटभने तथास्तु कहकर कहाकि जिस स्थान पर पृथ्वी जल से ढकी हुई हो वहाँ हमारा वध न करना।

उनके दिये हुए वचन के अनुसार भगवान् विष्णु ने उनके शिरों को अपनी जंघाओं पर रखकर सुदर्शन चक्र से काट डाला। इसप्रकार देवकार्य सिद्ध करने के लिए उस सच्चिदानन्दरूपिणी चितिशक्तिने महाकाली रूप धारण किया, जिसका स्वरूप और ध्यान इस प्रकार है–

खड्गं चक्रगदेषुचापपरिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः
शङ्खं संदधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम्।
नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकां
यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम्॥

खड्ग, चक्र, गदा, धनुष, बाण, परिध, शूल, भुशुण्डी, कपाल और शङ्ख को धारण करने वाली, समस्त आभूषणों से सुसज्जित नीलमणि के समान कान्तियुक्त, दशमुख, दशपाद वाली महाकाली का मैं ध्यान करता हूँ। जिसकी स्तुति विष्णुभगवान् की योगनिन्द्रास्थिति में ब्रह्माजी ने स्वयं की थी।

●

महत्वपूर्ण विषयों पर विवेचन

१-स्कन्दपुराण के अनुसार रत्न की, स्वर्ण की, चाँदीकी, ताम्र की, पीतल की, लोहे की, पत्थल की, काष्ट की तथा मृतिका की। इसप्रकार नौ प्रकार की प्रतिमाएं कही गयी हैं। इन प्रतिमाओं में मृतिका की प्रतिमा अधम से भी अधम कही गयी है।

२-मिट्टी की, काष्ट की, लोहे की, रत्न की, पत्थर की, गन्धक की तथा पुष्प की ये सात प्रकार की प्रतिमाएं हयशीर्षपंचरात्र में कही गयी है।

३-महाकपिल पञ्चरात्र के अनुसार पाषाण की, लोहे की, रत्न की, लकड़ी की तथा मिट्टी की ये पाँच प्रकार की प्रतिमाएं कही गयी है।

४-स्कन्दपुराण के अनुसार मिट्टी की प्रतिमा को अधम तथा उत्तम कहा गया है। किन्तु रत्नमयी प्रतिमा को सर्वोत्तम कहा गया है। क्योंकि यह समस्त मनोरथों को निःसंदेह पूर्ण करती है।

५-हयशीर्षपंचरात्र के अनुसार पुष्पमयी, गन्धमयी और मृन्मयी प्रतिमा कल्याणकारिणी होती है। इनका पूजन करने पर समस्त मनोरथों को यह तत्काल पूर्ण करती है।

६-मिट्टी की बनी मूर्ति में सर्वदा ही आवाहन करना चाहिये। ऐसा वाचस्पति का कथन है।

७-प्रयोगपरिजात के अनुसार पट्ट में या यन्त्र में लिखी हुई प्रतिमा को प्रतिदिन स्नान नहीं कराना चाहिए। किन्तु पर्व के दिन या जब मूर्ति अत्यधिक मलिन हो जाय, उस अवस्था में कर्ता को उसे स्नान कराना चाहिये।

८-यदि एक पीठ में बहुत सी मूर्तियों का पूजन करना हो तो सभी देवी-देवताओं को अलग-अलग चन्दन और पुष्प चढ़ावें तथा धूप, दीप आदि को तन्त्रता से या एक साथ निवेदन करें।

९-स्वर्ण से बनाया गया यन्त्र राजाओं को अपने वशीभूत करता है। रजत से बनाया गया यन्त्र आयुष, आरोग्य और अभिष्ट

वस्तु प्रदान कराता है। ताम्र से निर्मित यन्त्र सकल ऐश्वर्य प्रदायक माना गया है। मर्कत मणि से बनाया गया यन्त्र समस्त शत्रुओं का विनाश करता है। त्रिलोहोत्पन्न अर्थात् तीन धातु जैसे-चाँदी, सोना और ताँबा इनको एक में मिश्रित कर जिस यन्त्र का निर्माण किया जाता है वह यन्त्र महासिद्धियों को प्रदान करता है।

१०-देवीपुराण के अनुसार देवी की प्रतिष्ठा माघ और आश्विन मास में उत्तम तथा समस्त मनोकामनाओं को पूर्ण करने वाली होती है। देवी की प्रतिष्ठा में तिथि, नक्षत्र तथा उपवास आदि का विचार नहीं करना चाहिये। इसलिये देवी की प्रतिष्ठा किसी भी समय में की जा सकती है। किन्तु विशेष रूप से कृष्ण पक्ष में ही करना श्रेष्ठ होता है।

११-नरसिंह पुराण के अनुसार देवी, भैरव, वाराह, नृसिंह, विष्णु और दुर्गा की प्रतिष्ठा दक्षिणायन में भी की जा सकती है।

१२-जो मनुष्य अप्रतिष्ठित देवी एवं देव की प्रतिमा का पूजन करते हैं उसके अन्न को देवी-देवता ग्रहण नहीं करते। अत: शास्त्रकारों के मतानुसार ऐसी मूर्ति का परित्याग कर देना ही उचित है।

१३-हयशीर्षपंचरात्र के अनुसार चाण्डाल के स्पर्श से, मद्य के स्पर्श से, दूषित अग्नि के स्पर्श से तथा पापी मनुष्य के स्पर्श से देव एवं देवताओं की प्रतिमाएं नि:संदेह दूषित हो जाती है। दूषित ब्राह्मण तथा क्षत्रिय से स्पर्श होने पर भी प्रतिमा का पुन:संस्कार करना चाहिये।

१४-खण्डित, स्फुटित तथा दग्ध मूर्ति की पूजा भय को ही प्रदान करती है। अत: मनुष्य इस प्रकार की मूर्तियों का पुन: प्रतिष्ठा करें।

१५-मन्दिर में प्रमाणहीन तथा खण्डित मूर्ति को कदापि स्थापित नहीं करना चाहिये।

१६-शिल्परत्न के अनुसार जिस देवी-देवता की मूर्ति में जरा-सा भी दोष हो उस मूर्ति का त्याग नहीं करना चाहिये। किन्तु

जिस मूर्ति की भुजा, पैर या कोई और अवयव टूट-फूट जाय जिससे मूर्ति में विकृता आ जाय ऐसी मूर्ति का तत्काल त्याग कर देना चाहिये।

१७-शिव, ब्रह्मा, सूर्य, गणेश, चण्डी, लक्ष्मी आदि के मन्दिर बनाने की अपेक्षा मूर्ति बनाने का अग्नि पुराण में अधिक फल कहा गया है।

१८-गणेश, भैरव, चण्डी, नकुलीश, ग्रह, भूत आदि तथा कुबेर इनका मुख दक्षिण में देवीमूर्ति प्रकरण में शुभ कहा गया है।

१९-मन्दिर के लिये एक हाथ की प्रतिमा सौम्यता को देनेवाली, तथा दो हाथ की ऊँची प्रतिमा धन को देनेवाली, तीन हाथ की प्रतिमा कल्याण को देनेवाली व चार हाथ की प्रतिमा सुभिक्ष को देनेवाली ही होती है।

२०-अङ्गुष्ठ पर्व से वितस्ति परिमाण तक की प्रतिमा को ही घर में रखना चाहिये, इससे अधिक प्रमाण की प्रतिमा को घर में रखने का विद्वानों तथा शास्त्रकारों ने निषेध किया है।

२१-सात अंगुल से लेकर बारह अंगुल तक की प्रतिमा घर में रखने को कहा गया है। किन्तु मन्दिर में इससे अधिक प्रमाण की मूर्ति शुभ कही गयी है।

२२-वैखानस ने कहा कि माता, भैरव, महिषासुरहन्त्री देवी की प्रतिष्ठा दक्षिणायन में ही करें।

२३-खंडित मूर्तियों की प्रतिष्ठा मलमास तथा शुक्रास्तादि में भी कर सकते हैं।

२४-सिद्धान्त शेखर के अनुसार चोर, चाण्डाल, पतित, श्वान और रजस्वला इनके स्पर्श तथा शव आदि के स्पर्श से पुनः मूर्ति की प्रतिष्ठा कर्म को करें।

२५-जो-जो जिस देवी के आयुध कहे गये हैं उससे उनकी पूजा करें भक्ति से देवी की अर्चना करने से पुरुषों को राज्य, आयु, पुत्र तथा समस्त सुख देवी प्रदान करती हैं।

२६–देवी मूर्ति के स्थापन में विशेष दुर्गाभक्तितरङ्गिणी में देवी पुराण का मत है कि दक्षिणाभिमुखी दुर्गा की मूर्ति सुख को देने वाली होती हैं, पूर्वाभिमुखी दुर्गा की मूर्ति जय को बढ़ाने वाली होती है। पश्चिमाभिमुखी दुर्गा की मूर्ति सदा स्थापन के लिए उत्तम है तथा उत्तराभिमुखी दुर्गा की मूर्ति की स्थापना कदापि न करें।

२७–अष्टादश भुजाओं वाली या आठ हाथ वाली देवी को जो दो रेशमी वस्त्रों से ढंकी हो, उसे मध्य में स्थापित करें।

२८–मतस्यपुराण में कहा है कि रात्रि में कलश स्थापन और कुम्भादिसेचन कदापि नहीं करना चाहिये।

२९–मार्गशीष मास की कृष्णपक्ष की अष्टमी कालाष्टमी होती है। जो भी उपासक इस दिन सन्निधि में उपवास कर जागरण करते हैं, वे सभी पापों से मुक्त हो जाते हैं।

३०–जब तक शरीर का चालन न करें तब तक पशु का हनन न करें। ब्राह्मण माषभक्तादि द्वारा या कुशमाण्डादि द्वारा बलि प्रदान करें।

३१–देवी पूजा शुक्रास्त आदि में भी करें धर्मप्रदीप के अनुसार शुक्र तथा बृहस्पति के अस्त हो जाने पर सिंह के बृहस्पति में कुलाधर्मानुसार अपनी देवी का अर्चन प्रतिवर्ष करें।

३२–गृहपरिशिष्ट के अनुसार–जिन प्रतिमाओं का मुख पूर्व दिशा में हो उनका पूजन उत्तराभिमुख करें।

३३–अष्टमी तिथि में बलिदान करने से निश्चित ही पुत्र का नाश होता है। इसलिए सविधि नवमी तिथि में बलिदान करें।

३४–बलिदान देने से देवी अवश्य प्रसन्न होती हैं लेकिन बलिदान देने वाले को हिंसाजन्य पाप अवश्य लगता है। यह मत ब्रह्मवैवर्तप्रकृतिखण्ड का है।

३५–सभी देवी–देवताओं का पूजन पूरुषसूक्त के द्वारा किया जा सकता है। यह आचारेन्दु में लिखा है।

देवी-देवताओं की प्रतिष्ठा में मूर्ति न्यास क्रम

कर्ता प्राङ्मुख होकर इस संकल्प को करे-

देशकालौ संकीर्त्य-अस्मिन् अमुकदेवार्चाधिवास कर्मणि देवकलासान्निध्यार्थं प्रणवादिन्यासान् करिष्ये।

इस प्रकार संकल्प करके हाथ में पुष्प लेकर कर्ता न्यास कार्य करे-

प्रणवन्यासः–सर्वदेवसाधारणः

ॐ अं नमः पादयोर्न्यसामि[1]

ॐ उं नमः हृदये

ॐ मं नमः ललाटे

व्याहृतिन्यासः सर्वदेवसाधारणः

ॐ भूः नमः पादयोः

ॐ भुवः नमः हृदये

ॐ स्वः नमः ललाटे

मातृकान्यासः-सर्वदेवसाधारण

ॐ अं नमः शिरसि

ॐ आं नमः मुखे

ॐ इं नमः दक्षिणनेत्रे

ॐ ईं नमः वामनेत्रे

ॐ उं नमः दक्षिणश्रवणे

ॐ ऊं नमः वामगण्डे

ॐ ऋं नमः दक्षिणगण्डे

ॐ ॠं नमः वामगण्डे

ॐ लृं नमः दक्षिणनासापुटे

ॐ लॄं नमः वामनासापुटे

ॐ एं नमः ऊर्ध्वदशनेषु

ॐ ऐं नमः अधोदशनेषु

ॐ ओं नमः ऊर्ध्वोष्ठे

ॐ औं नमः अधरोष्ठे

ॐ अं नमः ललाटे

ॐ अः नमः जिह्वायाम्

ॐ यं नमः त्वचि

ॐ रं नमः चक्षुषोः

ॐ लं नमः नासिकायाम्

ॐ वं नमः दशनेषु

ॐ शं नमः श्रोत्रयोः

ॐ षं नमः उदरे

ॐ सं नमः कटिदेशे

ॐ हं नमः हृदये

ॐ क्षं नमः नाभौ

ॐ ळं नमः लिङ्गे

ॐ पं फं बं भं मं दक्षिणबाहौ

ॐ तं थं दं धं नं वामबाहौ

ॐ टं ठं डं ढं णं दक्षिणजङ्घायाम्

ॐ चं छं जं झं ञं वामजङ्घायाम्

ॐ कं खं गं घं ङं सर्वाङ्गुलिषु

---

(१) 'न्यासामि' इस पद को सर्वत्र जोड़ देना चाहिए।

अथ ऋक्षन्यासः सर्वदेवसाधारणः

ॐ रविचन्द्राभ्यां	नेत्रयोः
ॐ भौमाय	हृदये
ॐ बुधाय	स्कन्धे
ॐ बृहस्पतये	जिह्वायाम्
ॐ शुक्राय	लिङ्गे
ॐ शनैश्चराय	ललाटे
ॐ राहवे	पादयोः
ॐ केतुभ्यो	केशेषु
ॐ रोहिणीभ्यो	हृदये
ॐ मृगशिरसे	शिरसि
ॐ आर्द्रायै	केशेषु
ॐ पुनर्वसुभ्यां	ललाटे
ॐ पुष्पाय	मुखे
ॐ आश्लेषाभ्यो	नासिकायाम्
ॐ मघाभ्यो	दन्तेषु
ॐ पूर्वाफाल्गुनीभ्यो	दक्षिणश्रवणे
ॐ उत्तराफाल्गुनीभ्यो	वामश्रवणे
ॐ हस्ताय	हस्तयोः
ॐ चित्रायै	दक्षिणभुजे
ॐ स्वात्यै	वामभुजे
ॐ विशाखाभ्यां	हृदि
ॐ अनुराधाभ्यो	स्तनयोः
ॐ ज्येष्ठाभ्यो	दक्षिणकुक्षौ
ॐ मूलाय	वामकुक्षौ
ॐ पूर्वाषाठाभ्यो	कटिपार्श्वोः
ॐ श्रवणधनिष्ठाभ्यो	वृषणयोः
ॐ शतभिषाभ्यो	नेत्रे
ॐ पूर्वाभाद्रपदाभ्यो	दक्षिणोरौ
ॐ उत्तराभाद्रपदाभ्यो	दक्षिणणौरौ
ॐ रेवतीभ्यो	दक्षिणजङ्घायाम्
ॐ अश्विनीभ्यां	वामजङ्घायाम्
ॐ भरणीभ्यो	दक्षिणपादे
ॐ कृत्तिकाभ्यो	वामपादे
ॐ ध्रुवाय	नाभ्याम्
ॐ सप्तर्षिभ्यो	कण्ठे
ॐ मातृमण्डलाय	कटिदेशे
ॐ विष्णुपदेभ्यो	पादयोः
ॐ नागवीथ्यै	
ॐ अङ्गवीथ्यै	
ॐ ताराभ्यो	रोमकूपेषु
ॐ अगस्त्याय	कौस्तुभदेशे

अथ कालन्यासः सर्वदेवसाधारणः

ॐ चैत्राय	शिरसि
ॐ वैशाखाय	मुखे
ॐ ज्येष्ठाय	हृदये
ॐ आषाढाय	दक्षिणस्तने
ॐ श्रावणाय	वामस्तने
ॐ भाद्रपदाय	उदरे
ॐ आश्विनाय	कट्याम्
ॐ कार्तिकाय	दक्षिणोरौ
ॐ उत्तराषाठाभ्यो	लिङ्गे

ॐ मार्गशीर्षाय वामोरौ
ॐ पौषाय दक्षिणजङ्घायाम्
ॐ माघाय वामजङ्घायाम्
ॐ फाल्गुनाय पादयो:
ॐ संवत्सराय दक्षिणोर्ध्वबाहौ
ॐ परिवत्सराय दक्षिणोर्ध्वबाहौ
ॐ इद्ववत्सराय वामावोबाहौ
ॐ अनुवत्सराय वामोर्ध्वबाहौ
ॐ पर्वभ्यो सन्धिषु
ॐ ऋतुभ्यो लिङ्गे
ॐ अहोरात्रेभ्यो अस्थिषु
ॐ क्षणाय
ॐ लवाय
ॐ कामायै रोमसु
ॐ काष्ठायै
ॐ कृतयुगाय मुखे
ॐ त्रेतायुगाय हृदये
ॐ द्वापराय नितम्बे
ॐ कलियुगाय पादयो:
ॐ चतुर्दशमन्वन्तरेभ्यो बाह्वो:
ॐ पराय
ॐ परार्द्धाय
ॐ महाकल्पाय शरीरे
ॐ उदगयनाय
ॐ दक्षिणाय
ॐ विषुवद्भ्यो सर्वाङ्गुलिषु

अथ वर्णन्यास: सर्वदेवसाधारण:

ॐ ब्राह्मणाय मुखे
ॐ क्षत्रियाय बाह्वो:
ॐ वैश्याय ऊर्वो
ॐ शूद्राय पादयो:
ॐ सङ्करजेभ्यो पादग्रे
ॐ अनुलोमजेभ्यो सर्वाङ्गसन्धिषु
ॐ गोभ्यो मुखे
ॐ अजाभ्य
ॐ आविकाभ्यो
ॐ ग्राम्यपशुभ्यो
ॐ आरण्यपशुभ्यो

अथ स्तोयन्यास:सर्वदेवसाधारण:

ॐ मेघेभ्यो केशेषु
ॐ अभ्रेभ्यो रोमसु
ॐ नदीभ्यो सर्वगात्रेषु
ॐ समुद्रेभ्यो कुक्षिदेशे

अथ वेदन्यास: सर्वदेवसाधारणा:

ॐ ऋग्वेदाय शिरसि
ॐ यजुर्वेदाय दक्षिणभुजे
ॐ सामवेदाय वामभुजे
ॐ सर्वोपनिषद्भ्यो हृदये
ॐ इतिहासपुराणेभ्यो जङ्घयो:
ॐ अथर्वाङ्गिसेभ्यो नाभौ
ॐ कल्पसूत्रेभ्यो पादयो:
ॐ व्याकरणेभ्यो वक्त्रे

ॐ तर्केभ्यो कण्ठे
ॐ मीमांसायै
ॐ निरुक्ताय
ॐ छन्दः शास्त्रेभ्यो
ॐ ज्योतिः शास्त्रेभ्यो
ॐ गीताशास्त्रेभ्यो
ॐ भूतशास्त्रेभ्यो
ॐ आयुर्वेदाय दक्षिणभुजे
ॐ धनुर्वेदाय वामभुजे
ॐ योगशास्त्रेभ्यो हृदये
ॐ नीतिशास्त्रेभ्यो पादयोः
ॐ वश्यतन्त्राय ओष्ठयोः

अथ वैराजन्यासः सर्वदेवसाधारणः

ॐ दिवे नमः मूर्ध्नि
ॐ सूर्यलोकाय
ॐ चन्द्रलोकाय
ॐ अनिललोकाय घ्राणे
ॐ व्योम्ने नाभौ
ॐ समुद्रेभ्यो वस्तिदेशे
ॐ पृथिव्यै पादयोः

अथ देवतान्यासः सर्वदेवसाधारणः

ॐ हिरण्यगर्भाय शिरसि
ॐ कृष्णाय केशेषु
ॐ रुद्राय ललाटे
ॐ गणेशाय वामपार्श्वे
ॐ यमाय भ्रुकुट्याम
ॐ अश्विभ्यां कर्णयोः
ॐ वैश्वानराय मुखे
ॐ मरुद्भ्यो घ्राणे
ॐ वसुभ्यो कण्ठे
ॐ रुद्रेभ्यो दन्तेषु
ॐ सरस्वत्यै जिह्वायाम्
ॐ इन्द्राय दक्षिणभुजे
ॐ वलये वामभुजे
ॐ प्रह्लादाय दक्षिणस्तने
ॐ विश्वकर्मणे वामस्तने
ॐ नारदाय दक्षिणकुक्षौ
ॐ अनन्तादिभ्यो वामकुक्षौः
ॐ वरुणाय हस्तयोः
ॐ मित्राय पादयोः
ॐ विश्वेभ्यो-देवेभ्यो ऊर्वोः
ॐ पितृभ्यो जान्वोः
ॐ यक्षेभ्यो जङ्घयोः
ॐ राक्षसेभ्यो गुल्फयोः
ॐ पिशाचेभ्यो पादयोः
ॐ असुरेभ्यो पादाङ्गुलिषु
ॐ विद्याधरेभ्यो पाष्र्ण्योः
ॐ ग्रहेभ्यो पादतलयोः
ॐ गुह्यकेभ्यो गुह्ये
ॐ पूतनादिभ्यो नखेषु
ॐ गन्धर्वेभ्यो ओष्ठयोः
ॐ कार्तिकेयाय दक्षिणपार्श्वे
ॐ गणेशाय वामपार्श्वे
ॐ मत्स्याय मूर्ध्नि

ॐ सवनेभ्यो पादयोः

ॐ इध्मेभ्यो बाहुषु

ॐ दर्भेभ्यो केशेषु

अथ गुणन्यासः सर्वदेवसाधारणः

ॐ धर्माय मूर्ध्नि

ॐ ज्ञानाय हृदि

ॐ वैराग्याय गुह्ये

ॐ ऐश्वर्याय पादयोः

अथायुधन्यासो विष्णुप्रतिष्ठामात्रविषयः

ॐ खड्गाय शिरसि

ॐ शार्ङ्गाय मस्तके

ॐ मुसलाय दक्षिणभुजे

ॐ हलाय वामभुजे

ॐ चक्राय नाभि-जठर-पृष्ठेषु

ॐ शङ्खाय लिङ्गे-वृषणदेशे च

ॐ गदायै जङ्घयोर्जानुनोश्च

ॐ पद्माय गुल्फयोः पादयोश्च

अथायुधन्यासः शिवप्रतिष्ठामात्रविषयः

ॐ वज्राय शिरशि

ॐ शक्तये मस्तके

ॐ दण्डाय दक्षिणभुजे

ॐ खड्गाय वामभुजे

ॐ पाशाय जठर-नाभि-पृष्ठदेशेषु

ॐ अंकुशाय लिङ्ग-वृषणयोश्च

ॐ त्रिशूलाय जान्वोः

ॐ ध्वजाय जङ्घयोः

ॐ चक्राय गुल्फयोः

ॐ पद्माय पादयोः

अथ शक्तिन्यासः सर्वदेवसाधारणः

ॐ लक्ष्म्यै ललाटे

ॐ सरस्वत्यै मुखे

ॐ रत्यै गुह्ये

ॐ प्रीत्यै कण्ठे

ॐ कीर्त्यै दिक्षु

ॐ शान्त्यै हृदि

ॐ तुष्ट्यै जठरे

ॐ पुष्ट्यै सर्वाङ्गे

अथाङ्गमन्त्रन्यासः विष्णु प्रतिष्ठामात्रविषयः

ॐ हृदयाय नमः हृदये

ॐ शिरसे स्वाहा शिरसि

ॐ शिखायै वषट्‌ शिखायाम्

ॐ कवचाय हुँ सर्वाङ्गेषु

ॐ नेत्रत्रयाय वौषट नेत्रयोः

ॐ अस्त्राय फट करयोः

ॐ नमः हृदये

ॐ नं नमः शिरसि

ॐ भगवते शिखायाम्

ॐ वासुदेवाय कवचे

ॐ नमो भागवते वासुदेवाय अस्त्रम्

ॐ श्रीवात्साय स्तनयोः

ॐ कौस्तुभाय उरसि

ॐ वनमालायै कण्ठे

ॐ पुरुष एव	जङ्घयो:	ॐ तु:करं	जानुनो:
ॐ एतावानस्य	जान्वो:	ॐ वकारं	ऊर्वो:
ॐ त्रिपादूर्ध्व	ऊर्वो:	ॐ रेकारं	गुह्ये
ॐ ततो विराड	वृषणदेशे	ॐ णिकारं	वृषणयो:
ॐ तस्माद्यज्ञत्सर्वहुत: सं	कट्यो:	ॐ यंकारं	कटिदेशे
ॐ तस्माद्याज्ञात्० ऋच: सा	नाभौ	ॐ भकारं	नाभौ
ॐ तस्मादश्वा	हृदि	ॐ गोकारं	जठरे
ॐ तं यज्ञं ब	स्तनयो:	ॐ देकारं	स्तनयो:
ॐ यत्पुरुषं	बाह्वो:	ॐ वकारं	हृदये
ॐ ब्राह्मणोस्य	मुखे	ॐ स्यकारं	कण्ठे
ॐ चन्द्रमा मनसो	चक्षुषो:	ॐ धीकारं	वदने
ॐ नाभ्या आसी	कर्णायो:	ॐ मकारं	तालुदेशे
ॐ यत्पुरुषेण	भ्रुवो:	ॐ हिकारं	नासिकायाम्
ॐ सप्तास्या	भाले	ॐ धीकारं	चक्षुषो:
ॐ यज्ञेन यज्ञ	शिरसि	ॐ योकारं	भ्रूमध्ये
अथोत्तरनारायणन्यास:		ॐ योकारं	ललाटे
ॐ अद्भ्य: सम्भृ	हृद्ये	ॐ न:कारं	पूर्वशिरसि
ॐ वेदाहमे तं	शिरसि	ॐ प्रकारं	दक्षिणशिरसि
ॐ प्रजापतिश्च	शिखायाम्	ॐ चोकारं	पश्चिमशिरसि
ॐ यो देवेभ्य आ	कवचे	ॐ दकारं	उत्तरशिरसि
ॐ रुचं ब्राह्मं	नेत्रयो:	ॐ याकारं	मूर्ध्नि
ॐ श्रीश्चते	अस्त्राय फट्	ॐ तकारं	सर्वत्र
अथ गायत्रीन्यास: सूर्यस्य		ॐ तत्सवितु:	हृदये
ॐ तकारं	पादाङ्गुष्ठयो:	ॐ वरेण्यं	शिरसि
ॐ त्सकारं	गुल्फयो:	ॐ भर्गोदेवस्य	शिखायाम्
ॐ विकार	जङ्घयो:	ॐ धीमहि	कवचे

ॐ ॐ नमः पादयोः

ॐ नं नमः जानुनोः

ॐ मों नमः गुह्ये

ॐ भं नमः नाभ्याम्

ॐ गं नमः हृदये

ॐ वं नमः कण्ठे

ॐ तें नमः मुखे

ॐ वां नमः नेत्रयोः

ॐ सुं नमः भाले

ॐ दें नमः मूर्ध्नि

ॐ वां नमः दक्षिणापार्श्वे

ॐ यं नमः वामपार्श्वे

एवमेव तत्तद्देवताया अङ्गमन्त्रन्यास कल्पना कार्या।

अथ मन्त्रन्यासः सर्वदेव साधारणः

ॐ अग्निमीले पादयोः

ॐ इषेत्वोर्जे गुल्फयोः

ॐ अग्नआयाहि जङ्घयोः

ॐ शन्नोदेवीर जान्वोः

ॐ एका च ऊर्वोः

ॐ स्वस्ति न इन्द्रो जठरे

ॐ दीर्घायुस्त ओ हृदये

ॐ विश्वतश्चक्षु कण्ठे

ॐ त्रातारमिन्द्र वक्त्रे

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे स्तनोर्नेत्रयोश्च

ॐ मूर्द्धानं दिवो मूर्ध्नि

अथ नारायणमूर्तौ द्वादशाक्षर मन्त्रेण न्यासः

ॐ केशवाय शिरसि

ॐ नं नारायणाय मुखे

ॐ मों माधवाय ग्रीवायाम्

ॐ भं गोविन्दाय कण्ठे

ॐ गं विष्णवे पृष्ठे

ॐ वं मधुसूदनाय कुक्षौ

ॐ तें त्रिविक्रमाय कटिदेशे

ॐ वां वामनाय जङ्घयेः

ॐ सुं श्रीधराय वामगुल्फे

ॐ दें हृषीकेशाय दक्षिणगुल्फे

ॐ वां पद्मनाभाय वामपादे

ॐ यं दामोदराय दक्षिणापादे

अथ नारायणमूर्तौ विष्णवष्टाङ्ग मन्त्रन्यासः

ॐ हुं हृदयाय हृदये

ॐ विष्णवे शिरसि

ॐ ब्रह्मणे शिखायाम्

ॐ ध्रुवाय कवचे

ॐ चक्रिणे अस्त्रायफट् अस्त्रहस्तयोः

ॐ नमः शम्भवाय गायत्रीं दक्षिणनेत्रे

ॐ विजयाय सावित्रीं वामनेत्रे

ॐ चक्रशूलाय पिङ्गलास्त्रं दिक्षु

अथ नारायणमूर्तौ पुरुष सूक्तन्यासः

ॐ सहस्रशीर्षा पादयोः

ॐ धियोयोनः नेत्रयोः
ॐ प्रचोदयात् अस्त्रे

अथ देवमूर्तौ निवृत्तिन्यासः

ॐ ह्रीं अं निवृत्यै शिरसि
ॐ ह्रीं आं प्रतिष्ठायै मुखे
ॐ ह्रीं इं विद्यायै दक्षिणनेत्रे
ॐ ह्रीं ईं शान्त्यै वामनेत्रे
ॐ ह्रीं उं धुन्धिकायै दक्षिणश्रोत्रे
ॐ ह्रीं ऊं दीपिकायै वामश्रोत्रे
ॐ ह्रीं ऋं रेचिकायै दक्षिणनासापुटे
ॐ ह्रीं ॠं मोचिकायै- वामनासापुटे
ॐ ह्रीं लृं परायै दक्षकपोले
ॐ ह्रीं लॄं सूक्ष्मायै वामकपोले
ॐ ह्रीं एं सूक्ष्मामृतायै-ऊर्ध्वदन्तपङ्क्तौ
ॐ ह्रीं ऐं ज्ञानामृतायै-अधोदन्तपङ्क्तौ
ॐ ह्रीं ओं सावित्र्यै ऊर्ध्वोष्ठे
ॐ ह्रीं औं व्यापिन्यै अधरोष्ठे
ॐ ह्रीं अं सुरूपायै जिह्वायाम्
ॐ ह्रीं अः अनन्तायै कण्ठे
ॐ ह्रीं कं सृष्ट्यै दक्षबाहुमूले
ॐ ह्रीं खं ऋध्यै दक्षकूपरे
ॐ ह्रीं गं स्मृत्यै दक्षमणिबन्धे
ॐ ह्रीं घं मेधायै दक्षकराङ्गुलिमूले
ॐ ह्रीं ङं कान्त्यै दक्षाङ्गुल्यग्रेषु
ॐ ह्रीं चं लक्ष्म्यै वामबाहुमूले
ॐ ह्रीं छं द्युत्यै वामकर्पूरे
ॐ ह्रीं जं स्थिरायै वाममणिबन्धे
ॐ ह्रीं झं स्थित्यै वामाङ्गुलिमूले
ॐ ह्रीं ञं सिद्ध्यै वामाङ्गुल्यग्रेषु
ॐ ह्रीं टं जरायै दक्षपादमूले
ॐ ह्रीं ठं पालिन्यै दक्षजानुनि
ॐ ह्रीं डं शान्त्यै दक्षगुल्फे
ॐ ह्रीं ढं ऐश्वर्यै दक्षपादाङ्गुलीषु
ॐ ह्रीं णं रत्यै वामपादाङ्गुल्येग्रेषु
ॐ ह्रीं तं कामिन्यै वामपादमूले
ॐ ह्रीं थं रदायै वामजानुनि
ॐ ह्रीं दं ह्लादिन्यै वामगुल्फे
ॐ ह्रीं धं प्रीत्यै वामपादाङ्गुलिमूले
ॐ ह्रीं नं दीर्घायै वामपादाङ्गुल्यग्रेषु
ॐ ह्रीं पं तीक्ष्णायै दक्षिणकुक्षौ
ॐ ह्रीं फं सुप्त्यै वामकुक्षौ
ॐ ह्रीं बं अभयायै पृष्ठे
ॐ ह्रीं भं निद्रायै नाभौ
ॐ ह्रीं मं मात्रे उदरे
ॐ ह्रीं यं शुद्धायै हृदि
ॐ ह्रीं रं क्रोधिन्यै कण्ठे
ॐ ह्रीं लं कृपायै ककुदि
ॐ ह्रीं वं उल्कायै स्कन्धयोः
ॐ ह्रीं शं मृत्यवे दक्षिणकरे
ॐ ह्रीं षं पीतायै वामकरे
ॐ ह्रीं सं अरुणायै दक्षिणपादे
ॐ ह्रीं हं अरुणायै वामपादे
ॐ ह्रीं त्र असितायै मूर्द्धादिपादान्तम्
ॐ ह्रीं क्षं सर्वसिद्धिगौर्यैपादादिमूर्धान्तम्

अथ देवीमूर्तौ वशिन्यादिन्यासः

ॐ अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओ औं अं अः क्लृं वशिनीवाग्देवतायै नमः ब्रह्मरन्ध्रे। ॐ कं खं गं घं ङं क्लीं ह्रीं कामेश्वरीवाग्देवतायै नमः ललाटे। ॐ चं छं जं झं ञं क्लीं मोदिनीवाग्देवतायै नमः भ्रूमध्ये। ॐ टं ठं डं ढं णं ब्ल्यूं विमलावाग्देवतायै नमः कण्ठे। ॐ तं थं दं धं नं ज्म्रीं अरुणावाग्देवतायै नमः हृदि। ॐ पं फं बं भं मं ह्स्ल्यूं जयिनीवाग्देवतायै नमः नाभौ। ॐ यं रं लं वं हस्ल्ब्यूं-सर्वेश्वरीवाग्देवतायै आधारे। ॐ शं षं सं हं क्षं क्ष्मीं-कौलिनीवाग्देवतायै सर्वाङ्गे। ॐ मं जीवात्मने नमः। ॐ भं प्राणात्मने नमः। देवशरीरे व्यापकं। ॐ बुद्ध्यात्मने०। ॐ फं अहङ्कारात्मने०।

ॐ पं मन आत्मने	हृदि	ॐ झं पाण्यात्मने	पाण्योः
ॐ नं शब्दतन्मात्रात्त्मने	शिरसि	ॐ जं पदात्मने	पादयोः
ॐ धं स्पर्शतन्मात्रात्मने	मुखे	ॐ छं पाय्वात्मने	पायौ
ॐ दं रूपतन्मात्रात्मने	हृदि	ॐ चं उपस्यात्मने	उपस्थे
ॐ थं रसतन्मात्रात्मने	हस्तयोः	ॐ ङं पृथिव्यात्मने	पादयोः
ॐ तं गन्धतन्मात्रात्मने	पादयोः	ॐ द्यं अबात्मने	वस्तौ
ॐ णं श्रोतात्मने	श्रोत्रयोः	ॐ द्यं तेज आत्मने	हृदि
ॐ ढ त्वगात्मने	त्वचि	ॐ खं प्राणात्मने	घ्राणे
ॐ डं चक्षुरात्मने	नेत्रयोः	ॐ कं आकाशात्मने	शिरसि
ॐ ठं जिह्वात्मने	जिह्वायाम्	ॐ पं सूर्यात्मने	हृत्पुण्डरीकमध्ये
ॐ टं घ्राणात्मने	घ्राणे	ॐ सं सोमात्मने	हृत्पुण्डरीकमध्ये
ॐ ञं वागात्मने	वाचि	ॐ वं वह्न्यात्मने	हृत्पुण्डरीकमध्ये

स यथा स्वहृत्पद्मात् ऐश्वर्य तेजः पुञ्जवामनाड्या निः सार्य, ब्रह्म-रन्ध्रेण प्रतिमाया बुद्धिकर्मेन्द्रियाणि मनः सहितानि यथास्थानं हृत्पद्मे पुरुषं न्यसेत्।

ततः अर्चाबीजं स्वाभिमतं मूर्त्या स्वमन्त्रेण संयोज्य विशेषबीजाद्यनुपलब्धौ तु देवतानाम्नः आद्यमक्षरं सानुस्वारं चतुर्थ्यन्तं तत्तद्देवतानाम्ना संयोज्य तद्यथा–

ॐ शिं शिवात्मने--ॐ विं विष्णवात्मने नमः। ॐ रां रामात्मने नमः इत्यादिप्रकारेण देवं भावयित्वा। ॐ यं सर्वात्मने इति सार्वसाक्षिणं भावयित्वा। ॐ गं सर्वात्मने-इति देवं सर्वतोमुख भावयित्वा ॐ वः अनुग्राहकात्मने-इत्यनुग्राहक भवयित्वा ॐ सर्वभूतात्मने-इति सर्वभूत कारणं भावयित्वा ॐ लं सर्वसंहात्मने-इति सर्वसंहारात्मकं भावयित्वा ॐ क्षं कोपात्मने-इति सर्वभयकारकं ध्यात्वा तत्वत्रयं न्यसेत्। ॐ आत्मतत्वाय। ॐ आत्मतत्वाधिपतये ब्रह्मणे। ॐ विद्यातत्वाय। ॐ विद्यातत्वाधिपतये विष्णवे हृदये। ॐ शिवत्वाय। ॐ शिवतत्वाधिपतये रुद्राय-शिरसि।

अथ शिवस्य ब्रह्मन्यासः

ॐ ईशानाय	अङ्गुष्ठयोः	ॐ अघोराय	शिखायाम्
ॐ तत्पुरुषाय	तर्जन्योः	ॐ तत्पुरुषाय	कवचे
ॐ अघोरेभ्यो	मध्यमयोः	ॐ ईशानाय	अस्त्रे
ॐ वामदेवाय	अनामिकयोः	ॐ हृदयाय	कनिष्ठिकयोः
ॐ सद्योजाताय	कनिष्ठिकयोः	ॐ शिरसे स्वाहा	अनामिकयोः
		ॐ शिखायै वषट्	मध्यमयोः

ॐ सद्योजाताय हृदि ॐ कवचाय हुम् तर्जन्योः
ॐ वामदेवाय शिरसि ॐ अस्त्राय फट् अङ्गुष्ठयोः

एवं विन्यस्य, परेण तेजसा संयोज्य, कवचेनावगुष्ठ्य, सर्वकर्मसु निजोजयेत्। आचमन सर्वत्र इत्थं देवस्य करन्यासं कृत्वा 'लिङ्गमुद्रां' बध्वा ॐ ईशानः सर्वविद्यानां० सदा शिवोम्' इति मन्त्रेण ईशान (नाम्नी) मुष्टिं बध्नीयात्।

अथ शिवस्य कलान्यासः

ॐ ईशानः सर्व० ईशानं मूर्ध्नि (अङ्गुल्यग्रैः रुद्रमुद्रया अयं न्यासः कार्यः।
ॐ तत्पुरुषाय वि० तत्पुरुषं मुखे (तर्जन्यङ्गुष्ठयोगेन अयं न्यासः कार्यः)।
ॐ अघोरेभ्योऽथ० अघोरं हृदि (मध्यमाङ्गुष्ठयोगेन अयं न्यासः कार्यः)
ॐ वामदेवाय वामदेवं गुह्ये (अङ्गुष्ठानामिकायोगेन अयं न्यासः कार्यः)
ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि (पादादारेभ्य मस्तकान्तं कनिष्ठाङ्गुष्ठयोगेन न्यासः
ॐ ईशानः सर्वविद्यानां नमः ईशानीं देवस्य उपरितनमूर्ध्नि। ॐ ईश्वरः सर्वभूतानां नमः अभयदां देवस्य पूर्वमूर्ध्नि। ॐ ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोधिपति-र्ब्रह्मा इष्टदां कलां देवस्य दक्षिमूर्ध्नि। ॐ शिवो मे अस्तु नमः मरोचीं कलां देवस्य उत्तरमूर्ध्नि। ॐ सदाशिवोऽम् नमः ज्वालिनीं पश्चिममूर्ध्नि।

अथ शिवस्य तत्पुरुषकलान्यासः

ॐ तत्पुरुषायविद्महे-पूर्ववक्त्रेशान्तिम्
ॐ महादेवाय धीमहि दक्षिणवक्त्रे-विद्याम्
ॐ तन्नो रुद्रो उत्तरवक्त्रे प्रतिष्ठां
ॐ प्रचोदयात् पश्चिमवक्त्रे घृतिम्

अथ शिवस्याघोर कलान्यासः

ॐ कलविकरणाय सञ्जीवनींवामजानौ
ॐ बलविकरणाय धात्रींदक्षिण जङ्घायाम्
ॐ बलाय वृद्धिं वामजङ्घायाम्
ॐ बलाय छायां दक्षिणस्फिचि
ॐ प्रमथनाय क्रियां वामस्फिचि

ॐ अघोरेभ्यो तमां हृदये

ॐ थ घोरेभ्यो जरां उरसि

ॐ घोर सत्वां स्कन्धयो:

ॐ घोरतरेम्यो निद्रां नाभौ

ॐ सर्वेभ्यो सर्वव्याधि कुक्षौ

ॐ सर्वसर्वेभ्यो मृत्युं पृष्ठे

ॐ नमस्ते अस्तु क्षुधां वक्षसि

ॐ रुद्ररूपेम्यो तृषां उरसि

अथ वामदेवकलान्यास:

ॐ वामदेवाय जरा गुह्ये

ॐ ज्येष्ठाय रक्षां लिङ्गे

ॐ श्रेष्ठाय रतिं दक्षिणोरौ

ॐ रुद्राय पालिनीं वामोरौ

ॐ कालाय कलां दक्षिणजानौ

ॐ सर्वभूतदमनाय–भ्रामणीं कटयाम्

ॐ मनो शोषिणीं दक्षिणपार्श्वे

ॐ उन्मनाय ज्वरां वामपार्श्वे

अथ सद्योजातकलान्यास:

ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सिद्धिं–दक्षिणपादे

ॐ सद्योजाताय वै नमो ऋद्धिंवामपादे

ॐ भवे दितिं दक्षिणपाणौ

ॐ भवे लक्ष्मी वामपाणौ

ॐ नातिभवे मेधां नासायाम्

ॐ भवस्व मां कान्ति शिरसि

ॐ भव स्वधां दक्षिणबाहौ

ॐ उद्भवाय प्रभां वामबाहौ

ततः 'तमाद्याः कला अत्र विशन्तु' इति मन्त्रेणा–वशिष्टकलान्तर न्यासभावनां कुर्यात्। इत्थं न्यासकरणेन विद्यादेवं हं सं भावयित्वा 'ॐ हंस हंस' इति। मन्त्रेण हृदयादिन्यासं कुर्यात्। तद्यथा–ॐ हं सां हृदयाय नमः। ॐ हं सीं शिरसे स्वाहा। ॐ हं सूं शिखायै वषट्। ॐ हं सै कवचाय हुम्। ॐ हं सौं अस्त्राय फट्। नृसिंहमूर्तौ तु 'नायं हृदयादिन्यासः किन्तु 'ॐ नृसिंह उग्ररूप ज्वल–ज्वल प्रज्वल स्वाहा' इति मन्त्रेण षडावृत्तेन षडङ्गन्यासाः कार्याः। न्यासानन्तरं बलिश्च नृसिंहाय देय हिति वशेषः। नारसिंही यदा स्थाप्या अधिवास्य निशागमे। कृत्रिमं वाऽथ साक्षाद्वा पशुं दत्वा बलिं हरेत्–इति वचनात्। एवं न्यासविधिं कृत्वा निद्राकलशे निद्रामावाहयेत्।'

॥ देवी–देवताओं की प्रतिष्ठा में मूर्ति न्यास क्रम ॥

शिवपूजनविधि:

पूजनकर्ता पूर्वाभिमुख शुद्ध कुशा अथवा कम्बलासन पर बैठ कर पूजन सामग्री एवं स्वंय को निम्न मंत्र के द्वारा जल छिड़कर पवित्र करे-

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु।

तत्पश्चात् आचमन एवं प्राणायाम करे, तथा शिवपूजन के निमित्त यह संकल्प करे-

संकल्पः-ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्त्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोह्नि द्वितीय पराद्धे श्री श्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वतरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशे अमुकमासे-अमुकपक्षे-अमुक तिथौ-अमुकवासरे-अमुकगोत्रः अमुक शर्माऽहं (अमुक वर्माऽहं अमुक गुप्तोऽहं) धमार्थकाम-मोक्षादिफल-प्राप्त्यर्थञ्च साम्बसदाशिवप्रीतिकामः अमुक लिङ्गोपरि पूजन पूर्वकं अमुक द्रव्येष रुद्राभिषेक (शिव पूजनं) कर्म करिष्ये॥

संकल्प के पश्चात् निम्न श्लोक एवं मंत्र के द्वारा शिवजी का आवाहन करे-

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं
रत्नाकल्पोज्वलाङ्ग परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्।
पद्मासीनं समन्तात्स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसनं
विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्॥

आयाहि हे चन्द्रकलाशिरोमणे गङ्गाधर त्र्यम्बक भूतिभूषण।
सान्निध्यमत्रास्तु जगन्निवास ते पूजां ग्रहीतुं विधिवन्मयार्पिताम्।।

नमः शम्भ्वाय च मयोभवाय च नमः शङ्कराय च।
मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतरा च।।

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः। साम्बसदाशिवमावाहयामि स्थापयामि।

आवाहन के पश्चात् निम्न मंत्र एवं श्लोक के द्वारा शिवजी को आचमन प्रदान करे-

ॐ मनो जूतिर्ज्जूषतामाज्ज्यस्य बृहस्प्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्त्वरिष्टं यज्ञठं० समिमं दधातु। विश्वेदेवा स ऽइह मादयन्तामो३ँ प्प्रतिष्ठ।।

सिंहासने कनकरत्नमणि प्रभास्वत् छत्रं ध्वजालसितचामरतोरणाढ्यम्।
बालार्ककोटिसदृशं कनकाम्बराड्यं श्रीविश्वनाथमनसैव समर्पितं ते।।

ॐ या ते रुद्रशिवा तनूरघोरापापकाशिनी।
तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि।।

श्रीभगवते साम्बससदाशिवाय आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

आसन प्रदान करने के पश्चात् निम्न श्लोक एवं मंत्र के द्वारा शिवजी को पाद्य जल प्रदान करे-

दूर्वाङ्कुराम्बुजमनोहरपुष्पयुक्तं-शुद्धं जलं सुरभिचूर्णसमन्वितं च।
सौवर्णपात्रविलसत्पदयोर्विशुद्धं पाद्यं गृहाण जगदीश समर्पितं ते।।

ॐ यामिषुङ्गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे।
शिवाङ्गिरित्रतां कुरु मा हिठं० सीः पुरुषञ्जगत्।।

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय पादयोः पाद्यं समर्पयामि।

पाद्य जल प्रदान करने के पश्चात निम्न श्लोक एवं मंत्र के द्वारा शिवजी को अर्घ्य जल प्रदान करेः-

दूर्वाद्यवाक्षतसुगन्धिहिरण्यरत्नं दर्भाम्बुजत्रिपथगाजलपुष्पयुक्तम्।
सौवर्णापात्ररचितं फलयुक्तमर्घ्यं भो! विश्वनाथ मनसैव मयार्पितं ते।।

ॐ शिवेन वचसा त्त्वा गिरिशाच्छा वदामसि।
यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्मर्ठ० सुमनाऽअसत्।।

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि।

अर्घ्यजल प्रदान करने के पश्चात् निम्न श्लोक एवं मंत्र के द्वारा शिवजी को स्नान करावे:-

गंङ्गाजलैरमृतमाधुरतामुपेतैरेलालवङ्गशुभगन्धमनोभिरामम्।
गौरीपते कनकपात्रधृतं मया तेभक्त्यार्पितं रुचिरमाचमनं गृहाण।।

ॐ अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्योभिषक्। अहींश्च सर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वाश्च्च यातुधान्यो धराचीः परासुव।।

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय स्नानीयं समर्पयामि।

पश्चात् निम्न क्रमानुसार, दुग्ध-दधि-घृत-मधु-शर्करा-शुद्धजल तथा पंचामृत से स्नान करावे:-

दुग्ध स्नानम् :-

दिव्यौषधिद्रवभवं नवनीतपूर्णक्षीराब्धि सम्भृतसुधाधिकधामधामम्।
स्वर्धेनुसम्भवमपूर्वसुमिष्टमेतत्स्नानार्थमेवमुररी कुरु देव दुग्धम्।।

ॐ पयः पृथिव्याम पय ऽओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः।
पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्।।

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय पयस्नानं समर्पयामि। पयस्नानान्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

दधि स्नानम्:-

कर्पूरकुन्दकुमुदेन्दुकरावदातं-मल्लीप्रफुल्लकुसुमाकरकान्तिकान्तम्।
स्नानाय शुद्धरसराजसुकोमलार्चिस्निग्धं शुभं दधि निधाय समर्पितं ते।।

ॐ दधिक्राब्णोऽ अकारिषञ्जिष्णोरश्वस्य वाजिनः।
सुरभि नो मुखा करत्त्प्रणऽ आयूर्ठ०षि तारिषत्॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय दधिस्नानं समर्पयामि। स्नान्ते आचमनिय जलं समर्पयामि।

घृतस्नानम्ः-

तेजोमयेन तपनद्युतिपावितेन गव्येन भव्यविधिना परमन्त्रितेन।
वह्नौ सृतेन रचयामि रसावृतेन भौमामृतेन च घृतेन तवाभिषेकम्॥

ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्य यो निर्घृते श्रितो घृतंवस्य धाम।
अनुष्वधमावहमादयस्व स्वाहा कृतं वृषभवक्षि हव्यम्॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय घृतस्नानं समर्पयामि। स्नानान्ते शु०।

मधु स्नानम्ः-

नानाविधौषधिलतारससंभृतान्तर्माधुर्यमिष्टममृतप्रतिभं गुणेन।
माणिक्यपात्रसमपूरितभक्तिपूर्णमङ्गीकुरुष्व मधुदेव महेश शम्भो॥

ॐ मधु वाताऽऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्न्नः सन्त्वोषधीः। मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवर्ठ० रजः॥ मधुद्यौरस्तु नः पिता॥ मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ२॥ ऽअस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय मधु स्नानं समर्पयामि। स्नानान्ते शु०।

शर्करा स्नानम्ः-

पूर्णोक्षुसागरसमुद्भवयातनिम्नामुक्ताफलद्रवसुधाधिकया महिम्ना।
सर्वाङ्गशोधनविधौ वरयात्रिनेत्र सुस्नाहि सिद्धवर शर्करया महेश॥

ॐ अपार्ठ० रसमुद्वयसर्ठ० सूर्ये सन्तर्ठ० समाहितम्। अपार्ठ०रसस्य यो रसस्तं वो गृह्णाम्युत्तममुपयामगृहीतो सीन्द्रायत्त्वा जुष्टङ्गृह्णाम्येषते योनिरिन्द्रायत्त्वा जुष्टतमम्॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय शर्करास्नानं समर्पयामि। स्नानान्ते शु०।

शुद्धोदक स्नानम्ः-

दिव्यद्रुमेन्धनसमिद्धहुताशनाप्तैः शुद्धोदकैः सुविमलैश्च समुद्धृतैश्च।
गौरीपते परिगृहाण यथासुखेन स्नानं मयैव विधिवद्धरते प्रदिष्टम्॥

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्तऽ आश्विनाः श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामाऽ अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। स्नानान्ते शु०।

पंचामृत स्नानम्ः-

सर्पिस्सुदुग्धदधिमाक्षिकशर्कराद्यैर्भागैर्युतैः कनककुम्भभृतैः समन्त्रैः।
कर्पूर केशरसुगन्धिभिरिन्दुमौले स्नानार्थमर्पितमिदं विधिवत् गृहाण॥

ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्त्रोतसः।
सरस्वती तु पञ्चधा सो देशे ऽभवत्सरित्॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि। स्नानान्ते शु०।

पंचामृत स्नान के पश्चात् पुनः शिवजी को शुद्ध जल के द्वारा स्नान करावे, उसके पश्चात् चंदन-चावल के द्वारा पूजन कर अभिषेक पात्र में अभिषेक के लिए-गन्ध-पुष्प-दुग्ध-जल आदि डालकर भगवान् शंकर पर तिपाई अथवा अभिषेक पात्र लटका कर श्रृंगी को हाथ में लेकर जिससे निरन्तर धारा जगत का कल्याण करने वाले शिवजी पर पड़ती रहे, उसके पश्चात् वेदोक्त रौद्राध्याय से शिवजी का महाअभिषेक करे।

अभिषेक की समाप्ति के पश्चात् पूजनकर्त्ता निम्न श्लोक एवं मंत्र के द्वारा भगवान् शिव को वस्त्र एवं उपवस्त्र प्रदान करे:-

कौशेयवस्त्रयुगलं कनकैर्विचित्रंबालार्ककोटिसदृशं सुमनोभिरामम्।
भक्त्या मयार्पितमिदं परिधाय शम्भोसिंहासने समुपविश्य गृहाण पूजाम्॥

ॐ असौ योवसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः।
उतैनङ्गोपाऽ अदृश्रन्नदृश्रन्नुदहार्यः सदृष्टो मृडयाति नः॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय वस्त्रमुपवस्त्रं च समर्पयामि। वस्त्रोपवस्त्रान्ते आचमनिय समर्पयामि।

वस्त्र एवं उपवस्त्र के पश्चात् निम्न श्लोक एवं मंत्र के द्वारा शिवजी को यज्ञोपवित प्रदान करे:-

दत्तं मया सुमनसा वचसा करेण यद्ब्रह्मवर्चसमयं परमं पवित्रम्।
यद्धर्मकर्मनिलयं परमायुष्यञ्च यज्ञोपवीतमुररी कुरु दीनबन्धो॥

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतयेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्रयं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥
यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्यत्वा यज्ञोपवीतेनोपनह्यामि।

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय यज्ञोपवितं आचमनियं जलं समर्पयामि।

यज्ञोपवित के पश्चात् भगवान् शिव को जल से आचमन करवा कर निम्न श्लोक एवं मंत्र के द्वारा चन्दनादि व गंध (लेपन) प्रदान करे:-

माणिक्यमौक्तिकसुविद्रुमपद्मराग हीरेन्द्रनीलमणि रत्नमनोहराणि।
नानाविधानि सुशुभाभरणानि शम्भोभक्त्या मया परिगृहाण निवेदितानि॥

ॐ हिरण्यगर्ब्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽ आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा व्विधेम॥

यच्छ्रेष्ठमस्ति मलयाचलचन्दनानां कर्पूरकेशरसुगन्धिरसेन घृष्टम्।
आमोदमानमनिशं मनसार्पितं ते तच्चन्दनं त्वमुररी कुरु दीनबन्धो॥

ॐ नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्त्राक्षाय मीढुषे।
अथो येऽ अस्य सत्त्वानो हस्तेब्भ्यो करन्नमः॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय कनिष्ठामूलगताङ्गुष्टयोगेन गन्धमुद्रां प्रदर्श्य अनामिकया गन्धानुलेपन समर्पयामि।

कनिष्ठीका अंगुली अथवा अगुँठे के अग्र भाग को मिला कर गन्ध-मुद्रा प्रदर्शित करते हुए अनामिका अंगुली के द्वारा शिवजी को चन्दन चढ़ावे।

तत्पश्चात् निम्न श्लोक एवं मंत्र के द्वारा शिवजी को भस्म प्रदान करें-

यदङ्गसंसर्गकृतावरेण्यं मौलौ निजे सङ्गमयन्ति देवाः।
देहे सदैवाहितविश्वभारे सारे जगत्या वितनोति भस्म॥
ॐ प्रसद्य भस्मना योनिमपश्च पृथिवीमग्ने।
सर्ठ० सृज्यमातृभिष्ट्व ज्ज्योतिष्मान्पुनरासदः॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय भस्मं समर्पयामि।

भस्म प्रदान करने के पश्चात् निम्न श्लोक एवं मंत्र के द्वारा शिवजी को अक्षत प्रदान करे:-

श्वेतैरखण्डितमनोहरशालिबीजैः संक्षालितैः शुचिजलैश्च सुगन्धिमिश्रैः।
त्वामर्चयामि भगवन्! मनसा सदाहं गौरीपते मयि निधेहि कृपाकटाक्षम्॥

ॐ प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयोरात्न्योर्ज्याम्।
याश्च ते हस्तऽ इषवः परा ता भगवो वप॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय। अक्षतान् समर्पयामि।

अक्षत प्रदान करने के पश्चात् निम्न श्लोक एवं मंत्र के द्वारा शिवजी को पुष्पमाला प्रदान करे:-

विल्वैश्च चम्पकमनोहरजातिपुष्पैः मन्दारपङ्कजजपाकुमुदैर्दलैश्च।
मालादिभिः कनकसूत्रसुग्रन्थितैश्च सम्पूजितो मयि निधेहि कृपाकटाक्षम्॥

ॐ ओषधीः प्रतिमोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः।
अश्वा ऽइव सजित्वरीर्वीरुधः पारयिष्णवः॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय तर्जन्यङ्गुष्ठयोगेन पुष्पमाला समर्पयामि।

तर्जनी अंगुली एवं अंगुठे को मिलाकर ही जगत की रचना करने वाले शिवजी पर पुष्पमाला चढ़ावें–

मालूरवृक्षजनितानि मनोहराणि भक्त्या त्वदर्थमनिशं प्रतिपादितनि।
श्रीविल्वपत्रविपुलानि समर्पितानि गौरीपते परि गृहाण सुकोमलानि॥

ॐ नमो बिल्मिने च कवचिने च नमो वर्मिणे च वरूथिने च नमः। श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्याय चाहनन्याय च।

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय बिल्पत्राणि समर्पयामि।

पश्चात् भगवान् शिवजी के अनेका–नेक नाम मंत्रों से एक–एक बिल्वपत्र शिवजी पर चढ़ाते रहे, बिल्पपत्र चढ़ाने के लिए शिवजी के विभिन्न नाम क्रमशः इस प्रकार से हैं–

नाममंत्रों के द्वारा शिवजी पर बिल्व पत्र समर्पित करें–

ॐ साम्बसदाशिवाय नमः १ ॐ हिरण्यबाहवे नमः २ ॐ सेनान्ये नमः ३ ॐ दिशां च पतये नमः ४ ॐ वृक्षेभ्यो नमः ५ ॐ हरिकेशेभ्यो नमः ६ ॐ पशूनां पतये नमः ७ ॐ शष्पिञ्जराय नमः ८ ॐ त्विषोमते नमः ९ ॐ पथीनां पतये नमः १० ॐ हरिकेशाय नमः ११ ॐ उपवीतिने नमः १२ ॐ पुष्टानां पतये नमः १३ ॐ बभ्लूशाय नमः १४ ॐ व्याधिने नमः १५ ॐ अन्नानां पतये नमः १६ ॐ भवस्यहेत्यै नमः १७ ॐ जगतां पतये

नमः १८ ॐ रुद्राय नमः १६ ॐ आततायिने नमः २० ॐ क्षेत्राणां पतये नमः २१ ॐ सूताय नमः २२ ॐ अहन्त्ये नमः २३ ॐ वनानां पतये नमः २४ ॐ रोहिताय नमः २५ ॐ स्थपतये नमः २६ ॐ वृक्षाणां पतये नमः २७ ॐ भुवन्तये नमः २८ ॐ वारिवस्कृताय नमः २६ ॐ ओषधीनां पतये नमः ३० ॐ मन्त्रिणे नमः ३१ ॐ वाणिजाय नमः ३२ ॐ कक्षाणां पतये नमः ३३ ॐ उच्चर्घोषाय नमः ३४ ॐ आक्रन्दयते नमः ३५ ॐ पत्तीनां पतये नमः ३६ ॐ कृत्स्नायतयाधवते नमः ३७ ॐ सत्वनांपतये नमः ३८ ॐ सहमानाय नमः ३६ ॐ निव्याधिने नमः ४० ॐ आव्याधिनीनां पतये नमः ४१ ॐ निषङ्गिणे नमः ४२ ॐ ककुभाय नमः ४३ ॐ स्तेनानां पतये नमः ४४ ॐ निचेरवे नमः ४५ ॐ परिचराय नमः ४६ ॐ अरण्यानां पतये नमः ४७ ॐ वञ्चते नमः ४८ ॐ परिवञ्चते नमः ४६ ॐ स्तायूनां पतये नमः ५० ॐ निषङ्गिणे नमः ५१ ॐ इषुधिमते नमः ५२ ॐ तस्कराणां पतये नमः ५३ ॐ सृकायिभ्यो नमः ५४ ॐ जिघांर्ठ०सद्भ्यो नमः ५५ ॐ मुष्णतां पतये नमः ५६ ॐ असिमद्भ्यो नमः ५७ ॐ नक्तञ्चरद्भ्यो नमः ५८ ॐ विकृन्तानां पतये नमः ५६ ॐ उष्णीषिणे नमः ६० ॐ गिरिचराय नमः ६१ ॐ कुलुञ्चानां पतये नमः ६२ ॐ इषुमद्भ्यो नमः ६३ ॐ धन्वायिभ्यो नमः ६४ ॐ आतन्वानेभ्यो नमः ६५ ॐ प्रतिदधानेभ्यो नमः ६६ ॐ आयच्छद्भ्यो नमः ६७ ॐ अस्यद्भ्यो नमः ६८ ॐ बिसृजद्भ्यो नमः ६६ ॐ विद्यद्भ्यो नमः ७० ॐ स्वपद्भ्यो नमः ७१ ॐ

जाग्रद्भ्यश्च वो नमः ७२ ॐ शयानेभ्यो नमः ७३ ॐ आसीनेभ्यश्च वो नमः ७४ ॐ तिष्ठद्भ्यो नमः ७५ ॐ घावद्भ्यश्च वो नमः ७६ ॐ सभाभ्यो नमः ७७ ॐ सभापतिभ्यश्च वो नमः ७८ ॐ अश्वेभ्यो नमः ७९ ॐ अश्वपतिभ्यश्च वो नमः ८० ॐ आव्याधिनीभ्यो नमः ८१ ॐ विविद्ध्यन्तीभ्यश्च वो नमः ८२ ॐ उमणाभ्यो नमः ८३ ॐ तृठं० हतीभ्यश्च वो नमः ८४ ॐ गणेभ्यो नमः ८५ ॐ गणपतिभ्यश्च वो नमः ८६ ॐ व्रातेभ्यो नमः ८७ ॐ व्रातपतिभ्यश्च वो नमः ८८ ॐ गृत्सेभ्यो नमः ८९ ॐ गृत्सपतिभ्यश्च वो नमः ९० ॐ विरूपेभ्यो नमः ९१ ॐ विश्वरूपैभ्यश्च वो नमः ९२ ॐ सेनाभ्यो नमः ९३ ॐ सेनानिभ्यश्च वो नमः ९४ ॐ रथिभ्यो नमः ९५ ॐ अरथेभ्यश्च वो नमः ९६ ॐ क्षतृभ्यो नमः ९७ संगृहीतृभ्यश्च वो नमः ९८ ॐ महद्भ्यो नमः ९९ ॐ अभकेभ्यश्च वो नमः १०० ॐ तक्षभ्यो नमः १०१ ॐ रथकारेभ्यश्च वो नमः १०२ ॐ कुलालेभ्यो नमः १०३ ॐ कर्मारेभ्यश्च वो नमः १०४ ॐ निषादेभ्यो नमः १०५ ॐ पुञ्जिष्ठेभ्यश्च वो नमः १०६ ॐ श्वनिभ्यो नमः १०७ ॐ मृगयुभ्यश्च वो नमः १०८ ॐ श्वभ्यो नमः १०९ ॐ श्वपतिभ्यश्च वो नमः ११० ॐ भवाय नमः १११ ॐ रुद्राय नमः ११२ ॐ शर्वाय नमः ११३ ॐ पशुपतये नमः ११४ ॐ नीलग्रीवाय नमः ११५ ॐ शितिकण्ठाय नमः ११६ ॐ कपर्दिने नमः ११७ ॐ व्युप्तकेशाय नमः ११८ ॐ सहस्राक्षाय नमः ११९ ॐ शतधन्वने नमः १२० ॐ गिरिशयाय नमः १२१ ॐ शिपिविष्ठाय नमः १२२

ॐ मोढुष्टमाय नमः १२३ ॐ इषुमते नमः १२४ ॐ ह्रस्वाय नमः १२५ ॐ वामनाय नमः १२६ ॐ बृहते नमः १२७ ॐ वर्षीयसे नमः १२८ ॐ वृद्धाय नमः १२९ ॐ सवृधे नमः १३० ॐ अग्नाय नमः १३१ ॐ प्रथमाय नमः १३२ ॐ आशवे नमः १३३ ॐ अजिराय नमः १३४ ॐ शीघ्र्याय नमः १३५ ॐ शीभ्याय नमः १३६ ॐ ऊर्म्याय नमः १३७ ॐ अवस्वन्याय नमः १३८ ॐ नादेयाय नमः १३९ ॐ द्वीप्याय नमः १४० ॐ ज्येष्ठाय नमः १४१ ॐ कनिष्ठाय नमः १४२ ॐ पूर्वजाय नमः १४३ ॐ अपरजाय नमः १४४ ॐ मध्यमाय नमः १४५ ॐ अपगल्भाय नमः १४६ ॐ जघन्याय नमः १४७ ॐ बुध्न्याय नमः १४८ ॐ सोभ्याय नमः १४९ ॐ प्रतिसर्याय नमः १५० ॐ याम्याय नमः १५१ ॐ क्षेम्याय नमः १५२ ॐ श्लोक्याय नमः १५३ ॐ अवसान्याय नमः १५४ ॐ उर्वर्याय नमः १५५ ॐ खल्याय नमः १५६ ॐ वन्याय नमः १५७ ॐ कक्षाय नमः १५८ ॐ श्रवाय नमः १५९ ॐ प्रतिश्रवाय नमः १६० ॐ आशुषेणाय नमः १६१ ॐ आसुरथाय नमः १६२ ॐ शूराय नमः १६३ ॐ अवभेदिने नमः १६४ ॐ बिल्मिने नमः १६५ ॐ कवचिने नमः १६६ ॐ वर्मिणे नमः १६७ ॐ वरूथिने नमः १६८ ॐ श्रुताय नमः १६९ ॐ श्रुतसेनाय नमः १७० ॐ दुन्दुभ्याय नमः १७१ ॐ आहनन्याय नमः १७२ ॐ धृष्णवे नमः १७३ ॐ प्रमृशाय नमः १७४ ॐ निषङ्गिणे नमः १७५ ॐ इषुधिमते नमः १७६ ॐ तीक्ष्णेषवे नमः १७७ ॐ आयुधिने नमः १७८ ॐ स्वायुधाय

नमः १७६ ॐ सुधन्वने नमः १८० ॐ स्रुत्याय नमः १८१ ॐ पथ्याय नमः १८२ ॐ काटच्याय नमः १८३ ॐ नीप्याय नमः १८४ ॐ कुल्याय नमः १८५ ॐ सरस्याय नमः १८६ ॐ नादेयाय नमः १८७ ॐ वैशन्ताय नमः १८८ ॐ कूप्याय नमः १८६ ॐ अवटच्याय नमः १६० ॐ बीघ्याय नमः १६१ ॐ आतप्याय नमः १६२ ॐ मेघ्याय नमः १६३ ॐ विद्युत्याय नमः १६४ ॐ वर्ष्याय नमः १६५ ॐ अवर्ष्याय नमः १६६ ॐ रेष्माय नमः १६७ ॐ वास्तव्याय नमः १६८ ॐ वास्तुपाय नमः १६६ ॐ सोमाय नमः २०० ॐ रुद्राय नमः २०१ ॐ ताम्राय नमः २०२ ॐ अरुणाय नमः २०३ ॐ शङ्गवे नमः २०४ ॐ पशुपतये नमः २०५ ॐ उग्राय नमः २०६ ॐ भीमाय नमः २०७ ॐ अग्रेवधाय नमः २०८ ॐ दूरेवधाय नमः २०६ ॐ हन्त्रे नमः २१० ॐ हनीयसे नमः २११ ॐ वृक्षेभ्यो नमः २१२ ॐ हरिकेशेभ्यो नमः २१३ ॐ ताराय नमः २१४ ॐ शम्भवाय नमः २१५ ॐ मयोभवाय नमः २१६ ॐ शङ्कराय नमः २१७ ॐ मयस्कराय नमः २१८ ॐ शिवाय नमः २१६ ॐ शिवतराय नमः २२० ॐ पार्याय नमः २२१ ॐ अवार्याय नमः २२२ ॐ प्रतरणाय नमः २२३ ॐ उत्तरणाय नमः २२४ ॐ तीर्थाय नमः २२५ ॐ कल्याय नमः २२६ ॐ शष्प्याय नमः २२७ ॐ फेन्याय नमः २२८ ॐ सिकत्याय नमः २२६ ॐ प्रवह्याय नमः २३० ॐ किर्ठ० शिलाय नमः २३१ ॐ क्षयणाय नमः २३२ ॐ कपर्दिने नमः २३३ ॐ पुलस्तये नमः २३४ ॐ इरिण्याय नमः २३५ ॐ

प्रपत्थ्याय नमः २३६ ॐ व्रज्याय नमः २३७ ॐ गोष्ठ्याय नमः २३८ ॐ तल्प्याय नमः २३९ ॐ गेह्याय नमः २४० ॐ हृदय्याय नमः २४१ ॐ निवेष्प्याय नमः २४२ ॐ काटच्याय नमः २४३ ॐ गह्वरेष्ठाय नमः २४४ ॐ शुष्क्याय नमः २४५ ॐ हरित्याय नमः २४६ ॐ पार्ठ० सव्याय नमः २४७ ॐ रजस्याय नमः २४८ ॐ लोप्याय नमः २४९ ॐ उलुप्याय नमः २५० ॐ ऊर्व्याय नमः २५१ ॐ सूर्व्याय नमः २५२ ॐ पर्णाय नमः २५३ ॐ पर्णसदाय नमः २५४ ॐ उद्गुरमाणाय नमः २५५ ॐ अभिघ्नते नमः २५६ ॐ आखिदते नमः २५७ ॐ प्रखिदते नमः २५८ ॐ इषुकृद्भ्यो नमः २५९ ॐ धनुस्कृद्भ्यश्च वो नमः २६० ॐ किरिकेभ्यो नमः २६१ ॐ देवानार्ठ० हृदयेभ्यो नमः २६२ ॐ विचिन्वत्केभ्यो नमः २६३ ॐ देवानार्ठ० हृदयेभ्यो नमः २६४ ॐ विक्षिणत्केभ्यो नमः २६५ ॐ देवानार्ठ० हृदयेभ्यो नमः २६६ ॐ आनिर्हतेभ्यो नमः २६७ ॐ देवानार्ठ० हृदयेभ्यो नमः २६८।

इन नाम मंत्रों का उच्चारण कर शंकरजी पर बिल्वपत्र चढ़ाकर पुनः निम्न मन्त्र के द्वारा दूर्वा चढ़ावे:-

ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।
एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्त्रेण शतेन च।

श्रीसाम्बसदा शिवाय दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।

दूर्वा प्रदान करने के पश्चात् निम्न श्लोकानुसार शिवजी को नानापरिमल द्रव्य चढ़ावे-

श्वेतातिरेणुसहितं शुभरक्तचूर्णं सिन्दूरचुर्णविपुलान्वितपीतचूर्णम्।
कर्पूरकेसरसुगन्धिसुवासितं च सौभाग्यचूर्णमुररी कुरु दीनबन्धो॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

उपर्युक्त श्लोक का उच्चारण कर शिवजी पर अबीर-बुक्का आदि नानापरिमल द्रव्य चढ़ावें।

अङ्गपूजा

तत्पश्चात् कर्ता नीचे लिखे दस नाम मन्त्रों से शिवजी की गन्ध, अक्षत, पुष्प द्वारा पूजा करें-

१. ॐ ईशानाय नमः पादौ पूजयामि

२. ॐ शङ्कराय नमः जङ्घे पूजयामि

३. ॐ शिवाय नमः जानुनी पूजयामि

४. ॐ शूलपाणये नमः गुल्फौ पूजयामि

५. ॐ स्वयम्भुवे नमः गुह्यं पूजयामि

६. ॐ महादेवाय नमः नाभिं पूजयामि

७. ॐ विश्वकर्त्रे नमः उदरं पूजयामि

८. ॐ सर्वतोमुखाय नमः नेत्रयोः पूजयामि

९. ॐ नागभूषणाय नमः शिरसि पूजयामि

१०. ॐ देवाधिदेवाय नमः सर्वाङ्गं पूजयामि।

अंग पूजा के पश्चात् शंकरजी पर निम्न श्लोक एवं मंत्र से इत्रादि सुगन्धित द्रव्य चढ़ावें-

श्रीकेतकीवकुलचम्पकमल्लिकानां संभृत्यसारमुचितं किल गन्धद्रव्यम्।
पात्रे हाटकमये मणिरञ्जितान्मे तूलङ्गृहाण जगदीश सुगन्धियुक्ताम्।

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पतिवेदनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनादितो मुक्षीय मामुतः॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय सुगन्धित द्रव्यं समर्पयामि।

उपरोक्त मन्त्र से सुगन्धित द्रव्यादि समर्पित करने के पश्चात् शिवजी के चरण, नाभी, वक्षस्थल और शिर का निम्न मन्त्र का उच्चारण कर आलभन अर्थात् स्पर्श करें–

ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतो मुखो विश्वतो बाहुरुत विश्वतस्पात्।
सम्बाहुब्भ्यान्धमतिसम्पत्त्रैर्द्यावा भूमीजनयन्देव ऽएक॥

इस वैदिक मन्त्र से पैर, नाभि, वक्षस्थल तथा सिर का स्पर्श करते हुए प्रत्येक बार इस मन्त्र की पुनरावृत्ति करें।

तत्पश्चात् निम्न श्लोक एवं मन्त्र के द्वारा शिवजी को छत्र समर्पित करें–

छत्रं सुवर्णदृढदण्डविधानचारुमुक्तामणि प्रकरकीर्णकरोज्वलं यत्।
सद्योधिजातमिवशारदशर्वरीशं चीनांसुकीर्णमुररीकुरु दीनबन्धो॥

ॐ बृहस्पते ऽअतियदर्योऽ अर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु।
यद्दीदयच्छवस ऽऋतप्रजाततदस्मासु द्रविणन्धेहि चित्रम्॥

श्रीभगवते साम्ब सदाशिवाय छत्रं समर्पयामि।

तत्पश्चात् निम्न श्लोक एवं मन्त्र के द्वारा शिवजी को चामर प्रदान करे:–

रत्नप्रभे कनकदण्डमये सिते द्वे आकाशसिन्धुपतदूर्मिसुफेनिलेव।
श्रीचामरे तु परिपार्श्वचरे भवेतामीशार्पिते करयुगेन गृहाण भक्त्या॥

ॐ वातो वा मनो वा गन्धर्वाः सप्तविर्ठ० शतिः।
तेऽ अग्ग्रेश्वमयुञ्जँस्ते ऽअस्मिमञ्जवमादधुः॥

ॐ इमारुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्रभराम हेमतीः।
यथा शमसद्द्विपदे चतुष्पदे विश्वम्पुष्टङ्ग्रामे ऽअस्मिन्ननातुरम्॥

श्रीभगवते साम्ब सदाशिवाय चामरं समर्पयामि।

चामर प्रदान करने के पश्चात् निम्न श्लोक एवं मन्त्र के द्वारा शिवजी को विविध प्रकार के व्यञ्जन प्रदान करें:-

संवीजने कनकदण्डमणिप्रभोत्थे ये शीतले सततवायुखैकरम्ये।
दत्ते मयाद्य जगदीश्वर ते गृहीत्वा संवीजयन्निजमुखेन कृतार्थयामुम्॥
ॐ वायो ये ते सहस्त्रिण।रथासस्तेभिरागहि। नियुत्त्वान् सोमपीतये॥

श्रीभगवते साम्ब सदाशिवाय व्यजनं समर्पयामि।

तत्पश्चात् शिवजी को निम्न मन्त्र के द्वारा चरणपादुका प्रदान करें:-

ॐ त्रीणिपदा विचक्रमे विष्णुर्गोपा ऽअदाब्भ्यः। अतो धर्माणि धारयन्।

श्रीभगवते साम्ब सदाशिवाय चरणपादुकां समर्पयामि।

चरण पादुका के पश्चात् निम्न श्लोक एवं मन्त्र के द्वारा शिवजी को दर्पण दीखावें।

केशप्रसारकरणिं किलदर्पणेन दत्तां गृहाण जगदीश्वर विश्वमूर्ते।
चाक्षुष्यमञ्जनमिदं कलधौतपात्रे सम्यङ्निधाय कलधौतशलाकया च॥
ॐ रूपेण वो रूपमब्भ्यागान्तुथो वो विश्ववेदा विभजतु।
ऋतस्य पथाप्रेत चन्द्रदक्षिणा विश्वः पश्यव्यन्तरिक्षं यतस्वसदस्यैः।

श्रीभगवते साम्ब सदाशिवाय आदर्शं दर्शयामि।

तत्पश्चात् निम्न श्लोक एवं मंत्र का उच्चारण करके शिवजी को धूप दिखावें-

कालागुरोश्च घृतमिश्रितगुग्गुलस्य धूपो मया विरचितो भवतः पुरस्तात्।
आघ्राय तं शुचिमनोहरगन्धचूर्णं तूर्णं विनाशय महेश्वर मोहजालम्॥

ॐ विज्यन्धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाँ२॥ उत।

अनेशन्नस्य याऽ इषवऽ आभुरस्य निषङ्गधिः॥

श्रीभगवते साम्ब सदाशिवाय। तर्जनीमूलरङ्गुष्ठयोगेन धूपमुद्रां प्रदर्श्य धूपमाघ्रापयामि।

धूप प्रदान के समय तर्जनी अंगुली और अंगुठे के योग से धूप मुद्रा दीखाकर शिवजी के समक्ष धूप बत्ती को जलाकर रखें–

तत्पश्चात् निम्न श्लोक एवं मन्त्र से शिवजी को दीपक दीखावें:–

पूर्णे घृतेन गिरिजेश सुवर्णपात्रे कौसुम्भसूत्रदृढवर्तिविराजमानः।

दीपः पुरस्तव मयारचितो य एष शीघ्रं विनाशयतु मे दुरितान्धकारम्॥

ॐ या ते हेतिर्मीढुष्टमहस्ते बभूव ते धनुः।

तयास्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्यया परिभुज॥

श्रीभगवते साम्ब सदाशिवाय मध्यमाङ्गुष्ठयोगेन दीपमुद्रां प्रदर्श्य प्रत्यक्षदीपं दर्शयामि। हस्तप्रक्षालनम्। ततः–

दीपक दर्शयामि में मध्यमा और अंगुष्ठ के योग से दीपमुद्रा प्रदर्शित कर दीपक जलाकर रखें, और दीपक स्पर्श के बाद दोनों हाथों पर शुद्ध जल डालकर धो ले। फिर शिवजी के आगे चतुस्त्र मंडल बनाकर उसके मध्य में नैवेद्य और जलपात्र रखकर उसमें बिल्वपत्रादिक छोड़ते हुए निम्न मन्त्र पढ़े–

जिह्वासुधांकनकपात्रविराजमानमन्त्रादिकं मधुरशाकफलावलीढम्।

पञ्चामृतल्पुतमनेकविधं रसौधं सङ्कल्पितं त्वमुररी कुरु दीनबन्धो॥

ॐ परि ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु विश्वतः।

अथो यऽ इषुधिस्तवारेऽ अस्मिन्निधेहि तम्॥

श्रीभगवते साम्बसदा शिवाय नमः नैवेद्यं निवेदयामि।

इस प्रकार उच्चारण कर अनामिका अंगुली का मूल भाग और अंगुष्ठ के योग से बनी नैवेद्य मुद्रा दिखाकर ग्रास मुद्रा इस प्रकार प्रदर्शित करें।

ॐ प्राणाय स्वाहा कहें

अंगुष्ठ अनामिका और मध्यमा मिलाकर।

ॐ अपानाय स्वाहा कहें

अंगुष्ठ अनामिका और कनिष्ठा मिलाकर।

ॐ व्यानाय स्वाहा कहें

कनिष्ठा तर्जनी और अंगुष्ठ मिलाकर।

ॐ समानाय स्वाहा कहें

अंगुष्ठ और सब अंगुलीयों को मिलाकर।

ॐ उदानाय स्वाहा कहें

फिर गमछे या दुपट्टे से पर्दा करते हुए गोदोहनकालपर्यन्त देवता के स्वरूप का ध्यान करते हुए रौद्रा अध्याय का पाठ करें।

उसके बाद–

मध्ये पानीयं समर्पयामि, उत्तरापोशनं समर्पयामि।

हाथ धोने के लिए जल समर्पित कहकर तीन बार जल छोड़े।

गन्धानुलेपन मंत्रः–

उष्णोदकैः पाणियुगं मुख च प्रक्षाल्य शम्भो कलधौतपात्रे।
कर्पूरमिश्रेण सकुङ्कुमेन हस्तौ समुद्वर्तय चन्दनेन॥

ॐ अर्ठ० शुनातेऽ अर्ठ० शुः पृच्व्याम्परुषापरुः।
गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसोऽ अच्युतः॥

श्रीभगवते साम्बसदा शिवाय करोद्वर्तनार्थे चन्दनानुलेपनं समर्पयामि।

गन्धानुलेपन के पश्चात् निम्न श्लोक का उच्चारण कर शंकरजी को ऋतु फल चढ़ावें:-

कालोपपन्नविधिवद्विविधं भृतं ते पील्विक्षुखण्डपरिपत्रमहारहूरम्।
सर्वं फलं सुरपते परितोषणाय संभृत्य सम्यगिदमर्पितागृहाण॥

श्रीभगवते साम्बसदा शिवाय ऋतुफलानि समर्पयामि।

तत्पश्चात् निम्न श्लोक एवं मंत्र के द्वारा शिवजी को ताम्बूल एवं पुंगीफल प्रदान करें:-

पूगैलचूर्णखदिरैर्नवजातिपत्रैर्जातीफलत्रुटिलवङ्गघनैः प्रपूर्णैः।
ताम्बूलकं तु मनसा वचसा घृतं यत्तत्स्वीकुरुष्व वृषभध्वज दीनबन्धो॥

ॐ अवतत्य धनुष्ट्वर्ठ० सहस्त्रा क्षतेषुधे।
निशीर्यशल्यानाम्मुखाशिवो नः सुमना भव॥

श्रीभगवते साम्बसदा शिवाय पूगीफलं च समर्पयामि।

निम्न मंत्र का उच्चारण कर शिवजी को दक्षिणा चढ़ावें:-

विभावसोर्बीजमिदं हिरण्यं दिव्यं प्रकाश विधिगर्भसंस्थम्।
गृहाण भूताधिपते महेश मुद्रार्पणं वै मनसार्पितं ते॥

ॐ नमस्तऽ आयुधायानातताय धृष्णवे।
उभाब्भ्यामुत ते नमो बाहुब्भ्यान्तव धन्वने॥

श्रीभगवते साम्बसदा शिवाय दक्षिणा समर्पयामि।

निम्न श्लोक एवं मंत्र का उच्चारण कर शिवजी को कर्पूर नीराजन (आरती) समर्पित करें:-

कर्पूरखण्डपरिकल्पितपञ्चदीपै रानम्रमौलिमुकुटद्युतिसंप्रवृद्धिः।
नीराजितं त्रिजगदेकगुरो मया ते पादाम्बुजं दिशतु वाञ्छितकार्यसिद्धम्॥

ॐ आरात्रिपार्थिवर्ठ० रजः पितुरप्रायिधामभिः।
दिवः सदार्ठ० सि बृहती वितिष्ठसऽ आत्त्वेषं वर्त्तते तमः॥

श्रीभगवते साम्बसदा शिवाय कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

मंत्र पुष्पाञ्जलि–

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
तेह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥
ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने नमो वयं श्रवणाय कुर्महे।
स मे कामान् कामकामया मह्यं कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु॥

कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः।

ॐ स्वस्ति साम्राज्य भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समुद्रपर्यन्तायाऽ एकराडिति तदप्येषश्लोकोभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन्गृहे। आवीक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति।

ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतो मुखो विश्वतो बाहुरुतविश्वतस्पात्।
सम्बाहु ब्भ्यान्धमतिसम्पत्त्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देवऽ एकः॥
ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।

श्रीभगवते साम्बसदा शिवाय मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

मंत्र पुष्पांजलि के तत्पश्चात् निम्न श्लोक एवं मंत्र का उच्चारण कर शिवजी की प्रदक्षिणा करें:–

पापानि यानि विविधानि मया कृतानि प्राक्कोटि जन्मदुरितानि च यानि-यानि।
शम्भो प्रदक्षिण पदेषु-पदेषु नाथ शीघ्रं विनाशय-विनाशय तानि-तानि॥

ॐ मा नो महान्तमुत मानोऽ अर्भकं मानऽ उक्षन्तमुतमानऽ उक्षितम्। मा नो वधीः पितरम्मोतमातरं मानः प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः॥

श्रीभगवते साम्बसदा शिवाय प्रदक्षिणां समर्पयामि।

प्रदक्षिण कर्म की समाप्ति के पश्चात् निम्न श्लोकानुसार शिवजी को प्रणाम करें:-

ॐ नमः सर्वहितार्थाय जगदाधारहेतवे।

साष्टाङ्गोऽयं प्रणामस्ते प्रयत्नेन मया कृतः॥

स्तुतिः-

इन पौराणिक श्लोकों के द्वारा कर्ता स्तुति करे

त्रिकाण्डवेदा नयनानि यस्य वेदश्चतुर्थश्च शिरः प्रतीतः।
अङ्गानि-चाङ्गानि च यस्य तस्मै वेदस्वरूपाय नमश्शिवाय॥
मोहादिपञ्चकमहारसपञ्चमाय नानाविधात्मगतभेदविभेदकाय।
सङ्केतसूचितपरत्वमहासुखाय तञ्चात्मने परतराय नमश्शिवाय॥
वाक्यप्रधानमथ धर्म निदानयुक्तं यन्मण्डितं विधिनिषेध-परैश्च मन्त्रैः।
भ्राजत्सहस्रकिरण प्रतिभाय तस्मै कर्मात्मने सुरवकराय नमश्शिवाय।
यत्षट्पदार्थविततं ध्रुवपीलुकादि यच्चापि षोडशकलं घटपाकवादि।
तस्मै प्रमाणयुतसर्वविचित्रिताय तर्कात्मने परतराय नमश्शिवाय॥
यस्माद्भवन्ति विरमन्ति च यत्र वेदा यो निस्तरङ्गित महोदधितुल्यशोभः।
लीलाकृते विकृतरूपधराय तस्मै शब्दात्मने परतराय नमश्शिवाय ॥
चरन्ति चिन्वन्त्यपि तर्कपङ्क्तिस्वरूपतो यं न विदन्ति के चित्।
फलानुमेयं च वदन्ति तस्मै धर्मस्वरूपाय नमश्शिवाय ॥
मूर्त्यष्टकं लसति यस्य यमादिरूपं सिद्ध्यष्टकं लसति यस्य विभूतिरेव।
आनन्दिने निखिलशक्तियुताय तस्मै योगात्मने परतराय नमश्शिवाय॥
यत्साधनान्युपरतिश्च विरागिता च नानाव्रतानि शुचिता च जितेन्द्रियत्वम्।
निसङ्गता च परमार्थपदाय तस्मै योगात्मने परतराय नमश्शिवाय॥
श्रीयुक्तहारमणिकुण्डलकङ्कणाय गङ्गाविभूतिगरलेन्दुजटाधराय।
नृत्यत्पिशाचपरिवारशतावृताय संक्रीडते पस्तराय नमश्शिवाय॥

नमः सोमाय शान्ताय सगुणायादि हेतवे। निवेदयामि चात्मानं त्वं गतिः परमेश्वर॥
नमामि त्वां विरूपाक्ष नीलग्रीव नमोऽस्तु ते। त्रिनेत्राय नमस्तुभ्यमुमादेहार्द्धधारिणे॥
त्रिशूलधारिणे तुभ्यं भूतानां पतये नमः। पिनाकिने नमस्तुभ्यं नमो मीढुष्टमाय च॥
नमामि त्वां महाभूत पतये त्वां नमाम्यहम्। स्वयं भिक्षान्न भोक्ता च भक्तानां राज्यदायक॥
सूर्यरूपं समासाद्य देहिनां देहदायक। यतीनां मुक्तिदस्त्वं च भूतानां चापि मुक्तिदः॥
राजसेन स्वयं ब्रह्मा सात्विकेन स्वयं हरिः। तामसेन स्वयं रुद्रस्त्रितयं त्वयि संस्थितम्॥
त्वं माता त्वं पिता त्वं हि त्वं बन्धुस्त्वं च मे सखा। त्वं विद्या द्रविणस्त्वं वै त्वं च सर्व मम प्रभो॥
नमो विरञ्चि विश्वेश भेदेन परमात्मने। निसर्ग स्थितिसंहारव्यापिने परमात्मने॥
न्यूनातिरिक्तं यत्कर्म जपहोमार्चनादिकम्। कृतमज्ञानतो देव तन्मम क्षन्तुमर्हसि॥
विश्वेश्वर विरूपाक्ष विश्वरूप सदाशिव। शरणं भवभूतेश करुणाकरशङ्कर॥
हरशम्भो महादेव विश्वेशामरवल्लभ। शिवशङ्करसर्वात्मन्नीलकण्ठ नमोऽस्तु ते॥
मृत्युञ्जयमहारुद्र सर्वेश शशि शेखर। चन्द्रचूडमहादेव पार्वतीश नमोऽस्तु ते॥
मृत्युञ्जयाय रुद्राय नीलकण्ठाय शम्भवे। अमृतेशाय सर्वाय महादेवाय ते नमः॥
रुद्रहोमो जपो वापि न्यूनो वाप्यधिकोऽपि वा। सम्पूर्णस्त्वत्प्रसादेन भूयाद् भूतिविभूषण॥

इस प्रकार स्तुति कर के निम्न श्लोकों का उच्चारण कर हाथ में चावल पुष्पादि लेकर शिवजी पर छोड़ते हुए विसर्जन करे:–

विसर्जनम्–

ॐ अपराधसहस्राणि क्रियतेऽहर्निशं मया। दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वर॥
अपराधसहस्राणां सहस्रमयुतं तथा। अर्वुदं चाप्यसंख्येयं करुणाब्धे क्षमस्व मे॥
यश्चापराधं कृतवानज्ञानात्पुरुषोत्तम। भक्तस्य मम देवेश त्वं सर्वं क्षन्तुमर्हसि॥
अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम। तस्मात्कारुण्यभावेन रक्ष त्वं परमेश्वर॥
गतं पापं गतं दुःखं गतं दारिद्र्यमेव च। आगता सुखसम्पत्तिः पुण्योऽहं तव दर्शनात्॥
जपच्छिद्रं-तपछिद्रं-यच्छिद्रं शान्तिकर्मणि। सर्वं भवतु मेऽछिद्रं ब्राह्मणानां प्रसादतः॥
काले वर्षतु पर्जन्यः पृथिवी सस्यशालिनी। देशोऽयं क्षोभरहितो ब्राह्मणाः सन्तु निर्भयाः॥

सर्वे च सुखिनः सन्तु सर्वे सन्तु निरमयाः। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मां कश्चिद् दुःखमाप्नुयात्॥
अज्ञानादल्पशक्तित्वादालस्याद्दुष्टचेतसः। यन्न्यूनमतिरिक्तं वा तत्सर्वं क्षन्तुमर्हसि॥
आवाहनं न जानामि पूजां चोमापते प्रभो। क्षमस्व देवदेवेश मामङ्गीकुरु शङ्कर॥
घोरान्घोरं प्रपन्नापि महाक्लेशं भयानकम्। शिवपूजाप्रभावेण तरिष्यन्ति महाभयम्॥
अज्ञानात् ज्ञानतो वाऽपि जातन्यूनाधिकं च यत्। दासत्य मम दीनस्य क्षन्तव्यं लोकलोचन॥
त्रियम्बकाय शर्वाय शङ्कराय शिवाय च। सर्वलोकप्रधानाय शाश्वताय नमो नमः॥
प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्। स्मरणादेव तच्छम्भोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः॥
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु। न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमीश्वरम्॥

उपर्युक्त कर्म की समाप्ति के पश्चात् बारहबार निम्न वाक्य करें- **ॐ नमः शिवायः।**

कर्ता हाथ में जल लेकर कहें:-

अनेन कर्मण श्रीभगवते साम्बसदाशिवः प्रीयताम्।

इस प्रकार कर्ता कह कर जल को भूमि में छोड़ देवे।

॥ इति संक्षिप्त शिवपूजनम्॥

कालीपूजन-सामग्री

रोली	चीनी २५० ग्राम
मौली	सहत
धूपबत्ती	गंगाजल
कर्पूर	चन्दन घिसा हुआ
केसर	आम्रपत्र
रुई	गूलरपत्र
अक्षत, कालातिल	वटपत्र
यज्ञोपवीत (१ बंडल)	पाकरपत्र
अबीर (गुलाल)	पीपलपत्र
बुक्का (अभ्रक)	सर्वौषधि की एक पुड़िया
सिन्दूर	गिरिका गोला दो
पान	नारियल जटादार एक
सुपारी	दीयट
पुष्पमाला	दीयासलाई
कुछ पुष्प फुटकर	काली की मूर्ति
दूर्वा	ताम्र या मिट्टी के कलश
अतर का फावा	सिंहासन
इलायची छोटी	मूर्ति के सभी वस्त्र
लंवग	धान का लावा
पेड़ा ५०० ग्राम	हलदी की गांठ ५ या ७ या ८
ऋतुफल एक दर्जन	करंजा १
दुग्ध ५०० ग्राम	धनियाँ
दही २५० ग्राम	कमलगट्टा
घृत	मजीठ
गुड़	पूजनार्थ एक कटोरी

गेहूँ २५० ग्राम
कलश ताम्र का एक
सकोरा मिट्टी का
पूजनार्थ एक थाली
कटोरा बड़ा पंचामृत के लिये एक
सफेद कपड़ा आधा मीटर
लाल कपड़ा आधा मीटर

॥ कालीपूजन–सामग्री समाप्तः ॥

कालीप्रतिष्ठा–सामग्री

रोली २५० ग्राम
मौली २५० ग्राम
धूपबत्ती चार पैकेट
केसर ८ मासा
कपूर पाँच तोला
अबीर (गुलाल)
बुक्का (अभ्रक)
सिन्दूर
हलदी पीसी ५०० ग्राम
मेंहदी पीसी २५० ग्राम
यज्ञोपवीत (पचास)
रूई २५० ग्राम
चावल १० कि.
पान ५० प्रतिदिन
सुपारी पाँच किलो
पेड़ा एक किलो प्रतिदिन
बतासा एक किलो
ऋतुफल एक दर्जन प्रतिदिन
पंचमेवा एक किलो
मिश्री आधा किलो
इलायची छोटी दो तोला
लवंग दो तोला
जावित्री दो तोला
जायफल २०
अंतरकी शीशी दो
गुलाबजल की शीशी एक
कस्तूरी की शीशी एक
गोबर
गोमूत्र
दुग्ध आधा लीटर प्रतिदिन
दधि २५० ग्राम प्रतिदिन
चीनी ५०० ग्राम प्रतिदिन
गो घृत
सहत २५० ग्राम
पीली सरसों
कच्ची सूत सौ हाथ
पुष्पमाला पचीस प्रतिदिन
फुटकर पुष्प प्रतिदिन
तुलसी प्रतिदिन
दूर्वा प्रतिदिन

बिल्वपत्र प्रतिदिन
कुशा
नारियल जटादार पचीस
गिरिके गोले ग्यारह
चन्दन का मुट्ठा सफेद एक
चन्दन का मुट्ठा लाल एक
हरसा एक
एक रुपये का लालरंग
एक रुपये का पीला रंग
एक रुपये का हरा रंग
एक रुपये का काला रंग

पंचरत्नकीपुड़िया सात सर्वौषिधि–

२ रुपये का मुरा
२ रुपये का जटामासी
२ रुपये का वच
२ रुपये का कूट
२ रुपये शिलाजीत
२ रुपये आंवाहलदी
२ रुपये दारूहलदी
२ रुपये का सटी (कचूर)
२ रुपये का चंपा
२ रुपये का नागरमोथा

सप्त–मृत्तिका–

हाथी के स्थान की मिट्टी
घोड़े के स्थान की मिट्टी
बल्मीक (दीमक) की मिट्टी
नदी संगम की मिट्टी
तालाब की मिट्टी
राजद्वार (चतुष्पथ) की मिट्टी
गोशाला की मिट्टी

सप्त धान्य–

यव दो किलो
गेहूँ दो किलो
धान दो किलो
तिल दो किलो
ककुनी आधा किलो
सावां आधा किलो
चना दो किलो

नवग्रह की लकड़ी–

मदार की लकड़ी एक सौ आठ
पलास की लकड़ी एक सौ आठ
खैर की लकड़ी एक सौ आठ
अपामार्ग की लकड़ी एक सौ आठ
पीपल की लकड़ी एक सौ आठ
गूलर की लकड़ी एक सौ आठ
शमी की लकड़ी एक सौ आठ
दूर्वा एक सौ आठ
कुशा एक सौ आठ
मृगचर्म नवीन एक
कम्बल नवीन एक
सूतकी डोरी दस हाथ की
तांबे का तार बीस हाथ का

काली उड़द एक किलो
लोहे की कंटिया चार
काष्ठकी दो चौकी
काष्ठ की पाटा तीन
दो रुपये की सूतरी
केले के स्तम्भ आठ
दो रुपये का हरताल
दो रुपये का मैनसिल
दो रुपये का सुरमा काला
दो रुपये का सुरमा सफेद
दो रुपये का पारा
कांक्षी बरिका
कौसिस
गेरू
अगर
तगर
खश
वैष्णवी
सहदेवी
लक्ष्मणा
ब्राह्मी
सोंठ
शमी
शताबरी
गुडूची
सौराष्ट्री
अर्जुन

आंवला
गोरेचन
कौवाकोठी
शंखपुष्पी
वरियरा
भटकटैया
सोमलता
ऋतु जन्य फल
बड़ा नीबू
कागजी नीबू
जामुन पत्र
अशोक पत्र
शमीपत्र
कदम्बपत्र
सेमरपत्र
पंचपल्लव की छाल
सेवार (नद्यावर्त)
ऊखका रस
सुरोदक
शान्त्युदक
क्षारोदक
सितपुष्पोदक
गोशृङ्गोदक
फलोदक
नवरत्नोदक
सुवर्णोदक
मेघजल

तीर्थजल
गुलाबजल
केवड़ाजल
अतर
फुलेल

अग्निहोत्र की भस्म

मक्खन २५० ग्राम
दुग्ध पाँच किलो
दही ढ़ाई किलो
गोबर
गोमूत्र
धान का लावा एक किलो
सत्तू (सतुवा) एक किलो
जौका आटा डेढ़ किलो
चावल का आटा २५० ग्राम
मसूर का आटा २५० ग्राम
जटामासी का चूर्ण ५० ग्राम
आँवला का चूर्ण ५० ग्राम

अन्नाधिवास के लिये अन्न–

चावल का एक बोरा
गेहूँ का एक बोरा

घृताधिवास के लिये–

गो घृत टीन एक
ब्रह्माशिला एक
कूर्मशिला एक
मिट्टी की पेटी एक
लोहे की कंटिया आठ
ऊनका सूत एक पाव
तीन ताँगे का सूत पाँच सौ हाथ
चांदी का तार दो सौ हाथ
कलश चाँदी का अथवा
ताम्र का एक
कलश ताम्र के अथवा
पीतल के पाँच
कमण्डलु (झारी) एक
तस्तरी पीतल दस
पूर्णपात्र कलश (ब्रह्मा के लिये)
बघोना (खीर पकाने के लिये)
कटोरा कांसेका बड़ा एक
कटोरी ग्यारह
थाली दो
थाली कांसे की एक
परात एक
कड़छुल पीतल एक
सड़सी पीतल एक
दो कांसेकी कटोरी
आरतीदानी एक
धूपदानी एक
घण्टा एक
घड़ौला एक
शंख एक
मिट्टी के कलश दो सौ पचास
मिट्टी सकोरे एक सौ

पत्तल एक सौ
मीठा तेल ढ़ाई किलो
सुवर्ण के टुकड़े पाँच
चाँदी के टुकड़े पाँच
ताँबे के टुकड़े पाँच
पीतल के टुकड़े पाँच
शीशा एक
रागा एक

वरण सामग्री

धोती
दुपट्‌टा
अंगोछा
लोटा
गिलास
पंचपात्र
आचमनी
गोमुखीमाला
यज्ञोपवीत
कुशासन
सुवर्ण की अंगूठी

आचार्य के लिये वरण सामग्री-

देवताओंको चढ़ाने के लिये वस्त्र-

पीताम्बर रेशमी दो
दुशाला एक
सिल्क दो
रेशमी जनानी साड़ी एक
धोती सूती इक्कीस
दुपट्‌टा इक्कीस
अंगोछा इक्कीस
रेशमी चुंदरी एक
शीशा बड़ा एक
सौभाग्यपिटारी एक
सुवर्ण की मूर्ति प्रधान देवताकी
डेढ़ तोले की एक
सुवर्ण की मूर्ति वास्तुकी
दस मासे की एक
सुवर्ण की मूर्ति क्षेत्रपालकी
दस मासे की एक
सुवर्ण की मूर्ति योगिनी की
दस मासे की एक
सुवर्ण की मूर्ति नवग्रह की
दस मासे की एक
सुवर्ण की मूर्ति असंख्यात रुद्रकी
दस मासे की एक
सुवर्ण की शलाका दो
सुवर्ण का सर्प (नाग) एक
सुवर्ण का कमल एक
सुवर्ण के टुकड़े नब्बे
सुवर्ण की जिह्वा एक
चाँदी का सिंहासन एक
चाँदी का छत्र एक
चाँदी की तस्तरी एक
चाँदी की थाली एक

चाँदी की कटोरी दो
चाँदी का पंचपात्र एक
चाँदी की आचमनी एक
चाँदी की का अर्घा एक
चाँदी का तष्टा एक

ध्वजा-पताका तथा वेदियों के लिये वस्त्र–

सफेद कपड़ा दो थान
लाल कपड़ा एक थान
पीला कपड़ा एक थान
हरा कपड़ा एक थान

काला कपड़ा	एक थान
पंचरंगा चंदवा	बड़ा एक
चंदवा छोटे	पाँच

भगवान् की फोटो सोलह

शीशा बड़ा	एक
घड़ी	एक

शय्या-सामग्री–

पलंग नेवार का एक

दरी	एक
गद्दा	एक
रजाई	एक
कंबल	एक
सुजनी	एक
मसहरी	एक
चदरा	दो

तकिया दो
आचार्य के पाँच वस्त्र
आभूषण सुवर्ण के
चाँदी के बर्तन
भोजन के बर्तन
अन्न (यथाशक्ति)

घृत टीक	एक
छाता	एक
छड़ी	एक
जूता	एक जोड़ा
पानदान	एक
पीकदान	एक

मन्दिर के लिये शय्यासामग्री–

पलंग नेवार का	एक
दरी	एक
गद्दा	एक
रजाई	एक
चदरा	दो
तकिया	दो
मसहरी	एक
चंवर	एक

मन्दिर के लिये पूजन सामग्री–

पूजन के बर्तन पञ्चपात्रादि

घण्टा	एक
घड़ौल	एक
शंख	एक
आरतीदानी	एक
धूपदानी	एक
अतरदानी	एक

महाकाली के मन्त्र

अट्ठारह वर्णों वाला मन्त्र-

क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं महाकालि क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा।

बीस वर्णों वाला मन्त्र-

क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं महाकालि क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा।

पन्द्रह वर्णों वाला मन्त्र-

क्रीं क्रें क्रें क्रौं पशनू गृहाण हुं फट् स्वाहा।

काली गायत्री मन्त्र-

ॐ कालिकायै विद्महे श्मशानवासिन्यै धीमहि तन्नो घोरे प्रचोदयात्।